Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

SAHITYA PARICHAI
1983 G. K. U.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

112994

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

12
9-2-83
प्राप्ति दिनांक

जनवरी
1983

साहित्य परिचय

शिक्षा एवं हिन्दी की गतिविधियों का
परिचायक - पत्र

नव वर्ष 1983 के शुभारम्भ में

एवं

भारतीय गणतंत्र दिवस के 35वें पर्व

पर

विश्वविद्यालय, महाविद्यालय तथा विद्यालयों
के प्राचार्यों, विभागाध्यक्षों, अध्यापकों,
मूर्धन्य लेखकों, साहित्यकारों, पाठकों,
हमारे सहयोगी पुस्तक विक्रेताओं
एवं सम्बन्धित छात्रों

को

RT-0574

हार्दिक शुभकामनाएँ

शुभेच्छु

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

● प्रशिक्षण साहित्य ● गृहविज्ञान ● मनोविज्ञान

तथा

● हिन्दी एवं संस्कृत साहित्य

के

पाठ्य एवं सहायक पुस्तकों के

प्रमुख प्रकाशक एवं विक्रेता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विभिन्न विश्वविद्यालयों के नवीन पाठ्यक्रमानुसार—

छात्रों एवं पुस्तकालयों के लिये हमारा प्रकाशित

छात्रोपयोगी प्रशिक्षण साहित्य

☆ ☆ ☆

भारतीय शिक्षा
(Indian Education)

भारतीय शिक्षा के प्रवर्त्तक
सं० डा० आत्मानन्द मिश्र १५.००

शिक्षा में नव चिन्तन
सं० डा० रामपालसिंह —

आदि और मध्ययुगीन भारत में शिक्षा
डा० सरयूप्रसाद चौबे १४.००

आधुनिक भारतीय शिक्षा [इतिहास और समस्याएँ]
पी० डी० पाठक, गुरसरनदास त्यागी १६.००

भारतीय शिक्षा का इतिहास
बी० पी० जौहरी, पी० डी० पाठक १५.९५
पुस्तकालय संस्करण २२.५०

भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ
पी० डी० पाठक १९.८०
पुस्तकालय संस्करण ३०.००

भारतीय शिक्षा की सामयिक समस्याएँ
रामखेलावन चौधरी, राधावल्लभ उपाध्याय १५.००

भारतीय शिक्षा (प्राचीन से वर्तमान काल तक)
डा० सरयू प्रसाद चौबे १४.००

हमारी शिक्षा समस्याएँ
डा० सरयू प्रसाद चौबे १८.००

विश्व के श्रेष्ठ शिक्षाशास्त्री
डा० रामशकल पांडेय १२.००

भारतीय शिक्षा के आयोग एवं समितियाँ
पी० डी० पाठक, गुरसरनदास त्यागी १७.००
पुस्तकालय संस्करण २२.००

शिक्षा-मनोविज्ञान
(Educational Psychology)

शिक्षा-मनोविज्ञान
डा० एस० एस० माथुर २८.००
पुस्तकालय संस्करण ४०.००

शिक्षा-मनोविज्ञान (संक्षिप्त संस्करण)
डा० एस० एस० माथुर १७.००

शिक्षा-मनोविज्ञान
पी० डी० पाठक १६.४०

शिक्षा-मनोविज्ञान
डा० रामपालसिंह वर्मा १८.००
राधावल्लभ उपाध्याय पु० सं० २८.००

Educational Psychology
Dr. S. S. Mathur 25.50
Lib. edn. 40.00

शिक्षा-सिद्धान्त और शिक्षणकला
(Principles and Methods of Education)

शिक्षा के सिद्धान्त
पी० डी० पाठक, गुरसरनदास त्यागी १५.००

शिक्षा के सामान्य सिद्धान्त
पी० डी० पाठक, गुरसरनदास त्यागी २४.००
पुस्तकालय संस्करण ३२.००

शिक्षा-सिद्धान्त
डा० एस० एस० माथुर १७.००

शिक्षा के मूल सिद्धान्त
डा० रामशकल पाण्डेय २१.००
पुस्तकालय संस्करण २८.००

शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार
डा० सरयूप्रसाद चौबे २०.००
पुस्तकालय संस्करण २४.००

Philosophical and Sociological Foundations of Education
Dr. S. P. Chaube, 20.00
Akhilesh Chaube Lib. edn. 30.00

An Introduction to Major Philosophies of Education
Dr. R. S. Pandey 14·00
Lib. Edn. 20·00

Principles of Education 20.00
Dr. R. S. Pandey Lib. Edn. 30.00

A Sociological Approach to India Education
Dr. S. S. Mathur 28.00

शेष आवरण के ततीय पृष्ठ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-परिचय

[शिक्षा और साहित्य की प्रगति का परिचायक पत्र]

[वर्ष 18 : अंक 1]
जनवरी, 1983

सम्पादक
विनोद कुमार अग्रवाल
एम० ए०, साहित्यरत्न

स्वामित्व
विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

वार्षिक शुल्क : 15·00
रजिस्ट्री से विशेषांक मँगवाने पर
18·00
[विदेशों में—डाक व्यय सहित मात्र 40·00]

साहित्य-परिचय
डा० रांगेय राघव मार्ग
आगरा–2
फोन : 76486

सम्पादकीय

प्रयाग विश्वविद्यालय देश का अत्यन्त प्रसिद्ध विश्वविद्यालय है जिसके शिक्षण का स्तर विश्व के सभी देशों में मान्य है। इस विश्वविद्यालय को भारत का ऑक्सफोर्ड कहा जाता है। आवासीय, शैक्षणिक एवं एकात्मक विश्वविद्यालय होने के नाते इसका स्तर सदैव उच्च रहा है। जिन शैक्षिक एवं सामाजिक मूल्यों की रक्षा के लिए यह विश्वविद्यालय विख्यात रहा है उनका सन्देश आज भी इसके छात्र देश के कोने-कोने में फैला रहे हैं। भारत का शायद ही कोई नगर या राज्य ऐसा हो जहाँ पर प्रयाग विश्वविद्यालय के पढ़े हुए छात्र न मिल जाएँ। प्रशासनिक सेवाओं में प्रयाग विश्वविद्यालय का योगदान सराहनीय रहा है। अनेक उच्च पदाधिकारी इस विश्वविद्यालय का गौरव आज भी बढ़ा रहे हैं।

किन्तु विगत एक मास से यह विश्वविद्यालय बन्द पड़ा है। तृतीय एवं चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी हड़ताल पर हैं। चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों की माँग है कि एक भ्रष्ट एवं नौकरी से निकाले गये चौकीदार को पुनः नियुक्त किया जाए। तृतीय श्रेणी के कर्मचारियों की कोई स्पष्ट माँग नहीं है। वे सहानुभूति में हड़ताल कर रहे हैं। अनेक हड़ताली कर्मचारी यह अनुभव करते हैं कि उनकी हड़ताल गलत है किन्तु वे अपने-अपने संगठनों के अनुशासन में बँधे हुए हैं और इन संगठनों पर असामाजिक तत्त्वों का अधिकार होने की बात कही जा रही है।

उधर छात्रों का सत्याग्रह भी उग्र होता जा रहा है। इनकी माँग है कि इनके कुछ निष्कासित छात्रों का निष्कासन वापस लिया जाए। कुछ समय पूर्व असामाजिक एवं अनुशासनहीन कार्यों में भाग लेने के अपराध में कुछ छात्रों को विश्वविद्यालय से निकाल दिया गया है। इन्हीं छात्रों को यदि वापस लेने की बात है, तो छात्र-संघ को अपनी माँग पर पुनर्विचार करने की आवश्यकता है। सुना जाता है कि अनेक छात्र हड़ताल के विरुद्ध हैं और वे शान्तिपूर्वक पढ़ना चाहते हैं। किन्तु इनकी आवाज पर ध्यान नहीं दिया जा रहा है।

आवश्यकता इस बात की है कि विश्वविद्यालय के अधिकारी एवं हड़ताली कर्मचारी तथा छात्र आपस में बातचीत करके किसी मान्य निष्कर्ष पर पहुँचें और समझौते का प्रयास करें। हठधर्मिता प्रयाग विश्वविद्यालय के गौरव के अनुरूप नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काव्यशास्त्र परम्परा में एक और मौलिक प्रकाशन

भारतीय काव्यशास्त्र

लेखक

डा० रामानन्द शर्मा

एम० ए० (हिन्दी, संस्कृत), पी-एच० डी० (लब्ध स्वर्ण पदक)

स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग

हिन्दू कालेज, मुरादाबाद

● आज काव्यशास्त्र विषय कुछ उपेक्षित-सा है। यह स्वाभाविक भी है, क्योंकि उपन्यासों की प्रधानता के युग में शास्त्रीय दुस्तरता एवं दुरूहता का सामना कौन करे ? कहाँ उपन्यासों की रोचकता एवं सुबोधता और कहाँ काव्यशास्त्र की दुर्बोध शास्त्रीय भित्ति ? आज न केवल स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में उपन्यासों का विशेष महत्त्व दे दिया गया है वरन् शोध भी अधिकांशतः उसी पर कराये जाते हैं। इसे हिन्दी विद्वान् प्राध्यापकों का मानसिक दारिद्रय (सही शब्दों में मानसिक दिवालियापन) तथा प्रयत्नलाघव (अकर्मण्यता) ही कहा जा सकता है। एक समय था जब काव्यशास्त्र गोष्ठियों का प्रमुख विषय होता था। लेकिन शास्त्रीय दुर्बोधता तथा मानव के प्रयत्न लाघव में संगति नहीं बैठ सकी।

● इस लाघव कृति के कारण ही आधुनिक भारतीय भाषाओं में काव्यशास्त्र पर विपुल चिन्तन-मनन एवं लेखन नहीं हो सका है। जो प्रामाणिक एवं गम्भीर ग्रन्थ सामने आये हैं। उनकी संख्या अत्यल्प है। इसका प्रभाव छात्रोपयोगी पुस्तकों पर भी पड़ा है। इस लक्ष्य को दृष्टिगत रखकर ही प्रस्तुत पुस्तक की रचना की गई है।

● प्रस्तुत पुस्तक बारह अध्यायों में विभक्त है। **प्रथम अध्याय** में काव्य की परिभाषा हेतु प्रयोजन के अतिरिक्त सत्यं शिवं सुन्दरम् को भी लिया गया है। **द्वितीय अध्याय** में न केवल कालक्रम बल्कि सैद्धान्तिक दृष्टि से भारतीय काव्यशास्त्र का विकास प्रस्तुत किया गया है। भारतीय काव्यशास्त्र से तात्पर्य संस्कृत एवं हिन्दी के काव्यशास्त्र से ही रहा है। यद्यपि इतर भाषाओं के विचारों का भी यत्र-तत्र उल्लेख आ गया है लेकिन यह प्रासंगिक ही है। इसी अध्याय में काव्यात्मा पर भी विचार किया गया है। **तृतीय** से लेकर **अष्टम् अध्याय** पर्यन्त भारतीय काव्यशास्त्र के छहों सम्प्रदायों—क्रमशः अलंकार, रीति, ध्वनि, वक्रोक्ति, औचित्य और रस— का विवेचन किया गया है। **नवम्** और **दशम् अध्यायों** में क्रमशः श्रव्य काव्य एवं दृश्यकाव्य लिये गये हैं। **एकादश अध्याय** में आलोचना के स्वरूप को स्पष्ट किया गया है। **द्वादश अध्याय** में पाश्चात्य वादों पर संक्षिप्त प्रकाश डाला गया है। इस प्रकार भारतीय काव्यशास्त्र पर छात्रोपयोगी यह एक नवीन मौलिक रचना है, इससे अध्येताओं एवं छात्रों को अवश्य लाभ मिलेगा।

आकार—डिमाई

शीघ्र ही प्रकाश्य

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

112994 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नैतिक शिक्षा की आवश्यकता

डॉ० डी० डी० जोशी

प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, बी० एड० विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, पिथौरागढ़

वर्तमान समय में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में तथा-कथित भ्रष्टाचार के कारण नाना प्रकार की समस्याएँ, जटिलताएँ एवं विकृतियाँ उत्पन्न हुई हैं। जिस कारण जनसामान्य यह अनुभव करने लगा है कि आज हमारे समस्त उच्चादर्श, कुत्साओं, कुविचारों और दुर्भावनाओं के आवरण से आवृत्त हो गये हैं। हमारे पुरातन जीवन-मूल्य, जो हमारे गौरव को थाती हैं, जिनसे सारा संसार हमारी ओर आकृष्ट हुआ है, उनका वर्तमान में दमन व मर्दन हो रहा है। इन आदर्शों के संवाहन में आज घुटन का अनुभव हो रहा है। आखिर ऐसा क्यों हो रहा है? यह एक विचारणीय प्रश्न है।

समाज में भौतिकता के अतिरेक से उत्पन्न विसंगतियों, कुकृत्यों, अत्याचारों, जघन्य अपराधों आदि का यदि मूल कारण खोजा जाय, तो ज्ञात होगा कि आज हम इस जनतांत्रिक शासन-प्रणाली में स्वतन्त्रता पाकर इतने स्वच्छन्द हो गये हैं कि अपने विवेक को ताक में रखकर अपने कर्त्तव्य-बोध से बेसुध हो, भौतिक सम्पन्नता की प्राप्ति हेतु हर उचित-अनुचित कार्य करने के चक्कर में फँस गए हैं। जिन्होंने प्राचीन आदर्शों व मान्यताओं का दामन थामा भी है, वे आज एकदम पिछड़े हुए उपेक्षित तथा शक्ति-विरहित से जी रहे हैं। समाज में इन्हें प्रायः सम्मान व प्रतिष्ठा के स्थान पर उपेक्षा ही उपलब्ध हो रही है। ऐसी स्थिति में उद्भूत असन्तोष, आक्रोश का निशाना बना है—हमारी शिक्षा-व्यवस्था, जिस पर नाना प्रकार के आरोप लगाए जाते रहे हैं।

यद्यपि समग्र नागरिकों को साक्षर बनाने हेतु सरकार द्वारा समय-समय पर विविध कदम उठाए जाते रहे हैं। शिक्षा का पर्याप्त प्रसार हो रहा है। शिक्षण-संस्थाओं की समूचे देश में निरन्तर वृद्धि हो रही है। तथापि छात्रों की संख्या में अपेक्षाकृत और अधिक वृद्धि हुई है। उच्चादर्शों की प्राप्ति हेतु शिक्षा-प्रणाली में परिवर्तन लाने के अनेक प्रयास किये जा रहे हैं, पर शिक्षा का स्तर निरन्तर गिरता जा रहा है। वास्तविक ज्ञान का ह्रास हो रहा है। भले ही परीक्षा उत्तीर्ण की श्रेणियों में पूर्वापेक्षा प्रगति दृष्टिगत होती है।

"विद्या ददाति विनयम्" को सार्थक सिद्ध करने वालों की संख्या में कमी हुई है। वर्तमान शिक्षा-पद्धति से रुष्ट जनों का आरोप है कि आज जितने भी दुष्कर्म, पापाचार, जघन्य अपराध, चोरी-डकैती आदि पनप रहे हैं, वे सब प्रायः आधुनिक शिक्षा प्राप्त इन्हीं दम्भी, कुविचारी, चालाक, अवसरवादी तथाकथित गुण्डों के कुकृत्यों का परिणाम है। जो शिक्षा राष्ट्र के उत्कृष्ट कोटि के व्यवसायी, डाक्टर, इञ्जीनियर, वैज्ञानिक, साहित्यकार, कलाकार, राजनीतिज्ञ, भाषाविद् आदि के निर्माण में सक्षम है, वही शिक्षा नैतिकता का सम्बल लेकर उन सबके चरित्र निर्माण में भी मूलभूत भूमिका निभा सकती है।

आज जितनी भी समस्याएँ उमड़ी हैं, पनपी हैं, वे सब दुराचारी कर्मचारियों, अधिकारियों, व्यापारियों, प्रशासनिकों, राजनीतिज्ञों, मन्त्रियों के कुकृत्यों के कारण ही। स्वार्थपूर्ति हेतु किए गए इनके दम्भी, अविवेकी, उत्पीड़क कृत्यों के कारण ही आज समाज जर्जरित हो उठा है। इस सामाजिक विकृति को दूर करने हेतु आज के प्रबुद्ध नागरिकों का ध्यान नैतिकता की ओर आकृष्ट हुआ है।

वही शिक्षा सार्थक है जिसके मूल में चरित्र-निर्माण के बीज हैं तथा विकास-क्रम के साथ-साथ जो अंकुरित होकर पल्लवित हो सके और उन्हें पुष्पित होने का भी सुअवसर प्राप्त हो सके। अस्तु।

स्वस्थ, सुखमय, कलुषरहित जीवन-यापन हेतु नैतिक शिक्षा अनुपम औषधि-तुल्य है। नैतिक शिक्षा का तात्पर्य उस शिक्षा से है जो नागरिकों में सच्चरित्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का निर्माण करने में सक्षम हो। चरित्र ही मानव का सब कुछ है। चरित्र—मानव की अमूल्य निधि है, जिसे नैतिक शिक्षा द्वारा ही मानव-मन में उद्दीप्त किया जा सकता है। यह नैतिक शिक्षा प्राथमिक स्तर से आरम्भ होकर विश्वविद्यालय स्तर तक पहुँचते-पहुँचते शिक्षार्थी में शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक पूर्णता लाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। यह शिक्षा व्यक्ति को न केवल चरित्रवान बनाती है अपितु उसको सादगी एवं पवित्र जीवन-यापन में समर्थ भी बनाती है। वह व्यक्ति को समाज के विविध वर्गों, जातियों, धर्मों एवं सम्प्रदायों में सामंजस्य स्थापित करने की क्षमता भी प्रदान करती है।

नैतिक शिक्षा प्राप्त व्यक्ति उदार दृष्टिकोण वाला, सबसे प्रेम, सहानुभूति, नम्रता एवं अनुशासित ढंग से व्यवहार करने में समर्थ होता है। वह अपने स्वार्थ के वशीभूत हो, दूसरों का अहित नहीं करता। इस प्रकार नैतिक शिक्षा एक ओर जहाँ हमारी भावनाओं को परिष्कृत करती है, वहीं दूसरी ओर हमारे दृष्टिकोण को भी उदार बनाती है। हममें आत्मविश्वास जागृत करती है और हमें आत्मिक बल प्रदान करती है। आज के नवयुवक यह अनुभव कर रहे हैं कि यदि नागरिकों की मनोवृत्ति में परिवर्तन लाना है, पुनः उच्चादर्शों की ओर स्वाभाविक गति से अग्रसर होना है, राष्ट्र को सुख व समृद्धि की ओर ले जाना है तथा संघर्षों, अत्याचारों, जघन्य अपराधों का अन्त करना है, तो राष्ट्र के भ्रष्ट चरित्र के स्वार्थ-लोलुप, निष्कर्मण्य शिक्षकों, व्यापारियों, कर्मचारियों, अधिकारियों, नेताओं, मंत्रियों को पदच्युत कर उनके घिनौने कृत्यों पर निरंतर दृष्टि रखते हुए उनके विरुद्ध उचित कार्यवाही की जाय; साथ ही सेवा समर्पित, सदाचारी, स्वविवेकी, कर्त्तव्य-निष्ठ, उदार व्यक्तियों को पूर्ण सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान की जाय। समग्र समाज की दृष्टि नैतिक चरित्र सम्पन्न व्यक्तियों पर केन्द्रित करके समाज में नवीन जागृति लायी जाय। इस हेतु जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में कार्यरत व्यक्तियों के नैतिकता का समय-समय पर यथोचित मूल्यांकन करना आवश्यक है, क्योंकि चरित्र ही व्यक्ति के जीवन में उत्थान-पतन, सफलता-असफलता का द्योतक है।

नैतिक शिक्षा आत्मोन्नयन के साथ-साथ राष्ट्र के उत्थान में भी महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकती है। गांधी, टैगोर, विनोबा भावे, स्वामी विवेकानन्द आदि दार्शनिकों के नैतिक सन्देशों से प्रेरित शिक्षा सचमुच नागरिकों की मनोवृत्ति परिवर्तित करने में सक्षम हो सकती है। जब तक नैतिकता के उदात्त गुण शिक्षक में समाहित नहीं होते, तब तक उनका छात्रों में प्रतिबिम्बित होना कठिन है। कथनी और करनी में एकरूपता लाना बहुत आवश्यक है। इसी से व्यक्ति की कर्त्तव्यनिष्ठा उजागर हो पाती है।

हम चाहे किसी भी क्षेत्र में काम करें। जब तक हममें समर्पित भावना, कर्त्तव्यनिष्ठता, ईमानदारी, सच्चाई अन्तर्निहित नहीं होती, तब तक हमारे लिए अपनीत व्यवसाय मात्र उदरपूर्ति का एक साधन रह जाता है और यह उदरपूर्ति अथवा स्वार्थपूर्ति की पिपासा तो कभी शान्त नहीं होती। जिस कारण विवश होकर अनेक अनैतिक कार्यों की ओर अग्रसर होना पड़ता है।

गीता के माध्यम से श्रीकृष्ण ने अर्जुन को जो ज्ञान दिया है, उससे अर्जुन को अपने कर्त्तव्य का बोध हुआ, उसी प्रकार आज नैतिक शिक्षा हमारे मोह को भंग करके हमें कर्त्तव्य-पथ पर अग्रसर होने को प्रेरित करने में सक्षम है। त्याग, तपस्या, साधना व परहित-कामना से ओतप्रोत व्यक्तित्व का यदि निर्माण करना है और राष्ट्र का मनोबल ऊँचा उठाना है तो नैतिक शिक्षा को व्यावहारिक स्वरूप प्रदान करना होगा तथा समय-समय पर उसकी उपलब्धि का आकलन भी करना होगा। नैतिक शिक्षा का मात्र सैद्धान्तिक ज्ञान ही पर्याप्त नहीं है अपितु उसे व्यावहारिक स्वरूप प्रदान करना भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है। यदि इस नैतिक शिक्षा को शासन-प्रशासन ही नहीं अपितु समाज का प्रत्येक नागरिक गम्भीरता से व्यावहारिक जीवन में रूपान्तरित कर सके, तो यह राष्ट्र की एक महान उपलब्धि होगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोविज्ञान के श्रेष्ठ प्रकाशन

मनोविज्ञान की पद्धतियाँ एवं सिद्धान्त
डा० जे० डी० शर्मा २५·००

नैदानिक-मनोविज्ञान
डा० रामपाल सिंह वर्मा २५.००
प्रा. ले. : डा० एम. ए. शाह पु० सं० ३५.००

मनोविज्ञान के समकालीन सम्प्रदाय
डा० आर० के० ओझा १०.००

मनोविज्ञान के सम्प्रदाय
डा० रामपालसिंह वर्मा ६.५०

आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान २०.००
डा० प्रीती वर्मा, डा० श्रीवास्तव पु० सं० ३०.००

सामान्य मनोविज्ञान
डा० एस० एस० माथुर २०.००

सामान्य मनोविज्ञान की रूपरेखा
भाई योगेन्द्रजीत १०.००

असामान्य मनोविज्ञान के मूल आधार २१·२५
डा० लाभसिंह, डा० तिवारी पु० सं० ३२·००

असामान्य मनोविज्ञान (बी० ए० के लिए)
डा० लाभसिंह, डा० गोविन्द तिवारी २०.००

समाज मनोविज्ञान : प्रारम्भिक अध्ययन
डा० एस० एस० माथुर १४.००

समाज मनोविज्ञान (For Advanced Study)
डा० एस० एस० माथुर २५.००

शिक्षा-मनोविज्ञान २८.००
डा० एस० एस० माथुर पु० सं० ४०.००

शिक्षा-मनोविज्ञान (संक्षिप्त संस्करण)
डा० एस० एस० माथुर १७.००

शिक्षा-मनोविज्ञान
प्रो० पी० डी० पाठक १६.४०

शिक्षा-मनोविज्ञान
डा० रामपालसिंह वर्मा, १८.००
डा० राधावल्लभ उपाध्याय पु० सं० २८.००

Educational Psychology 25.50
Dr. S. S. Mathur Lib. edn. 40.00

बाल मनोविज्ञान : बाल विकास
डा० प्रीती वर्मा, डा० श्रीवास्तव २२.५०

बाल मनोविज्ञान
भाई योगेन्द्रजीत १७.००

बाल विकास तथा पारिवारिक सम्बन्ध
डा० सरयूप्रसाद चौबे १५·००

सांख्यिकी के मूल तत्त्व
डा० एच० के० कपिल २७·७०

मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी
डा० प्रीती वर्मा, डा० श्रीवास्तव १७·००

प्रारम्भिक सांख्यिकी
डा० प्रीती वर्मा, डा० श्रीवास्तव १०·००

शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग
सुरेश भटनागर ७·००

शिक्षा में सरल सांख्यिकी
डा० रामपालसिंह वर्मा ८·००

शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक अनुसंधान के मूलाधार
डा० गोविन्द तिवारी १८·००

मनोविज्ञान शोध-विधियाँ
प्रो० एम० ए० हकीम, बिपिन अस्थाना १५·००

शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्त्व
एस० पी० सुखिया
वी० पी० मेहरोत्रा, आर० एन० मेहरोत्रा २०·००

आधुनिक प्रयोगात्मक मनोविज्ञान २४·००
डा० प्रीती वर्मा, डा० श्रीवास्तव पु० सं० ३५·००

प्रयोगात्मक मनोविज्ञान
प्रो. एम. ए. हकीम, डा० बिपिन अस्थाना १४·००

औद्योगिक मनोविज्ञान २०·००
डा० आर० के० ओझा पु० सं० २८·००

विकासात्मक मनोविज्ञान
भाई योगेन्द्रजीत १५.००

व्यावहारिक मनोविज्ञान
डा० रामपालसिंह,
प्रो० सत्यदेवसिंह, डा० देवदत्त शर्मा २०.००

शैक्षिक मूल्यांकन
डा० रामपालसिंह वर्मा १०·००

मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन
डा० अग्रवाल, डा० बिपिन अस्थाना १८·००

Measurement & Evaluation in Psychology & Education
Dr. Bipin Asthana, Dr. Agarwal 25.00
Lib. edn. 35.00

मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सरल मूल्यांकन
डा० रामपाल सिंह वर्मा ६·००

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा-२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा : तब और अब

(श्रीमती) कृष्णा माहेश्वरी
संगीत प्राध्यापिका, श्री माहेश्वरी गर्ल्स इण्टर कॉलिज, अलीगढ़

शिक्षा का अर्थ कक्षाध्यापन नहीं है। कक्षाध्यापन शिक्षा का अत्यन्त ही संकुचित आशय है। शिक्षा का अर्थ कक्षा शिक्षण से कहीं अधिक है। शिक्षा जन्म से मृत्यु तक चलती है, प्रत्येक अनुभव शिक्षा का स्रोत है। प्रकृति द्वारा दी गई अन्तर्निहित शक्तियों का बालक में स्वाभाविक विकास ही शिक्षा का प्रमुख कार्य है। शिक्षा गतिशील प्रक्रिया है; बालक को प्रगति के मार्ग पर आगे बढ़ने को तत्पर बनाती है। बालक समाज में रहता है, समाज से पृथक् उसकी शिक्षा अर्थहीन है। इस प्रकार सामाजिक तत्त्व से विहीन शिक्षा का कोई महत्त्व भी नहीं रह जाता। अध्यापन-अधिगम प्रक्रिया में अध्यापक तथा बालक—दोनों ही सक्रिय होते हैं; दोनों अपने विचारों के आदान-प्रदान से सीखते हैं। किसी एक के भी निष्क्रिय होने पर कार्य पूरा नहीं हो सकता। दूसरे शब्दों में, बालक के निष्क्रिय होने पर शिक्षक बालक के दिमाग में ज्ञान नहीं ठूँस सकता तथा शिक्षक के निष्क्रिय होने पर बालक शिक्षक से शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकता। इसीलिए इसे द्विमुखी प्रक्रिया कहा गया है।

सामान्यतया शिक्षा का अर्थ लिया जाता है—मानव का मानसिक विकास, अपने उत्तरदायित्व का ज्ञान, विचारों में मतभेद होने पर बाहुबल से नहीं वरन् तर्क शक्ति से सहमति पर आना, बड़े स्वार्थ के लिए छोटे स्वार्थ का त्याग, विश्व-बन्धुत्व की भावना का विकास। संक्षेप में, आज शिक्षा का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है—शिक्षार्थी को योग्य प्रतिस्पर्द्धी बनाना जिससे वह जीवन की प्रतिस्पर्द्धा में प्रथम स्थान पर विजेता बन सके। आज बालक को कोई भी योगी या संन्यासी नहीं बनाना चाहता; पर हम उसमें सीखने की उत्कण्ठा, आत्म-प्रकाश, आत्मिक सन्तोष की भावना भरना चाहते हैं जिससे वह न केवल अपनी भौतिक आवश्यकताएँ पूरी कर सके बल्कि अपने संगी-साथियों के दुःख-दर्द में भी हाथ बँटा सके।

कौटिल्य ने शिक्षा का प्रयोजन आत्मवान् अर्थात् स्वनियन्त्रण की प्रक्रिया का अभ्यास माना है। मनसा-वाचा-कर्मणा से स्वयं पर नियन्त्रण पाया जाय। स्व-नियन्त्रण पूर्ण मानव से क्या आशय है? आज के सन्दर्भ में इन शब्दों का सर्वाधिक महत्त्व है। शिक्षा-विधि, पाठ्यक्रम, विषय सभी महत्त्वहीन हो जाते हैं जब शिक्षा का उद्देश्य ही बदल दिया जाय।

टगोर ने वातावरण के निकट सम्पर्क में दी जाने वाली शिक्षा-व्यवस्था का समर्थन किया है। उनके अनुसार सम्पूर्ण प्रकृति तथा सम्पूर्ण जीवन से व्यक्ति में तादात्म्य की भावना का विकास ही शिक्षा का उद्देश्य हैं। प्रकृति के साथ इस प्रकार का एकत्व सर्वांग-पूर्ण व्यक्तित्व के विकास के लिए आवश्यक माना है। वे चाहते थे कि शिक्षा द्वारा बालक में यह क्षमता विकसित हो जाय जिससे वह प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित कर सके और समाज में मानवोचित व्यवहार कर सके। उनके अनुसार एक आदर्श शाला मानव बस्ती से दूर एकाकी एवं निर्जन स्थान में, मुक्त आस-मान के नीचे, पेड़-पौधों के बीच होना चाहिए। उनका दृढ़ विश्वास है कि मानव में प्रकृति की ओर एक गाढ़ा आकर्षण होता है जो जन्म से विद्यमान है, कहीं सीखा नहीं है; बालक प्रकृति को देखकर प्रसन्न होता है। हरे-भरे खेत, खुला आकाश, घनघोर बादल, ठण्डी वायु, लहराते हुए पेड़-पौधे बालक की आत्मा तथा शरीर दोनों को अपनी ओर खींचते हैं। अतः ऐसे सहज वातावरण में ही उसकी सर्वाधिक उत्तम शिक्षा हो सकती है। वे चाहते हैं कि बालक सरलता से ज्ञान प्राप्त कर आत्मसात कर ले, वे बालक के लिए पूर्ण एवं घनी अनुभवों का आग्रह करते हैं जिससे बालक सहज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ढंग से शिक्षा प्राप्त कर ले। प्रचलित पाठ्यक्रम का विरोध करने का कारण ही यह है कि वह निम्न स्तर की उपयोगिता के उद्देश्यों से दिशा पाता है। उनके अनुसार पाठ्यक्रम में कला-कौशल, नृत्य, गायन, अभिनय, चित्रकला को अभिन्न स्थान दिया जाना चाहिए। वे शिक्षण विधियों को वास्तविक जीवन की स्थितियों पर आधारित करने का आग्रह करते हैं। संक्षेप में, शिक्षा का उद्देश्य बालक की अन्तर्निहित शक्तियों का विकास करके उसके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना है।

गाँधीजी ने शिक्षा तथा साक्षरता में अन्तर स्पष्ट किया है। वे विद्यालय में कराये जाने वाले अक्षर-ज्ञान से सन्तुष्ट नहीं थे—इसे ही उन्होंने साक्षरता कहा है। उनके अनुसार वर्तमान शिक्षा-पद्धति मानव को निम्न प्रकार का जीवन बिताने को बाध्य करती है। वे बालक को व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास शिक्षा का प्रयोजन मानते हैं। यह सम्पूर्ण विकास मानसिक, भौतिक, दैहिक ही समग्र विकास है। शिक्षा के माध्यम से बालक को सिखाया जाना चाहिए कि किस प्रकार पाशविक प्रवृत्तियों पर निम्न उत्तेजनाओं पर नियन्त्रण पाया जा सकता है और समाज-सेवा की ओर अग्रसर हुआ जा सकता है। 'हिन्द स्वराज' में उन्होंने शिक्षा का अर्थ इन इन शब्दों में स्पष्ट किया है—

"शिक्षा का अर्थ क्या है ? अगर इसका अर्थ केवल अक्षर-ज्ञान ही हो, तो वह एक हथियार बन जाती है। जिस हथियार से आपरेशन करके एक रोगी को अच्छा किया जाता है उसी हथियार से दूसरों की जान भी ली जा सकती है। अक्षर-ज्ञान के बारे में भी यही बात है, बहुत-से लोग इसका दुरुपयोग करते हैं। यह बात ठीक हो तो यह साबित होता है कि अक्षर-ज्ञान से दुनियाँ की लाभ के बजाय हानि होती है।"

उद्देश्य तो बालक का विकास ही है। गांधीजी ऐसे स्वाभाविक वातावरण में शिक्षा देने पर बल देते हैं जिसमें प्रकृतिदत्त बालक की अन्तर्निहित शक्तियों का विकास हो। उनका विश्वास है कि दस्तकारी के माध्यम से वे प्रकृति के और निकट आ सकते हैं। गाँधीजी बालक को समाज से दूर ले जाकर नहीं पढ़ाना चाहते थे तथा न ही ऐसे वातावरण में शिक्षा देना चाहते थे जिसमें केवल प्रकृति ही शिक्षक हो। संक्षेप में, वे परम्परागत शिक्षा का विरोध करते हैं, वे प्राकृतिक सुन्दरता का बालक को अनुभव कराना चाहते हैं। वे बालक के केन्द्रित शिक्षा में कार्य करके सीखने पर बल देते हैं; सादे जीवन को महत्त्व देते हैं तथा पुरजोर स्वानुशासन का समर्थन करते हैं।

श्री अरविन्द भी, जहाँ तक शिक्षा के अर्थ का प्रश्न है, महात्मा गांधी के बहुत निकट हैं। श्री अरविन्द भी बालक के व्यक्तित्व के चहुँमुखी विकास को ही शिक्षा का उद्देश्य मानते हैं। उन्होंने सर्वाधिक बल स्वास्थ्य पर दिया। फलतः पाठ्यक्रम में स्वास्थ्य शिक्षा को प्रमुख स्थान दिया गया। बालकों के पास असीम शक्ति होती है जिसे वे अच्छी व बुरी दोनों प्रकार की गतिविधियों में खर्च कर सकते हैं। शिक्षा को इस पर ध्यान देना चाहिए कि बालक की शक्ति सामाजिक और व्यक्तिगत भलाई के कार्यों की ओर मोड़ी जाय। वे मानसिक विकास पर भी बल देते हैं। उनके अनुसार शिक्षा का महत्त्वपूर्ण कार्य ही आध्यात्मिक विकास है।

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार बालक बाहर से कुछ नहीं सीखता है। प्रकृति ने जो शक्तियाँ बालक को प्रदान की हैं, बालक उन्हीं की खोज करता है। वे मानसिक विकास के लिए भी शारीरिक शिक्षा जरूरी मानते हैं। बौद्धिक तथा आध्यात्मिक विकास को भी वे शिक्षा में महत्त्वपूर्ण स्थान देते हैं। इस प्रकार उन्होंने भी शिक्षा का उद्देश्य चरित्र-निर्माण ही प्रतिपादित किया।

माध्यमिक शिक्षा आयोग (१९५२-५३) के अनुसार, शिक्षा का प्रयोजन उत्पादक नागरिक, प्रजातन्त्र के गुणों का विकास, व्यावसायिक दक्षता, व्यक्तित्व का विकास तथा नेतृत्व के गुणों का विकास करना है। एक प्रजातान्त्रिक व्यवस्था तब तक सफलतापूर्वक कार्य नहीं कर सकती जब तक कि नागरिकों को अपना उत्तरदायित्व वहन करने की शिक्षा न मिले। इस प्रकार की शिक्षा की नींव अनुशासन तथा नेतृत्व पर होगी। शिक्षा-आयोग (१९६४-६६) के अनुसार शिक्षा को जीवन, उसकी आवश्यकताओं तथा आकांक्षाओं से जोड़ी जानी चाहिए। शिक्षा को राष्ट्रीय लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक परिवर्तन का सबल घटक बनाया जाना चाहिए। इन प्रयोजनों के लिए शिक्षा-पद्धति को इस तरह मोड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाना चाहिए कि उत्पादन बढ़े, राष्ट्रीय एकता सुदृढ़ हो, आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में तेजी आये तथा नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों का विकास हो।

शिक्षा को उत्पादन से जोड़ने के लिए विज्ञान की शिक्षा, कार्यानुभव तथा शिक्षा के व्यवसायीकरण की व्यवस्था पर जोर दिया जा रहा है। राष्ट्रीय व सामाजिक सेवा योजना सभी स्तरों पर सभी विद्यार्थियों पर लागू की जा रही है। शिक्षा एक महत्त्वपूर्ण लक्ष्य राष्ट्रीय चेतना को बढ़ावा देना भी है। हमारी सांस्कृतिक धरोहर को छात्र समझें तथा उस पर गर्व कर सकें।

ज्ञान का विस्फोट बड़ी तेजी से हो रहा है तथा उसी के सन्दर्भ में सामाजिक परिवर्तन होते हैं। शिक्षा अब केवल ज्ञान प्रदान करने या सूचना देने मात्र तक ही सीमित नहीं है वरन् जिज्ञासा उत्पन्न करने, उचित रुचियों, प्रवृत्तियों तथा मूल्यों का विकास तथा स्वतन्त्र अध्ययन व चिन्तन करने की क्षमता विकसित करने से मुख्यतः जुड़ी हुई है। इन सब बातों के साथ ही शिक्षा-प्रणाली को मूलभूत रूप से सामाजिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों के विकास पर जोर देना चाहिए। निजी तथा सरकारी सभी शिक्षण-संस्थाओं में इन मूल्यों की शिक्षा, धार्मिक तथा नैतिक शिक्षण समिति की सिफारिशों के अनुसार आरम्भ करना चाहिए।

अनेक धर्मों वाले लोकतान्त्रिक राज्य के लिए आवश्यक है कि वह सभी धर्मों के सहिष्णुतापूर्ण अध्ययन को प्रोत्साहित करे ताकि उसके नागरिक एक-दूसरे को और अधिक अच्छी तरह से समझ सकें तथा शान्तिपूर्ण ढंग के साथ रह सकें। मुख्य धर्मों में से प्रत्येक के सम्बन्ध में भली प्रकार सावधानी से चुनी हुई जानकारी देने वाला पाठ्यक्रम, एक अभिन्न अंग के रूप में, शिक्षण-संस्थाओं के दैनिक शैक्षिक कार्यक्रम का अंग बनना चाहिए।

आगरा विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमानुसार—

संस्कृत गद्य रत्नाकर : दिग्दर्शन

[आगरा विश्व० प्रकाशन सं० ७०]

लेखक

डा० रामकिशोर शर्मा
प्रवक्ता : संस्कृत विभाग
एन.ए.एस. कालिज, मेरठ

डा० सरोज खण्डेलवाल
प्रवक्ता, संस्कृत विभाग
हिन्दू कालेज, सोनीपत

- प्रस्तुत पुस्तक में विद्यार्थियों के लिये सभी प्रकार का उपयोगी समीक्षात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है। यथा—पाठों का सारांश, शब्दार्थ, अर्थ, विशेष, सूक्तियों की व्याख्या, पाठों के सारांश की समीक्षा एवं गद्य रचनाकारों पर समीक्षा प्रश्नोत्तर में देकर पुस्तक को अध्ययन एवं परीक्षा दोनों ही दृष्टिकोण से विद्यार्थियों के लिए उपयोगी बनाने की चेष्टा की गई है।
- प्रस्तुत दिग्दर्शन गद्य रत्नाकर की अन्य टीकाओं एवं कुंजियों की अपेक्षा अनेक विशिष्टताओं से परिपूर्ण है; पुस्तक का अवलोकन करने पर छात्रवर्ग को इसका सहज ही अनुभव होगा कि वह उनके लिये कितनी परीक्षा-उपयोगी है। मूल्य : 8.00

"तारापथ" और सुमित्रानन्दन पंत

—श्री राजनाथ शर्मा

संक्षिप्त कामायनी की टीका

—डा० तारकनाथ बाली

आगरा विश्वविद्यालय के एम. ए. हिन्दी उत्तरार्द्ध परीक्षा के पंचम प्रश्नपत्र के पाठ्यक्रमानुसार उक्त दोनों टीकाएँ सरल भाषा में विद्वान लेखकों द्वारा लिखी गई हैं।

आलोचना, शब्दार्थ, भावार्थ, विस्तृत व्याख्या एवं समीक्षा सभी एम. ए. स्तर के विद्यार्थियों के अनुकूल।

प्रत्येक पुस्तक का मूल्य मात्र : 4·00

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

कृपया ध्यान दें !

'साहित्य परिचय' के सदस्यों से निवेदन

'साहित्य-परिचय' आपकी अपनी पत्रिका है। गत 17 वर्षों से यह आपकी सेवा में कार्यरत है। कृपया इसके स्वयं सदस्य बनिये तथा अपने परिचितों को इसका सदस्य बनाइए। वर्ष भर में 250 पृष्ठ का एक विशेषांक इसी वार्षिक शुल्क में निःशुल्क प्राप्त होता है। आज ही 15.00 रु० धनादेश द्वारा भेजकर आगामी वर्ष 83 (जनवरी—दिसम्बर) के लिये सदस्य बनें। विशेषांक को रजिस्ट्री से प्राप्त करने के इच्छुक सज्जन 18.00 रु० का धनादेश भेजें। जिनकी सदस्यता वर्ष 1982 में समाप्त हो गयी है, वह नवीनीकरण के लिये अपना अगले वर्ष का वार्षिक शुल्क शीघ्र ही भेजें।

—व्यवस्थापक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोविज्ञान के क्षेत्र में एक और नवीन मौलिक कृति अब उपलब्ध है !

व्यावहारिक मनोविज्ञान

[APPLIED PSYCHOLOGY]

लेखक

डा० रामपालसिंह **प्रो० सत्यदेवसिंह**

जियालाल शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान, अजमेर

डा० देवदत्त शर्मा

राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

☆ ☆ ☆

● आज यह सर्वत्र स्वीकार किया जाने लगा है कि मनोविज्ञान न केवल एक सैद्धान्तिक विषय ही है, अपितु इसका व्यावहारिक पक्ष भी उतना ही प्रबल है। फलतः मनोविज्ञान के व्यावहारिक पक्ष का भी मनोवैज्ञानिकों ने विकास किया और उन्होंने यह प्रयास किये कि मनोविज्ञान के सिद्धान्तों का मानव जीवन के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में प्रयोग किया जा सके। इनके प्रयासों के फलस्वरूप ही मनोविज्ञान का आज मानव जीवन के अनेक क्षेत्रों में प्रयोग हो रहा है। आज मनोविज्ञान के सिद्धान्तों का हम शिक्षा, समाज, उद्योग, मनोपचार, व्यापार, व्यवसाय तथा अपराध आदि अनेक क्षेत्रों में प्रयोग कर रहे हैं। प्रस्तुत पुस्तक में उन क्षेत्रों की चर्चा की गई है जिनमें मनोविज्ञान के सिद्धान्तों का प्रयोग हो रहा है।

● प्रस्तुत पुस्तक में मनोविज्ञान के व्यावहारिक पक्षों का वर्णन निम्न सात खण्डों के अन्तर्गत 36 अध्यायों में अत्यन्त ही सरल तथा बोधगम्य शैली में किया गया है।

विषय-क्रम

खण्ड 1—मापन एवं मूल्यांकन—1. मूल्यांकन का अर्थ, 2. बुद्धि प्रकृति तथा परीक्षा, 3. रुचि, परीक्षण, 4. निष्पत्ति परीक्षण, 5. व्यक्तित्व परीक्षण, 6. अभियोग्यता परीक्षण, 7. अभिवृत्ति परीक्षण।

खण्ड 2—निर्देशन—8. निर्देशन का अर्थ, 9. निर्देशन के प्रकार, 10. व्यावसायिक निर्देशन, 11. शैक्षिक निर्देशन, 12. निर्देशन कार्य-विधि का संगठन।

खण्ड 3—शिक्षा-मनोविज्ञान—13. मनोविज्ञान का अर्थ, 14. शिक्षा-मनोविज्ञान, 15. अधिगम का अर्थ, 16. अधिगम के नियम, 17. अधिगम का अर्थ, 18, अधिगम एवं प्रेरणा।

खण्ड 4—नैदानिक मनोविज्ञान—19. नैदानिक मनोविज्ञान का अर्थ, 20. मानसिक अस्वस्थता के लक्षण तथा संलक्षण, 21. मानसिक रोगों के कारण, 22. मानसिक रोगों के प्रकार, 23. मानसिक रोगों की उपचार विधियाँ।

खण्ड 5—औद्योगिक मनोविज्ञान—24. औद्योगिक मनोविज्ञान का अर्थ, 25. औद्योगिक वातावरण, 26. थकावट, नीरसता तथा दुर्घटनाएँ, 27. हड़ताल, तालेबन्दी तथा संघर्ष, 28. कर्मचारी प्रशिक्षण तथा श्रम-कल्याण।

खण्ड 6—विज्ञापन एवं प्रचार—29. विज्ञापन का अर्थ, 30. निपुणता, 31. विक्रय, 32. कार्य विश्लेषण, 33. प्रचार।

खण्ड 7—समाज मनोविज्ञान—34. समाज मनोविज्ञान का अर्थ, 35. भीड़ एवं श्रोतागण, 36. सामाजिक तनाव आदि।

आकार : डिमाई पृष्ठ : 496 मूल्य : 20·00

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा में भारतीयता

डॉ० प्रभाकर सिंह

यह निर्विवाद तथ्य है कि राष्ट्र के निर्माण में शिक्षा का महत्त्व सर्वोपरि है। आज का बालक, कल का नागरिक होगा। अच्छा नागरिक वही बालक बनेगा जिसमें भारतीयता के गुण कूट-कूट कर भरे होंगे। यह कोई जरूरी नहीं है कि एक अच्छा व्यक्ति एक आदर्श नागरिक भी हो। आदर्श नागरिक तो वही व्यक्ति कहलायेगा जिसके अन्दर समाज एवं राष्ट्र के प्रति अनन्य भावात्मक लगाव, सेवा-भावना और सहभागिता की प्रखर आकांक्षा होगी। राष्ट्र के सुख-दुःख उसके सुख-दुःख होंगे। इस अभीष्ट की प्राप्ति बालक में भारतीयता की सही भावना जाग्रत करके ही हो सकती है। अतएव शिक्षक, विषय-वस्तु एवं शिक्षा-व्यवस्था—तीनों को हमें ऐसा रूप देना होगा कि हम बालक के अन्दर भारतीयता के गुणों का विकास कर सकें। कहना न होगा कि आज शिक्षा का हमारा लक्ष्य मात्र ज्ञान प्राप्त करना भर है। सच तो यह है कि हमें इसकी भी चिन्ता नहीं होती है कि जो ज्ञान प्राप्त कराया जा रहा है वह कहाँ तक समयोपयोगी है और कितना अद्यतन।

शिक्षक की भूमिका

शिक्षा की व्यवस्था कैसी भी हो, किन्तु शिक्षक उस व्यवस्था की धुरी होता है। एक सुयोग्य शिक्षक का उसके छात्रों पर जो प्रभाव पड़ता है उसके बड़े दूरगामी परिणाम होते हैं और स्वयं शिक्षक भी यह नहीं जान सकता है कि उसके प्रभाव का कहाँ और कब अन्त होगा। अपनी दिनचर्या, कार्य, व्यवहार और अध्यापन-शैली से वह जो प्रभाव अपने छात्रों पर डालता है वह देश के भावी नागरिकों के निर्माण का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कार्य है। संसार के महापुरुषों के निर्माण में उनकी माता या शिक्षक की बड़ी अहम् भूमिका पाई जाती है। शिक्षा-संस्था एक ऐसा स्थान है जहाँ पर मानव की पारस्परिक क्रिया सतत् चलती रहती है और अगर कुशल शिक्षक उन्हें सुविचारित दिशा दे सके, उनमें संस्कार ला सके तो ऐसी शिक्षा-संस्था से निकलने वाले छात्र निश्चय ही भारतीयता के गुणों से ओत-प्रोत होंगे। छात्रों की पारस्परिक क्रिया सम्प्रेषण से आगे बढ़ती है। यदि शिक्षक सम्प्रेषण के प्रति सचेत रहे, तो धीरे-धीरे वह एक ऐसे वातावरण का निर्माण करने में सहायक होगा, जो उसके छात्रों को भारतीयता के रंग में रँग देगा। परन्तु यहीं प्रश्न उठता है कि भारतीयता से हमारा अभिप्राय क्या है। भारतीयता भारतीय होने की पहचान है, जिसकी जड़ें उसके अतीत में होती हैं। वर्तमान का युगबोध और स्वर्णिम भविष्य की कल्पना नागरिकों को प्रेरणा देती है कि वह अपनी इस अस्मिता को बनाये रक्खें। भारतीय होने का गौरव, उसके विचारों, कार्यों और आचरण को किसी विदेशी से उसे सहज ही में अलग करेगा। छात्रों में भारतीयता का भाव जगाने के लिए शिक्षक को निरन्तर प्रयत्नशील रहना पड़ेगा। उसे यह नहीं भूलना चाहिए कि वह छात्रों की वर्ष में एक बार परीक्षा लेता है किन्तु उसके छात्र और समाज हर समय उसकी परीक्षा लेते रहते हैं। अतएव शिक्षा-कार्य में उन्हीं को लगाया जाय, जो मन, कर्म और वाणी से माँ भारती की सेवा के लिए समर्पित हों और इस चुनौती को सच्चे मन से स्वीकार करते हों कि उन्हें अनेक परेशानियों के रहते हुए भी स्वस्थ, स्पृहणीय और एकीकृत भारतीय समाज का निर्माण करता है।

विषयवस्तु

हमारी शिक्षा-संस्थाओं में प्रचलित पाठ्यक्रम हमारी संस्कृति एवं वर्तमान आवश्यकताओं के अनुकूल ही होना चाहिए। भारतीय संस्कृति के मूलाधार सहिष्णुता, समन्वय, संयम और बन्धुता की भावना है। भारतीय संस्कृति भोग-प्रधान नहीं बल्कि त्याग-प्रधान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। पाठ्य-पुस्तकों से भारतीय संस्कृति के ये ही स्वर मुखरित होने चाहिये। शैक्षिक श्रव्य एवं दृश्य सामग्री सभी प्रकार के साधनों से इन्हीं उदात्त भारतीय आदर्शों को उजागर करना चाहिये। प्राचीन काल से हमारा समाज जाति-प्रथा एवं छुआछूत की बुराई से ग्रस्त है। दहेज-प्रथा एवं दवाब से धर्म-परिवर्तन की वर्तमान समस्या कम भयावह नहीं है। इन सामाजिक बुराइयों को हम कानून बनाकर नहीं दूर कर सकते हैं। इसके लिए हमें समाज को धीरे-धीरे बदलना होगा। अपेक्षित सामाजिक मानसिकता के निर्माण को ध्यान में रखकर हमें पाठ्यक्रम की विषयवस्तु में आमूल परिवर्तन करने की आवश्यकता है। भारतीय संस्कृति सर्व-धर्म-समभाव में विश्वास करती है। अतएव पाठ्यक्रम में ऐसे विवादास्पद प्रकरण नहीं रहने चाहिए जो कि किसी जाति-विशेष की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँचायें। इसी प्रकार हमें यह भी ध्यान रखना होगा कि पाठ्य-क्रम में ऐसे राजनीतिक नेताओं के चरित्र या कार्यों का समावेश न हो जो कि विवादास्पद हों। प्रायः यह देखा जाता है कि राजनीतिक दल अपने नेताओं की छवि जनमानस में बिठाने के लिए पाठ्यक्रम में परिवर्तन कराते रहते हैं। हमें इस प्रलोभन से बचना चाहिये। हमें अपने हर प्रकार के पाठ्यक्रम को यथासम्भव राष्ट्रीय उद्देश्यों के अनुकूल निर्मित करना चाहिये। हमने देश के शासन के लिए जनतन्त्रीय व्यवस्था अंगी-कार की है। अतएव, स्वतन्त्रता, समानता, बन्धुता, राष्ट्रीय एकता के गुणों के विकास हैतु पाठ्यक्रम को एक नया रूप देना होगा। हमें समाज को एक नया नेतृत्व प्रदान करना है। नेतृत्व के गुणों का विकास शिक्षण-संस्थाओं में आसानी से किया जा सकता है। देश-विदेश के उन महापुरुषों का जीवन-चरित्र, प्रसंग, घटना या विशेष योगदान हमारे पाठ्यक्रम का विषय होना चाहिए जिससे कि शिक्षार्थियों को नेतृत्व की प्रेरणा मिल सके। कोई भी पाठ्यक्रम अपूर्ण ही कहा जावेगा यदि वह छात्रों में नैतिक चेतना का समुचित विकास नहीं करता है। नैतिक चेतना का विकास शिक्षण की अपेक्षा व्यवहार का विषय अधिक है। पाठ्यक्रम में नैतिकता से सम्बन्धित सामग्री शामिल तो की जाय लेकिन प्रयास इस बात का होना चाहिए कि शिक्षक के आचरण और और विद्यालय की व्यवस्था से नैतिकता का आदर्श छात्रों को सतत् प्रेरणा देता रहे। प्रशासन की गोप-नीयता, कथनी और करनी का अन्तर विद्यालय के वातावरण को दूषित करते हैं। विद्यालय की व्यवस्था खुली पुस्तक के समान छात्रों के लिए होनी चाहिए और शिक्षकगण और प्रबन्धतन्त्र—दोनों नैतिक वाता-वरण और सद्आचरण के प्रति सतत् जागरूक रहें। भारतीय संस्कृति में नैतिकता का बड़ा महत्त्व रहा है। आवश्यकता इस बात की है कि ऐसे प्रेरणास्पद प्रसंगों की जानकारी छात्रों को बराबर दी जाय और अच्छी नैतिक परम्परायें विद्यालय में स्थापित की जायँ। वैदुष्य, विनम्रता और नैतिकता शिक्षा-संस्था के वातावरण में सर्वत्र व्याप्त रहनी चाहिए।

शिक्षा-व्यवस्था

भारतीय संस्कृति संसार को ईश्वरमय मानती है तो फिर जातीय या वर्गीय आधार पर शिक्षा-संस्थाओं की स्थापना कहाँ तक उचित है? अल्पसंख्यकों और बहुसंख्यकों के आधार पर शिक्षा-व्यवस्था में जो भेद उत्पन्न किया जा रहा है, वह भारतीयता के विपरीत है। निजी शिक्षा-संस्थाओं, सरकारी शिक्षा-संस्थाओं, अल्पसंख्यक शिक्षा-संस्थाओं की व्यवस्था समाप्त करके हमें जनतान्त्रिक आधार पर अपनी आवश्यकतानुसार शिक्षा-व्यवस्था का पुनर्गठन करना चाहिए। शिक्षा-व्यवस्था में ग्रामीण एवं नगरीय जो अन्तर पाया जाता है, उसे भी हमें समाप्त करना होगा। सभी भारतीयों के लिए एक शिक्षा-व्यवस्था होगी; चाहे ग्रामवासी हो, चाहे नगरवासी और चाहे किसी जाति और धर्म का। शिक्षा में राजनीति का प्रवेश बन्द होना चाहिए। शिक्षा-संस्थाओं में योग्य शिक्षक ढूँढ़-ढूँढ़ कर हर जाति, सम्प्र-दाय और धर्म के रखे जायँ जिससे कि शिक्षा-संस्थाएँ वास्तविक रूप में समाज का प्रतिनिधित्व कर सकें। आर्थिक आधार पर छात्रों को सहायता दी जाय। जो छात्र प्रदत्त सहायता का सदुपयोग न कर सकें, उन्हें उससे वंचित किया जाय। अन्य किसी आधार; जैसे—पिछड़ापन, अनुसूचित जाति या अल्पसंख्यक जाति—पर दी जाने वाली आर्थिक सहायता बन्द करके शैक्षिक सुविधा समान रूप से सभी को दी जाय। ज्यादा अच्छा हो कि दसवीं कक्षा तक सभी को अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा दी जाय।

शिक्षा-व्यवस्था में शिक्षक, छात्रों एवं प्रबन्धकों की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भागीदारी को प्रोत्साहन दिया जाय। इससे जनतान्त्रिक मूल्य विकसित होंगे; बच्चे आगे चलकर अच्छे नागरिक बनेंगे; उनमें सहयोग, त्याग, सार्वजनिक सेवा और उत्तरदायित्व की भावना उत्पन्न होगी; साथ ही प्रबन्धतन्त्र में ऐसे लोग रहें जो इन मूल्यों में विश्वास करते हों।

राष्ट्रभाषा का महत्त्व

राष्ट्रभाषा और भारतीयता एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। दोनों का सम्बन्ध अन्योन्याश्रित है। राष्ट्रभाषा में दी गई शिक्षा ही भारतीयता के गुण बालक में भरेगी; संस्कृति के प्रति लगाव पैदा करेगी और एकता की भावना को दृढ़ करेगी। शिक्षा में राष्ट्रभाषा का प्रयोग आत्मगौरव, देशाभिमान और पारस्परिकता की भावना उत्पन्न करता है। सच्ची शिक्षा अपनी मातृभाषा या राष्ट्रभाषा में ही सम्भव है। जिस छात्र की मातृभाषा राष्ट्रभाषा न हो, तो उसे राष्ट्रभाषा दूसरी भाषा के रूप में अनिवार्य रूप से पढ़ाई जाय। भारतीयता की पहचान राष्ट्रभाषा, खान-पान और वेशभूषा से ही होती है। दुःख है कि आज स्वतन्त्रता के ३५ वर्षों के बाद भी हम अपने जीवन में इसकी उपेक्षा निरन्तर करते जा रहे हैं। संसार के अन्य देश राष्ट्रभाषा के हमारे अज्ञान पर हँसते हैं, किन्तु हमारे अन्दर हीनता की भावना इतना घर कर गयी है कि हम समझते हैं कि तथाकथित अंग्रेजी के ज्ञान के बिना हमारा काम ही नहीं चल सकता। जनतन्त्र के नाम पर वोट तो हम देश की भाषा में माँगते हैं, किन्तु हमारी शासन-व्यवस्था में प्रमुखता विदेशी भाषा की रहती है। विदेशी हमारे यहाँ आकर अपनी भाषा में अपनी बात कहता है और हम उसका उत्तर देते हैं अंग्रेजी भाषा में, जिसके समझने वाले इस देश में दो प्रतिशत से अधिक नहीं हैं। यह स्थिति हमारी एक प्रकार की मानसिक गुलामी की प्रतीक और भारतीयता के विकास के रास्ते में सबसे बड़ी बाधा है। राष्ट्रभाषा के ज्ञान के बिना राष्ट्र गूँगा है—यह तथ्य हमें अभी तक हृदयंगम नहीं कर सके हैं। ● [विद्याभारती विद्वत परिषद्, लखनऊ से साभार]

प्रशिक्षण साहित्य
(Methods of Teaching)
सम्बन्धी

उपयोगी प्रकाशन

हिन्दी-शिक्षण	डा० रामशकल पाण्डेय	12.50
हिन्दी भाषा-शिक्षण	भाई योगेन्द्रजीत	16.00
मातृभाषा-शिक्षण	के० क्षत्रिया	16.00
इतिहास शिक्षण	गुरसरनदास त्यागी	11.00
इतिहास-शिक्षण की रूपरेखा	भाई योगेन्द्रजीत	8.00
सामाजिक अध्ययन का शिक्षण	गुरसरनदास त्यागी	9.00
शिक्षक महाविद्यालयों में सामाजिक अध्ययन शिक्षण	सतगुरु शरण, दिनेश प्रकाश शर्मा	8.00
नागरिक शास्त्र का शिक्षण	गुरसरनदास त्यागी	9.00
नागरिक शास्त्र शिक्षण-कला	डा० उमेश चन्द्र कुदेसिया	(प्रेस में)
भूगोल-अध्यापन	जगदीश प्रसाद वर्मा	14.00
भूगोल-शिक्षण	एच० एन० सिंह	9.00
नवीन विज्ञान-शिक्षण	रावत एवं अग्रवाल	8.50
विज्ञान-शिक्षण	डी० एस० रावत	8.50
जीव विज्ञान-शिक्षण	शैलेन्द्र भूषण	7.00
गणित-शिक्षण	रावत एवं अग्रवाल	10.00
संस्कृत-शिक्षण	डा० रामशकल पाण्डेय	9.40
गृह विज्ञान-शिक्षण	डा० जी० पी० शैरी	11.50
वाणिज्य-शिक्षण	उदयवीर सक्सेना	7.00
अर्थशास्त्र-शिक्षण	गुरुसरनदास त्यागी	9.00
समाज-शिक्षा	तेजसिंह तरुण	6.00
Essentials of English Teaching	R. K. Jain	20.00
Let us Learn English	M. S. Sachdeva	14.00

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्कृत साहित्य

☆

☆

का

☆

☆

विद्यार्थी उपयोगी प्रकाशन

☆

☆

☆

कादम्बरी कथामुखम्	डा० कृष्ण अवतार बाजपेयी	१२.००
संस्कृत साहित्य का सुबोध इतिहास	डा० राजकिशोरसिंह	१२.००
संस्कृत साहित्य की प्रवृत्तियाँ	डा० जयकिशन प्रसाद	१८.००
संस्कृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास	डा० बाबूराम त्रिपाठी	१६.००
संस्कृत नाट्य साहित्य	डा० जयकिशन प्रसाद	१२.००
प्राचीन भारतीय कला एवं संस्कृति	डा० राजकिशोरसिंह, उषा यादव	२८.००
भारतीय संस्कृति	डा० राजकिशोरसिंह	२०.००
संस्कृत भाषा-विज्ञान	डा० राजकिशोरसिंह	१२.००
संस्कृत व्याकरणम्	डा० बाबूराम त्रिपाठी	२४.००
भारतीय दर्शन	डा० रामकृष्ण आचार्य एवं बाबूराम त्रिपाठी	१२.००
संस्कृत निबन्धांजलिः	डा० रामकृष्ण आचार्य	(प्रेस में)
ऋक्-सूक्त-समुच्चयः	डा० रामकृष्ण आचार्य	२०.००
मेघदूतम् [सम्पूर्ण, सटीक]	डा० रामकृष्ण आचार्य	९.००
मेघदूतम् [पूर्वमेघ, सटीक]	डा० रामकृष्ण आचार्य	६.५०
संस्कृत वाङ्मय : मौखिकी	डा० गोविन्द त्रिगुणायत	६.००
वैदिक साहित्य का इतिहास	डा० राजकिशोर सिंह	८.००
संस्कृत साहित्य का इतिहास	डा० द्वारिकाप्रसाद	९·००
काव्यप्रकाश : एक अध्ययन	डा० पारसनाथ द्विवेदी	६·५०
ध्वन्यालोकः एक अध्ययन	डा० पारसनाथ द्विवेदी	३.५०
कालिदास और अभिज्ञान शाकुन्तलम्	डा० जयकिशन प्रसाद	५.५०
चतुर्वेद	डा० जयकिशन प्रसाद	५.००
कालिदास और मेघदूत	डा० जयकिशन प्रसाद	५.००
सुबोध संस्कृत भाषा-विज्ञान	डा० जयकिशन प्रसाद	५.००
साहित्य दर्पण : एक अध्ययन	डा० जयकिशन प्रसाद	५.००
संस्कृत निबन्ध कौमुदी	डा० बाबूराम त्रिपाठी	५.५०
रघुवंशम् [प्रथम सर्ग]	डा० जयकिशन प्रसाद	४.५०
रघुवंशम् [द्वितीय सर्ग]	डा० रामकृष्ण आचार्य	४.००
रघुवंशम् [१३ वाँ सर्ग]	डा० रामकृष्ण आचार्य	३.००
अभिज्ञान शाकुन्तलम् : चतुर्थ अंक	डा० रामकृष्ण आचार्य	४.००
अपरीक्षितकारकम् (पंचतन्त्र से)	डा० पारसनाथ द्विवेदी	४.५०
शिशुपालवधम् महाकाव्यम् [सर्ग १, २]	डा० पारसनाथ द्विवेदी	१०.००
शिशुपाल वधम् [सर्ग १]	डा० पारसनाथ द्विवेदी	६.००
कुमार सम्भवम् [प्रथम सर्ग]	डा० जयकिशन प्रसाद	६.००
कुमार सम्भवम् [पंचम सर्ग]	डा० पारसनाथ द्विवेदी	६.००
किरातार्जुनीयम् [प्रथम सर्ग]	पं० वेणीमाधव शास्त्री मुसलगाँवकर	६.००
किरातार्जुनीयम् [द्वितीय सर्ग]	पं० वेणीमाधव शास्त्री मुसलगाँवकर	६.००
भारतीय दर्शन (प्रश्नोत्तर)	डा० राजकिशोरसिंह	८.००
भारतीय संस्कृति [प्रश्नोत्तर में]	डा० जयकिशन प्रसाद	५.००
प्राचीन भारत का सांस्कृतिक इतिहास तथा संस्कृत साहित्य का इतिहास	डा० जयकिशनप्रसाद खण्डेलवाल	७.००
संस्कृत निबन्ध कौमुदी	डा० बाबूराम त्रिपाठी	५.५०
व्याकरण कौमुदी [भाग–१]	,, ,,	३.००
भरतमुनि प्रणीतम्–नाट्यशास्त्रम् [प्रथम एवं द्वितीय अध्याय]	डा० पारसनाथ द्विवेदी	५.००

विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नई पुस्तकें

शिक्षा एवं मनोविज्ञान

शिक्षा-मनोविज्ञान (संशोधित अठारहवाँ संस्करण १९८३) डॉ० एस० एस० माथुर, डिमाई, पृष्ठ ८२४, मूल्य २८·००, पु० सं० ४०·००

Principle of Education (Revised Fifth Edition 1983) Dr. R. S. Pandey, Demy, Pages 356, Price Rs. 20·00, Lib. Edn. Rs. 30·00.

Measurement and Evaluation in Psychology & Education (Second Revised Enlarged Edition) Dr. Bipin Asthana, R. N. Agrawal, Demy, Pages 418, Price Rs. 25·00, Lib. Edn. Rs. 35·00.

हिन्दी भाषा शिक्षण (संशोधित सोलहवाँ संस्करण) भाई योगेन्द्रजीत, डिमाई, पृष्ठ ४६२, मूल्य १६·००

व्यावहारिक मनोविज्ञान (प्रथम संस्करण, १९८३) डॉ० रामपाल सिंह, डॉ० देवदत्त शर्मा एवं प्रो० सत्यदेव सिंह, डिमाई, पृष्ठ ४९६, मूल्य २०·००

विविध

अभिनव साहित्यिक निबन्ध (पूर्णतया संशोधित द्वितीय संस्करण १९८३) डॉ० राजेश्वरप्रसाद चतुर्वेदी, डिमाई, पृष्ठ ६३२, मूल्य ३०·००

जायसी ग्रन्थावली—पद्मावत (मूल, पाठ एवं व्याख्या सहित) (षष्ठ संशोधित संस्करण) राजनाथ शर्मा, डिमाई, पृष्ठ ८२०, मूल्य ३५·००

विनय-पत्रिका—सटीक (मूल, आलोचना व टीका) (संशोधित अष्टम् संस्करण १९८३) सं० राजनाथ शर्मा, डिमाई, पृष्ठ ५४८, मूल्य २५·००

चन्द्रगुप्त : एक मूल्यांकन (संशोधित पंचम संस्करण १९८३) राजनाथ शर्मा, क्राउन, पृष्ठ २६८, मूल्य ७·५०

हिन्दी साहित्य का इतिहास—आलोचनात्मक अध्ययन (संशोधित उन्तीसवाँ संस्करण) राजनाथ शर्मा, क्राउन, पृष्ठ ३७६, मूल्य ८·५०

सूर-सौरभ—सटीक (संशोधित षष्ठ संस्करण १९८३) स० पं० जगन्नाथ तिवारी, डिमाई, पृष्ठ २४०, मूल्य १०·००

तुलसी सचयन—सटीक (संशोधित तृतीय संस्करण, १९८३) डॉ० विजयपालसिंह, डिमाई, पृष्ठ १९२, मूल्य ८·००

संक्षिप्त कामायनी की टीका (आगरा विश्व० एम० ए० हिन्दी उत्तरार्द्ध के पंचम प्रश्नपत्र के पाठ्यक्रमानुसार) डॉ० तारकनाथ बाली, क्राउन, पृष्ठ ८८, मूल्य ४·००

'तारापथ' और सुमित्रानन्दन पंत (आगरा विश्व० के एम० ए० हिन्दी उत्तरार्द्ध के पंचम प्रश्नपत्र के पाठ्यक्रमानुसार) राजनाथ शर्मा, क्राउन, पृष्ठ ८८, मूल्य ४·००

आदर्श निबन्ध (सत्रहवाँ संशोधित संस्करण १९८३) रमेशचन्द्र कुलश्रेष्ठ, विद्याराम शर्मा, क्राउन, पृष्ठ ३५६, मूल्य ७·००

महादेवी वर्मा और संधिनी (संशोधित षष्ठ संस्करण १९८३) डॉ० देशराजसिंह भाटी, क्राउन, पृष्ठ ३४४, मूल्य १०·००

भरत मुनि प्रणीतम्—नाट्य-शास्त्रम्—प्रथम एवं द्वितीय अध्याय (प्रथम संस्करण १९८३) डॉ० पारसनाथ द्विवेदी, क्राउन, पृष्ठ १२८, मूल्य ५·००

कुमारसम्भवम् : पंचमः सर्गः (तृतीय संस्करण १९८३) डॉ० पारसनाथ द्विवेदी, क्राउन, पृष्ठ २१६, मूल्य ६·००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किरातार्जुनीयम्—प्रथमः सर्गः (पंचम संशोधित संस्करण) पं० वेणीमाधव सदाशिव शास्त्री मुसलगाँवकर, क्राउन, पृष्ठ २१६, मूल्य ६·००

बैरागिन (उपन्यास) डॉ० मिथलेश कुमारी मिश्र, क्राउन, पृष्ठ १४८, मूल्य १८·००

आग और आँसू (उपन्यास) भैरवप्रसाद गुप्त, क्राउन, पृष्ठ ३६४, मूल्य ४०·००

मैं वही हूँ (उपन्यास) सुनील गंगोपाध्याय, क्राउन, पृष्ठ १६४, मूल्य २२·५०

रिपोर्टर (उपन्यास) निगाई भट्टाचार्य, क्राउन, पृष्ठ १८४, मूल्य २०·००

जीवी (उपन्यास) पन्नालाल पटेल, क्राउन, पृष्ठ २७६, मूल्य २७·५०

लोहगढ़ (उपन्यास) हरनामदास सहराई, डिमाई, पृष्ठ १८४, मूल्य ३०·००

परीखाना (उपन्यास) इकबाल बहादुर देवसरे, डिमाई, पृष्ठ ३२०, मूल्य ४५·००

तेलुगु साहित्य के निर्माता (आलोचना) बालशौरी रेड्डी, डिमाई, पृष्ठ २१६, मूल्य ३०·००

श्रमजीवी महिलाएँ और समकालीन पारिवारिक संगठन (शोध प्रबन्ध) डॉ० दुर्गा परमार, डिमाई, पृष्ठ १६०, मूल्य ३०·००

संस्मरणों के सुमन (संस्मरण) डॉ० रामकुमार वर्मा, डिमाई, पृष्ठ १४४, मूल्य २२·००

बचनोद्यान (कविता) डॉ० सिद्धय्य पुराणिक, डिमाई, पृष्ठ २४६, मूल्य ४०·००

वैदिक तथा वेदोत्तर कालीन प्राचीन भारतीय अर्थशास्त्र (अर्थशास्त्र) वी० बी० सिंह, डिमाई, पृष्ठ १११, मूल्य २५·००

बहुरंगी नाटक (नाटक) डॉ० रामकुमार वर्मा, क्राउन, पृष्ठ १२८, मूल्य १२·००

मनसुखलाल मजीठिया (नाटक) लाभशंकर ठाकर, क्राउन, पृष्ठ ७८, मूल्य १५·००

भरतमुनिप्रणीतम्—

नाट्यशास्त्रम्

[प्रथमः एवं द्वितीयः अध्याय]

हिन्दी टीका एवं विमर्श सहित

डा० पारसनाथ द्विवेदी
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष तथा डीन
साहित्य-संस्कृति संकाय
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

● संस्कृत वाङ्मय में भरतमुनि के नाट्यशास्त्र का महत्वपूर्ण स्थान है। नाट्यविद्या का तो यह विश्वकोश है। इसमें अनेक विधाओं, कलाओं, शिल्पों का विशद् विवेचन हुआ है। ऐसा कोई क्षेत्र, ऐसा कोई शिल्प, ऐसी कोई कला नहीं है जो इस ग्रन्थ में उपलब्ध नहीं होती। किन्तु अभी तक इसका कोई हिन्दी संस्करण उपलब्ध नहीं था, जिससे विद्यार्थी वर्ग लाभान्वित होता।

● नाट्यशास्त्र का प्रथम एवं द्वितीय अध्याय प्रायः सभी भारतीय विश्वविद्यालयों में एम० ए० के पाठ्यक्रम में निर्धारित किया जाता रहा है, विद्यार्थियों की इसी आवश्यकता एवं कठिनाइयों का अनुभव कर नाट्यशास्त्र के प्रथम एवं द्वितीय अध्यायों पर हिन्दी टीका लिखने का प्रयास किया गया है।

● प्रस्तुत पुस्तक के प्रारम्भ में भूमिका एवं विद्यार्थियों के लिये उपयोगी विषय—नाटक की उत्पत्ति एवं विकास, नाट्य परम्परा और उसके आचार्य, आचार्य भरत एवं नाट्यशास्त्र के भाष्यकार, नाट्यशास्त्र का परिचय, नाट्शास्त्र का रचयिता, नाट्यशास्त्र का रचना-काल, नाट्य-मण्डप की योजना, नाट्य वृत्तियाँ, नान्दी, जर्जर आदि का समावेश किया गया है। टीका में प्रत्येक श्लोक का अर्थ नीचे दिया गया है और जहाँ आवश्यक हुआ वहाँ विशेष के अन्तर्गत उसका स्पष्ट विवेचन किया गया है, यथासम्भव प्रस्तुत संस्करण को विद्यार्थियों के लिये अधिक उपयोगी बनाने का प्रयास किया है।

आकार-क्राउन मूल्य : 5·00 मात्र

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा-२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Measurement & Evaluation in Psychology & Education

By

Dr. Bipin Asthana

Department of Psychology
St. Johns College, Agra.

&

Dr. R. N. Agarwal

- The present book, "Measurement and Evaluation in Psychology and Education is completely a revised and elaborated second edition of the original book entitled as "Educational and Psychological Measurement" published in 1964.
- The book mainly intended for the student of M. A. Psychology, M. Ed., B. Ed. and other such examination of Indian Universities.
- The present book consisted of following 25 chapters, mainly dealing with theory of mental measurement. In the present edition of the book, concepts like reliability and validity, which are core to mental measurement are given special emphasis and bears two separate chapters on these topics. Chapter on theories of intelligence has been elaborated and uptodated in the light of development taken place in the field during the time gap of 1964 to 1982. Indian Contributions, and description of Indian tests is also given a appropriate places.
- So much changes are made in the book that it may give an impression of all together a new book. Though large amount of original edition is retained in the present text.

CONTENTS OF THE NEW BOOK

1. Psychological Measurement
2. Types of Tests
3. Historical Development of Measurement
4. Characteristics of a Good Test
5. Validity
6. Reliability
7. Procedure for Test Construction
8. Preparing New Type Test Items
9. Problems of Test Administration
10. Scores, Norms Quotients and Profiles
11. Essay V/s New Type Tests
12. Attainment or Achievements Tests
13. Achievement Tests in Specific Subjects
14. Meaning and Theories of Intelligence
15. History of Intelligence Testing
16. Facts Regarding Intelligence
17. Individual Tests of Intelligence
18. Evaluation of Tests
19. Nature and Measurement of Aptitudes
20. The Nature and Measurement of Interest
21. Nature of Personality
22. Aptitudes and Their Measurement
23. Introduction to Statistics
24. Measures of Central Tendency
25. Correlation and Regression Appendices
Bibliography

Size Demy **Pages 416** **Price Rs. 25**
Lib. Edn.Rs. 35

VINOD PUSTAK MANDIR, AGRA–2

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षण-कला, शिक्षण तकनीक एवं नवीन पद्धतियाँ
डा० एस० एस० माथुर १८.००

सफल शिक्षण कला
पी० डी० पाठक १५.००

शिक्षण-तकनीकी (Technology of Teaching)

शिक्षण-तकनीकी
शैलेन्द्र भूषण एवं
डा० अनिलकुमार वार्ष्णेय १०.००

शैक्षिक तकनीकी के मूल आधार
डा० एस० पी० कुलश्रेष्ठ १६.००

विद्यालय-प्रशासन (School Administration)

Educational Administration 22.00
S. P. Sukhia Lib. edn. 30.00

विद्यालय प्रशासन एवं संगठन
एस० पी० सुखिया १४.१५

शैक्षिक एवं विद्यालय प्रशासन
भाई योगेन्द्रजीत १५.००

विद्यालय-संगठन एवं स्वास्थ्य शिक्षा
डा० रामपालसिंह वर्मा १२.००

विद्यालय व्यवस्था श्री केशवप्रसाद ७.५०

शिक्षा-प्रशासन डा० उमेशचन्द्र कुदेसिया १२.००

स्वास्थ्य-शिक्षा (School Hygiene)

स्वास्थ्य-शिक्षा डा० जी० पी० शैरी १६.००

School Health Education & Public Health
Dr. S. P. Chaube, 20.00
Akhilesh Chaube Lib. Edn. 30.00

मापन एवं मूल्यांकन (Measurement & Evaluation)

शैक्षिक मूल्याँकन
डा० रामपालसिंह वर्मा १०.००

मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सरल मूल्यांकन
डा० रामपालसिंह वर्मा ६.००

Measurement and Evaluation in Psychology & Education
Dr. Bipin Asthana, Dr. Agrawal 25.00
Lib. edn. 35.00

मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन
डा० आर० एन० अग्रवाल,
डा० बिपिन अस्थाना १८.००

सांख्यिकी (Statistics)

सांख्यिकी के मूल तत्त्व (सामाजिक विज्ञानों में)
डा० एच० के० कपिल २७.७०

मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी
डा० (श्रीमती) प्रीती वर्मा,
डा० डी० एन० श्रीवास्तव १७.००

प्रारम्भिक सांख्यिकी
डा० प्रीती वर्मा, डा० श्रीवास्तव १०.००

शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग
डा० सुरेश भटनागर ७.००

शिक्षा-दर्शन (Philosophy of Education)

भारत में शिक्षा-दर्शन और शैक्षिक समस्याएँ
पाठक एवं त्यागी १७.००

शिक्षा-दर्शन डा० रामनाथ शर्मा १५.००

शिक्षा-दर्शन डा० रामशकल पाण्डेय १६.००

शिक्षा के दार्शनिक सिद्धान्त
पी० डी० पाठक, त्यागी १८.००

निर्देशन (Guidance)

शैक्षिक मापन एवं निर्देशन
उमेश प्रसाद सिंह ४.००

शिक्षा में निर्देशन एवं परामर्श
डा० सीताराम जायसवाल १५.००

शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन
डा० रामपालसिंह वर्मा, उपाध्याय १६.००

तुलनात्मक-शिक्षा

तुलनात्मक शिक्षा
डा० सरयू प्रसाद चौबे ४०.००

शिक्षा व्यवस्थाएँ डा० सरयू प्रसाद चौबे १२.००

विषय-शिक्षण—इसके अन्तर्गत हिन्दी-शिक्षण, इतिहास, सामाजिक अध्ययन, नागरिकशास्त्र, भूगोल, विज्ञान, जीव-विज्ञान, गणित, संस्कृत, वाणिज्य, अर्थशास्त्र, गृहविज्ञान व अंग्रेजी-शिक्षण पर विभिन्न विद्वानों की लिखी सरल भाषा में पुस्तकें उपलब्ध हैं।

उक्त सभी प्रश्नपत्रों पर हिन्दी तथा अंग्रेजी में प्रश्नोत्तर रूप में भी पुस्तकें प्राप्य हैं।

सूचीपत्र निःशुल्क मँगायें

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[पूर्णत: संशोधित एवं परिमार्जित तेरहवाँ संस्करण १९८३]

विभिन्न विश्वविद्यालयों की बी० एड० परीक्षा के नवीन पाठ्यक्रमानुसार प्रश्नोत्तर शैली में लिखित प्रशिक्षण विद्यालयों में तहलका मचाने वाली विद्यार्थियों की लोकप्रिय पुस्तक

★

अद्यतन तेरहवें संस्करण में मेरठ, गोरखपुर, फैजाबाद एवं विशेष रूप से म० प्र० के विक्रम विश्व-विद्यालय के नये पाठ्यक्रमानुसार विभिन्न प्रकरण जोड़कर पुस्तक को अधुनातन रूप दिया गया है।

बी० एड० दिग्दर्शन

(गाइड)

सम्पादक

भाई योगेन्द्रजीत

दिनेशचन्द्र भारद्वाज

विनोदकुमार अग्रवाल

अनुक्रमणिका

- शिक्षा सिद्धान्त तथा भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक विचारधारा
- शिक्षा मनोविज्ञान
- भारतीय शिक्षा का इतिहास और समस्याएँ
- पाश्चात्य शैक्षिक विचारधारा
- विद्यालय प्रशासन, संगठन और स्वास्थ्य-विज्ञान
- शिक्षण-कला एवं विभिन्न विषयों का शिक्षण

प्रमुख विशेषताएँ

☆ प्रस्तुत संस्करण में 'शिक्षा-सिद्धान्त' के प्रथम प्रश्नपत्र में शिक्षा और समाज, शिक्षा और राजनीति, शिक्षा और अर्थशास्त्र, शिक्षा और विज्ञान, नैतिक शिक्षा, शिक्षा की नवीन प्रवृत्तियाँ—मनोवैज्ञानिक, वैज्ञानिक एवं समाहारक तथा स्वतन्त्रता और अनुशासन आदि नवीन अध्यायों का समावेश किया गया है।

☆ द्वितीय प्रश्नपत्र में मनोविज्ञान व्यवहार के रूप में, अध्ययन आदतों का विकास, निदानात्मक परीक्षण तथा उपचारात्मक शिक्षण, समाजमितिक एवं क्रियात्मक अनुसन्धान की प्रायोजना आदि विशेष प्रकरणों का समावेश।

☆ अन्य प्रश्नपत्रों में राष्ट्रीय शिक्षा नीति, आजीवन शिक्षा, औपचारिक व अनौपचारिक शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा विद्यालय तथा समुदाय, जनसंख्या-शिक्षण, शैक्षिक तकनीकी आदि कतिपय विशिष्ट अध्यायों का उल्लेख विशेष रूप से उ० प्र० एवं म० प्र० की शिक्षा के सन्दर्भ में किया गया है।

☆ इसमें प्रश्नों का विस्तार एवं आकार विद्यार्थियों की आवश्यकतानुसार दिया गया है। जटिल एवं सूक्ष्म विषयों का प्रतिपादन, सरल, स्पष्ट और वैज्ञानिक ढंग से सरल भाषा में किया गया है।

☆ **प्रस्तुत संस्करण का मुख्य आकर्षण** : शिक्षणकला नामक खण्ड के अन्तर्गत विभिन्न विषयों—हिन्दी, इतिहास, अर्थशास्त्र, नागरिकशास्त्र, भूगोल, विज्ञान, गणित तथा गृहविज्ञान की शिक्षण-पद्धतियों के सम्बन्ध में सम्पूर्ण सामग्री को सरल एवं सुबोध ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

सूचना—म० प्र० के विक्रम विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम का अनुपूरक ३·०० रु० मे उपलब्ध है।

इस प्रकार प्रस्तुत संस्करण सभी दृष्टियों से उत्तम एवं उपलब्ध गाइडों में सर्वश्रेष्ठ व सस्ता है।

आकार · डिमाई पृष्ठ संख्या : १४५० मूल्य : ४५·००

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा-२

प्रकाशक एवं मुद्रक · विनोद कुमार अग्रवाल द्वारा कैलाश प्रिंटिंग प्रेस, आगरा-2

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

12
प्राप्ति दिनांक 8-3-83

फरबरी
1983

साहित्य परिचय

परिचायक - पत्र

प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री एवं लोकप्रिय लेखक

डा० एस० एस० माथुर की

शिक्षा मनोविज्ञान पर मौलिक एवं महत्त्वपूर्ण कृति

शिक्षा-मनोविज्ञान

☆ ☆ ☆

- 'शिक्षा मनोविज्ञान' का सन् 1983 का यह अठारहवाँ संस्करण पूर्णत संशोधित एवं परिवर्द्धित है। इस सस्करण में नवीनतम शोध; जो शिक्षा मनोविज्ञान के क्षेत्र में हुए हैं और जिन्होंने शिक्षार्थी-शिक्षक सम्बन्धों तथा शिक्षण-सीखने की प्रक्रिया पर प्रकाश डाला है—उनका समावेश कर दिया है। हिन्दी, राष्ट्रीय भाषा होने पर भी हिन्दी भाषा में बहुत कम पुस्तकें हैं, जो शोध-केन्द्रित हैं। प्रस्तुत संस्करण में इस बात को ध्यान में रखकर विभिन्न शोध-अध्ययनों का सरल भाषा में वर्णन किया गया है तथा शिक्षा के लिए उनमें क्या क्या निहित है, इस पर प्रकाश डाला गया है।
- प्रस्तुत पुस्तक अनेक संस्करणों में पिछले २० वर्षों से प्रकाशित होती आ रही है। प्रत्येक संस्करण को अधुनातम बनाया गया है। प्रत्येक नये संस्करण में गत संस्करण से विभिन्नता तथा सुधार है।
- पिछले संस्करणों की भाँति यह संस्करण भी सात भागों में बँटा है: (१) मनोविज्ञान और शिक्षा, (२) मानव-अभिवृद्धि और विकास, (३) सीखना, (४) व्यक्तित्व समायोजन तथा मानसिक स्वास्थ्य, (५) समूह मनोविज्ञान, (६) मापन और मूल्यांकन, (७) सांख्यिकीय एवं अनुसंधान पद्धतियाँ। प्रत्येक भाग के अन्तर्गत अनेक अध्यायों में शिक्षण-सीखने सम्बन्धी समस्याओं पर भारतीय सन्दर्भ में प्रकाश डाला गया है। लगभग सभी भारतीय विश्वविद्यालयों के बी० ए०, एम० ए०, बी० एड०, एम० एड० इत्यादि कक्षाओं के पूर्ण पाठ्य-क्रमों को इसकी विषयसूची में सम्मिलित किया गया है। किन्तु विशेष ध्यान शिक्षा और मनोविज्ञान की उच्च कक्षाओं के विद्यार्थियों की आवश्यकताओं की ओर दिया है। बी० ए० इत्यादि कक्षाओं के लिए प्रस्तुत पुस्तक का संक्षिप्त संस्करण भी उपलब्ध है।
- इस संस्करण का अनूठापन यह है कि इसमें शिक्षण के सिद्धान्त, कैशोर विकास के सिद्धान्त इत्यादि को सम्मिलित किया गया है।
- पुस्तक, प्रसिद्ध लेखक की उत्तम कृति है तथा उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत है।

आकार : डिमाई पृष्ठ संख्या : 822 मूल्य : 28.00

पुस्त० संस्करण : 40.00

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा-२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोविज्ञान के क्षेत्र में एक और नवीन मौलिक कृति — अब उपलब्ध है !

व्यावहारिक मनोविज्ञान

[APPLIED PSYCHOLOGY]

लेखक

डा० रामपालसिंह **प्रो० सत्यदेवसिंह**

जियालाल शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान, अजमेर

डा० देवदत्त शर्मा

पत्राचार संस्थान

राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

☆ ☆ ☆

● आज यह सर्वत्र स्वीकार किया जाने लगा है कि मनोविज्ञान न केवल एक सैद्धान्तिक विषय ही है, अपितु इसका व्यावहारिक पक्ष भी उतना ही प्रबल है। फलतः मनोविज्ञान के व्यावहारिक पक्ष का भी मनोवैज्ञानिकों ने विकास किया और उन्होंने यह प्रयास किये कि मनोविज्ञान के सिद्धान्तों का मानव जीवन के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में प्रयोग किया जा सके। इनके प्रयासों के फलस्वरूप ही मनोविज्ञान का आज मानव जीवन के अनेक क्षेत्रों में प्रयोग हो रहा है। आज मनोविज्ञान के सिद्धान्तों का हम शिक्षा, समाज, उद्योग, मनोपचार, व्यापार, व्यवसाय तथा अपराध आदि अनेक क्षेत्रों में प्रयोग कर रहे हैं। प्रस्तुत पुस्तक में उन क्षेत्रों की चर्चा की गई है जिनमें मनोविज्ञान के सिद्धान्तों का प्रयोग हो रहा है।

● प्रस्तुत पुस्तक में मनोविज्ञान के व्यावहारिक पक्षों का वर्णन निम्न सात खण्डों के अन्तर्गत 36 अध्यायों में अत्यन्त ही सरल तथा बोधगम्य शैली में किया गया है।

विषय-क्रम

खण्ड 1—मापन एवं मूल्यांकन—1. मूल्यांकन का अर्थ, 2. बुद्धि प्रकृति तथा परीक्षा, 3. रुचि, परीक्षण, 4. निष्पत्ति परीक्षण, 5. व्यक्तित्व परीक्षण, 6. अभियोग्यता परीक्षण, 7. अभिवृत्ति परीक्षण।

खण्ड 2—निर्देशन—8. निर्देशन का अर्थ, 9. निर्देशन के प्रकार, 10. व्यावसायिक निर्देशन, 11. शैक्षिक निर्देशन, 12. निर्देशन कार्य-विधि का संगठन।

खण्ड 3—शिक्षा-मनोविज्ञान—13. मनोविज्ञान का अर्थ, 14. शिक्षा-मनोविज्ञान, 15. अधिगम का अर्थ, 16. अधिगम के नियम, 17. अधिगम का अर्थ, 18, अधिगम एवं प्रेरणा।

खण्ड 4—नैदानिक मनोविज्ञान—19. नैदानिक मनोविज्ञान का अर्थ, 20. मानसिक अस्वस्थता के लक्षण तथा संलक्षण, 21. मानसिक रोगों के कारण, 22. मानसिक रोगों के प्रकार, 23. मानसिक रोगों की उपचार विधियाँ।

खण्ड 5—औद्योगिक मनोविज्ञान—24. औद्योगिक मनोविज्ञान का अर्थ, 25. औद्योगिक वातावरण, 26. थकावट, नीरसता तथा दुर्घटनाएँ, 27. हड़ताल, तालेबन्दी तथा संघर्ष, 28. कर्मचारी प्रशिक्षण तथा श्रम-कल्याण।

खण्ड 6—विज्ञापन एवं प्रचार—29. विज्ञापन का अर्थ, 30. निपुणता, 31. विक्रय, 32. कार्य विश्लेषण, 33. प्रचार।

खण्ड 7—समाज मनोविज्ञान—34. समाज मनोविज्ञान का अर्थ, 35. भीड़ एवं श्रोतागण, 36. सामाजिक तनाव आदि।

आकार : डिमाई — पृष्ठ : 496 — मूल्य : 20·00

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-परिचय

[शिक्षा और साहित्य की प्रगति का परिचायक पत्र]

[वर्ष 18 : अंक 2]
फरवरी, 1983

सम्पादक
विनोद कुमार अग्रवाल
एम० ए०, साहित्यरत्न

स्वामित्व
विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

वार्षिक शुल्क : 15·00
रजिस्ट्री से विशेषांक मँगवाने पर
18·00
[विदेशों में—डाक व्यय सहित मात्र 40·00]

साहित्य-परिचय
डा० रांगेय राघव मार्ग
आगरा–2
फोन : 76486

सम्पादकीय

शिक्षाशास्त्र के क्षेत्र में प्रतिदिन इतना साहित्य रचा जा रहा है कि कुछ लेखकों व प्रकाशकों को इस पर आश्चर्यचकित होना पड़ता है। भारत के प्रत्येक बड़े नगर में कुछ प्रकाशक अवश्य हैं और महानगरों में तो एक से अधिक प्रकाशक इस कार्य में लगे हुए हैं। प्रत्येक नगर में जहाँ शिक्षा-महाविद्यालय या विश्वविद्यालय हैं, कुछ लेखक अवश्य विद्यमान हैं।

ज्योंही छात्र बी० एड० व एम० एड० करते हैं त्योंही वे शिक्षाशास्त्र पर कुछ लिखने को प्रेरित हो जाते हैं और यदि उनमें से किसी की नियुक्ति किसी शिक्षा-महाविद्यालय या विश्वविद्यालय में हो जाती है तब तो वे कुछ लिखने के लिए व्यग्र हो उठते हैं। अपनी इस व्यग्रता, आकुलता व शीघ्रता के कारण कभी-कभी वे सस्ता साहित्य लिखने लगते हैं। इस स्थिति से शिक्षाशास्त्र का हित होने की अपेक्षा अहित ही अधिक होता है।

इन नव-लेखकों में कुछ तो उपलब्ध साहित्य का पहले पर्यवेक्षण करते हैं, पढ़ते हैं, कुछ विचार बनाते हैं तब लिखने के लिए कलम उठाते हैं। इनका कार्य सराहनीय है और इनके कार्यों से शिक्षा-जगत् का हित ही होता है।

कुछ अन्य उत्साही लेखक लिखते पहले हैं, पढ़ते बाद में हैं। अर्थात् वे पहले लिखने की आकुलता दिखाते हैं और अपने अपरिपक्व विचारों को बिना सोचे-समझे लिपिबद्ध कर देते हैं। इनके विचारों व लेखन में संगतता, क्रमबद्धता व प्रौढ़ता का अभाव दिखाई पड़ता है। इन लेखकों को लेखन से पूर्व विचार बना लेना चाहिए और शिक्षा-साहित्य का पहले अवलोकन कर लेना चाहिए। इन लेखकों को अपनी लेखनी उठाने से पूर्व छात्रों का हित भी देख लेना चाहिए।

एक तीसरे प्रकार के लेखक हैं जो सन्तुलित व्यवहार करते हैं। वे केवल पढ़ते ही नहीं जाते वरन् कुछ पढ़ते हैं और विचार बनाते हैं, तब लेखनी उठा लेते हैं। इनके लेखन से स्तर यदि ऊँचा नहीं उठता तो गिरता भी नहीं है। प्रत्येक परिस्थिति में वे लीक पर चलकर पर-म्परागत विचारों को आगे बढ़ाते रहते हैं। तीनों प्रकार के लेखकों को शिक्षा-साहित्य में अब तक रचे गये साहित्य का अवलोकन अवश्य कर लेना चाहिए जिससे कि पिष्टपेषण से बचा जा सके।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा-जगत् के ख्यातिप्राप्त लेखक एवं शिक्षाशास्त्री

श्री पी० डी० पाठक का निधन

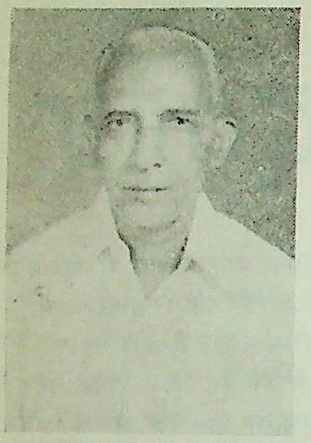

हमें अपने पाठकों और शुभेच्छुओं को सूचित करते हुए अपार दुःख हो रहा है कि श्री प्रेमदत्त पाठक (पी० डी० पाठक) प्रसिद्ध लेखक एवं शिक्षा-शास्त्री का देहावसान दिनांक 27 दिसम्बर, 1982 को अचानक ही हृदय गति रुकने से आगरा में स्थित उनके निवास स्थान पर हो गया। आपकी आयु 71 वर्ष की थी। आपके अचानक निधन से शिक्षा के क्षेत्र में जो रिक्तता हुई है उसकी पूर्ति निकट भविष्य में सम्भव नहीं दिखती।

आप बहुत ही सौम्य, शिष्ट एवं मधुर व्यवहार के थे। जो भी आपके सम्पर्क में एक बार आया, वह आपका ही होकर रह गया। हर-एक के सुख-दुःख में आप हमेशा अग्रणी रहे और निःस्वार्थ भाव से आपका सहयोग सभी परिचितों को प्राप्त था।

[1912–1982]

श्री प्रेमदत्त पाठक का जन्म उत्तर प्रदेश के जिला बुलन्दशहर में दिनांक 8 अगस्त, 1912 को हुआ था। आपने मैनपुरी से सन् 1929 में हाई स्कूल एवं 1932 में इण्टरमीडिएट किया। तदनन्तर आगरा कॉलेज, आगरा से आपने सन् 1934 में बी० ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की और सन् 1936-37 में आपने बरेली कालेज, बरेली से एम० ए० (अंग्रेजी) की परीक्षा उत्तीर्ण की। पाठक जी ने सन् 1937-38 में बी० टी०, सेण्ट एडमण्ड कालेज, शिलांग (असम) से किया। सन् 1938 में आप एन० ए० वी० स्कूल, मुरादाबाद के हैडमास्टर हो गये। आपने 'साहित्यरत्न' परीक्षा भी उत्तीर्ण की। सन् 1945 में आप एस० एस० के० हाई स्कूल, मुरादाबाद के हैडमास्टर नियुक्त हुए। सन् 1947 में आपने के० जी० के० इण्टर कालेज, मुरादाबाद में अध्यापन का कार्य आरम्भ किया। 1948-49 में आप एन० आर० ई० सी० कालेज, खुर्जा में रहे और सन् 1950 में आप एम० डी० जैन इण्टर कालेज, आगरा में अध्यापक नियुक्त हुए। यहाँ आपने 1957 तक अध्यापन-कार्य किया। सन् 1958 में आप आर० ई० आई० डिग्री कालेज में लेक्चरार नियुक्त हुए और जून 1973—अवकाश-प्राप्ति के समय तक आप अध्यापन-कार्य करते रहे।

सन् 1950 से आपने पुस्तकें लिखना आरम्भ किया। आरम्भ में आपने जनरल इंगलिश की हाई स्कूल व इण्टर की पुस्तकें लिखीं। आपके हाई स्कूल व इण्टर के अंग्रेजी के नोट्स पी० डी० शर्मा के नाम से छात्र आज भी बड़े चाव से पढ़ते हैं। आपने उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मध्यप्रदेश की कई पाठ्य पुस्तकें, उन पर प्रश्नोत्तरी तथा नोट्स आदि लिखे जो कि उस समय छात्रों में काफी लोकप्रिय हुए। आपकी भाषा सरल व सरस है। आप पाठकों की कठिनाइयों को सामने रखकर पुस्तकें लिखा करते थे, यही कारण है कि आपकी लिखी प्रत्येक पुस्तक, चाहे वह हाई स्कूल व इण्टर की हो अथवा बी० ए० या बी० एड० की हो, हमेशा छात्रों को पसन्द आती रही है और छात्रों ने उसे चाव से पढ़ा भी है।

श्री प्रेमदत्त पाठक भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों की परीक्षाओं के पेपर-सेटर भी रह चुके हैं। आपने शिक्षाशास्त्र एवं मनोविज्ञान पर लगभग 60 पुस्तकें लिखी हैं जिनमें अधिकांश पुस्तकें तो भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में स्वीकृत भी हैं। आपकी लिखी पुस्तकें छात्रों एवं छात्राध्यापकों के द्वारा काफी पसन्द की गई हैं। आपकी प्रमुख रचनाएँ निम्न हैं :—

भारतीय शिक्षा का इतिहास, भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ, शिक्षा-मनोविज्ञान, शिक्षा के सामान्य सिद्धान्त, सफल शिक्षण-कला, भारत में शिक्षा-दर्शन और शैक्षिक समस्याएँ, भारतीय शिक्षा के आयोग एवं समितियाँ, शिक्षा के सिद्धान्त, आदि-आदि।

आपकी शिक्षाशास्त्र एवं मनोविज्ञान की अधिकांश पुस्तकें मैसर्स विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा द्वारा ही प्रकाशित हुई हैं। आपके निधन से छात्र-वर्ग को अपार क्षति पहुँची है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगरा विश्वविद्यालय के एम. ए. उत्तरार्द्ध परीक्षा 1982-83 के नवीन पाठ्यक्रमानसार

एम० ए० हिन्दी-दिग्दर्शन (गाइड)

सम्पादक एवं लेखक—**डा० कृष्णदेव शर्मा**, एम. ए., पी-एच. डी

● प्रस्तुत दिग्दर्शन ,(गाइड) में एम. ए. उत्तरार्द्ध विद्यार्थियों के लिये नवीन पाठ्यक्रमानुसार निर्धारित पुस्तकों की आलोचना, समीक्षा, व्याख्या एवं संक्षिप्त परिचय आदि प्रश्नोत्तर में देकर गाइड को पूर्णरूपेण छात्रोपयोगी बनाने की चेष्टा की है।

● प्रश्नपत्र में दिए पाठ्यक्रम के आधार पर ही प्रस्तुत गाइड में उत्तर दिये गये हैं। आवश्यक स्थलों पर विस्तृत रूप से व्याख्या की गई है। भाषा विज्ञान एवं साहित्यालोचन जैसे कठिन विषयों को बहुत ही सरल तथा सरस भाषा में समझाया गया है। साहित्यिक निबन्धों के अन्तर्गत महत्त्वपूर्ण एवं इस वर्ष के सम्भावित निवन्धों को दिया गया है। मौखिक परीक्षा के लिये भी महत्त्वपूर्ण प्रश्नों का समावेश है।

अनुक्रम

☆ पंचम प्रश्न पत्र—**आधुनिक काव्य**

● **आधुनिक काव्य-संग्रह** (आ० वि० वि० प्रका० संख्या ७५) ● **कामायनी** (जयशंकर प्रसाद) चिंता और काम सर्ग— आलोचना तथा समीक्षा ● **तारापथ** (सुमित्रानन्दन पंत) कविता सं० ४, ६, ७, २०, २१, ३३, ५२ और ५४ की व्याख्या एवं समीक्षा ● **उर्वशी** (दिनकर)— आलोचना तथा समीक्षा

☆ षष्ठ प्रश्न पत्र—**भाषा विज्ञान**

● **भाषा और समाज, भाषा अध्ययन, भाषा संरचना का परिचय**—ध्वनि, अक्षर, पद, शब्द विभक्ति, परसर्ग, पद बन्ध, वाक्य आदि का परिचय, हिन्दी ध्वनियों और रूपों का वर्गीकरण, भाषा का व्याकरण, लिंग, वचन, कारक, पुरुष, काल, वाच्य आदि का परिचय, **भाषा विकास**—हिन्दी भाषा का उद्भव और विकास—भारोपीय परिवार, संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश आदि के विकास की स्थूल रूपरेखा, आधुनिक आर्य भाषाओं का वर्गीकरण, हिन्दी की उपभाषाएँ, खड़ी बोली का विकास—उर्दू, रेख्ता, हिन्दुस्तानी, दक्खिनी, हिन्दी का विकास तथा देवनागरी लिपि का विकास आदि।

☆ सप्तम प्रश्न पत्र—**साहित्य शास्त्र एवं समालोचना** (अ) **भारतीय काव्य शास्त्र**—

काव्य लक्षण और स्वरूप, काव्य-हेतु, काव्य प्रयोजन, काव्य सम्प्रदाय—अलंकार, रीति, वक्रोक्ति, ध्वनि रस और औचित्य, काव्य के तत्त्व, काव्य के भेद, रूपक के तत्त्व, शब्द शक्ति, समीक्षा के स्वरूप, लक्षण, उद्देश्य, समीक्षा के मानदण्ड, सिद्धान्त और व्यवहार।

(ब) **पाश्चात्य काव्यशास्त्र**—

काव्य और कला, काव्य का स्वरूप, प्लेटो, अरस्तू, लौजिनस, होरेस, आई. ए. रिचर्ड्स, टी. एस. इलियट आदि की धारणाएँ. प्रमुखवाद—स्वच्छन्दतावाद, कला कला के लिए, प्रकृतवाद, अति यथार्थवाद, अभिव्यंजनावाद, प्रतीकवाद एवं अस्तित्ववाद।

☆ अष्टम प्रश्न पत्र—**निबन्ध एवं गद्य की अन्य विधाएँ** (क) आलोचनात्मक निबन्ध (आ० वि० वि० प्रकाशन संख्या ७६) (ख) निबन्ध ललिता—श्रीराम शर्मा (ग) हिन्दी गद्य ललिता—श्रीराम शर्मा

☆ नवम् प्रश्न पत्र—**उच्च साहित्यिक निबन्ध**

(१) साहित्यकार का दायित्व (२) केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए (कला, कला के लिए) (३) "गिरा अरथ जल बीचि सम, कहियत भिन्न न भिन्न" (४) "कीरति भनिति भूति भल सोई, सुरसरि सम सब कहँ हित होई" (५) "भूषन बिनु न विराजई, कविता बनिता मित्त" (६) हिन्दी में राष्ट्रीय कविता, (७) काव्य में बिम्ब योजना, (८) छायावाद काव्य में सौन्दर्य चेतना आदि कई महत्त्वपूर्ण निबन्धों का समावेश।

☆ दशम् प्रश्न पत्र—**मौखिक परीक्षा**

हिन्दी का समस्त विधाओं से एवं सभी प्रश्नपत्रों पर आधारित तैयार किये गये मौखिक प्रश्न एव उत्तर।

आकार—क्राउन

मूल्य : 48·00

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा-अध्यापन में ग्रन्थालय-सुविधाओं का शिक्षण

गोपीनाथ कालभोर
शासकीय कन्या महाविद्यालय, खण्डवा

शिक्षा, जीवन-विकास की प्रथम एवं अन्तिम कडी है। अपने विविध स्वरूपों में कहीं यह आकस्मिक अथवा सामयिक, तो कहीं अनौपचारिक एवं औपचारिक कहलाती है। प्रारम्भिक रूप में माता-पिता, भाई-बहिन, परिवार एवं समाज से प्राप्त शिक्षा को हम आकस्मिक मानते हैं।

'आकस्मिक रूप से बालक अपने परिवार, पड़ोसी व साथियों के साथ व्यवहार करना व इसी तरह की अन्य क्रियाओं को सीखता है। उसकी यह प्रक्रिया अचेतन रूप से चलती है।'[1]

शिक्षा का द्वितीयक स्तर या स्वरूप अनौपचारिक है जो बालक के व्यक्तित्व के पूर्ण विकास में निस्सन्देह सहयोगी होता है, किन्तु यह तभी सम्भव है जब बालक को उसकी रुचि के अनुसार योग्यता, ज्ञान व अनुभव के मानदण्डों पर शिक्षा प्रदान की जाय। इन्हीं माप-दण्डों से वह ज्ञानार्जन कर समाज को उन्नतशील बनाने में जुट जाता है।

तृतीय स्तर पर औपचारिक शिक्षा का स्वरूप है, जिसका प्रायोगिक रूप सम्पूर्ण देश की शिक्षण-संस्थानों तथा शिक्षा-केन्द्रों में चल रहा है। यह पूर्णतः पाठ्य-क्रम पर आधारित सैद्धांतिक शिक्षा है। इस शिक्षा के लिए पढ़ने वाले विद्यार्थियों के लिए शिक्षा-सिद्धान्त में निष्णात शिक्षकों की नियुक्ति की जाती है। प्राथमिक स्तर पर बुनियादी शिक्षण प्रशिक्षित एवं माध्यमिक स्तर पर स्नातक शिक्षण प्रशिक्षित अध्यापकों को पाठशालाओं में भेजा जाता है। बाल-मनोविज्ञान, बाल-समस्या, पढ़ाई तकनीक, अनुशासन, दैनन्दिनी रिपोर्ट बनाना, कृषि-कार्य, प्रयोगशाला-कार्य इत्यादि विषयों को पाठ्यक्रमों के विषयों के अध्ययन से जोड़कर प्रशिक्षण दिया जाता है। बी० एड० स्तर पर इसमें कुछ सुधार अवश्य हुआ है। पुस्तकालय-कार्य के अन्तर्गत छात्राध्यापकों से शिक्षा-शास्त्र, राजनीति अथवा भाषा की पुस्तकों की समीक्षा लिखने का कार्य करवाया जाता है, जबकि यह कार्य विद्यार्थियों को पढ़ाने के उद्देश्य की कहीं पूर्ति नहीं करता और न ही शिक्षक प्रशिक्षण के बाद प्रयोग के तौर पर इसे अपने विद्यार्थियों को ही बताता है।

१९८० में बी० एड० पाठ्यक्रम में प्रस्तावित अठारह माह के प्रशिक्षण की अवधि से पुस्तकालय-कार्य के क्षेत्र में कुछ नये प्रयोग होने की सम्भावनायें थीं, किन्तु मध्य प्रदेश सरकार इस कार्य में पूर्णतः सफल नहीं हो सकी है।

चूँकि शिक्षा की मूल प्रेरणा-स्रोत पुस्तकें होती हैं, अतः इन पुस्तकों के साहचर्य से ही ज्ञान के बन्द कपाट खुल जाते हैं। पुस्तकों का साथ पाने व उनसे समागम करने का स्थान पुस्तकालय होता है। पुस्तकालयों में रखी ज्ञान-पोथियों का उपयोग कर एक शिक्षक अपने शिक्षार्थी को जिज्ञासु व अन्वेषी बुद्धि प्रदान करने में सफल होता है। वह समय बीत गया जब शिक्षक चलते-फिरते पुस्तकालय होते थे। विज्ञान, तकनीकी अनुसंधान एवं औद्योगिक विकास ने मनुष्य की समझ को सूक्ष्म से सूक्ष्मतम विचार की ओर अग्रसर किया है। नवीन तकनीकी-संसाधनों, प्रलेखन, पुनर-उत्पादन सेवा, सामुदायिक सूचना-सेवा एवं शोध-प्रविधि में सहयोगी पुस्तकालय-केन्द्रों का उपयोग दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है।

आज की शिक्षा मात्र साक्षर बने रहने तक ही सीमित नहीं है वरन् जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में असीमित होती जा रही है। शिक्षा स्वविकास एवं सामाजिक उद्विकास की वह सीढ़ी है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपना ही नहीं बल्कि अपने समाज, राष्ट्र एवं विश्व

1. विश्वनाथ बिहारीलाल : बालक के विकास में अनौपचारिक शिक्षा का स्थान, साहित्य-परिचय, जुलाई १९८२, पृ० ३।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के विकास की दिशा खोजने में सक्षम होता है। ऐसी दिशा खोजने एवं निर्देश पाने का कार्य गहन अध्ययन, चिन्तन एवं प्रायोगिक अनुभव से प्राप्त होता है। यह सब बाल्यावस्था से ही ग्रन्थों के अध्ययन से प्राप्त, गुरुजनों द्वारा प्रदत्त एवं स्वानुभव से अर्जित होता है। इन सबमें भी ग्रन्थों की भूमिका विकास में विशेष अहमियत रखती है। ग्रन्थ ग्रन्थागारों (ग्रन्थालयों) के आभूषण होते हैं, जिन्हें पाठक रूपी जौहरी आकर परखते हैं, तरासते हैं एवं अपने बुद्धि रूपी नेकलेस में ज्ञान रूपी नगीना बनाकर जड़ते हैं। इसी नगीने की ज्ञान-रश्मि से शिक्षा की कांचन-किरण निकलकर अपना प्रकाश फैलाती है। अँधेरे बन्द कपाट के मस्तिष्क रूपी घर में ज्ञान की ज्योति जगाने का कार्य सदैव से गुरुदेव करते आये हैं। शिक्षक अपने कठिन शिक्षण-प्रशिक्षण काल में जो कुछ सीखते हैं उसी के अनुसार पठन-पाठन के कार्य को सम्पन्न करते हैं। शिक्षकों के बौद्धिक परिष्कार में पुस्तकालयों की महती भूमिका होती है। इस दृष्टि से शिक्षा एवं पुस्तकालयों का अटूट सम्बन्ध बन जाता है। पुस्तकालय-विज्ञान के प्राध्यापक प्रो० पी० बी० मंगला का कथन है कि "Any institution of higher learning is rightly described as a community where teachers and scholars are the head, students are the body and library its hearts."—**I. L. A. Bulletin**. दूसरे शब्दों में, पुस्तकालयों को हम शिक्षण-संस्थाओं में क्रियाशील प्रयोगशालाओं एवं शिक्षण-अध्यापन की प्रयोगशालाओं की प्रयोगशाला कह सकते हैं। अन्य प्रायोगिक केन्द्रों की बजाय इन केन्द्रों पर उन परीक्षणों का प्रयोग कम होता है जो विज्ञान पर आधारित होते हैं, परन्तु अन्य व्यावहारिक ज्ञान व सैद्धान्तिक समाधान हेतु पुस्तकालयों का समुचित प्रयोग होना चाहिये, यह शिक्षक अपने विद्यार्थियों को नहीं बता पाते अथवा मार्गदर्शन नहीं दे पाते।

हमारे देश में पाठशालाओं, विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में जो पाठ्यक्रम पर आधारित विषयों की शिक्षा दी जाती है, ग्रन्थालयों से इनका घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। शिक्षण हेतु पाठ्यक्रम में निर्धारित पुस्तकों के अध्ययन हेतु भाषण, लेख, सामान्य ज्ञान, नृत्य, संगीत, नाट्य-अभिनय इत्यादि के लिए विद्यार्थियों को ग्रन्थालय-उपयोग का निर्देश दिया जाना चाहिये। ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न विषयों में प्रकाशित ग्रन्थ एवं पत्र-पत्रिकायें, जो कि ग्रन्थालय में व्यवस्थित रखे जाते हैं, का भी परिचय शिक्षकों द्वारा दिया जाना आवश्यक है ताकि ज्ञान के जीवन-पर्यन्त चलते रहने की प्रक्रिया से भविष्य में भी विद्यार्थी पुस्तकों से जुड़ा रहे। किन्तु खेद है कि विद्यालयों, महाविद्यालयों में इस प्रकार के निर्देश अथवा मार्गदर्शन की कोई व्यवस्था नहीं है, क्योंकि शिक्षा-विज्ञान में प्रशिक्षित शिक्षकों को भी पुस्तकालय की विभिन्न गतिविधियों एवं सेवाओं का ज्ञान नहीं होता है। रही बात ग्रन्थपाल के निर्देश देने की, तो वह सिर्फ कुर्सी का लट्टू बनकर लिपिक-भर रह जाता है। विश्वविद्यालयीन स्तर पर दिये जाने वाले अध्ययन में पुस्तकालयों का उपयोग अवश्य अनुकरणीय है। आज ये पुस्तकालय इतने सम्पन्न हो गये हैं कि किसी भी प्रकार के जिज्ञासु पाठकों की समस्या अथवा माँग को पूर्ण करने में सक्षम हैं, परन्तु महाविद्यालयों एवं विद्यालयीय पुस्तकालयों की स्थिति बहुत अच्छी नहीं मानी जा सकती।

वर्तमान शिक्षा-प्रणाली में यह अनुभव किया गया है कि जिस विषय पर एक अध्यापक को अपने किसी छात्र के लिए कोई विशेष सन्दर्भ अथवा विषय-सामग्री तैयार करनी हो, तो बेचारा अध्यापक नहीं बता पाता है जबकि प्रथम मार्गदर्शन शिक्षक द्वारा ही विद्यार्थी को देना चाहिए। बहुतेरे शिक्षक विशेष सन्दर्भ-ग्रन्थों; जैसे—विश्व-कोश, डायरेक्टरी, सार-संक्षेप, अनुक्रमणिकायें, ग्रन्थ-सूचियाँ, एटलसेस तथा टिप्पणियों से परिचित तो होते हैं, किन्तु उनके उपयोग की विधियों से बेखबर होते हैं तब निराश युवा विद्यार्थी को ग्रन्थपाल अथवा सन्दर्भ-ग्रन्थालयी से सम्बन्धित विषयों की जानकारी लेनी पड़ती है; यही हाल पी-एच० डी० कराने वाले निदेशकों का भी रहता है।

कहने का तात्पर्य है कि जब शिक्षाशास्त्रियों के लिए सन्दर्भ खोजना, समीक्षा लिखकर बताना, पुस्तक अथवा लेख का सार प्रस्तुत करना, शोध-विषयों के विभिन्न स्रोतों का पता लगाना एक दुष्कर कार्य हो जाता है तब विद्यार्थी ज्ञान-राशि के अथाह सागर में अपनी सफलता की पतवार कैसे खे पाएगा? उसके लिए ग्रन्थालयी ही उसका मार्गदर्शक होगा, प्रेरणा-सूत्र होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपर्युक्त सारी परिस्थितियों से निपटने के लिए माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों को बुनियादी प्रशिक्षण-संस्थानों एवं शिक्षण-महाविद्यालयों के प्रशिक्षण काल में ही, पुस्तकों की समीक्षा तैयार करवाने के अतिरिक्त ग्रन्थालयों के उपयोग, उद्देश्य, इनका संगठन, संचालन एवं इनके तकनीकी कार्यों की पढ़ाई करवायी जानी चाहिए; साथ ही, ग्रन्थालय के प्रयोगात्मक स्वरूप की जानकारी भी दी जानी चाहिए ताकि शिक्षक अपने सेवा-काल में विद्यार्थियों को पुस्तकालयों के समुचित उपयोग व विभिन्न प्रतियोगात्मक परीक्षाओं की तैयारी हेतु मार्गदर्शन दे सके।

शिक्षा-अध्यापन के प्रशिक्षण-काल में ग्रन्थालय सुविधाओं का शिक्षण निम्नानुसार कराया जा सकता है :

(१) भारत के प्राचीन ग्रन्थालयों की परम्परा का इतिहास एवं उनसे विदेशियों द्वारा प्राप्त की गई प्रेरणा।

(२) वर्तमान शिक्षा में ग्रन्थालयों की भूमिका।

(३) ग्रन्थालयों में विवेकपूर्ण ग्रन्थ-चयन।

(४) सन्दर्भ-ग्रन्थों, सांख्यिकी रिपोर्ट, कॉन्फ्रेन्स रिपोर्ट्स, सम्मेलन रिपोर्ट्स, संघ के क्रियाकलापों की जानकारी।

(५) ग्रन्थ-सूचीकरण, निर्माण-विधि, उद्देश्य, कार्य, उपयोग एवं व्यावहारिक सूचीकरण का ज्ञान।

(६) ग्रन्थ-वर्गीकरण कला का सामान्य परिचय (मुख्य वर्गों में)।

(७) सार-लेखन, अभिटिप्पण, सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची निर्माण की जानकारी के साथ प्रलेखन सेवा-सुविधा।

(८) लघु शोध-प्रबन्धों व शोध-ग्रन्थों की सूची के स्रोतों की जानकारी देना।

(९) ग्रन्थालय नियमों व उपनियमों, सीमा एवं शर्तों का परिचय आदि।

(१०) ग्रन्थालय सुविधाओं का अधिकतम लाभ लेने हेतु विद्यार्थियों के लिए पुस्तक प्रदर्शनियों का आयोजन, प्रतियोगिताओं एवं अभ्यास मण्डलों का गठन करने की प्रेरणा प्रदान करना।

उपर्युक्त बातों का शिक्षण, बी० टी० आई० तथा बी० एड० के छात्राध्यापकों को प्रशिक्षण के दौरान दिया जाय, तो वे अपने विद्यार्थियों को बखूबी अच्छा दिशा-दर्शन दे सकते हैं, जिसका उपयोग कर विद्यार्थी सुरुचिपूर्ण अध्ययन, विवेकपूर्ण बुद्धि एवं शोध व अनुसंधान की विकासात्मक कड़ी को जोड़ने में सक्षम हो सकते हैं। बी० एड० प्रशिक्षण के अठारह माह की संरचना यदि लागू की जाती, तो पुस्तकालय सम्बन्धी सैद्धान्तिक पक्ष सबल होता। "इसमें एक वर्ग इन्टर्नशिप प्रोग्राम के लिए विद्यालयों में जायगा तथा दूसरे वर्ग में सैद्धान्तिक ज्ञान के लिए व्याख्यान, उत्पादक कार्य, पुस्तकालय-कार्य व नैतिक शिक्षा, आलोचना पाठ तथा मौखिक परीक्षा का कार्यक्रम निर्धारित किया गया है।"[2]

इसी प्रकार मई-जून के सत्र में भी विद्यालय-पुस्तकालय ऐसे विशेष विषय का अध्ययन कराये जाने का प्रावधान इस प्रशिक्षण में रखा था परन्तु यह प्रणाली कहाँ तक मध्य प्रदेश में सफल हुई, यह कह पाना अनिश्चित है। यह बात निःसंकोच कही जा सकती है कि समुचित पुस्तकालय-सेवाओं से वंचित रहकर शिक्षा के क्षेत्र में मात्र कक्षा-अध्यापन से ही विद्यार्थी के बौद्धिक विकास को चरमसीमा तक नहीं पहुँचाया जा सकता। शैक्षणिक संस्थाओं में निर्धारित पाठ्यक्रमानुसार पढ़ाया जाना मात्र शैक्षणिक योग्यता अथवा उपाधि प्राप्त करना है, न कि बुद्धि-विलास का उन्नयन। विद्यार्थी को शिक्षा के साथ-साथ, पाठ्यग्रन्थों के अध्ययन के अलावा सद्ग्रन्थों के साहचर्य की ओर भी प्रवृत्त किया जाना चाहिए ताकि उसमें ग्रन्थों को पढ़ने की एक ललक, एक उत्साह जीवन-पर्यन्त बना रहे। परन्तु आज शिक्षालयों में पढ़ने और पढ़ाने का उद्देश्य सिर्फ डिग्रियाँ हासिल करना रह गया है। निरन्तर अध्ययन के संस्कारों की कमी का ही कारण है कि डिग्रियाँ प्राप्त कर नौकरी में लगकर एक सामान्य युवा कुछ वर्ष के अन्तराल में वह सब-कुछ विस्मृत कर जाता है जो उसने विगत वर्षों में पढ़ा है। पढ़ाई तो वह है, जो व्यक्ति को पूर्ण बनाने की दिशा प्रदान करे; चिन्तन, मनन व स्वाध्याय की पृष्ठभूमि दे। बेकन का कहना ठीक ही था कि "अध्ययन व्यक्ति को पूर्ण बनाता है, संगोष्ठी व्यक्ति को अनुभवी बनाती है और लेखन व्यक्ति को

---

२. मल्होत्रा, एस० पी० एवं शर्मा, एस० के : अठारह माह का बी० एड० प्रशिक्षण प्रगति की ओर एक कदम, पत्रांश : मध्य प्रदेश शिक्षा सन्देश, सितम्बर १९८०, पृ० २७।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युक्तियुक्त बनाता है।" इस पूर्णता को जीवन्त बनाने में अध्यापक अपनी अहम् भूमिका निभा सकते हैं बशर्ते उन्हें अपने प्रशिक्षण-काल में इस प्रकार के शिक्षण की सुविधा दी जाय। यह कार्य सतत् अध्ययन (Continue Education) से ही हो सकता है जिसके लिए उपयुक्त स्थान है—पुस्तकालय एवं सुअवसर प्रदान करने वाली सामग्री होगी—ग्रन्थ एवं पत्र-पत्रिकायें। शिक्षक शिक्षार्थियों में अध्ययन का ऐसा बीज डाले कि बुद्धि का स्रोत कभी सूखने न पाये। पुस्तकें, पत्र-पत्रिकायें एवं पुस्तकालय शिक्षा के ऐसे प्रकाश-स्तम्भ होंगे जिनसे निरन्तर अध्ययन का प्रकाश अर्जित किया जा सकता है।

ज्ञान का प्रकाश गुरुदेव देते हैं किन्तु उस प्रकाश को देने की परम्परा में गुरुदेव को जिन विसंगतियों से गुजरना पड़ता है, पुस्तकालय रूपी सुविधाओं के ज्ञान से वंचित रहना पड़ता है, यह एक दुःखद स्थिति है। ज्ञान की क्षुधा, जो आधुनिक शिक्षा-प्रणाली के पाठ्यक्रम केन्द्रित, प्रणाली में नहीं मिटी, सिर्फ नोटबुक्स व प्रश्नोत्तर पुस्तकों तक सिमट कर रह गई है, पुस्तकालय-सुविधाओं के माध्यम व उनके ग्रन्थ रूपी उपकरणों के सतत् अध्ययन से समाप्त हो सकती है। शिक्षा-पद्धति में अज्ञानतावश इस 'सामाजिक संगठन' सामुदायिक विकास-केन्द्र एवं 'सूचना-सेवा' के महत्त्वपूर्ण विभाग को नजरान्दाज कर दिया गया है।

जिज्ञासु विद्यार्थी की ज्ञान-पिपासा को दूर करने में शिक्षक पाठ्यक्रम के अतिरिक्त अन्य ज्ञान-विज्ञान, व विविध रुचि का साहित्य पढ़ने की प्रेरणा दे सकता है यदि उसे पूर्व में प्रशिक्षण-काल में इन सुविधाओं की जानकारी दी गई हो।

ग्रन्थालय में संग्रहीत पुस्तकें मनुष्य को उसके शिक्षण-काल में मित्रवत सहायता करती हैं, किन्तु संकट-काल में युद्ध की विभीषिकाओं से भी बचा सकती है। साधु-संगति के पश्चात् ग्रन्थ-संगति से बढ़कर दुनिया में कोई वस्तु श्रेष्ठ नहीं है। श्रेष्ठता पाना व्यक्ति के अध्ययन से प्राप्त बौद्धिक स्तर पर निर्भर होता है। अध्ययन का निर्झर हरा-भरा करने के लिए ज्ञान देने वाले शिक्षक रूपी माली को निर्झर की विशेषताओं से परिचय पाना आवश्यक है, निर्झर के जल में घुले रसायनों का परीक्षण भी जरूरी है, तभी इस ज्ञान के तड़ाग में सुगन्धित विद्यार्थी रूपी कमल को खिलता हुआ देखा जा सकता है।

अतएव मानव में अध्ययन व ज्ञान की ज्योति जगाने का एकमेव उपाय है—शिक्षा को पुस्तकालय रूपी प्रयोगशालाओं एवं शिक्षा के शिक्षण में पुस्तकालय-सुविधाओं की तकनीकों से जोड़ा जाना।

न जाने क्यों, प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शिक्षालयों में पुस्तकालयों का अभाव एवं शिक्षण-प्रशिक्षण केन्द्रों में पुस्तकालय-सुविधाओं के शिक्षण-कार्य का न होना खटकता जा रहा है। इनके अभाव में शिक्षा के गुणात्मक विकास में अवरोध उत्पन्न होकर समग्र विकास का ह्रास होता जा रहा है। यहाँ तक भी देखने में आया है कि जिन पाठशालाओं में ग्रन्थालय हैं उनके द्वार पूरे वर्ष बन्द पड़े रहते हैं और ग्रन्थपाल शाला के अन्य कार्यों में व्यस्त रहते हैं; शिक्षक भी ग्रन्थालय की महत्ता को अस्वीकार कर कोई ध्यान नहीं देते।

यद्यपि शासकीय कर्मचारी होने के नाते उन्हें संस्था की प्रमुख इकाई का कार्य पहले करना चाहिए किन्तु अपने व्यवसाय के प्रति भी अनुत्तरदायी नहीं होना चाहिए। ग्रन्थालय विद्यार्थियों के लिए ऐसी कार्यशाला है जिसके अनुदेशक शिक्षक हैं एवं ग्रन्थपाल प्रशासनिक सर्वेसर्वा। अपने व्यवसाय के प्रति अन्याय एवं विद्यार्थियों के प्रति लापरवाही बरतकर ग्रन्थालय-सुविधाओं को बन्द रखना कर्त्तव्यों के प्रति उपेक्षा दर्शाता है। होना यह चाहिए कि ११ से ५ बजे तक अपने ग्रन्थालय में विद्यार्थियों की समस्या एवं उनकी कठिनाई व जिज्ञासाओं का समाधान सर्वप्रथम होना चाहिए, किन्तु व्यवहार में ऐसा नहीं है।

ग्रन्थपाल तो ग्रन्थालय की साज-सँवार, खरीद-फरोख्त, संचालन एवं संगठन करता ही है, शिक्षकों को भी इस क्षेत्र में सहयोग का हाथ बढ़ाना चाहिए। विद्यार्थियों को कक्षा में पुस्तकालय के लाभ, उपयोग, उद्देश्य एवं कार्यों पर बताना चाहिए। सप्ताह में एक दिन प्रत्येक कक्षा के लिए काल-खण्ड निर्धारित हो तो वह पुस्तकालय के उपयोग का बेहतर उपाय तथा विद्यार्थियों में अध्ययन-रुचि के विकास का उत्तम तरीका हो सकता है। विद्यार्थियों के विषय-सम्बन्धी समस्या का निदान भी शिक्षक के सहयोग से यहाँ हो सकता है जो

[शेष पृष्ठ १४ पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Teaching English in India

By

Dr. (Miss) A. R. Bisht
Reader in Education,
Kumaun University, Almora

✡✡✡

- This book deals with the method of English teaching in Indian schools. It is useful for teacher trainees doing L. T., B. Ed., or B. T. C. courses because it is designed according to their syllabi. It can beneflt teachers teaching at senior and junior levels also. All the matter is arranged under relevant headings clearly, briefly, and simply. Examples of lesson planning (objective based too) are given in appendix. For enthiusiastic readers, a comprehen sive bibliography has been included.
- The book is the result of a long teaching experience of the author.

Size Demy **pp 250** **Price Rs. 12.00**

बी० ए० गृह-विज्ञान की छात्राओं के लिए—

डा० (श्रीमती) जी० पी० शैरी द्वारा लिखित

गृह-व्यवस्था एवं गृहकला
ग्यारहवाँ संस्करण, १९८३
मूल्य : सोलह रुपये पचास पैसे

पोषण एवं आहार विज्ञान
दसवाँ संस्करण, १९८१
मूल्य : तेरह रुपये पैंतीस पैसे

गृह-विज्ञान साहित्य

वस्त्र-विज्ञान के मूल सिद्धान्त
तेरहवाँ संस्करण, १९८२
मूल्य : आठ रुपये पचास पैसे

मातृकला एवं शिशु कल्याण
ग्यारहवाँ संस्करण, १९८२
मूल्य : चौदह रुपये

स्वास्थ्य विज्ञान तथा जन स्वास्थ्य
जी० डी० सत्संगी
चतुर्थ संशोधित संस्करण, १९८२ **मूल्य : बारह रुपये**

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा-२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काव्यशास्त्र परम्परा में एक और मौलिक प्रकाशन अब उपलब्ध है

भारतीय काव्यशास्त्र

लेखक

डा० रामानन्द शर्मा

एम० ए० (हिन्दी, संस्कृत), पी-एच० डी० (लब्ध स्वर्ण पदक)

स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग

हिन्दू कालेज, मुरादाबाद

☼ ☼ ☼

● आज काव्यशास्त्र विषय कुछ उपेक्षित-सा है। यह स्वाभाविक भी है, क्योंकि उपन्यासों की प्रधानता के युग में शास्त्रीय दुस्तरता एवं दुरूहता का सामना कौन करे ? कहाँ उपन्यासों की रोचकता एवं सुबोधता और कहाँ काव्यशास्त्र की दुर्बोध शास्त्रीय भित्ति ? आज न केवल स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में उपन्यासों का विशेष महत्त्व दे दिया गया है वरन् शोध भी अधिकांशतः उसी पर कराये जाते हैं। इसे हिन्दी विद्वान् प्राध्यापकों का मानसिक दारिद्रय (सही शब्दों में मानसिक दिवालियापन) तथा प्रयत्नलाघव (अकर्मण्यता) ही कहा जा सकता है। एक समय था जब काव्यशास्त्र गोष्ठियों का प्रमुख विषय होता था। लेकिन शास्त्रीय दुर्बोधता तथा मानव के प्रयत्न लाघव में संगति नहीं बैठ सकी।

● इस लाघव कृति के कारण ही आधुनिक भारतीय भाषाओं में काव्यशास्त्र पर विपुल चिन्तन-मनन एवं लेखन नहीं हो सका है। जो प्रामाणिक एवं गम्भीर ग्रन्थ सामने आये हैं। उनकी संख्या अत्यल्प है। इसका प्रभाव छात्रोपयोगी पुस्तकों पर भी पड़ा है। इस लक्ष्य को दृष्टिगत रखकर ही प्रस्तुत पुस्तक की रचना की गई है।

● प्रस्तुत पुस्तक बारह अध्यायों में विभक्त है। **प्रथम अध्याय** में काव्य की परिभाषा हेतु प्रयोजन के अतिरिक्त सत्यं शिवं सुन्दरम् को भी लिया गया है। **द्वितीय अध्याय** में न केवल कालक्रम बल्कि सैद्धान्तिक दृष्टि से भारतीय काव्यशास्त्र का विकास प्रस्तुत किया गया है। भारतीय काव्यशास्त्र से तात्पर्य संस्कृत एवं हिन्दी के काव्यशास्त्र से ही रहा है। यद्यपि इतर भाषाओं के विचारों का भी यत्र-तत्र उल्लेख आ गया है लेकिन यह प्रासंगिक ही है। इसी अध्याय में काव्यात्मा पर भी विचार किया गया है। **तृतीय** से लेकर **अष्टम् अध्याय** पर्यन्त भारतीय काव्यशास्त्र के छहों सम्प्रदायों—क्रमशः अलंकार, रीति, ध्वनि, वक्रोक्ति, औचित्य और रस— का विवेचन किया गया है। **नवम्** और **दशम् अध्यायों** में क्रमशः श्रव्य काव्य एवं दृश्यकाव्य लिये गये हैं। **एकादश अध्याय** में आलोचना के स्वरूप को स्पष्ट किया गया है। **द्वादश अध्याय** में पाश्चात्य वादों पर संक्षिप्त प्रकाश डाला गया है। इस प्रकार भारतीय काव्यशास्त्र पर छात्रोपयोगी यह एक नवीन मौलिक रचना है, इससे अध्येताओं एवं छात्रों को अवश्य लाभ मिलेगा।

आकार : डिमाई पृष्ठ : ४३२ मूल्य : २८.००

पुस्तकालय सं० : ४०.००

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा-२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर प्रदेश में माध्यमिक शिक्षा का प्रबन्धतंत्र

डॉ० एल० बी० बाजपेयी
प्राध्यापक, बी० एड० विभाग, जयनारायण डिग्री कॉलेज, लखनऊ

भारतीय संविधान में शिक्षा का उत्तरदायित्व राज्यों को सौंपा गया है। परन्तु शिक्षा के राष्ट्रीय महत्त्व को स्वीकार करते हुए केन्द्र-शासन शिक्षा के क्षेत्र में कुछ प्रमुख कर्त्तव्यों का पालन करता है तथा राज्य सरकारों का आवश्यकतानुसार मार्गदर्शन भी करता है।

उत्तर प्रदेश में माध्यमिक शिक्षा राज्य के नियन्त्रण में है। प्रान्तीय सरकार ने ब्रिटिश-कालीन परम्परा का अनुसरण करते हुए प्रत्येक जिला मुख्यालय पर तथा प्रमुख नगरों में एक या अधिक शासकीय माध्यमिक विद्यालय आदर्श रूप में स्थापित किये हैं। राज्य सरकार के अतिरिक्त केन्द्रीय सरकार, स्थानीय निकाय तथा निजी अभिकरणों द्वारा भी माध्यमिक विद्यालय स्थापित किये गये हैं। इस प्रकार सम्पूर्ण प्रदेश में उच्च एवं उच्चतर माध्यमिक शिक्षा का प्रबन्ध संचालन प्रमुखतः तीन अभिकरणों के संरक्षण में है, जो निम्नांकित हैं—

शासकीय विद्यालय

शासकीय विद्यालयों का प्रबन्ध और वित्तीय व्यवस्था का दायित्व सीधे शासन पर होता है। यह विद्यालय दो प्रकार के होते हैं। एक तो वे, जो प्रान्तीय सरकार द्वारा प्रबन्धित होते हैं और दूसरे वे, जो केन्द्र सरकार के विभिन्न मन्त्रालयों द्वारा राज्यों में स्थापित किये जाते हैं। इन विद्यालयों का संक्षिप्त विवरण यहाँ प्रस्तुत किया गया है।

प्रान्तीय सरकार के विद्यालय—उत्तर प्रदेश में राजकीय माध्यमिक विद्यालय प्रत्येक जिला मुख्यालय तथा महत्त्वपूर्ण स्थानों पर एक या अधिक संख्या में खोले गये हैं। सन् १९५०-५१ में प्रवेश में उच्च एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की संख्या ९८७ थी, जो १९७३-७४ में बढ़कर ४,१६५ हो गई। कुल विद्यालयों की संख्या में सरकारी विद्यालयों का प्रतिशत क्रमशः १२ एवं ७·५ था। यह विद्यालय पूर्णतः शासन के अधीन कहकर एक आदर्श विद्यालय के रूप में कार्य करते हैं। इनका प्रबन्ध-संचालन, भवन-निर्माण, साज-सज्जा, उपकरण, अध्यापकों का चयन एवं नियुक्ति तथा पदोन्नति और छात्रों के प्रवेश आदि के नियमों का निर्धारण एवं क्रियान्वयन सीधे शासन के निर्देशानुसार होता है। सरकारी विद्यालयों की आय का साधन छात्रों से प्राप्त शुल्क होता है, जो राजकीय कोषालय (ट्रेजरी) में जमा कर दिया जाता है और व्यय के लिए समय-समय पर कोषालय से निर्धारित राशि नियमानुसार निकाली जाती है।

केन्द्रीय सरकार के विद्यालय—केन्द्र सरकार का शिक्षा-मन्त्रालय, रक्षा-मन्त्रालय और रेलवे-मन्त्रालय द्वारा अपने कर्मचारियों के बच्चों की शिक्षा-सुविधा के लिए प्रमुख स्थानों पर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय स्थापित किये गये हैं। उत्तर प्रदेश के सन्दर्भ में इन विद्यालयों का विवरण नीचे प्रस्तुत है—

केन्द्रीय विद्यालय—द्वितीय वेतन आयोग की सिफारिश पर भारत सरकार के शिक्षा-मन्त्रालय ने केन्द्रीय विद्यालय खोलने की योजना को क्रियान्वित किया है। इन विद्यालयों का प्रबन्ध-संचालन 'केन्द्रीय विद्यालय संगठन' नामक स्वायत्त संस्था द्वारा किया जाता है। इन विद्यालयों का पाठ्यक्रम और शिक्षण का माध्यम सर्वत्र एक जैसा है। केन्द्रीय विद्यालयों के छात्र 'केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल' की अखिल भारतीय हायर सेकण्डरी परीक्षा में सम्मिलित होते हैं। उत्तर प्रदेश के प्रमुख नगरों; जैसे—आगरा, इलाहाबाद, वाराणसी, लखनऊ, कानपुर, झाँसी, गोरखपुर, मुगलसराय, देहरादून, रायबरेली, फतेहगढ़ तथा बबीना और कुछ अन्य नगरों में भी केन्द्रीय विद्यालय स्थापित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...तंत्रीय प्रणाली को एक मजबूत आधार
...यक होती हैं। नागरिक जीवन के
... शिक्षा है जो मानव के मानसिक
...त्तर प्रदेश में स्थानीय निकायों
... महत्त्वपूर्ण आवश्यकता पर
...ार्य प्राथमिक शिक्षा से
...य शिक्षा के विकास के
...देश में विभिन्न स्वायत्त-
...लित उच्च एवं उच्चतर
...क्षिप्त विवरण दे पाना ही

...—उत्तर प्रदेश के पाँच बड़े नगरों
...कानपुर, लखनऊ, इलाहाबाद और
...पालिकाओं के स्थान पर नगर निगमों
...री १९६० में की गई थी। नगर
...न-जीवन में शिक्षा-प्रसार हेतु
...जुलाई १९७२ में प्रदेश में
...गठन हो जाने से स्थानीय
...सभी जूनियर बेसिक तथा
...रिषद को हस्तान्तरित कर
...य में स्वायत्तशासी संस्थाओं
...उच्च एवं उच्चतर माध्यमिक
...पय उपाधि महाविद्यालयों का
...हा है।

...७६ की अवधि में नगर निगमों के
...च्च एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों
...ग १८ थी। इन विद्यालयों का प्रबन्ध-
...ीय व्यवस्था, भवन निर्माण तथा साज-
...ायित्व नगर निगम के अधिकार-क्षेत्र में होता
है। पाठ्यक्रम निर्धारण तथा परीक्षाओं का संचालन माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश (इलाहाबाद) द्वारा किया जाता है। स्वतंत्रता के उपरान्त नगर निगमों ने बालिकाओं की शिक्षा के प्रसार में सराहनीय कार्य किया है।

नगरपालिकायें—सन् १९७५-७६ में प्रदेश में १७३ नगरपालिकायें थीं। नगरपालिकायें अपनी सीमा के अन्दर प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था प्रसार और प्रगति के लिए उत्तरदायी होती हैं। फिर भी कुछ नगरपालिकायें अपनी आर्थिक समृद्धि के अनुकूल कुछ

हायर सेकण्डरी स्कूल बनारस में खोलने का प्रस्ताव है। एक अन्य हायर सेकण्डरी स्कूल झारीपानी (मंसूरी) में है। यह स्कूल अँग्रेजी पद्धति पर आधारित सीनियर कैम्ब्रिज स्कूल है। प्रदेश में चल रहे रेलवे हायर सेकण्डरी स्कूलों को मान्यता, पाठ्यक्रम निर्धारण एवं परीक्षणों का संचालन तथा प्रमाणपत्र देने का कार्य माध्यमिक शिक्षा-परिषद्, उत्तर प्रदेश (इलाहाबाद) द्वारा किया जाता है।

स्वायत्तशासी विद्यालय

स्थानीय निकाय स्वायत्तशासी संस्थायें होती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

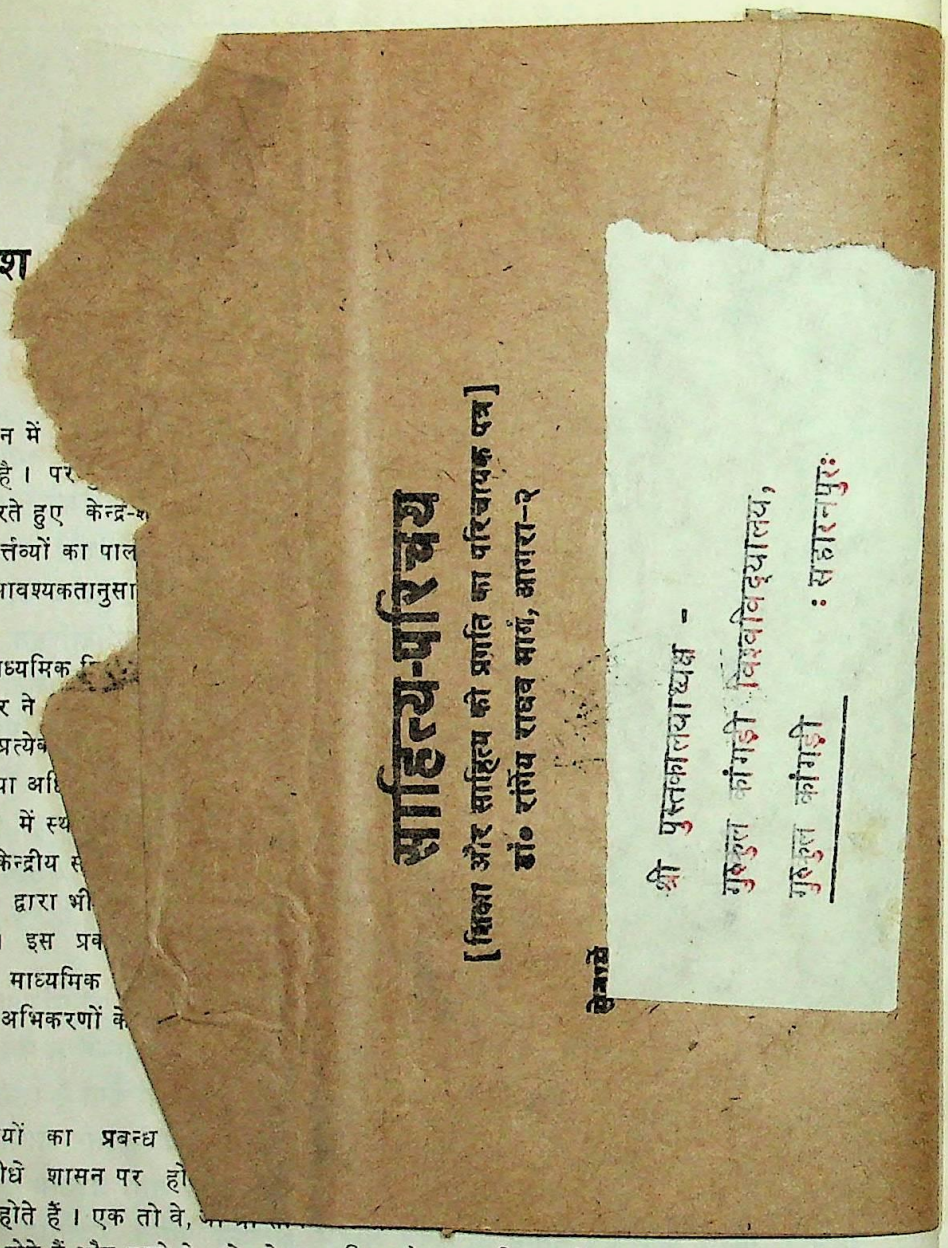

उत्तर प्रदेश

भारतीय संविधान में
राज्यों को सौंपा गया है। पर
महत्त्व को स्वीकार करते हुए केन्द्र-
क्षेत्र में कुछ प्रमुख कर्त्तव्यों का पाल
राज्य सरकारों का आवश्यकतानुसा
करता है।

उत्तर प्रदेश में माध्यमिक
में है। प्रान्तीय सरकार ने
अनुसरण करते हुए प्रत्येक
प्रमुख नगरों में एक या अधि
विद्यालय आदर्श रूप में स्थ
सरकार के अतिरिक्त केन्द्रीय स
तथा निजी अभिकरणों द्वारा भी
स्थापित किये गये हैं। इस प्र
उच्च एवं उच्चतर माध्यमिक
संचालन प्रमुखतः तीन अभिकरणों के
निम्नांकित हैं—

शासकीय विद्यालय

शासकीय विद्यालयों का प्रबन्ध
व्यवस्था का दायित्व सीधे शासन पर हो
विद्यालय दो प्रकार के होते हैं। एक तो वे,
सरकार द्वारा प्रबन्धित होते हैं और दूसरे वे, जो केन्द्र सरकार के विभिन्न मन्त्रालयों द्वारा राज्यों में स्थापित किये जाते हैं। इन विद्यालयों का संक्षिप्त विवरण यहाँ प्रस्तुत किया गया है।

प्रान्तीय सरकार के विद्यालय—उत्तर प्रदेश में राजकीय माध्यमिक विद्यालय प्रत्येक जिला मुख्यालय तथा महत्त्वपूर्ण स्थानों पर एक या अधिक संख्या में खोले गये हैं। सन् १९५०-५१ में प्रवेश में उच्च एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की संख्या ९८७ थी, जो १९७३-७४ में बढ़कर ४,१६५ हो गई। कुल विद्यालयों

किया है। इन विद्यालयों का प्रबन्ध-संचालन 'केन्द्रीय विद्यालय संगठन' नामक स्वायत्त संस्था द्वारा किया जाता है। इन विद्यालयों का पाठ्यक्रम और शिक्षण का माध्यम सर्वत्र एक जैसा है। केन्द्रीय विद्यालयों के छात्र 'केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल' की अखिल भारतीय हायर सेकण्डरी परीक्षा में सम्मिलित होते हैं। उत्तर प्रदेश के प्रमुख नगरों; जैसे—आगरा, इलाहाबाद, वाराणसी, लखनऊ, कानपुर, झाँसी, गोरखपुर, मुगलसराय, देहरादून, रायबरेली, फतेहगढ़ तथा बबीना और कुछ अन्य नगरों में भी केन्द्रीय विद्यालय स्थापित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किये गये हैं। वर्तमान समय में प्रदेश में इन विद्यालयों की कुल संख्या ४८ है।

सैनिक स्कूल—देश की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए रक्षा-मन्त्रालय ने उपयुक्त सुशिक्षित सैनिकों का निर्माण करने की दृष्टि से प्रत्येक राज्य में कम से कम एक सैनिक स्कूल खोलना स्वीकार किया है। ये विद्यालय आवासीय विद्यालय हैं जो उच्चतर माध्यमिक स्तर तक की शिक्षा देते हैं। उत्तर प्रदेश में सन् १९६५ में प्रथम सैनिक स्कूल घोड़ाखाल (नैनीताल) में खोलने की योजना बनायी गयी, परन्तु यह स्कूल नियत समय पर न खुल सका और उस वर्ष इसके छात्र सैनिक स्कूल रीवा (मध्य प्रदेश) भेज दिये गये। दूसरा सैनिक स्कूल देहरादून में स्थापित किया गया। सैनिक स्कूलों का प्रबन्ध-संचालन प्रतिरक्षा-मन्त्रालय की सैनिक स्कूल सोसायटी के द्वारा सम्पन्न होता है। एक अन्य सैनिक स्कूल १९६० में लखनऊ में खोला गया। परन्तु यह विद्यालय रक्षा-मन्त्रालय द्वारा संचालित न होकर उत्तर प्रदेश शासन द्वारा संचालित हो रहा है। सन् १९६० में इस स्कूल को इण्डियन स्कूल सर्टीफिकेट एक्जामिनेशन के लिए मान्यता प्राप्त हो गई। अतएव इस विद्यालय के भी छात्र सनिक स्कूल परीक्षा में सम्मिलित होने लगे।

रेलवे हायर सेकण्डरी स्कूल—रेलवे-मन्त्रालय द्वारा संचालित उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में रेलवे कर्मचारियों के बच्चों को प्रवेश में वरीयता दी जाती है तथा अध्यापकों का चयन व नियुक्ति रेलवे विभाग द्वारा की जाती है। विद्यालय की वित्तीय व्यवस्था का दायित्व रेलवे विभाग पर होता है।

उत्तर प्रदेश में रेलवे मंत्रालय के दो हायर सेकण्डरी स्कूल टूंडला और मुगलसराय में चल रहे हैं। तीसरा हायर सेकण्डरी स्कूल बनारस में खोलने का प्रस्ताव है। एक अन्य हायर सेकण्डरी स्कूल झारीपानी (मंसूरी) में है। यह स्कूल अँग्रेजी पद्धति पर आधारित सीनियर कैम्ब्रिज स्कूल है। प्रदेश में चल रहे रेलवे हायर सेकण्डरी स्कूलों को मान्यता, पाठ्यक्रम निर्धारण एवं परीक्षणों का संचालन तथा प्रमाणपत्र देने का कार्य माध्यमिक शिक्षा-परिषद्, उत्तर प्रदेश (इलाहाबाद) द्वारा किया जाता है।

स्वायत्तशासी विद्यालय

स्थानीय निकाय स्वायत्तशासी संस्थायें होती हैं। ये संस्थायें जनतंत्रीय प्रणाली को एक मजबूत आधार प्रदान करने में सहायक होती हैं। नागरिक जीवन के उत्थान की प्रथम सीढ़ी शिक्षा है जो मानव के मानसिक विकास की प्रतीक है। उत्तर प्रदेश में स्थानीय निकायों ने नागरिक जीवन की इस महत्त्वपूर्ण आवश्यकता पर बल देकर अपने क्षेत्र में अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा से लेकर माध्यमिक एवं उच्चस्तरीय शिक्षा के विकास के लिए प्रयास किया है। उत्तर प्रदेश में विभिन्न स्वायत्त-शासी संस्थाओं के द्वारा संचालित उच्च एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों का संक्षिप्त विवरण दे पाना ही यहाँ सम्भव है :—

नगर निगम—उत्तर प्रदेश के पाँच बड़े नगरों नामतः आगरा, कानपुर, लखनऊ, इलाहाबाद और वाराणसी में नगरपालिकाओं के स्थान पर नगर निगमों की स्थापना फरवरी १९६० में की गई थी। नगर निगमों ने सामाजिक जन-जीवन में शिक्षा-प्रसार हेतु प्रशंसनीय कार्य किया है। जुलाई १९७२ में प्रदेश में बेसिक शिक्षा परिषद का गठन हो जाने से स्थानीय निकायों द्वारा संचालित सभी जूनियर बेसिक तथा सीनियर बेसिक स्कूल परिषद को हस्तान्तरित कर दिये गये। वर्तमान समय में स्वायत्तशासी संस्थाओं द्वारा नर्सरी स्कूल, उच्च एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालय तथा कतिपय उपाधि महाविद्यालयों का संचालन किया जा रहा है।

सन् १९७५-७६ की अवधि में नगर निगमों के द्वारा संचालित उच्च एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की संख्या लगभग १८ थी। इन विद्यालयों का प्रबन्ध-संचालन, वित्तीय व्यवस्था, भवन निर्माण तथा साज-सज्जा का दायित्व नगर निगम के अधिकार-क्षेत्र में होता है। पाठ्यक्रम निर्धारण तथा परीक्षाओं का संचालन माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश (इलाहाबाद) द्वारा किया जाता है। स्वतंत्रता के उपरान्त नगर निगमों ने बालिकाओं की शिक्षा के प्रसार में सराहनीय कार्य किया है।

नगरपालिकायें—सन् १९७५-७६ में प्रदेश में १७३ नगरपालिकायें थीं। नगरपालिकायें अपनी सीमा के अन्दर प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था प्रसार और प्रगति के लिए उत्तरदायी होती हैं। फिर भी कुछ नगरपालिकायें अपनी आर्थिक समृद्धि के अनुकूल कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उच्च एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालय भी संचालित कर रही हैं। वर्तमान समय में नगरपालिकाओं द्वारा बालक-बालिकाओं के लगभग १८ उच्च एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालय संचालित किये जा रहे हैं। इसके अतिरिक्त 'पिहानी' तथा 'जलालाबाद' (शाहजहाँपुर) की नगरपालिकायें १,००० से १,८०० रुपये की वार्षिक सहायता अपने क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों को प्रदान करती हैं। वर्ष १९७३-७४ में प्रदेश के कुल उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में से स्वायत्तशासी विद्यालयों का प्रतिशत २·७ था।

उपर्युक्त स्वायत्तशासी संस्थाओं के अतिरिक्त टाउन एरिया कमेटी, नोटीफाइड एरिया कमेटी तथा जिला परिषदें भी इसी श्रेणी में आती हैं। परन्तु इनके द्वारा किसी उच्च या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय का संचालन नहीं किया जाता। इन संस्थाओं के प्रबन्धाधिकरण में संचालित विद्यालय, राजकीय विद्यालयों के समान साधन-सम्पन्न तथा साज-सज्जा युक्त नहीं होते। ये विद्यालय स्थानीय राजनीति के अड्डे बन जाते हैं। अध्यापक अपने कर्त्तव्यों का यथोचित निर्वाह नहीं करते। आय के सीमित साधन होने से अध्यापकों को यथोचित तथा समय से वेतन नहीं मिलता। अध्यापकों के चयन एवं नियुक्तियों में भी पक्षपात होता है।

निजी अभिकरणों द्वारा प्रबन्धित विद्यालय

उत्तर प्रदेश की वर्तमान शिक्षण-व्यवस्था के प्रसार में निजी अभिकरणों का योगदान बहुत महत्त्वपूर्ण रहा है। प्रदेश में उच्च एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों का एक बहुत बड़ा भाग निजी प्रबन्धतन्त्र द्वारा संचालित होता है। स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद इन विद्यालयों की संख्या में तीव्र वृद्धि हुई है। इन अभिकरणों की प्रायः एक सामान्य प्रबन्धकारिणी समिति होती है जो सोसाइटीज् रजिस्ट्रेशन ऐक्ट सन् १८६० के अधीन पंजीकृत होती है। प्रबन्धकारिणी समिति के सदस्य अपने में से कुछ सदस्यों का चुनाव कार्यकारिणी समिति के लिए करते हैं। कार्यकारिणी समिति विद्यालय व्यवस्था के प्रति उत्तरदायी होती है। ऐसे सार्वजनिक स्कूल ही राजकीय सहायता प्राप्त करने के अधिकारी होते हैं। इस समय प्रदेश में निजी अभिकरणों की संख्या सर्वाधिक है। सन् १९७१ में प्रदेश में कुल माध्यमिक विद्यालय ३,४१५ थे, जिनमें निजी विद्यालय ३,०४८ थे। कुल निजी विद्यालयों में से २,५७० सहायता प्राप्त और ४७८ गैर-सहायता प्राप्त थे। निजी अभिकरणों के अन्तर्गत जिन विभिन्न प्रबंधतंत्रों द्वारा उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों का संचालन किया जाता है, उनके प्रमुख भेद निम्नांकित हैं :—

(१) व्यक्तिगत या प्रोप्राइटरी विद्यालय।
(२) पंजीकृत प्रबन्ध समिति के विद्यालय।
(३) सम्प्रदाय-विशेष के द्वारा संचालित विद्यालय।
(४) वर्ग-विशेष के विद्यालय।
(५) ट्रस्टों के विद्यालय।

ट्रस्ट दो प्रकार के होते हैं—धार्मिक और शैक्षिक। धार्मिक ट्रस्टों का विशेष प्रयोजन यह होता है कि इनके स्कूलों द्वारा इनके मतों का प्रचार एवं समर्थन बढ़े। शैक्षिक ट्रस्ट केवल शिक्षा-संस्थाओं के संचालन के लिए ही बनाये जाते हैं।

उत्तर प्रदेश में अधिकांश उच्च एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालय निजी अभिकरणों द्वारा प्रबन्धित और संचालित होते हैं। इनमें अधिकांश की स्थिति सन्तोषजनक नहीं कही जा सकती। पंजीकृत प्रबन्ध समितियों के अधीन कार्य कर रहे विद्यालयों की दशा सबसे अधिक दर्शनीय है। व्यक्ति-विशेष, सम्प्रदाय-विशेष तथा वर्ग-विशेषों द्वारा संचालित विद्यालयों में अभावग्रस्तता तो नहीं दिखाई देती परन्तु इनमें संकीर्णता का समावेश अवश्य रहता है। असहायता प्राप्त पंजीकृत प्रबन्ध समितियों के विद्यालय प्रायः अपने सीमित आर्थिक साधनों के अन्तर्गत शासकीय नियमों एवं अपेक्षाओं को पूरा करने का प्रयास करते हैं तथा असंवैधानिक कार्यों से बचते हैं जब तक कि उन्हें शासकीय सहायता अनुदान नहीं मिल जाता। धार्मिक ट्रस्टों द्वारा संचालित विद्यालय भारतीय संविधान की धर्मनिरपेक्षता की नीति के विरुद्ध हैं। इनमें छात्रों का प्रवेश व अध्यापकों की नियुक्ति निष्पक्ष भाव से नहीं की जाती। इन विद्यालयों का उद्देश्य शिक्षा-प्रसार के साथ-साथ अपने धर्म का प्रचार करना होता है।

स्वतन्त्रता के उपरान्त निजी प्रबन्धतन्त्र के द्वारा संचालित विद्यालयों को कई नवीन समस्याओं का सामना करना पड़ा है। पहली समस्या यह थी कि प्रत्येक बिरादरी ने अपने आस-पास स्कूल खोलना चाहा। अतएव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन स्कूलों की संख्या में मनमाने ढंग से वृद्धि हुई। परन्तु उनमें साज-सज्जा एवं सुशिक्षित अध्यापकों का अभाव खटकता रहा। नये माध्यमिक विद्यालय खोलने की होड़-सी लग गई। इस प्रतिद्वन्दिता में सामाजिक मतभेद बढ़े हैं तथा शैक्षिक स्तर में गिरावट आई है। दूसरी समस्या यह मिशन स्कूलों को मिलने वाली विदेशी सहायता कम हो गई। अनिश्चित आर्थिक परिस्थितियों के कारण शिक्षा के लिए जनता से मिलने वाला आर्थिक सहयोग भी धीरे-धीरे कम होता गया। जमींदारी उन्मूलन हो जाने से जमींदारों और ताल्लुकेदारों से मिलने वाली आर्थिक सहायता प्रायः बन्द हो गई। राज्य शासन से मिलने वाले अनुदान की प्रवृत्ति बहुत उदार नहीं रही। अतएव निजी अभिकरणों द्वारा संचालित विद्यालय सम्पन्न नहीं दिखाई देते।

उत्तर प्रदेश में विभिन्न प्रबन्धतन्त्रों द्वारा प्रबन्धित उच्च एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की संख्या का तुलनात्मक प्रतिशत निम्नांकित तालिका में दर्शाया गया है। विगत लगभग २५ वर्षों में प्रदेश में उच्च एवं उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालयों की वृद्धि-दर प्रबन्धतन्त्रानुसार कितनी रही है, इसकी स्पष्ट जानकारी इस सारणी से मिल जाती है।

प्रबन्धतन्त्र के अनुसार हाई/हायर सेकण्डरी स्कूलों की संख्या (१९५०–७४)

संस्थाएँ	१९५०–५१	१९६०–६१	१९७०–७१	१९७३–७४
उच्च एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की कुल संख्या	६८७	१,७७१	३,४१५	४,१६५
कुल सरकारी विद्यालयों का प्रतिशत	१२·०	८·३	७·४	७·५
कुल स्थानीय निकायों के विद्यालयों का प्रतिशत	२·३	२·८	३·३	२·७
कुल में निजी विद्यालयों के प्रतिशत का				
(क) सहायता प्राप्त	७६·३	७३·०	७५·३	७०·१
(ख) ग़ैर-सहायता प्राप्त	९·४	१५·९	१४·०	१९·७

स्रोत : एजूकेशन इन इण्डिया, (मिनिस्ट्री ऑफ एजूकेशन : गवर्नमेण्ट ऑफ इण्डिया), सम्बन्धित वर्षों की रिपोर्ट।

उपर्युक्त तालिका के अवलोकन से विदित होता है कि सन् १९५०-७४ के मध्य उच्च एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की संख्या लगभग चौगुनी हो गई किन्तु इनके प्रबन्ध में कुछ अन्तर आ गया है। जहाँ सन् १९५०-५१ में १२% विद्यालय शासन द्वारा संचालित होते थे वहाँ सन् १९७३-७४ में ७·५% विद्यालय ही उसके द्वारा संचालित हो रहे थे। आँकड़ों के अवलोकन से ऐसा लगता है कि सरकार माध्यमिक विद्यालयों के प्रबन्धतन्त्र से धीरे-धीरे हट रही है। स्थानीय शासन का प्रतिशत इस अवधि में २·३ से बढ़कर २.७% हो गया, जो बहुत कम वृद्धि की ओर संकेत करता है। निजी प्रबन्धकों द्वारा संचालित स्कूलों में सबसे अधिक वृद्धि हुई है। जहाँ सन् १९५०-५१ में ८५.७% विद्यालय निजी प्रबन्धकों द्वारा चलाये जा रहे थे वहाँ १९७३-७४ में ८९·८% विद्यालय उनके नियन्त्रण में थे। इससे स्पष्ट होता है कि निजी प्रबन्धकों के विद्यालयों की संख्या उत्तरोत्तर बढ़ती गई है और वर्तमान में लगभग ९०% विद्यालय इन्हीं के द्वारा संचालित किए जा रहे हैं। ग़ैर-सहायता प्राप्त निजी विद्यालयों का प्रतिशत ९·४ से बढ़कर १९·७ हो गया है, यह वृद्धि विचारणीय है। यदि उच्च एवं उच्चतर माध्यमिक शिक्षा का भार निजी प्रबन्धक ही लिये हुए हैं, तो शासन को उन्हें सभी प्रकार की सहायता तथा सुविधा देना चाहिए। सहायक अनुदान के नियमों में परिवर्तन करके लगभग सभी निजी प्रबन्धकों के विद्यालयों को आर्थिक सहायता देने की व्यवस्था की जानी चाहिए। प्रारम्भ के कई वर्षों में इन विद्यालयों को अनुदान की सूची पर नहीं लिया जाता, यह उचित नहीं जान पड़ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी प्रारम्भिक अवस्था में जब वे अपने पैरों पर खड़े होने में डगमगाते हैं तभी उनको सबसे अधिक आर्थिक सहायता एवं सहयोग की आवश्यकता होती है। इसके अभाव में शिक्षा-प्रसार में तो अवरोध पैदा होता ही है साथ ही शिक्षा-स्तर भी गिरता है तथा शिक्षा-प्रसार एवं उन्नयन के सारे प्रयास निष्फल हो जाते हैं।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि उच्च एवं उच्चतर माध्यमिक शिक्षा का ४/५वाँ भाग निजी प्रबन्धकों के हाथ में है। शिक्षा का स्तर और सुविधायें बढ़ाना निजी अभिकरणों पर निर्भर करता है। अतएव शासन को अपनी आर्थिक नीति में उदारता बरतनी चाहिए जिससे अच्छी शिक्षा का प्रबन्ध प्रदेश में हो सके। निजी अभिकरणों के लिए पिछड़े क्षेत्रों और बालिकाओं की शिक्षा में अधिक अंशदान देने की व्यवस्था होनी चाहिए जिससे शिक्षा का प्रसार सुलभ बने। साथ ही वे अभिकरण, जो व्यापार-लाभ या शक्ति प्राप्त करने की दृष्टि से विद्यालय चलाते हैं, उन पर कठोर अंकुश रखना चाहिए। स्थानीय निकायों को उच्चतर माध्यमिक विद्यालय चलाने के लिए अनुदान देना चाहिए। केन्द्र सरकार ने दो बार शैक्षिक सर्वेक्षण कराकर उन स्थानों को निर्धारित किया है जहाँ पर विद्यालय खोले जाने चाहिए। राजनैतिक दबाव या क्षेत्रीय प्रभाव में पड़कर शासन को ऐसे स्थानों पर विद्यालय खोलने की अनुमति नहीं देनी चाहिए, जहाँ पहले से कोई विद्यालय स्थित है। सहायता अनुदान के नियमों, प्रबन्ध समितियों के गठन, आय-व्यय के ब्यौरे और अध्यापकों तथा कर्मचारियों की नियुक्ति, प्रोन्नति एवं आचरण के सम्बन्ध में ऐसे नियम बना देने चाहिए जिससे शिक्षा के पुनीत कार्य में कोई व्यवधान उपस्थित न हो सके।

[पृष्ठ ७ का शेषांश]

मार्गदर्शन का स्वरूप होगा। यहाँ यह स्पष्ट करना उपयुक्त है कि यह कार्य वे शिक्षक ही बखूबी कर सकते हैं जिन्हें ग्रन्थालय-सुविधाओं का शिक्षण, प्रशिक्षण काल में दिया जा चुका है या अपने विद्यार्थी जीवन में जिसने ग्रन्थालय की मित्रता का निर्वाह पूरे समय किया है।

शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों को यह प्रेरणा-सूत्र दिया जाना चाहिए कि छात्र स्वाभाविक रूप से पुस्तकालय की ओर आकृष्ट हों एवं ग्रन्थों व पत्र-पत्रिकाओं के अध्ययन से अस्वाभाविक प्रतिभा का धनी बन सके। शिक्षण-प्रशिक्षण के दौरान छात्राध्यापक द्वारा जो पाठ-योजना एवं व्यावहारिक कार्यशाला तैयार की जाय, उसका प्रयोग पाठशालाओं में हो, तो विद्यार्थियों में पुस्तकालय के प्रति एक स्वस्थ भावना का जन्म होगा।

ऐसा करने से जो विद्यार्थी गरीब हैं, आर्थिक रूप से पिछड़ा है, पुस्तकें खरीदकर नहीं पढ़ सकता, किन्तु बुद्धिमान व विवेकशील है, उसे पुस्तकालयों का साहचर्य अपनी पढ़ाई के रोजमर्रा काल में मिलता रहे तो शिक्षा प्राप्त करने तथा बौद्धिक क्षमता के विकास में आने वाली कठिनाइयों का हल आसानी से ढूँढ़ा जा सकता है।

इस प्रकार शिक्षण-अध्यापन एवं अध्ययन में पुस्तकालय एक ऐसा उपकरण है, जिसमें अवस्थित ग्रन्थ रूपी हीरे-मोती, साधारण से साधारण व्यक्ति को भी जौहरी की सूक्ष्म दृष्टि प्रदान करने में सक्षम होता है। यही पारखी ज्ञानरूपी (विद्यार्थी) पारस को लेकर विश्व के जंग लगे लौह-स्वरूप राष्ट्रों में जान फूँकता है. और सुप्त राष्ट्रों को जगाकर उनको स्वर्णिम-युग दिखाता है; क्योंकि दार्शनिकों व इतिहासकारों का कहना है कि जिन राष्ट्रों के पुस्तकालय जितने समृद्ध होते हैं वहाँ की संस्कृति, कला एवं इतिहास व सभ्यता उतनी ही श्रेष्ठ होती है।

कार्ल मार्क्स, लेनिन, पुश्किन, चेखव, गोर्की सोल्जेनित्सिन ऐसा कोई भी मानव, शोषण के विरुद्ध आवाज उठा सकता है। गांधी, तिलक, नेहरू, सुभाष, भगतसिंह, आजाद, सावरकर ऐसे महान् व्यक्तित्व कितनी ही बार विदेशी हुकूमत को ललकार सकते हैं, यह शक्ति है इन प्रकाश-घरों के अँधियारे बन्द कमरों में।

आइए, इनकी सुविधाओं को जानें; इनके दरवाजे हम खोल दें, तो मन्द-मन्द ज्ञान का प्रकाश बिखरेगा। पुस्तकों को अपने प्रिय पाठक मिलेंगे एवं पाठकों को प्रिय पुस्तकें। पुस्तकालयों के संवर्द्धन के साथ-साथ मानव-मस्तिष्क का भी संवर्द्धन होगा। परतों में दबा ज्ञान प्रकाश में आयेगा। दूर कहीं दूर दिखाई देने वाली मोहक रोशनी से हम चकाचौंध नहीं होंगे और न ही आकर्षित। यह प्रयास हमारे निजत्व का विकास होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्कृत साहित्य

☆

☆

का

☆

☆

विद्यार्थी उपयोगी प्रकाशन

☆

☆

कादम्बरी कथामुखम्	डा० कृष्ण अवतार बाजपेयी	१२.००
संस्कृत साहित्य का सुबोध इतिहास	डा० राजकिशोरसिंह	१२.००
संस्कृत साहित्य की प्रवृत्तियाँ	डा० जयकिशन प्रसाद	१८.००
संस्कृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास	डा० बाबूराम त्रिपाठी	१६.००
संस्कृत नाट्य साहित्य	डा० जयकिशन प्रसाद	१२.००
प्राचीन भारतीय कला एवं संस्कृति	डा० राजकिशोरसिंह, उषा यादव	२८.००
भारतीय संस्कृति	डा० राजकिशोरसिंह	२०.००
संस्कृत भाषा-विज्ञान	डा० राजकिशोरसिंह	१२.००
संस्कृत व्याकरणम्	डा० बाबूराम त्रिपाठी	२४.००
भारतीय दर्शन	डा० रामकृष्ण आचार्य एवं बाबूराम त्रिपाठी	१२.००
संस्कृत निबन्धांजलिः	डा० रामकृष्ण आचार्य	(प्रेस में)
ऋक्-सूक्त-समुच्चयः	डा० रामकृष्ण आचार्य	२०.००
मेघदूतम् [सम्पूर्ण, सटीक]	डा० रामकृष्ण आचार्य	९.००
मेघदूतम् [पूर्वमेघ, सटीक]	डा० रामकृष्ण आचार्य	६.५०
संस्कृत वाङ्मय : मौखिकी	डा० गोविन्द त्रिगुणायत	६.००
वैदिक साहित्य का इतिहास	डा० राजकिशोर सिंह	८.००
संस्कृत साहित्य का इतिहास	डा० द्वारिकाप्रसाद	९.००
काव्यप्रकाश : एक अध्ययन	डा० पारसनाथ द्विवेदी	६.५०
ध्वन्यालोकः एक अध्ययन	डा० पारसनाथ द्विवेदी	३.५०
कालिदास और अभिज्ञान शाकुन्तलम्	डा० जयकिशन प्रसाद	५.५०
चतुर्वेद	डा० जयकिशन प्रसाद	५.००
कालिदास और मेघदूत	डा० जयकिशन प्रसाद	५.००
सुबोध संस्कृत भाषा-विज्ञान	डा० जयकिशन प्रसाद	५.००
साहित्य दर्पण : एक अध्ययन	डा० जयकिशन प्रसाद	५.००
संस्कृत निबन्ध कौमुदी	डा० बाबूराम त्रिपाठी	५.५०
रघुवंशम् [प्रथम सर्ग]	डा० जयकिशन प्रसाद	४.५०
रघुवंशम् [द्वितीय सर्ग]	डा० रामकृष्ण आचार्य	४.००
रघुवंशम् [१३ वाँ सर्ग]	डा० रामकृष्ण आचार्य	३.००
अभिज्ञान शाकुन्तलम् : चतुर्थ अंक	डा० रामकृष्ण आचार्य	४.००
अपरीक्षितकारकम् (पंचतन्त्र से)	डा० पारसनाथ द्विवेदी	४.५०
शिशुपालवधम् महाकाव्यम् [सर्ग १, २]	डा० पारसनाथ द्विवेदी	१०.००
शिशुपाल वधम् [सर्ग १]	डा० पारसनाथ द्विवेदी	६.००
कुमार सम्भवम् [प्रथम सर्ग]	डा० जयकिशन प्रसाद	६.००
कुमार सम्भवम् [पंचम सर्ग]	डा० पारसनाथ द्विवेदी	६.००
किरातार्जुनीयम् [प्रथम सर्ग]	पं० वेणीमाधव शास्त्री मुसलगाँवकर	६.००
किरातार्जुनीयम् [द्वितीय सर्ग]	पं० वेणीमाधव शास्त्री मुसलगाँवकर	६.००
भारतीय दर्शन (प्रश्नोत्तर)	डा० राजकिशोरसिंह	८.००
भारतीय संस्कृति [प्रश्नोत्तर में]	डा० जयकिशन प्रसाद	५.००
प्राचीन भारत का सांस्कृतिक इतिहास तथा संस्कृत साहित्य का इतिहास	डा० जयकिशनप्रसाद खण्डेलवाल	७.००
संस्कृत निबन्ध कौमुदी	डा० बाबूराम त्रिपाठ	५.५०
व्याकरण कौमुदी [भाग–१]	,, ,,	३.००
भरतमुनि प्रणीतम् नाट्यशास्त्रम् [प्रथम एवं द्वितीय अध्याय]	डा० पारसनाथ द्विवेदी	५.००

विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोवैज्ञानिक 'मापन और मूल्यांकन' पर एक और नवीन मौलिक कृति

मनोवैज्ञानिक परीक्षण

[PSYCHOLOGICAL TESTING]

लेखक

डा० एम० ए० शाह
अध्यक्ष–मनोविज्ञान विभाग
सैण्टजॉन्स कालेज, आगरा

कुमारी कुसुम माथुर
प्रवक्ता–मनोविज्ञान विभाग
बैकुंठीदेवी महाविद्यालय, आगरा

● मनोविज्ञान विषय में अनेक पुस्तकें प्रकाशित हो रही हैं, और प्रकाशित होती रहेंगी। मनोविज्ञान के क्षेत्र में नित्य नवीन शोध हो रहे हैं, और प्रायः हर तीन वर्ष पश्चात् नवीन पुस्तक की आवश्यकता प्रतीत होने लगती है। मापन और मूल्यांकन का एक ऐसा ही क्षेत्र है जिसके महत्त्व को सभी स्वीकार करते हैं। वर्तमान काल में शैक्षिक प्रगति तथा व्यक्तित्व की समस्याओं में उन्नति के कारण इसका महत्त्व और भी बढ़ गया है। भारत में बहुत से नवीन परीक्षण किये जा रहे हैं, किन्तु उनका आधार अभी तक विदेशी मानक और परीक्षण ही बने हुए हैं। ऐसे परीक्षण बहुत कम देखने में आये हैं जो भारतीय संस्कृति और उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हों।

● प्रस्तुत पुस्तक इन्हीं आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए लिखी गई है। इसका मुख्य उद्देश्य नवीन संकाय के पाठ्यक्रम तथा व्यावसायिक आवश्यकताओं की पूर्ति करके उनको इस दिशा में निर्देशित करना है कि भारतीय विश्वविद्यालय तथा शैक्षिक व व्यावसायिक निर्देशों के उद्देश्य से नवीन परीक्षण निर्माण करने में उनको पर्याप्त सहायता मिल सके।

● प्रस्तुत पुस्तक में वर्तमान काल तक के शोधों को सम्मिलित करने का प्रयत्न किया गया है। यही इस पुस्तक की प्रमुख विशेषता है।

पुस्तक को निम्न बीस अध्यायों में विभक्त करके विद्यार्थीपयोगी बनाने की चेष्टा की गई है।

अध्याय-क्रम

1. मनोवैज्ञानिक परीक्षण—उद्गम एवं विकास (Origin and Development of Psychological Testing)
2. मनोवैज्ञानिक मापन—एक झलक (A view of Psychological Measurement)
3. शैक्षिक मूल्यांकन (Educational Evaluation)
4. मनोवैज्ञानिक परीक्षण (Psychological Testing)
5. परीक्षण रचना (Test Construction)
6. परीक्षण वैधता (Test Validity)
7. परीक्षण विश्वसनीयता (Test Reliability)
8. परीक्षण प्राप्तांक एवं उनका रूपान्तरण (Test Scores and their Transformation)
9. मानक (Norms)
10. बुद्धि का स्वरूप एवं सिद्धान्त (Nature and Theories of Intelligence)
11. बुद्धि परीक्षण (Intelligence Tests)
12. अभिक्षमता परीक्षण (Aptitude Tests)
13. उपलब्धि परीक्षण (Achievement Tests)
14. व्यक्तित्व निर्धारण (Personality Assessment)
15. सम्बन्धित व्यक्तित्व परीक्षण (Related Personality Tests)
16. रुचि परीक्षण (Interest Test)
17. प्रक्षेपण विधियाँ (Projective Techniques)
18. अभिवृत्ति मापन की प्रविधियाँ (Techniques of Attitude Measurement)
19. सृजनात्मकता का मापन (Measurement of Creativity)
20. आकांक्षा स्तर पर परीक्षण (Level of Aspiration Test)

आकार–डिमाई

शीघ्र ही प्रकाश्य

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Measurement & Evaluation in Psychology & Education

By

Dr. Bipin Asthana

Department of Psychology
St. Johns College, Agra.

&

Dr. R. N. Agarwal

- The present book, "Measurement and Evaluation in Psychology and Education" is completely a revised and elaborated second edition of the original book entitled as "Educational and Psychological Measurement" published in 1964.
- The book mainly intended for the student of M. A. Psychology, M. Ed., B. Ed. and other such examination of Indian Universities.
- The present book consisted of following 25 chapters, mainly dealing with theory of mental measurement. In the present edition of the book, concepts like reliability and validity, which are core to mental measurement are given special emphasis and bears two separate chapters on these topics. Chapter on theories of intelligence has been elaborated and uptodated in the light of development taken place in the field during the time gap of 1964 to 1982. Indian Contributions, and description of Indian tests is also given a appropriate places.
- So much changes are made in the book that it may give an impression of lla together a new book. Though large amount of original edition is retained in the present text.

CONTENTS OF THE NEW BOOK

1. Psychological Measurement
2. Types of Tests
3. Historical Development of Measurement
4. Characteristics of a Good Test
5. Validity
6. Reliability
7. Procedure for Test Construction
8. Preparing New Type Test Items
9. Problems of Test Administration
10. Scores, Norms Quotients and Profiles
11. Essay V/s New Type Tests
12. Attainment or Achievements Tests
13. Achievement Tests in Specific Subjects
14. Meaning and Theories of Intelligence
15. History of Intelligence Testing
16. Facts Regarding Intelligence
17. Individual Tests of Intelligence
18. Evaluation of Tests
19. Nature and Measurement of Aptitudes
20. The Nature and Measurement of Interest
21. Nature of Personality
22. Aptitudes and Their Measurement
23. Introduction to Statistics
24. Measures of Central Tendency
25. Correlation and Regression Appendices

Bibliography

Size Demy **Pages 416** **Price Rs. 25.00**
Lib. Edn.Rs. 35.00

VINOD PUSTAK MANDIR, AGRA-2

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिना टिकट प्रेषण करने का प्रमाण-पत्र संख्या—AG–009

साहित्य-परिचय [फरवरी, 1983] पंजीबद्ध संख्या—L. AG.–038

SECOND REVISED & ENLARGED EDITION

B. Ed. GUIDE

For

Students of Indian Universities

●

By

Indra Sharma, *M. Sc., B. Ed.*

&

N. R. Sharma, *M. A., L. T.*

Ex. Assistant Professor of Education

R. B. S. College, Agra

(Retired) Principal, Senior Secondary Schools, Delhi.

●

The present edition of the book has been written according to the recent syllabi prescribed by various universities of India, especially those of Agra, Kanpur, Meerut, Gorakhpur, Nagpur, Vikram, Shivaji, Bombay and Poona. Every effort has been taken to present the entire subject- matter systematically in four parts on Principles of Education and Techniques of Teaching, Educational Psychology, Problems of Indian Education, Educational Administration and Health Education in a lucid style :

The other characteristics of the book are as follows :—

- ⊙ The course content in each paper has been put at one place.
- ⊙ Only standard books have been consulted in writing of the answers.
- ⊙ Questions have been solved at length and where necessary hints have been given to avoid duplication.
- ⊙ Though the book is in question-answer form, yet coherence of treatment has been preserved.
- ⊙ The language is simple and clearly intelligible to an average student.
- ⊙ One of the authors claims to have a long teaching experience in a training college of U. P. and an administrative experience in Senior Secondary Schools of Delhi.

It is sincerely hoped that the book will be warmly welcomed and will prove beneficial to students. Any suggestions for the improvement will be thankfully received.

Size Demy Page 1250 Price Rs. 51.00

VINOD PUSTAK MANDIR, AGRA

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

प्रकाशक एवं मुद्रक : विनोद कुमार अग्रवाल द्वारा कलाश प्रिन्टिंग प्रेस, आगरा-2

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

12
1-11-82

जनवरी
1982

साहित्य समीक्षा

परिचायक-पत्र

अब उपलब्ध है—

विभिन्न विश्वविद्यालयों के नवीन पाठ्यक्रमानुसार

शिक्षा के सामान्य सिद्धान्त

[संशोधित एवं परिवर्द्धित तेरहवाँ संस्करण]

●

लेखक

पी० डी० पाठक एवं गुरसरनदास त्यागी

●

प्रस्तुत संस्करण में विभिन्न विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों को ध्यान में रखकर विषय-सामग्री को परिवर्तित एवं अभिवृद्धित करके पुनः आयोजित करने की यथाशक्ति चेष्टा की गई है। साथ ही, पुस्तक की उपयोगिता में वृद्धि करने के लिये शैक्षिक विचारों की भारतीय शिक्षा-दर्शन की, पृष्ठभूमि में, विवेचना की गई है। यह संस्करण अधिकांश विश्वविद्यालयों के एम० एड० के छात्रों की आवश्यकताओं की भी पूर्ति करता है।

आकार : डिमाई पृष्ठ संख्या : 666 मूल्य : 24.0
पुस्तकालय संस्करण 32.0

★

असामान्य मनोविज्ञान

[ABNORMAL PSYCHOLOGY]

संशोधित आठवाँ संस्करण

●

लेखक

डा० लाभसिंह एवं डा० गोविन्द तिवारी

प्रस्तुत संस्करण को विभिन्न विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों को दृष्टिगत रखते हुए. सम्बन्धित अध्यायों में नवीन सामग्री का समावेश करके अधुनातन बनाने की चेष्टा की गई है। साथ ही, प्रत्येक अध्याय के साथ सारांश एवं परीक्षोपयोगी प्रश्न, उनके उदाहरणों के साथ असामान्यता जैसे दुरूह विषय की व्याख्या तथा नवीन अनुसन्धानों के परिणाम का भी समावेश है।

आकार : डिमाई पृष्ठ संख्या : 522 मूल्य : 20·00

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा-2

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब उपलब्ध है—

मनोविज्ञान के क्षेत्र में हिन्दी में पहली बार अपने विषय की प्रथम पुस्तक

नैदानिक मनोविज्ञान

[CLINICAL PSYCHOLOGY]

लेखक—**डा० रामपालसिंह**, एम० ए०, एम० एड०, पी-एच० डी०
जियालाल शिक्षण-प्रशिक्षण संस्थान, अजमेर
प्राक्कथन लेखक—**डा० एम० ए० शाह**, मनोविज्ञान विभागाध्यक्ष, सेंट जॉन्स कॉलेज, आगरा

[मनोविज्ञान ने दर्शन शास्त्र के कलेवर से पृथक होकर जब से अपना स्वतन्त्र अस्तित्व स्थापित किया है, तब से मनोविज्ञान का बड़ी तीव्र गति से विकास हो रहा है तथा नई-नई शाखाओं का प्रादुर्भाव हो रहा है। नैदानिक मनोविज्ञान, सामान्य मनोविज्ञान की ऐसी ही एक नवोदित शाखा है, जिसका पिछले एक दशक से इतना विकास हुआ है जितना मनोविज्ञान की अन्य किसी शाखा का नहीं हुआ है। विकसित राष्ट्रों में मनोविज्ञान की इस शाखा का, इसके महत्व के कारण मानसिक रोगों के उपचार हेतु जितनी अधिक व्यवस्था की गई, मानसिक रोग उससे भी अधिक बढ़े हैं। हमारे राष्ट्र भारत में भी मनोचिकित्सा मनोविज्ञान की प्रवृत्ति अन्य राष्ट्रों जैसी ही रही है किन्तु अन्यान्य कारणों से नैदानिक मनोविज्ञान अभी पूर्ण रूप से वांछित प्रगति नहीं कर पाया है जबकि यहाँ मानसिक रोगों की संख्या में स्वतन्त्रता के बाद विशेष वृद्धि हो रही है। इन्हीं कतिपय कारणों को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत पुस्तक की रचना की गई है।]

प्रस्तुत पुस्तक नैदानिक मनोविज्ञान के विभिन्न पहलुओं का सामान्य एवं पूर्णतः सैद्धान्तिक तथ्यों का प्रस्तुतीकरण करती है तथा मनोचिकित्सा मनोविज्ञान से सम्बन्धित विभिन्न तथ्यों, प्रत्ययों तथा सिद्धान्तों का सामान्य परिचय देती है।

अध्ययन की सुविधा के लिये प्रस्तुत पुस्तक की सम्पूर्ण सामग्री को निम्न चार खण्डों के अन्तर्गत 24 अध्यायों में निहित किया गया है। **प्रथम खण्ड** में विषयवस्तु का सामान्य परिचय है। **द्वितीय खण्ड** मानसिक शिक्षा के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डालता है, तृतीय तथा **चतुर्थ खण्ड** में मानसिक रोगों के सिद्धान्त तथा उपचार से सम्बन्धित समस्याओं पर पर्याप्त प्रकाश डालकर पुस्तक को अधुनातन बनाने की पूर्ण चेष्टा की गई है। पुस्तक की भाषा-शैली सरल तथा बोधगम्य है। तकनीकी शब्दों के साथ-साथ अंग्रेजी शब्द भी दिये गये हैं जिससे उन्हें समझना और भी सरल हो गया है।

अध्याय क्रम

खण्ड एक—विषय-परिचय—(1) नैदानिक मनोविज्ञान का अर्थ एवं इतिहास, (2) नैदानिक मनोविज्ञान के अध्ययन प्रारूप, (3) मनोचिकित्सीय समस्यायें, (4) मनोविश्लेषण।

खण्ड दो—मानसिक रोग—(5) व्यक्तित्व का अर्थ एवं विकास, (6) मानसिक रोगों के लक्षण एवं संलक्षण, (7) मानसिक रोगों के प्रकार, (8) मानसिक रोगों के कारण, (9) आत्मसुरक्षा अभियांत्रिकियाँ।

खण्ड तीन—मानसिक रोगों का निदान—(10) मनोविज्ञान की अध्ययन विधियाँ, (11) प्रारम्भिक सूचनायें तथा विकासात्मक इतिहास, (12) परिवार, (13) बुद्धि का स्वरूप एवं मापन, (14) व्यक्तित्व के प्रक्षेपण-परीक्षण, (15) साक्षात्कार।

खण्ड चार—मानसिक रोगों का उपचार—(16) मनोचिकित्सा-परिचय, (17) मनोचिकित्सा की परम्परागत विधियाँ, (18) मनोचिकित्सा की विशिष्ट विधियाँ, (19) शारीरिक रासायनिक चिकित्सा-विधियाँ, (20) बाल मनोचिकित्सा विधि, (21) बालापराध, (22) मनोचिकित्सक, (23) मनोचिकित्सा प्रतिवेदन, (24) मनोचिकित्सा मनोविज्ञान की अनुसंधान विधियाँ। **परिशिष्ट**—असामान्य व्यवहार के कुछ उदाहरण।

आकार : डिमाई पृष्ठ संख्या : लगभग 462 मूल्य : 25.00
पुस्तकालय संस्करण: 35.00

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-परिचय

[शिक्षा और साहित्य की प्रगति का परिचायक पत्र]

वर्ष १७ : अंक १
जनवरी १९८२

☆

सम्पादक
विनोद कुमार अग्रवाल
एम० ए०, साहित्यरत्न

☆

स्वामित्व
विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–२

☆

वार्षिक शुल्क : १५·००
रजिस्ट्री से विशेषांक मँगवाने पर
१८.००
[विदेशों में—डाक व्यय सहित मात्र ४०·००]

☆

साहित्य-परिचय
डा० रांगेय राघव मार्ग
आगरा–२
फोन : ७६४८६

सम्पादकीय

नैतिक मूल्यों के प्रति रुचि

वर्तमान समय की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक विषमताओं को देखते हुए सभी विद्वान् इस बात से सहमत हैं कि जनसाधारण में नैतिक मूल्यों का विकास हो, विशेषकर छात्रवर्ग में। इसके लिए शिक्षकों से अपील की जा रही है कि वे विशेष रूप से छात्रों में नैतिक विकास हेतु सहयोग दें और ऐसा पर्यावरण बनायें जिससे कि छात्रों में नैतिकता जाग्रत हो।

इसके लिए आवश्यक है कि प्रारम्भिक कक्षाओं में छात्र-छात्राओं के लिए नैतिक शिक्षा अनिवार्य कर दी जाय क्योंकि राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य के लिए यह अत्यन्त जरूरी है। इन प्रयासों के फलस्वरूप राजस्थान तथा हरियाणा सरकार ने कक्षा ८ तक नैतिक शिक्षा को अनिवार्य कर दिया है। आगामी वर्ष में उत्तर प्रदेश सरकार ने नैतिक शिक्षा को अनिवार्य बनाने की घोषणा की है।

विद्वानों ने निष्कर्ष निकाला है कि यदि छोटे बालकों के चरित्र की ओर ध्यान नहीं दिया गया तो देश का भविष्य अन्धकारमय हो जायगा। इसके लिए कुछ लोगों की राय है कि माता-पिता की पाठशाला प्रथम ऐसी पाठशाला है, जहाँ से बालक चरित्र का प्रथम पाठ माँ के दूध से ही सीख कर आता है। किन्तु जहाँ बच्चे माँ के दूध पर न पलकर धाय (मिडवायफ) के दूध पर पलते हों, वहाँ की वस्तुस्थिति से निपटने के लिए वे भी कोई सन्तोषप्रद समाधान न बता पाये। तो क्या बालक से पहले उसके माता-पिता को नैतिक शिक्षा का पाठ पढ़ाया जाय ? या अध्यापकों को सर्वप्रथम चरित्रवान तथा नैतिक बनाया जाय जिससे कि वह अपने छात्रों को भी तदनुसार शिक्षा दे सकें और उनमें चरित्र तथा नैतिकता का विकास कर सकें। जिधर भी सुधार रूपी रज्जु का छोर पकड़ते हैं, रज्जु टूटने लगती है। वर्तमान समय की परिस्थितियों को देखते हुए, कोई ठोस सुझाव जो संजीवनी औषधि की तरह कारगर हो जाय, का पता नहीं चल पा रहा।

यह चिरन्तन सत्य है कि नैतिक शिक्षा थोपी नहीं जा सकती। चाहे आप उसे शिक्षा में डाल दें या पाठ्यक्रम में। यह आत्मसात् करने की वस्तु है, जबर्दस्ती थोपने की नहीं। कानून का डण्डा न होकर, यह तो स्वयं ही आत्मनियंत्रक है जो व्यक्ति की अन्तःप्रेरणा से ही प्रेरित होती है।

प्राथमिक पाठशालाओं से लेकर विश्वविद्यालयों तक की शिक्षा में कहीं कुछ अभाव खटक रहा है। छात्रों का मनोबल दिन-पर-दिन गिरता

[शेष पृष्ठ १६ पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोविज्ञान के श्रेष्ठ प्रकाशन

● नैदानिक मनोविज्ञान	डा० रामपालसिंह वर्मा	25.00
● मनोविज्ञान के सम्प्रदाय	,, ,,	8.50
● मनोविज्ञान के समकालीन सम्प्रदाय	डा० राजकुमार ओझा	10.00
● सामान्य मनोविज्ञान	डा० एस० एस० माथुर	20.00
● आधुनिकसामान्य मनोविज्ञान	डा० प्रीती वर्मा, डा० श्रीवास्तव	—
● सामान्य मनोविज्ञान की रूपरेखा (प्र०)	भाई योगेन्द्रजीत	10.00
● समाज मनोविज्ञान (एम० ए०)	डा० एस० एस० माथुर	25.00
● समाज मनोविज्ञान : प्रारम्भिक अध्ययन	,,	14.00
● समाज-मनोविज्ञान (प्र०)	उदयवीर सक्सेना	8.00
● शिक्षा-मनोविज्ञान	डा० एस० एस० माथुर	19.00
● शिक्षा-मनोविज्ञान : संक्षिप्त संस्करण	,,	17.00
● Educational Psychology	Dr. S. S. Mathur	25.50
	Library edn.	40.00
● शिक्षा-मनोविज्ञान	पी० डी० पाठक	16.40
● शिक्षा-मनोविज्ञान	डा० रामपालसिंह, राधावल्लभ उपाध्याय	—
● मनोविज्ञान की पद्धतियाँ एवं सिद्धान्त	डा० जे० डी० शर्मा	22.50
● असामान्य मनोविज्ञान (बी० ए०)	डा० लालसिंह, डा० तिवारी	20.00
● असामान्य मनोविज्ञान के मूल आधार (एम० ए०)	,,	20.00
● औद्योगिक मनोविज्ञान	डा० आर० के० ओझा	20.00
	पुस्तकालय संस्करण	25.00
● सांख्यिकी के मूल तत्त्व	डा० एच० के० कपिल	27.70
● मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी	प्रीती वर्मा, श्रीवास्तव	—
● प्रारम्भिक सांख्यिकी (प्रथम सं० 80)	,,	10.00
● शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग	सुरेश भटनागर	7.00
● मनो० और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन	अग्रवाल, बिपिन अस्थाना	18.00
● शैक्षिक मूल्यांकन	डा० रामपालसिंह वर्मा	8.00
● शिक्षा-मनोविज्ञान की रूपरेखा (प्र०)	भाई योगेन्द्रजीत	10.00
● मनोविज्ञान शोध विधियाँ	प्रो० हकीम, बिपिन अस्थाना	15.00
● शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्त्व	एस० पी० सुखिया, मेहरोत्रा	20.00
● शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक अनुसंधान के मूलाधार	डा० तिवारी	18.00
● प्रयोगात्मक मनोविज्ञान	प्रो० हकीम, बिपिन अस्थाना	10.00
● आधुनिक प्रयोगात्मक मनोविज्ञान	डा० प्रीती वर्मा, डा० श्रीवास्तव	—
● विकासात्मक मनोविज्ञान	भाई योगेन्द्रजीत	12.00
● बाल मनोविज्ञान	,,	17.00
● बाल विकास तथा पारिवारिक सम्बन्ध	डा० सरयू प्रसाद चौबे	10.00
● बाल मनोविज्ञान : बाल विकास	डा० प्रीती वर्मा, डा० श्रीवास्तव	22.50
● बाल-विकास की रूपरेखा (प्र०)	भाई योगेन्द्रजीत	9.00

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विकलांगों के लिये शिक्षा

डा० ललित बिहारी बाजपेयी
बी० एड० विभाग, जे० एन० डिग्री कालेज, लखनऊ

संयुक्त राष्ट्र संघ ने सन् १९८१ के वर्ष को 'अन्तरराष्ट्रीय विकलांग वर्ष' घोषित किया है। संयुक्त राष्ट्र संघ के अनुमान से विश्व की जनसंख्या का लगभग १०% भाग विकलांगता से ग्रसित है। भारतवर्ष में, आमतौर पर बड़े नगरों, मेलों तथा धार्मिक एवं तीर्थस्थानों पर विकलांगों का जमघट देखने को मिलता है। भारत की जनसंख्या लगभग ६८ करोड़ है, जिसमें से लगभग ६० लाख लोग अर्थात् कुल जनसंख्या का १०% भाग विकलांगता से पीड़ित है। सर्वेक्षणों से पता चलता है कि देश में प्रतिवर्ष ४ लाख नये विकलांग किसी-न-किसी रूप में बढ़ जाते हैं। अपनी अक्षमता या पंगुता के कारण वे दैनिक जीवन की गतिविधियों में भाग नहीं ले पाते। पंगुता उनके नैराश्यपूर्ण जीवन के लिए अभिशाप बन गई है। विकलांगता या तो जन्मजात होती है, या बाद में किसी घटना के कारण पैदा होती है। दिन-प्रतिदिन विकलांगों की बढ़ती हुई संख्या समाज और देश की प्रगति में बाधक हो सकती है, अतएव विकलांगों को शिक्षित करना, उन्हें रोजगार के अवसर सुलभ कराना तथा उन्हें वर्तमान सामाजिक धारा के साथ जोड़ने की आवश्यकता है। ५ जनवरी, १९८१ को 'अन्तरराष्ट्रीय विकलांग वर्ष' का उद्घाटन करते हुए प्रधानमन्त्री श्रीमती इंदिरा गाँधी ने कहा था—"विकलांगों को दया की नहीं, सहानुभूति की जरूरत है। उन्हें दान नहीं बल्कि अपने अन्य मानव-साथियों की भाँति अधिकार चाहिए।" प्रधानमन्त्री का कथन सर्वथा उचित है। विकलांग हमारे समाज के अंग हैं, उन्हें समाज के अन्य समर्थ लोगों की भाँति ही सम्मानपूर्वक जीने का और जीवन में प्रगति करने का पूरा अधिकार है।

विकलांगों की शिक्षा का विवेचन करने से पूर्व विकलांग कौन है? तथा विकलांगता के कारणों और प्रकारों का संक्षिप्त वर्णन करना विषय को स्पष्ट करने में सहायक होगा।

विकलांग कौन?

शारीरिक, मानसिक और स्नायुविक रूप से अपंग बालक या प्रौढ़, जो दैनिक जीवन की सामान्य गतिविधियों में भाग लेने में असमर्थ रहते हैं, विकलांगों की श्रेणी में आते हैं। उनकी अक्षमताएँ या विकृतियाँ या तो जन्मजात होती हैं या बाद में पैदा हो जाती हैं। दूसरे शब्दों में, "एक या एक से अधिक जीवन-प्रवृत्ति में, जिसे उसकी परिस्थितियाँ सीमित करें, उसे विकलांग या अपंग माना जाता है।"

विकलांगता के कारण

विकलांगता के निम्नांकित चार प्रमुख कारण हैं:—

१—**जन्मजात विकलांगता**—बहुत-से बच्चे जन्म से ही अन्धे, गूँगे, बहरे तथा लूले-लँगड़े पैदा होते हैं। यह पंगुता कुपोषण के कारण होती है।

२—**रोगजन्य विकलांगता**—कुछ बच्चे या प्रौढ़ असाध्य रोगों के कारण विकलांग हो जाते हैं; जैसे—पोलियो की बीमारी लगने से शरीर के किसी न किसी अंग में लकवा मार जाता है। इसी तरह चेचक निकलने से लोग प्रायः अंधे, काने आदि हो जाया करते हैं।

३—**दुर्घटनाएँ**—असामयिक दुर्घटनाएँ विकलांगता का कारण बन जाती हैं। आये-दिन ट्रेनों, बसों तथा तेज वाहनों या अन्य कारणों से दुर्घटनाएँ हो जाया करती हैं जिनके कारण बच्चे, युवा, वृद्ध आदि सभी विकलांगता के शिकार होते हैं।

४—**युद्ध**—विभिन्न देशों या राज्यों के बीच होने वाले युद्धों में भाग लेने वाले सैनिक प्रायः युद्धभूमि में हाथ, पैर आदि विभिन्न अंगों से रहित हो जाते हैं, जिसके कारण देश में विकलांगों की संख्या एकदम बढ़ जाती है।

विकलांगता के उपर्युक्त कारणों को रोका या कम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया जा सकता है। इसमें सरकार, समाज तथा व्यक्तिगत प्रयास महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

विकलांगों के प्रकार

सन् १९८१ की जनगणना में पहली बार विकलांगों के बारे में जानकारी और आँकड़े एकत्रित किए गये हैं। इस सर्वेक्षण में विकलांगों को तीन श्रेणियों में विभक्त किया गया है : (i) पूर्ण नेत्रहीन, (ii) पूर्ण अपाहिज, (iii) पूर्ण मूक या गूँगे व्यक्ति। विकलांगों के इन तीन वर्गों के बारे में अभी अन्तिम रूप से आँकड़े प्राप्त नहीं हुए हैं। अस्थायी आँकड़ों से पता चलता है कि वर्तमान समय में देश में ४ लाख ७८ हजार लोग पूर्ण अन्धे हैं, ३ लाख ३६ हजार लोग शारीरिक रूप से पूर्ण अपाहिज हैं तथा २ लाख ७६ हजार लोग पूर्ण रूप से गूँगे हैं।

विकलांगता के कारणों और प्रकारों का संक्षिप्त वर्णन करने के बाद विकलांगों के लिए शिक्षण-प्रशिक्षण की आवश्यकता, विभिन्न शिक्षण-प्रशिक्षण संस्थाएँ तथा विकलांगों के उन्नयन हेतु लागू की गई नवीन योजनाओं का विवेचन किया जायेगा।

शिक्षा की आवश्यकता

सामान्य लोगों की भाँति ही विकलांगों के लिए भी शिक्षण-प्रशिक्षण आवश्यक है। इससे उनमें कार्यकुशलता आती है और विश्वास पैदा होता है। शिक्षा का उद्देश्य मानवमात्र को उसकी क्षमता और योग्यता के अनुकूल समाजोपयोगी बनाना है। विकलांगों को शिक्षा से वंचित रखना प्रजातन्त्र के लिए घातक है। स्वातन्त्र्योपरान्त देश में लोककल्याणकारी गणतन्त्र की स्थापना की गई, जिसका उद्देश्य सबके लिए समान अवसर प्रदान करना तथा विकास का लाभ पहुँचाना है। अतएव राष्ट्र का दायित्व है कि प्रत्येक विकलांग के लिए उसकी क्षमता और सीमा के अनुसार शिक्षा देने की व्यवस्था करे। शिक्षा वह नुस्खा है जो विकलांगों में बढ़ते हुए नैराश्य, हीनता एवं आत्मग्लानि की भावना के स्थान पर उनमें आत्मविश्वास और आशा का संचार करने में सहायक हो सकता है। अपनी स्थिति में रहते हुए भी उनमें जीवन के प्रति एक आकर्षण पैदा हो सकता है। जनतन्त्रीय प्रणाली जनहित को ही राष्ट्रहित मानती है। ऐसे समाज में विकलांगों को उनकी क्षमता के अनुसार शिक्षित करना राष्ट्र का उत्तरदायित्व होता है। शिक्षा प्रत्येक कोटि के विकलांग को विकास के समान अवसर प्रदान करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकती है। माता-पिता की जागरूकता भी विकलांग बच्चों के शिक्षण-प्रशिक्षण में सहायक हो सकती है। विकलांग बच्चे ज्ञानार्जन के लिए उत्सुक रहते हैं, यद्यपि विद्यालय में प्रवेश लेने से पूर्व उनमें हिचकिचाहट के भाव अवश्य दिखाई पड़ते हैं। यदि उनके प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण अपनाया जाय तो वे शानदार उपलब्धि प्राप्त कर सकते हैं, और समाज तथा देश की प्रगति में सहायक हो सकते हैं। अतएव अब विकलांगों की उपेक्षा नहीं की जा सकती। शिक्षा और प्रशिक्षण के क्षेत्र में उन्होंने चुनौतियों को स्वीकार किया है। अपनी कार्यकुशलता और दक्षता के बल पर उन्होंने अपनी सार्थकता सिद्ध कर दी है। अतएव सामान्य बच्चों की भाँति ही विकलांग बच्चों के लिए भी शिक्षा की उचित व्यवस्था करनी होगी।

विकलांगों के लिए शिक्षण-प्रशिक्षण संस्थाएँ

हमारी राष्ट्रीय सरकार विकलांगों के शिक्षण-प्रशिक्षण और पुनर्वास के प्रति सदैव प्रयत्नशील रही है। इस वर्ष (१९८१) उनको अधिकाधिक सुविधाएँ सुलभ कराने की दिशा में कार्य किया जा रहा है। विकलांगों के शिक्षण-प्रशिक्षण के लिए सरकार एवं निजी संगठनों द्वारा बहुत-से स्कूल खोले गये हैं। इसके अतिरिक्त सरकार उन्हें नवीं कक्षा से आगे पढ़ाने के लिए अथवा कोई प्रमाणपत्र, डिप्लोमा या डिग्री स्तर का तकनीकी प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए छात्रवृत्तियाँ देती है ताकि प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद वे अपने जीवन में पुनर्स्थापित हो सकें। विकलांगों के शिक्षण-प्रशिक्षण एवं पुनर्वास के लिए देश-भर में अनेक संस्थायें और सेवा-केन्द्र हैं, जिनमें से कुछ प्रमुख केन्द्रों की जानकारी यहाँ पर दी जा रही है—

(१) दिल्ली के विकलांग सेवा-केन्द्र :

दिल्ली में निम्नलिखित प्रमुख विकलांग सेवा-केन्द्र हैं :—

१—सरकारी अन्ध विद्यालय, किंग्जवे केम्प—यह सामाजिक विद्यालय है, जिसमें अन्धे बालकों को माध्यमिक स्तर की शिक्षा दी जाती है।

२—लेडी नायस राजकीय माध्यमिक बधिर स्कूल, फिरोजशाह कोटला—इस विद्यालय में बालक और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालिकाएँ हाई स्कूल तक की शिक्षा प्राप्त करती हैं।

३—बाल विकास गृह, पंजाबी बाग—मानसिक रूप से बाधित, ६ से १८ वर्ष की आयु की बालिकाओं के लिए व्यक्तिगत रूप से शिक्षण-प्रशिक्षण की व्यवस्था है।

(२) हिमाचल प्रदेश के विकलांग सेवा-केन्द्र :

हिमाचल प्रदेश के दो स्कूलों में विकलांग और मानसिक रूप से बाधित बच्चों को शिक्षा देने की व्यवस्था है। अपंगों को २५ रुपये मासिक भत्ता भी दिया जाता है।

(३) कर्नाटक के विकलांग सेवा-केन्द्र :

कर्नाटक में अन्धों के लिए चार आवासीय विद्यालय, बहरों के लिए तीन आवासीय विद्यालय, मानसिक रूप से बाधित महिलाओं की देखभाल के लिए एक संस्थान तथा बालकों के लिए भी इसी प्रकार का एक केन्द्र कार्य कर रहा है। मैसूर में अन्धे, बहरे बच्चों का स्कूल सह-शिक्षा हाई स्कूल है। बेंगलूर की रमेश महर्षि अकादमी, अन्धों को शिक्षा देने के अतिरिक्त उनके व्यावसायिक पुनर्वास का भी काम करती है।

(४) पश्चिम बंगाल के विकलांग सेवा-केन्द्र :

पश्चिम बंगाल में बाधित बच्चों के लिए अग्रांकित छह मान्यता प्राप्त विद्यालय हैं, जिनमें दसवीं कक्षा तक निःशुल्क शिक्षा दी जाती है। ये संस्थायें हैं—कलकत्ता मूक-बधिर संस्था, कलकत्ता नेत्रहीन विद्यालय, नेत्रहीन बाल अकादमी, महारानी नीलम प्रभा मूक-बधिर संस्था बरहानपुर, सूरी मूक-बधिर विद्यालय तथा मनमूस मूक-बधिर विद्यालय पुरूलिया।

(५) मध्यप्रदेश के विकलांग सेवा-केन्द्र :

मध्यप्रदेश में गूँगों, बहरों और अन्धों की शिक्षा के लिए आठ संस्थायें हैं। जबलपुर और बिलासपुर में उच्चतर माध्यमिक शिक्षा देने की व्यवस्था है। मानसिक रूप से पिछड़े बच्चों के शिक्षण-प्रशिक्षण के लिए इन्दौर में एक सेवा-केन्द्र स्थापित किया गया है।

(६) केरल के विकलांग सेवा-केन्द्र :

केरल प्रदेश में अन्धे, बहरे तथा शारीरिक रूप से विकलांग एवं मानसिक रूप से बाधित बालकों के लिए दस विशिष्ट स्कूल कार्य कर रहे हैं। इनमें पाँच स्कूल सार्वजनिक क्षेत्र के तथा पाँच निजी क्षेत्र के हैं। इन स्कूलों में विशिष्ट शिक्षा दी जाती है तथा १२५ रुपये मासिक भत्ता भी दिया जाता है।

(७) उत्तर प्रदेश के विकलांग सेवा-केन्द्र :

उत्तर प्रदेश में विकलांगों तथा मानसिक रूप से बाधित लोगों के शिक्षण के लिए कई संस्थाएँ कार्यरत हैं। देहरादून, लखनऊ और कानपुर में ऐसे कई विद्यालय हैं। वृन्दावन में एक सावासिक अन्ध महाविद्यालय भी चल रहा है। यह निजी संस्था है। इसका संगठन एवं संचालय विकलांग ही करते हैं। यहाँ नेत्रहीनों को शिक्षा दी जाती है। इस समय इस विद्यालय में १८ नेत्रहीन शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं, जिनमें कुछ उत्तर प्रदेश से बाहर के भी हैं। शिक्षा देने का काम नेत्रहीनों द्वारा ही किया जाता है।

विकलांगों की सामान्य शिक्षा संस्थाओं के अलावा व्यावसायिक प्रशिक्षण हेतु कुछ केन्द्रों की स्थापना की गई हैं। इनमें से कुछ प्रमुख केन्द्र निम्नलिखित हैं :—

महाराष्ट्र में खिड़की स्थित क्वीन मेरीज टेक्नीकल स्कूल में रँगाई, छपाई, बुनाई, घड़ीसाजी तथा टर्नर आदि का प्रशिक्षण दिया जाता है। इस केन्द्र पर भूतपूर्व विकलांग सैनिकों को प्रशिक्षण दिया जाता है और प्रशिक्षण काल में १५० रुपये मासिक भत्ता भी मिलता है। देहरादून में नेत्रहीनों के लिए सावासिक स्कूल है। इसमें बच्चों को दसवीं कक्षा तक शिक्षण-प्रशिक्षण दिया जाता है। प्रौढ़ नेत्रहीनों के लिये इंजीनियरी तथा गैर-इंजीनियरी की कक्षाओं में निःशुल्क प्रवेश दिया जाता है। हैदराबाद में प्रौढ़ बहरों का प्रशिक्षण केन्द्र है। यहाँ इंजीनियरी तथा गैर-इंजीनियरी विषयों में व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जाता है।

इसके अतिरिक्त नई दिल्ली में गांधी नगर, साउथ एवेन्यू, पंजाबी बाग, ग्रीन पार्क एक्सटेंशन तथा रमेश नगर में भी प्रशिक्षण केन्द्र हैं। कलकत्ता और देहरादून स्थित राष्ट्रीय संस्थान विकलांगों के शिक्षण-प्रशिक्षण एवं पुनर्वास के क्षेत्र में नये-नये अनुसंधान कार्यों को बढ़ावा दे रहे हैं।

विकलांगों की रक्षा के लिए नवीन योजनाएँ

छठी पंचवर्षीय योजना में विकलांगों को सामाजिक न्याय दिलाने, उन्हें समाज की सामान्य धारा के साथ जोड़ने और उनके आर्थिक जीवन को सुदृढ़ करने हेतु कुछ नवीन योजनायें चालू की गयी हैं, जो अग्रांकित हैं :

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समन्वित शिक्षा—यह योजना सन् १९७४ से केन्द्रीय सरकार की सहायता से चल रही है। इसका उद्देश्य विशिष्ट विद्यालयों, उपकरणों, पुस्तकों तथा मूल्यांकन की सुविधा सुलभ कराकर सामान्य स्कूलों में विकलांगों को शिक्षा देना है। उन विकलांगों के, जो सामान्य बच्चों के साथ शिक्षा ग्रहण नहीं कर सकते, अतिरिक्त विशिष्ट स्कूल खोलने की प्रथा को समाप्त किया जायेगा। इस योजना का पूरा व्यय केन्द्र सरकार वहन करेगी।

छात्रवृत्ति की सुविधा—केन्द्र और राज्य सरकारें विकलांगों को छात्रवृत्ति देने की उदार नीति का अनुसरण करेंगी। केन्द्र सरकार प्रतिवर्ष ५० लाख रुपयों की राशि छात्रवृत्ति के रूप में देती है। इस व्यवस्था से आर्थिक दृष्टि से कमजोर विकलांग अपने शैक्षिक और व्यावसायिक प्रशिक्षण को चालू रख सकेंगे। वर्ष १९८०-८१ में लगभग ९,५०० विकलांगों को ६१ लाख रुपये की राशि छात्रवृत्ति के रूप में वितरित की गई।

साहित्य प्रकाशन—विकलांगों के लिए पाठ्य-पुस्तकें और साहित्य रचना तथा प्रकाशन की वर्तमान सुविधाओं में वृद्धि की जायेगी, जिससे विस्तृत शैक्षणिक सुविधाओं की आवश्यकता को पूरा किया जा सके।

प्रशिक्षण सेवा का विस्तार—सभी वर्ग के विकलांगों को कल-कारखानों में प्रशिक्षण देने की वर्तमान सुविधाओं का विस्तार किया जायेगा।

निजी संगठनों की सहायता—विकलांगों के शिक्षण-प्रशिक्षण और पुनर्वास के कार्य को करने वाले निजी संगठनों को आर्थिक सहायता दी जायेगी। इस कार्य में होने वाले व्यय का ९०% समाज कल्याण मंत्रालय देता है। वर्ष १९८०-८१ में ११४ संस्थाओं को एक करोड़ बारह लाख रुपये की राशि इस मंत्रालय द्वारा दी गई।

इसके अलावा सरकार ने विकलांगों के लिए १८ विशेष सेवायोजन केन्द्र स्थापित किये हैं तथा नौकरियों में ३% का आरक्षण स्वीकार किया है। विकलांगों के पुनर्वास के लिए व्यापक कानून बनाने की दिशा में सरकार प्रयत्नशील है।

वर्तमान समय में विकलांग सामाजिक उपेक्षा का शिकार हो रहे हैं। विकलांगों की एक बड़ी तादात अपनी दीन दशा को दिखाकर जीविकोपार्जन में संलग्न है। उनकी इस दीन दशा का उन्मूलन करना मानवीय धर्म है। इसके लिए जरूरी है कि समाज अपने दृष्टिकोण में परिवर्तन करे, हम उन्हें अपनत्व एवं स्नेह दें, उनके साथ भाईचारे का व्यवहार करें तथा उन्हें सामाजिक एवं राजकीय सहायता मिले। इससे उनकी हीन भावना समाप्त होगी और अपने तथा समाज के विकास में वे सहभागी बन सकेंगे। यदि विकलांगों को उनके अनुकूल कार्य दिया जाय तो निश्चय ही अपनी क्षमता और कार्य-कुशलता के बल पर वे अपनी सार्थकता सिद्ध कर देंगे। विकलांग वर्ष की सबसे बड़ी देन यही होगी कि उन्हें इस वर्ष सामाजिक न्याय, प्रतिष्ठा, अधिकार और रोजगार के अधिकाधिक अवसर सुलभ कराये जाएँ। हमारे देश में विकलांगों की एक बहुत बड़ी संख्या है और उसमें निरन्तर वृद्धि हो रही है; उनकी समस्यायें भी विविध प्रकार की हैं, जिन्हें सुलझाने में पर्याप्त समय, धन और प्रयत्न की आवश्यकता है। अतएव मात्र एक वर्ष का समय इन समस्याओं को सुलझाने के लिए पर्याप्त नहीं है। विकलांग वर्ष समाप्त हो जायेगा परन्तु विकलांगता नहीं; विकलांग सदैव हमारे साथ रहेंगे। इस समस्या का निदान यही है कि उनके प्रति एक उदार और विस्तृत दृष्टिकोण की नीति अपनाई जाय। अस्तु। ●

विज्ञापनदाताओं से निवेदन

'साहित्य-परिचय' का 13वाँ विशेषांक "**नैतिक शिक्षा विशेषांक**" मार्च 1982 में प्रकाशित हो रहा है। इच्छुक व्यक्ति अपनी संस्था के विज्ञापन 20 फरवरी तक भेजने की कृपा करें। एक पृष्ठ का विज्ञापन शुल्क 350·00 रु० व आधे पृष्ठ का मात्र रु० 200·00 है। विज्ञापन के साथ ही शुल्क भी ड्राफ्ट द्वारा भेज दें।

—विज्ञापन व्यवस्थापक

सदस्यों से निवेदन

जिन सदस्यों ने वर्ष 1982 का अपना वार्षिक शुल्क न भेजा हो, वे कृपया 18·00 रु० धनादेश या ड्राफ्ट द्वारा वार्षिक शुल्क भेज दें। विशेषांक उनको रजिस्ट्री से भेजा जायगा। **—व्यवस्थापक**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय परिवेश में शिक्षा का स्वरूप

डा० जमनालाल बायतो
प्रधानाध्यापक, राजकीय सैकेण्डरी स्कूल, हमीरगढ़ (भीलवाड़ा)

[राजस्थान शिक्षक संघ की भीलवाड़ा शाखा के १९८० के वार्षिक सम्मेलन के अवसर पर आयोजित निबन्ध प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर पुरस्कृत निबन्ध।]

मूल विषय पर आने से पूर्व हमें शिक्षा का अर्थ जान लेना चाहिए। शिक्षा के अर्थ पर विभिन्न विचारकों में मतैक्य नहीं है। कोई इसे परमात्मा से साक्षात्कार बताता है, तो कोई इसे प्रकृतिदत्त क्षमताओं का अधिकतम उपयोग। इसी प्रकार कुछ विचारक कुशल नागरिक बनाना बताते हैं, तो अन्य इसे रोटी कमा सकने वाला साधन। इस प्रकार संक्षेप में कहा जा सकता है कि शिक्षा के अर्थ या परिभाषा पर कोई सर्वसम्मत एक राय नहीं दी जा सकती। भिन्न-भिन्न विद्वानों ने इसे अपनी-अपनी रुचि से परिभाषित किया है। पाश्चात्य विचारकों में डीवी, रसेल, प्लेटो, अरस्तू, कॉमेनियस, हरबार्ट, पेस्टॉलाजी, फ्रॉबेल प्रमुख हैं, जबकि भारतीय विचारकों में विवेकानन्द, टैगोर, गाँधी आते हैं। कुछ भारतीय विचारक विनोबा जी को भी शिक्षाशास्त्री मानते हैं। मोटे रूप से शिक्षा के दो रूप सामने आते हैं—उदार शिक्षा तथा व्यावसायिक शिक्षा। वास्तविकता तो यह है कि कोई भी शिक्षा न तो शत-प्रतिशत उदार हो सकती है और न शत-प्रतिशत व्यावसायिक ही होगी तथा अन्य उदाहरणों में इसका उल्टा भी होगा। इस प्रकार किसी एक प्रकार की शिक्षा का अस्तित्व हो तथा दूसरी प्रकार की शिक्षा का वहाँ दर्शन ही न हो, ऐसा नहीं कहा जा सकता। इसके दूसरी ओर शिक्षा के रूप यों भी बताए जा सकते हैं—व्यावसायिक शिक्षा, तकनीकी शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा, चिकित्सा शिक्षा, प्राविधिक शिक्षा, विधि की शिक्षा, शिक्षक शिक्षा, संस्कृति शिक्षा, प्रबन्धकीय शिक्षा, अभियान्त्रिक शिक्षा, धार्मिक शिक्षा। इनमें से कई की औपचारिक तथा अन्य की अनौपचारिक व्यवस्था की जाती है। अब हमें भारतीय परिवेश में विचार करना चाहिए। भारत सदियों से कृषि-प्रधान देश रहा है। पिछली चार-पाँच दशाब्दियों में देश में विकास हुआ है तथा कृषि पर आधारित मनुष्यों का घनत्व कम होता जा रहा है। आजादी के समय देश में कृषि तथा कृषि-धन्धों पर आश्रित व्यक्ति ८१% थे जो अब कम होकर लगभग ६९/७०% ही रह गए हैं। इसका कारण प्रमुखतः यह है कि देश का तकनीकी विकास द्रुत गति से हो रहा है। जगह-जगह कारखाने लग रहे हैं, मिलें बन रही हैं, फैक्टरियाँ स्थापित की जा रही हैं। यही कारण है कि गाँव के लोग कृषि छोड़ कर शहरों की ओर दौड़ रहे हैं। यह स्वाभाविक है, क्योंकि कृषि भूमि पर आश्रित व्यक्तियों का घनत्व भी घटता रहा है, पर वह भी एक निश्चित सीमा से आगे नहीं बढ़ पाया। ऐसी स्थिति में इन्हें खेती छोड़ कर शहरों की ओर दौड़ना पड़ता है।

भारतीय परिवेश की बात करते समय यहाँ की परम्पराओं का भी ध्यान रखना होगा। यहाँ के लोग लोक कल्याण में रुचि लेते थे। वे दूसरों के हित का ध्यान रखते थे—बड़े हित के लिए छोटे हित का त्याग करते थे—दूसरों के दुःख-दर्द में भी मदद करते थे—उनमें सहिष्णुता थी; दूसरों के विचारों से सहमत न होते हुए भी शान्त रहते थे, उनसे लड़ने की अपेक्षा न थी।

इन स्थितियों में आज की शिक्षा पर बात करें तो टैगोर यदि आज जीवित होते, तो वे तत्काल सभी शिक्षण संस्थाएँ बन्द करवा देते तथा गाँधी जी जीवित होते तो दुःखी ही नहीं होते वरन् वे अपनी छाती कूट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बी. ए., एम. ए., बी. एड्. तथा एम. एड्. के

छात्रों एवं पुस्तकालयों के लिए

शिक्षा एवं मनोविज्ञान की उपयोगी पुस्तकें

शिक्षा सिद्धान्त तथा शिक्षण-कला

(Principles and Methods of Education)

□ शिक्षा के सामान्य सिद्धान्त	पाठक एवं त्यागी	२४.००
	पुस्तकालय संस्करण	३२.००
□ शिक्षा के सिद्धान्त	,, ,,	१४.५०
□ भारत में शिक्षा-दर्शन और शैक्षिक समस्याएँ	,, ,,	(प्रेस में)
□ शिक्षा के मूल सिद्धान्त	डा० रामशकल पाण्डेय	२१.००
	पुस्तकालय संस्करण	२८.००
□ शिक्षा-सिद्धान्त	डा० एस० एस० माथुर	१७.००
□ शिक्षण कला, शिक्षण तकनीक एवं नवीन पद्धतियाँ	,,	१८.००
□ सफल शिक्षण कला	पाठक एवं त्यागी	१५.००
□ शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार	डा० सरयू प्रसाद चौबे	२०.००
	पुस्तकालय संस्करण	२४.००
□ Principles of Education	Dr. R. S. Pandey	16.00
□ A Sociological Approach to Indian Education	Dr. S. S. Mathur	28.00
□ Philosophical and Sociological Foundations of Education	Dr. S. P. Chaube	20.00
	Lib. Edn.	30.00

शिक्षा मनोविज्ञान

(Educational Psychology)

□ शिक्षा-मनोविज्ञान	पी० डी० पाठक	१६.४०
□ शिक्षा-मनोविज्ञान	डा० एस० एस० माथुर	१९.००
□ शिक्षा-मनोविज्ञान : संक्षिप्त संस्करण	,, ,,	१७.००
□ Educational Psychology	Dr. S. S. Mathur	25.50
	Lib. ed.	40.00
□ शिक्षा-मनोविज्ञान	डा० रामपालसिंह वर्मा, राधावल्लभ उपाध्याय	(प्रेस में)

सांख्यिकी

(Statistics)

□ मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी	डा० प्रीती वर्मा, श्रीवास्तव	(प्रेस में)
□ प्रारम्भिक सांख्यिकी	,, ,,	१०.००
□ सांख्यिकी के मूल तत्त्व (सामाजिक विज्ञानों में)	डा० एच० के० कपिल	२७.७०
□ शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग	सुरेश भटनागर	७.००

भारतीय शिक्षा का इतिहास तथा समस्याएँ

(History of Indian Education & Problems)

□ भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ	पी० डी० पाठक	१९.८०
□ भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ (पुस्त० सं०)	पी० डी० पाठक	३०.००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

- आधुनिक भारतीय शिक्षा (इतिहास और समस्यायें) पाठक, त्यागी १६.००
- भारतीय शिक्षा का इतिहास जौहरी एवं पाठक १५.९५
  पुस्तकालय संस्करण २२.५०
- भारतीय शिक्षा की सामयिक समस्याएँ चौधरी एवं उपाध्याय १५.००
- भारतीय शिक्षा के प्रवर्त्तक सं० डा० आत्मानन्द मिश्र १५.००
- भारतीय शिक्षा (प्राचीन से वर्तमान काल तक) डा० सरयू प्रसाद चौबे १०.००
- आदि और मध्ययुगीन भारत में शिक्षा डा० सरयूप्रसाद चौबे १०.००

विद्यालय प्रशासन एवं स्वास्थ्य शिक्षा
(School Administration & Health Education)

- Educational Administration Mrs. S. P. Sukhia 22.00
  Lib. edn. 30.00
- शिक्षा-प्रशासन डा० उमेशचन्द कुदेसिया १२.००
- विद्यालय प्रशासन एवं संगठन श्रीमती एस० पी० सुखिया १४.१५
- शैक्षिक एवं विद्यालय प्रशासन भाई योगेन्द्रजीत १५.००
- विद्यालय-संगठन एवं स्वास्थ्य शिक्षा डा० रामपालसिंह वर्मा १२.००
- विद्यालय व्यवस्था केशव प्रसाद ७.५०
- स्वास्थ्य शिक्षा डा० जी० पी० शैरी १६.००

मापन एवं मूल्यांकन
(Measurement & Evaluation)

- मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन
  आर० एन० अग्रवाल, बिपिन अस्थाना १८.००
- शैक्षिक मूल्यांकन डा० रामपालसिंह वर्मा ८.००

निर्देशन एवं परामर्श
(Guidance & Counselling)

- शिक्षा में निर्देशन एवं परामर्श डा० सीताराम जायसवाल १२.००
- शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन वर्मा एवं उपाध्याय (प्रेस में)
- शैक्षिक मापन एवं निर्देशन उमेश प्रसाद सिंह ४.००

तुलनात्मक-शिक्षा
(Comparative Education)

- तुलनात्मक-शिक्षा डा० सरयूप्रसाद चौबे २४.००
- शिक्षा व्यवस्थाएँ ,, १२.००

शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक अनुसंधान
(Educational & Psychological Research)

- मनोविज्ञान शोध-विधियां प्रो० एम० ए० हकीम, बिपिन अस्थाना १५.००
- शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक अनुसंधान के मूलाधार
  डा० गोविन्द तिवारी १८.००
- शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्त्व एस० पी० सुखिया
  पी० वी० मेहरोत्रा, आर० एन० मेहरोत्रा २०.००

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेते। कारण कि भारतीय परिवेश में जिस प्रकार की शिक्षा की व्यवस्था होनी चाहिए वह नहीं हुई है। मूल बात यह है कि हमारी शिक्षा का रूप हमारी धरती पर टिका हुआ नहीं है यानी उसका जन्म हमारी धरती पर नहीं हुआ है—यह शिक्षा-व्यवस्था लार्ड मैकाले की देन है। लार्ड मैकाले का उद्देश्य भिन्न था। उसको राज्य कार्य चलाने के लिए तत्कार्य लिपिकों की आवश्यकता थी। अतः उसने साहित्यिक शिक्षा की व्यवस्था की। पर आज स्थिति भिन्न है।

आज भाई-भाई साथ नहीं रह सकते; कई बार वे एक-दूसरे के खून के प्यासे देखे जाते हैं। एक भाई सुबह उठकर सर्दी में भी ठंडे पानी से स्नान कर, हनुमान चालीसा पढ़ता है, जब कि दूसरा भाई बिस्तर में ही बिना शौच आदि से निवृत्त हुए चाय पीना चाहता है। दोनों की स्थितियों में कितना अन्तर है! सोचिए, शिक्षा को इन दोनों के व्यक्तित्वों का प्रकृत्तिदत्त सीमाओं में अधिकतम विकास करना है। यही तो शिक्षा है।

भारत में शिक्षा-सुधार के लिए विभिन्न आयोग बैठे—सर्वप्रथम १९४८ में राधाकृष्णन् आयोग, फिर १९५२-५३ में माध्यमिक शिक्षा आयोग, १९६४-६६ में कोठारी शिक्षा आयोग। इनके सिवाय कई प्रान्तों में छोटे-छोटे स्तर पर और भी समितियाँ बैठीं—बुनियादी शिक्षा के लिए डॉ० ज़ाकिर हुसैन कमेटी, उत्तर प्रदेश में आचार्य नरेन्द्रदेव समिति, डॉ० श्री माली की अध्यक्षता में ग्रामीण उच्च शिक्षा पर विचार हुआ, बी० जी० खेर की अध्यक्षता में संस्कृत शिक्षा, डॉ० सम्पूर्णानन्द की अध्यक्षता में राष्ट्रीय भावात्मक एकता के लिए शिक्षा का योगदान। इसी प्रकार पुस्तकालयीय भाषा तथा राज्यभाषा के लिए भी पृथक-पृथक प्रतिवेदन प्राप्त हुए। कहना होगा कि इनमें से किसी एक की भी सिफारिशों को पूरे मन से सरकार ने लागू नहीं किया।

एक ही दिन के समाचारपत्र में बिहार के मुख्यमंत्री पब्लिक स्कूल बन्द करने का आह्वान करते हैं तो उसी दिन हिमाचल प्रदेश के पब्लिक स्कूल का उद्घाटन होता है। ऐसी स्थिति है। क्या ठीक है तथा क्या नहीं—इस पर सामान्य जन विवेक से निर्णय नहीं कर पाता। कार्यानुभव या समाजोपयोगी उत्पादन कार्य का एक नया नारा और दिया गया है। कई बार ऐसा दीखता है कि यह भी 'नई बोतल में पुरानी शराब' हैं; उदाहरण के लिए—गाँव के बच्चों के लिए कार्यानुभव है जिल्दसाजी, खेती का कार्य, चॉक बनाना तथा दूसरी ओर पब्लिक स्कूल हेतु, जिनमें सांसद तथा मन्त्रियों के बच्चे पढ़ते हैं, कोई कार्यानुभव नहीं। रुचि का कार्य है, तो वह भी फोटोग्राफी, संगीत आदि। मंत्रियों के सुपुत्र फेल हो जायँ, तो भी उन्हें स्कूल से हटाया नहीं जायगा; वे वहीं पढ़ते रहेंगे, पर गाँव के बच्चों को फेल होते ही स्कूल से हटाना होगा। क्या इसे आप सुधरे हुए तरीकों से ग्रामीणों को धोखा देना नहीं कहेंगे। जन-नेता जनसाधारण के साथ धोखा कर रहे हैं? विद्यार्थियों की संख्या कई स्थानों पर तो ३०-३० गुनी बढ़ गई है। हरि, मोहन, रमेश, सुरेश, घनश्याम भी शिक्षा के पात्र हो गए हैं। आप याद कीजिए—कृष्ण तथा अर्जुन के गुरु-शिष्य के सम्बन्धों को; जब अर्जुन की जिज्ञासा होने पर ही, ज्ञान पाने की लालसा, ललक पर भगवान श्रीकृष्ण ने उपदेश दिया, यदि ऐसा नहीं होता तो अर्जुन को अजीर्ण हो जाता। आज तो शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश ज्ञान-प्राप्ति की जिज्ञासा के आधार पर नहीं, शुल्क भुगतान करने की योग्यता या हैसियत पर निर्भर है। फिर तो अनुपयुक्त विद्यार्थी भर्ती होकर हड़तालें ही करवायेंगे। कारण कि उनको शिक्षा-प्राप्ति से क्या लेना-देना। सत्र समय पर नहीं होते, विद्यार्थी हड़ताल करते हैं। वे हड़ताल क्यों न करें—उनके पास पर्याप्त आधार है हड़ताल करने का। उनको न पढ़ने की चाह है और न शिक्षकों का पढ़ाने का मन है। विद्यार्थी सत्र समाप्त होते ही प्रमाणपत्र चाहते हैं तथा शिक्षक महीना समाप्त होते ही वेतन। छनना प्रणाली कुछ अंशों में ठीक भी है, जहाँ उपयुक्त छात्र छन-छन कर ही प्रवेश कर पाए। पर कौन है साहस वाला जो अनुपयुक्त विद्यार्थियों को प्रवेश पाने से रोक सके?

ऐसे विद्यार्थियों के लिए एक बार साहस कर व्यावसायिक पाठ्यक्रम लागू कर दें, तो सम्भव है, कुछ हल निकल सके। पर आज देश में कोई कार्य हो, इसकी चिन्ता किसे है? प्रशासन तन्त्र के शीर्षस्थ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थान से लेकर विद्यालय के चपरासी तक किसी को यह चिन्ता नहीं है कि देश में कोई कार्य हो। अपनी-अपनी कुर्सी की, स्थान की चिन्ता सबको लगी हुई है।

देश में चोरी और लूटमार, धोखाधड़ी, बलात्कार, घूँसखोरी, चोरबाजारी का सिलसिला गर्म है। वकील अपने ग्राहकों को झूठे मुकदमें जितवा देता है। इंजिनीयर सीमेन्ट में ज्यादा बालू मिलाकर पुल तैयार कर देता है। चिकित्सक पानी के इन्जेक्शन लगा देता है तथा बनिया चावल में कंकड़ तथा हल्दी व मिर्च में ईण्ट पीसकर बेच देता है। तो यही है भारतीय शिक्षा? कैसे इसे सुधारा जाय? हमारा अध्यापक, शिक्षा प्रदान करने वाला व्यक्ति संन्यासी नहीं है। वह साधु भी नहीं है। वह भी इन्हीं सबके साथ रहता है, तो इनका प्रभाव उस पर भी पड़ेगा। शिक्षा की स्थिति पर भी विचार किया जाना चाहिए। कुछ प्रान्तों में १४ वर्ष में तथा कुछ में १५ वर्ष में तथा कुछ में १६ वर्ष की शिक्षा के बाद विश्वविद्यालय की पहली उपाधि प्रदान की जाती है। इससे प्रतियोगी परीक्षाओं में कुछ लोग कम प्रयास कर पाते हैं तथा शेष लोग अधिकतर इन प्रतियोगी परीक्षाओं में प्रविष्ट होते हैं। इससे भी उनमें असन्तोष पनपता है। कुछ प्रान्तों में अभी हाई स्कूल, इन्टर तथा ग्रेजुएट प्रणाली है तो कुछ अन्य प्रान्तों में हायर सैकेण्डरी तथा स्नातक—तीन-तीन वर्ष के पाठयक्रम—बहरहाल समयावधि वही है। पर इससे भी इनके माता-पिताओं पर बोझ बढ़ा है जो अपनी पुत्रियों को विवाह के लिए उपयुक्त शिक्षा दिलाना चाहते हैं। इस प्रकार शिक्षा की सीढ़ी को भी सभी प्रान्तों में तत्काल ही समान बना देना चाहिए। अधिकांश विद्यार्थी अंग्रेजी में फेल होते हैं तथा यह भी निश्चित है कि अंग्रेजी पढ़कर सभी बच्चे भारत से बाहर भी नहीं जाते हैं। अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त की जानी चाहिए। जो बच्चे बाहर जाने के इच्छुक हों, वे अंग्रेजी में शिक्षा पायें, अंग्रेजी का एक विषय के रूप में अध्ययन करें। इससे दूसरे विद्यार्थियों को क्या ऐतराज हो सकता है। पर जो अंग्रेजी अधिकांश विद्यार्थियों की श्रेणी खराब करे, उसका इलाज किया जाना चाहिए।

शिक्षा उदार हो या व्यावसायिक, यह उतना महत्त्वपूर्ण नहीं है जितना यह निश्चित करना कि शिक्षा का उद्देश्य क्या है? शिक्षा के बीसों उद्देश्य ऊपर आरम्भ में गिनाए गए हैं जिनमें कमाना भी एक उद्देश्य हो सकता है, पर यही एकमात्र उद्देश्य हो, ऐसा भी लेखक मानने को तैयार नहीं है। शिक्षा का मूलभूत उद्देश्य होना चाहिए—बालक का मानस विकसित करना, जिससे वह समझ सके कि माता-पिता, गुरु, पड़ौसी के साथ कैसा व्यवहार किया जाय? वे दूसरे के व्यक्तित्व का आदर कर सकें। उनमें सहिष्णुता पैदा हो, वे परिवर्तन में विश्वास करें। वे प्रजातांत्रिक दृष्टिकोण लिए हुए हों। यदि शिक्षा के उद्देश्य निश्चित हो जायें, जो कि एक कठिन कार्य है, तो शिक्षा का स्वरूप एक होगा, यह ज्ञात करने में कोई कठिनाई नहीं होगी। स्वरूप निश्चित करने के लिए उद्देश्य, मार्गदर्शन या प्रकाश-स्तम्भ का कार्य करेंगे।

भारतीय शिष्य एकलव्य का उदाहरण आपके सामने है। गुरु के मना करने पर भी गुरु के प्रति पूरी वफादारी। सम्मान के साथ मिट्टी की मूर्ति को गुरु भाव देते हुए, उससे आदेश प्राप्त कर धनुर्विद्या सीखी। ऐसा ही व्यक्तित्व हमें आज के विद्यार्थियों में विकसित करना होगा, तभी गुरु-शिष्य के सम्बन्धों में सुधार होगा, तभी वे एक-दूसरे के निकट आयेंगे।

आज भी अधिकांश व्यक्ति गाँवों में रहते हैं। वे खेती करते हैं या खेती से जुड़े धंधों से गुजर-बसर करते हैं। गाँव में केवल वहाँ का हैडमास्टर ही पढ़ा-लिखा मिलता है। आज भी यह जानकर आश्चर्य होगा कि भारत में १८% व्यक्ति हाईस्कूल से ऊपर की शिक्षा प्राप्त हैं, इस स्थिति में वहाँ का हैडमास्टर ही वहाँ के लोगों का मसीहा है। उनको वहाँ बीस काम हो सकते हैं। खाद के लिए सहकारी समिति से कूपन भरवाना है, भेड़ों या गाय के लिए बैंक से ऋण का फार्म भरवाना है, दो भाई आपस में झगड़ रहे हैं, फसल को कीड़ों से बचाना है, पंचायत के चुनाव में मात देना है, अनमेल विवाह को रोकना है, ब्याज पर ऋण लेना है, गीता का उपदेश सुनना है, पढ़ना है, डेयरी को दिये जाने वाले दूध का हिसाब रखना है, मृत्यु-भोज के खिलाफ जनमत तैयार करना है, विधवा विवाह को लोकप्रिय बनाना है, बच्चों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निरक्षर नहीं रखना है, मवेशी के रोगों की रोकथाम के लिए ग्रामसेवक से मिलना है, अपनी उपज बेचने के लिए कृषि उपज मण्डी के कर्मचारियों से सम्पर्क करना है, कम पानी की स्थिति में कौन-कौन-सी फसलें बोयी जानी चाहिए, गोबर को कण्डा बनाकर न जलाया जाय, विश्व के समाचार जानने की रुचि पैदा हो, आदि। अनेक बातों के लिए वहाँ हैडमास्टर ही प्रभावोत्पादक बन सकता है। संक्षेप में कहें तो शिक्षक ही समाज में परिवर्तन का अग्रदूत बन सकता है। यदि ऐसा स्वीकार कर लिया जाये तो शिक्षा के स्वरूप को भी तदनुकूल बदलना होगा, ढालना होगा। पर यह आसान कार्य नहीं है।

बालक व बालिकाओं के पाठ्यक्रम में कई शिक्षाधिकारी भेद करेंगे, होना भी चाहिए। पर यह भेद प्रकृति ने नहीं बनाया है। बात यह है कि आज भी यदि कोई गृह-विज्ञान में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम पास करके जे० बी० मंघाराम की कम्पनी में प्रधान पाकशास्त्री बनता है, तो किस गृहिणी को आपत्ति है? वैसे बालिकाओं को गृह-विज्ञान, संगीत, चित्रकला, बाल-मनोविज्ञान पढ़ाया जाना चाहिए। बाल-मनोविज्ञान, पुरुषों के लिए भी समान रूप से उपयोगी है। यही बात चित्रकला के लिए भी कही जा सकती है।

मूल बात यह है कि भारतीय परिवेश में शिक्षा का स्वरूप क्या हो? यदि आग्रह सुधार का है तो स्वरूप गौण हो जाता है। आज जो पाठ्यक्रम चालू है उससे उपज कैसी प्राप्त हो रही है? यह भी एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न है। अब यदि सुधार पर आग्रह है, तो व्यावहारिक पक्ष पर आपको भिन्न दृष्टि से सख्ती बरतनी होगी। बालक नीतिवान हो, ईमानदार हो तो उस बच्चे के प्रमाणपत्र में अनैतिक होने का दृढ़ता एवं साहस के साथ उल्लेख कर दीजिए, जिसने स्कूल से घर जाते समय स्कूल की छात्रा का ही दुपट्टा खींच लिया है। यह एक उदाहरण मात्र है। हर कदम पर सख्ती बरती जाय तो फल अच्छे हो सकते हैं। इसी भाँति यदि कोई बालक कार्यानुभव में वांछित स्तर प्राप्त नहीं कर पाया है तो उसे तद्विषयक प्रमाणपत्र नहीं दिया जाये। इस प्रकार शिक्षा के स्वरूप या उद्देश्यों पर नहीं अपितु उनके कार्यान्वयन पक्ष पर बल देने की जरूरत है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि वांछित फल प्राप्त करने के लिए यदि कार्यान्वयन पक्ष पर सही रूप से आग्रह किया जाय, तो शैक्षिक उन्नयन की आशा की जा सकती है।

शिक्षा के उद्देश्य तय करने के बाद शिक्षा के स्वरूप का निर्धारण भी किसी एक व्यक्ति के हाथ की बात नहीं है। इन महत्त्वपूर्ण कार्यों में शिक्षा प्रशासक, मनोवैज्ञानिक, समाज सुधारक, जन नेता, प्रशासक, योजनाधिकारी, अर्थशास्त्री, समाजशास्त्री की महत्त्वपूर्ण भूमिका रहेगी। इनके साथ ही समान रूप से प्रभावी एवं महत्त्वपूर्ण भूमिका रहेगी कक्षा में अध्यापन कराने वाले अध्यापक की। कक्षा-कक्ष में कार्य कराने वाले अध्यापक के स्थान को किसी भी रूप में कम महत्त्व का नहीं माना जा सकता।

आगरा विश्वविद्यालय द्वारा एम० ए० (हिन्दी) पूर्वार्द्ध परीक्षा के लिये निर्धारित पाठ्यक्रमानुसार

हमारे दो नवीन प्रकाशन

● **जायसी-ग्रन्थावली—संक्षिप्त संस्करण** — सं० राजनाथ शर्मा

प्रस्तुत संक्षिप्त संस्करण में मानसरोदक-खण्ड, पदमावती वियोग खण्ड तथा नागमती वियोग खण्ड आदि का अध्यात्मपरक अर्थ देकर उसकी आलोचना एवं व्याख्या विस्तृत रूप में दी गई है। साथ ही शुद्ध मूल पाठ, शब्दार्थ, व्याख्या, अलंकार तथा काव्य सौन्दर्य उद्घाटित करने वाली अन्य विशेषताओं का समावेश किया गया है जो कि इस पुस्तक की प्रमुख विशेषता है। मूल्य : ३.००

● **द्विवेदी युगीन काव्य** — सं० डा० राजकिशोरसिंह

द्विवेदी युगीन खड़ीबोली शब्द, छन्द, भाषा और भाव के क्रमिक विकास को रूपायित करने के लिए श्रीधर पाठक, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' तथा मैथिलीशरण गुप्त को इस संग्रह में स्थान दिया गया है। इन्हीं कवियों की कविता में छायावादी एवं परवर्त्ती कविता के विकास की भूमिका निहित है। मूल्य : ५.००

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Our English Publications

EDUCATION & PSYCHOLOGY

S. P. Sukhia

EDUCATIONAL ADMINISTRATION *Rs. 22.00*
[First Edition 81-82] *Lib. edn. Rs. 30.00*

Dr. S. S. Mathur

EDUCATIONAL PSYCHOLOGY *Rs. 25.50*
[Ninth Edition, 1981] *Lib. edn. Rs. 40.00*

A SOCIOLOGICAL APPROACH TO INDIAN EDUCATION
[Revised Sixth Edition, 1981] *Rs. 28.00*

Dr. S. P. Chaube

PHILOSOPHICAL AND SOCIOLOGICAL FOUNDATIONS OF EDUCATION
[First Edition, 1981] *Rs. 20.00*
Lib. Edn. Rs. 30.00

Dr. R. S. Pandey

PRINCIPLES OF EDUCATION
[Revised Fourth Edition, 1979] *Rs. 16.00*

Dr. R. K. Jain

ESSENTIALS OF ENGLISH TEACHING
[Revised Sixth Edition, 1981] *Rs. 20.00*

IN Q. A. SERIES

N. R. Sharma

- **B. ED. GUIDE** *[Second Revised & Enlarged Ed.]* *Rs. 51.00*

P. D. Pathak & Tyagi

- **PRINCIPLES OF EDUCATION** *Rs. 12.00*
- **BASIC EDUCATION** *Rs. 5.00*
- **TEACHING OF ENGLISH IN INDIA** *Rs. 6.50*

Indra Sharma

- **PRINCIPLES AND PRACTICE OF EDUCATION** *Rs. 11.00*
- **EDUCATIONAL PSYCHOLOGY** *Rs. 12.50*
- **HISTORY AND PROBLEMS OF INDIAN EDUCATION** *Rs. 13.50*
- **SCHOOL ADMINISTRATION AND HEALTH EDUCATION** *Rs. 14.00*

VINOD PUSTAK MANDIR, AGRA

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नई पुस्तकें

शिक्षा और मनोविज्ञान

नैदानिक मनोविज्ञान (प्रथम संस्करण) डा० रामपालसिंह, प्राक्क० ले०—डा० एम० ए० शाह, डिमाई, पृष्ठ ४६२, मूल्य २५·००, पुस्तकालय संस्करण ३५.००

मनोविज्ञान के समकालीन सम्प्रदाय (प्रथम संस्करण) डा० आर० के० ओझा, डिमाई, पृष्ठ २४०, मूल्य १०·००

भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ (संशोधित पंचम संस्करण) पी० डी० पाठक, डिमाई, पृष्ठ ६३६, मूल्य १६.८०, कानपुर एवं रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय संस्करण २४·८०, पुस्तकालय संस्करण ३०·००

शिक्षा के सामान्य सिद्धान्त (संशोधित तेरहवाँ संस्करण) पी० डी० पाठक, गुरसरनदास त्यागी, डिमाई, पृष्ठ ६६६, मूल्य २४·००, पुस्तकालय संस्करण ३२·००

बाल मनोविज्ञान : बाल विकास (संशोधित द्वितीय संस्करण) डा० प्रीती वर्मा, डा० डी० एन० श्रीवास्तव, डिमाई, पृष्ठ ५५४, मूल्य २२.५०

सामान्य मनोविज्ञान (बारहवाँ परिवर्द्धित संस्करण) डा० एस० एस० माथुर, डिमाई, पृष्ठ ५३०, मूल्य २०·००

असामान्य मनोविज्ञान (संशोधित आठवां संस्करण) डा० लाभसिंह एवं डा० गोविन्द तिवारी, डिमाई, पृष्ठ ५२२, मूल्य २०·००

समाज़ मनोविज्ञान : प्रारम्भिक अध्ययन (संशोधित नवाँ संस्करण) डा० एस० एस० माथुर, डिमाई, पृष्ठ ३६८, मूल्य १४·००

हिन्दी-शिक्षण (पाँचवाँ संशोधित संस्करण) डा० रामशकल पाण्डेय, डिमाई, पृष्ठ ३६०, मूल्य १२.५०

नागरिक शास्त्र का शिक्षण (बारहवाँ संस्करण), गुरसरनदास त्यागी, डिमाई, पृष्ठ २५०, मूल्य ६·००

विविध

पाश्चात्य काव्यशास्त्र (संशोधित आठवाँ संस्करण) डा० कृष्णदेव शर्मा, क्राउन, पृष्ठ ३६८, मूल्य १०·००

हिन्दी भाषा का इतिहास (संशोधित सोलहवाँ संस्करण) राजनाथ शर्मा, क्राउन, पृष्ठ ३००, मूल्य ७.५०

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और उनकी चिन्तामणि (पन्द्रहवाँ संशोधित संस्करण) राजनाथ शर्मा, क्राउन, पृष्ठ २६२, मूल्य ७·५०

रामधारीसिंह दिनकर और कुरुक्षेत्र (संशोधित बारहवाँ संस्करण) डा० तारकनाथ वाली, क्राउन, पृष्ठ २१२, मूल्य ६.००

[शेष पृष्ठ १६ पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विभिन्न विश्वविद्यालयों की बी० एड० परीक्षा के नवीन पाठ्यक्रमानुसार प्रश्नोत्तर शैली में लिखित
प्रशिक्षण विद्यालयों में तहलका मचाने वाली विद्यार्थियों की लोकप्रिय पुस्तक

अद्यतन बारहवें संस्करण में मेरठ, गोरखपुर, फैजाबाद एवं विशेष रूप से म० प्र० के विक्रम विश्वविद्यालय के नये पाठ्यक्रमानुसार विभिन्न प्रकरण जोड़कर पुस्तक को अधुनातन रूप दिया गया है।

बी० एड० दिग्दर्शन (गाइड)

सम्पादक—
भाई योगेन्द्रजीत
दिनेशचन्द्र भारद्वाज
विनोदकुमार अग्रवाल

[पूर्णतः संशोधित एवं परिमार्जित बारहवाँ संस्करण 1981-82]

अनुक्रमणिका

- शिक्षा सिद्धान्त तथा भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक विचारधारा
- शिक्षा मनोविज्ञान
- भारतीय शिक्षा का इतिहास और समस्याएँ
- पाश्चात्य शैक्षिक विचारधारा
- विद्यालय प्रशासन, संगठन और स्वास्थ्य विज्ञान
- शिक्षण-कला

प्रमुख विशेषताएँ

- प्रस्तुत संस्करण में 'शिक्षा-सिद्धान्त' के प्रथम प्रश्नपत्र में शिक्षा और समाज, शिक्षा और राजनीति, शिक्षा और अर्थशास्त्र, शिक्षा और विज्ञान, नैतिक शिक्षा, शिक्षा की नवीन प्रवृत्तियाँ—मनोवैज्ञानिक, वैज्ञानिक एवं समाहारक तथा स्वतन्त्रता और अनुशासन आदि नवीन अध्यायों का समावेश किया गया है।
- द्वितीय प्रश्नपत्र में मनोविज्ञान व्यवहार के रूप में, अध्ययन आदतों का विकास, निदानात्मक परीक्षण तथा उपचारात्मक शिक्षण, समाजमितिक एवं क्रियात्मक अनुसन्धान की प्रायोजना आदि विशेष प्रकरणों का समावेश।
- अन्य प्रश्नपत्रों में राष्ट्रीय शिक्षा नीति, आजीवन शिक्षा, औपचारिक व अनौपचारिक शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा, विद्यालय तथा समुदाय, जनसंख्या-शिक्षण, शैक्षिक तकनीकी आदि कतिपय विशिष्ट अध्यायों का उल्लेख विशेष रूप से उ० प्र० एवं म० प्र० की शिक्षा के सन्दर्भ में किया गया हैं।
- इसमें प्रश्नों का विस्तार एवं आकार विद्यार्थियों की आवश्यकतानुसार दिया गया है। जटिल एवं सूक्ष्म विषयों का प्रतिपादन, सरल, स्पष्ट और वैज्ञानिक ढंग से सरल भाषा में किया गया है।
- शिक्षा प्रशासन तथा विद्यालय संगठन का उल्लेख करने के साथ-साथ विभिन्न प्रदेशों के (उत्तर प्रदेश, राजस्थान तथा मध्यप्रदेश) शिक्षा प्रशासन की भी व्याख्या की गई है।

सूचना—म० प्र० के विक्रम विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम का अधिकांश भाग अलग से अनुपूरक के रूप में उपलब्ध है, जिसका अतिरिक्त मूल्य ३.०० रु० है।

इस प्रकार प्रस्तुत संस्करण सभी दृष्टियों से उत्तम एवं उपलब्ध गाइडों में सर्वश्रेष्ठ व सस्ता है।

आकार : डिमाई **पृष्ठ संख्या : 1342** **मूल्य : 35.00**

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा-२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्विवेदी युगीन काव्य (प्रथम संस्करण) सं० डा० राजकिशोरसिंह, क्राउन, पृष्ठ १७६, मूल्य ५·००
आधुनिक श्रेष्ठ व्यंग्य (प्रथम संस्करण) सं० डा० घनश्याम, क्राउन, पृष्ठ ११२, मूल्य ६·००
जायसी ग्रंथावली (संक्षिप्त संस्करण) सं० राजनाथ शर्मा, डिमाई, पृष्ठ ५२, मूल्य ३.००
रघुवंशम् : प्रथम सर्ग (संशोधित द्वितीय संस्करण) डा० जयकिशनप्रसाद खण्डेलवाल, क्राउन, पृष्ठ ११८, मूल्य ४·५०
आधुनिक हिन्दी काव्य में प्रकृतिमूलक दार्शनिकता (शोध प्रबन्ध) सुशीला गुप्ता, डिमाई, पृष्ठ ५१८, मूल्य ६०·००
हिन्दी काव्य शास्त्र में रस स्वरूप (आलोचना) रवि प्रकाश, डिमाई, पृष्ठ ३०३, मूल्य ५०·००
आचार्य रामचन्द शुक्ल का गद्य साहित्य (शोध प्रबन्ध) अशोकसिंह, डिमाई, पृष्ठ २३४, मूल्य ४०·००
पन्त काव्य भाषा शैली वैज्ञानिक विश्लेषण (शोध प्रबन्ध) कान्ता पन्त, डिमाई, पृष्ठ १३८, मूल्य ३०·००
काव्य के तत्त्व (आलोचना) आचार्य देवेन्द्र नाथ शर्मा, डिमाई, पृष्ठ १६५, मूल्य २५·००
भारतीय उपन्यास कथासार खण्ड १ (कथासार) डा० प्रभाकार माचवे, डिमाई, पृष्ठ ६१५, मूल्य ५०·००
गीत गोविन्द (आलोचनात्मक) डा० श्रीमती कपिल, डिमाई, पृष्ठ १३६, मूल्य २०·००
गीति प्रबोध—भाग २ (आलोचनात्मक) प्रबोध चतुर्वेदी, डिमाई, पृष्ठ २५१, मूल्य १२.००
गीति प्रबोध—भाग ३ (आलोचनात्मक) प्रबोध चतुर्वेदी, डिमाई, पृष्ठ १५५, मूल्य ८·००
गीति प्रबोध—भाग ४ (आलोचनात्मक) प्रबोध चतुर्वेदी, डिमाई, पृष्ठ १६२, मूल्य ८·००
गीति प्रबोध—भाग ५ (आलोचनात्मक) प्रबोध चतुर्वेदी, डिमाई, पृष्ठ १२०, मूल्य ६·००
बोलचाल की हिन्दी (विविध) सुशीला गुप्ता, डिमाई, पृष्ठ १००, मूल्य ८·००
गोपाल भाँड़ की कथा (कहानी) ओंकार शरद, डिमाई, पृष्ठ ८०, मूल्य १०·००
हिम उजास (कहानी) लक्ष्मीधर मालवीय, क्राउन, पृष्ठ १४४, मूल्य २०·००
रेखा (उपन्यास) रत्नचन्द्र धीर, क्राउन, पृष्ठ १९९, मूल्य २०·००
लोक महाकाव्य चनैनी (कविता) श्याम मनोहर पाण्डेय, डबल डिमाई, पृष्ठ ६२७, मूल्य १५०·००
प्रश्न चिन्ह (कविता) डा० ओंकार नाथ त्रिपाठी, डिमाई, पृष्ठ ८७, मूल्य १८·००
रक्त गंगा (उपन्यास) इकबाल बहादुर देवसरे, डिमाई, पृष्ठ ३५९, मूल्य ४५·००
अशेष (उपन्यास) कान्ति द्विवेदी, डिमाई, पृष्ठ २१६, मूल्य ३०·००
दो नम्बर (उपन्यास) बुद्धदेव गुह, क्राउन, पृष्ठ १४७, मूल्य १८·००

[पृष्ठ १ का शेषांश]

जा रहा है। उनके आचरण में गिरावट स्पष्ट दिखाई दे रही है। वे कुछ दिग्भ्रमित-से दृष्टिगोचर हो रहे हैं। वैसे शिक्षालयों की संख्या बढ़ी है, विश्वविद्यालयों की संख्या भी खूब बढ़ी है, छात्रों की संख्या में तो अपार वृद्धि हुई है किन्तु इस वृद्धि के बावजूद कहीं कुछ घट रहा है, गुणात्मकता में कमी आ रही है, शैक्षिक स्तर में गिरावट है। इस ह्रास के अनेक कारणों के मूल में सम्भव है नैतिक शिक्षा का अभाव हो। नैतिक मानदण्ड के बोध के लिए छात्रों को कुछ शिक्षा तो मिलनी ही चाहिए, चाहे वह किसी भी रूप में हो। किन्तु कुछ लोगों के विचार से नैतिक शिक्षा इस दिशा में कुछ नहीं कर सकती। वस्तुतः नैतिक शिक्षा की आवश्यकता व इसके स्वरूप के विषय में मतभेद विद्यमान है। अतः इस ज्वलन्त व सामयिक समस्या पर विचार-मंथन की आवश्यकता है। इसीलिए 'नैतिक शिक्षा' पर 'साहित्य-परिचय' का आगामी विशेषांक प्रकाशित हो रहा है, जो मार्च, १९८२ तक आपके कर-कमलों में होगा।

आप सभी सुधी पाठकों के सुझावों व विचारों का स्वागत है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोविज्ञान के क्षेत्र में एक और नवीन कृति

मनोविज्ञान के समकालीन सम्प्रदाय

[SCHOOLS OF PSYCHOLOGY]

लेखक

डा० राजकुमार ओझा

मनोविज्ञान विभाग

के० जी० के० कालिज, मुरादाबाद

★ ★ ★

- विचारधाराओं के प्रवर्त्तक अध्ययन-सामग्री की रीढ़ होते हैं और समकालीन विचारधाराएँ आने वाली पीढ़ी को प्रेरणा देती हैं। मनोविज्ञान के इतिहास में बीसवीं शताब्दी एक क्रान्तिकारी अध्याय है, जिसमें धर्म संकट में पड़े अधूरे इतिहास को लगभग पूरा करने की चेष्टा की। इस क्रान्तिकारी अध्याय का एक मार्ग है—मनोविज्ञान के सम्प्रदाय।
- प्रस्तुत पुस्तक में सभी आवश्यक सम्प्रदायों का वर्णन किया गया है। पाठ्यक्रम और अध्ययन की दृष्टि से अधिक से अधिक प्रमुख विचारधाराओं का विश्लेषण किया गया है। विभिन्न विश्वविद्यालयों की एम० ए० मनोविज्ञान तथा एम० एड० कक्षाओं के विद्यार्थी इस पुस्तक की अध्ययन-सामग्री का पूरा-पूरा उपयोग कर सकेंगे और लाभान्वित होंगे। पुस्तक की भाषा-शैली को यथासम्भव सरल तथा सुबोध बनाने का पूर्ण प्रयास किया गया है।
- पुस्तक में निम्न ग्यारह अध्यायों में विभक्त सम्पूर्ण सामग्री का विवेचन किया गया है।

अध्याय क्रम

1. मनोविज्ञान के सम्प्रदाय और उनकी पृष्ठभूमि (Schools of Psychology and Their Background)
2. संरचनात्मक मनोविज्ञान (Structural Psychology)
3. प्रकार्यात्मक मनोविज्ञान (Functional Psychology)
4. प्रारम्भिक व्यवहारवाद तथा नव-व्यवहारवादी (Early Behaviourism and Neo-Behaviourism)
5. गैस्टाल्ट मनोविज्ञान (Gestalt Psychology)
6. संस्थितिक तथा सदिश मनोविज्ञान (Topological and Vector Psychology)
7. मन-ऊर्जा मनोविज्ञान (Hormic Psychology)
8. मनोविश्लेषण तथा सम्बन्धित सिद्धान्त (Psychoanalysis and Related Theories)
9. वैयक्तिक तथा विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान (Individual and Analytical Psychology)
10. मनोविश्लेषण में नव-सिद्धान्त : समाजशास्त्रीय सम्प्रदाय (New Theories in Psychoanalysis: Sociological Schools)
11. पशु-मनोविज्ञान (Animal Psychology)

आकार : डिमाई पृष्ठ : 240 मूल्य : 10.00

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिना टिकट प्रेषण करने का प्रमाण-पत्र संख्या—एल-एजी-038

साहित्य-परिचय [जनवरी, 1982] पंजीवद्ध संख्या एल-एजी-038

ND REVISED & ENLARGED EDITION

B. Ed. GUIDE

For

Students of Indian Universities

●

By

Indra Sharma, *M. Sc., B. Ed.*

&

N. R. Sharma, *M. A., L. T.*

Ex. Assistant Professor of Education

R. B. S. College, Agra.

(Retired) Principal, Senior Secondary Schools, Delhi.

●

The present edition of the book has been written according to the recent syllabi prescribed by various universities of India, especially those of Agra, Kanpur, Meerut, Gorakhpur, Nagpur, Vikram, Shivaji, Bombay and Poona Every effort has been taken to present the entire subject- matter systematically in four parts on Principles of Education and Techniques of Teaching, Educational Psychology, Problems of Indian Education, Educational Administration and Health Education in a lucid style :

The other characteristics of the book are as follows :—

- The course content in each paper has been put at one place.
- Only standard books have been consulted in writing of the answers.
- Questions have been solved at length and where necessary hints have been given to avoid duplication.
- Though the book is in question-answer form, yet coherence of treatment has been preserved.
- The language is simple and clearly intelligible to an average student.
- One of the authors claims to have a long teaching experience in a training college of U. P. and an administrative experience in Senior Secondary Schools of Delhi.

It is sincerely hoped that the book will be warmly welcomed and will prove beneficial to students. Any suggestions for the improvement will be thankfully received.

Size Demy Page 1250 Price Rs. 51.00

VINOD PUSTAK MANDIR, AGRA

प्रकाशक एवं मुद्रक : विनोद कुमार अग्रवाल द्वारा कैलाश प्रिंटिंग प्रेस, आगरा-२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1-11-82

जून
1982

साहित्य समीक्षा

परिचायक-पत्र

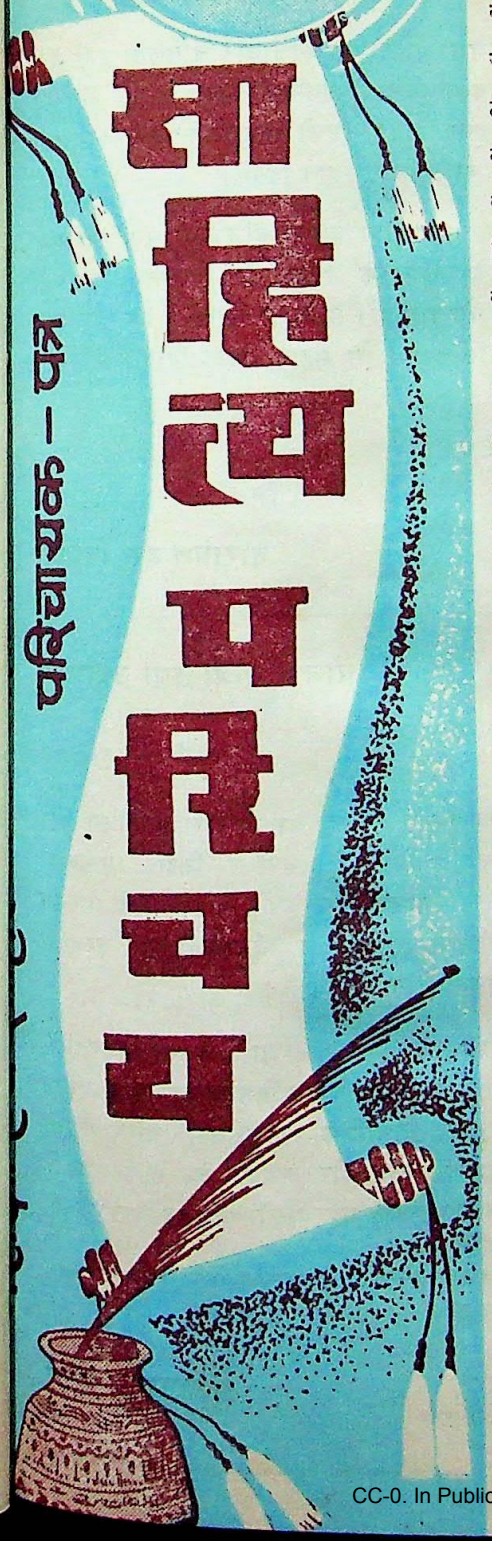

"समाज या राष्ट्रों का निर्माण व्यक्तियों से होता है। व्यक्तियों की विचार-धारा ही उस समाज या राष्ट्र के उत्थान-पतन का आधार होती है। अतः व्यक्ति की विचारधारा के बदलते ही समाज और राष्ट्र का स्वरूप भी बदल जाता है। व्यक्ति के विचार भी बदलते हैं—कभी दूसरों को देखकर, कभी ठोकर खाकर और कभी सत्साहित्य पढ़कर; दूसरों को देखकर विचारों को बदलने का नाम अनुकरण है। अनुकरण सदैव बड़ों का किया जाता है। बड़े कौन हैं ? किसी की दृष्टि से बड़े वे हैं, जो भौतिक दृष्टि से सम्पन्न हैं और किसी की दृष्टि से वे, जिन्होंने समाज या राष्ट्र-हित में अपना सर्वस्व समर्पण कर दिया। अतीत में भौतिक दृष्टि से सम्पन्न न जाने कितने हुए, परन्तु इतिहास के कुछ विद्यार्थियों को छोड़कर कोई उनका नाम तक नहीं जानता, जबकि राष्ट्रभक्तों, समाजसेवियों की समाधियों पर हम आज भी नतमस्तक होकर श्रद्धा के सुमन अर्पित कर सच्ची श्रद्धाञ्जलि देते हैं। इस पर जन-सामान्य विचार नहीं करता। जो विचार करता है, वह बदल जाता है। वाल्मीकि बदले, सूर बदले, तुलसी बदले, रहीम बदले, कबीर बदले और न भी जाने कौन-कौन बदले ?

शिक्षण-संस्थाओं में इन कवियों का साहित्य पढ़ाया तो जाता है, पर समझाया नहीं जाता। न गुरु रहे, न शिष्य; कौन समझें, कौन समझाये ? समझने की बात है—तुलसी ने सैकड़ों वर्ष पहले रामचरितमानस के सुन्दर-काण्ड में लिखा था—

सचिव, वैद, गुरु तीन, प्रिय बोलहिं भय आस।
राज, धर्म, तन तीनि कौ, होइ बेगि ही नास॥

आज भी यह बात उतनी ही सत्य है जितनी वर्षों पूर्व थी। शाश्वत सत्य को कोई झुठला नहीं सकता। घर-घर में सुन्दरकाण्ड का पाठ होता है, परन्तु कोई जानता तक नहीं कि 'सचिव' का अर्थ कितना व्यापक है ? हर व्यक्ति का सलाहकार उसका सचिव है। ये सचिव—घर, कार्यालय सभी जगह मौजूद हैं। शिक्षा में भी अध्यापक—प्रधानाध्यापक के सचिव नहीं तो क्या हैं। अतः शिक्षकों का दायित्व है—छात्रों की भावनाओं को बदलने का, उनको नैतिकता और अनैतिकता का सच्चा पाठ पढ़ाने का, जिससे वे न्यायसंगत और परहितकारी पथ पर अग्रसर हों और राष्ट्र के उत्थान का पथ प्रशस्त हो।"

—'नैतिक शिक्षा विशेषांक' से उद्धृत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन्देश

उद्योग, इस्पात एवं खान मंत्री
भारत

उद्योग भवन, नई दिल्ली
दिनांक १० मई, १९८२

प्रिय श्री अग्रवाल,

प्राचीन काल से ही भारतीय शिक्षा पद्धति का मूलाधार नैतिकता रही है। परन्तु ब्रिटिश शासकों ने जो शिक्षा व्यवस्था चलायी उसमें नैतिकता के पक्ष की पूरी उपेक्षा की गई। स्वतन्त्रता प्राप्ति से हमने पुन: इसकी महत्ता को स्वीकारा तथा शैक्षिक व्यवस्था में नैतिकता की शिक्षा को विशिष्ट स्थान दिया।

परन्तु हमारा प्रयास तभी सफलीभूत होगा जबकि बुद्धिजीवी वर्ग, स्वैच्छिक संस्थायें तथा पत्र-पत्रिकायें नैतिकता के महत्त्व के सन्देश को विद्यालयों तक सही परिप्रेक्ष्य में पहुँचाने में अपना यथाशक्य योगदान दें। मैं आशा करता हूँ कि "साहित्य परिचय" का नैतिक शिक्षा विषयक विशेषांक इस महान उत्तरदायित्व को निभाने में अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत करेगा।

मेरी शुभकामनायें स्वीकार करें।

सद्भावना सहित,

आपका

नारायण दत्त तिवारी

योजना मन्त्री तथा उपाध्यक्ष
योजना आयोग
नई दिल्ली—११०००१

यह जानकर हर्ष हुआ कि विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा द्वारा संचालित और प्रकाशित मासिक पत्र "साहित्य परिचय" पिछले १६ वर्षों से शिक्षा, संस्कृति, साहित्य, समाज, भाषा आदि से सम्बन्धित समस्याओं को अपने विशेषांकों के माध्यम से उजागर करता रहा है। इस वर्ष "साहित्य परिचय" के "नैतिक शिक्षा" सम्बन्धी विशेषांक प्रकाशित करने का प्रयत्न निश्चय ही सराहनीय है।

हमारे विचारकों ने विद्या के विषय में कहा है—"सा विद्या या विमुक्तये", अर्थात् विद्या वह जो विमुक्त कर दे। वर्तमान सन्दर्भ में इस विमुक्ति का अर्थ है अज्ञान से मुक्ति, निरक्षरता से मुक्ति, आर्थिक और सामाजिक अभावों और असमानताओं से मुक्ति। परन्तु स्वस्थ व्यक्तित्व, आदर्श समाज और सुगठित देश के निर्माण के लिए नैतिक शिक्षा अनिवार्य है और इसलिए इसका महत्त्व और भी बढ़ जाता है।

आशा है इस विशेषांक में नैतिकता विषयक विचारपूर्ण सामग्री सबके लिए, विशेष रूप से विश्वविद्यालयों तथा छात्रों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

शंकरराव चव्हाण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

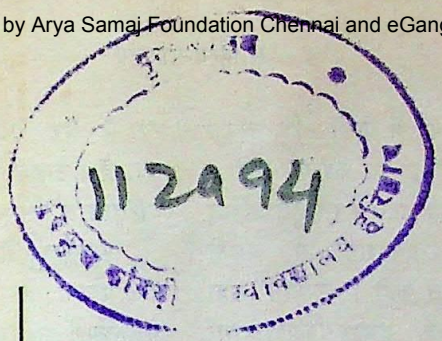

साहित्य-परिचय

[शिक्षा और साहित्य की प्रगति का परिचायक पत्र]

[वर्ष 17 : अंक 5-6]
मई-जून, 1982

सम्पादक
विनोद कुमार अग्रवाल
एम० ए०, साहित्यरत्न

स्वामित्व
विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

वार्षिक शुल्क : 15·00
रजिस्ट्री से विशेषांक मँगवाने पर
18·00
[विदेशों में—डाक व्यय सहित मात्र 40·00]

साहित्य-परिचय
डा० रांगेय राघव मार्ग
आगरा—2
फोन : 76486

सम्पादकीय

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ का 25वाँ वार्षिक अधिवेशन 19-20 जून को इलाहाबाद में सम्पन्न हुआ। वर्तमान समय में प्रकाशकों के समक्ष आये प्रकाशन उद्योग सम्बन्धी संकट एवं उनके निवारण हेतु क्या कदम उठाये जायँ, प्रस्तुत अधिवेशन का यह मुख्य उद्देश्य था। मुद्रण के प्रतिमान, मूल्य निर्धारण, लेखकों और पाठकों के बीच सम्पर्क-वर्द्धन, अनुवादकों की समस्यायें, पुस्तक विक्रेताओं की समस्यायें, रेडियो, टेलीविज़न आदि संचार साधनों का प्रयोग, विभिन्न भाषाओं से हिन्दी के आदान-प्रदान के लिए पुस्तकों एवं विषयों का निर्वाचन और प्रकाशकों में तदनुसार आवंटन, समस्त भारतीय भाषा क्षेत्रों से निकट सम्पर्क स्थापित करना आदि मुख्य मुद्दों को प्रकाशक संघ के अधिवेशन में उठाया गया और इसी आधार पर आगामी वर्ष का कार्य-क्षेत्र निश्चित किया गया।

19 जून को प्रातःकाल पुस्तक प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए केन्द्रीय राज्य पुस्तकालय के अध्यक्ष श्री भास्करनाथ तिवारी ने हिन्दी के सभी प्रकाशकों से अनुरोध किया कि पाठकों की आवश्यकताओं और उनकी अभिरुचियों के अनुरूप उत्कृष्ट साहित्य सस्ते मूल्य पर सहज सुलभ कराना वर्तमान की बहुत बड़ी आवश्यकता है, जिसे प्रकाशकों को समझना चाहिए। यदि ऐसा न हुआ तो अभिरुचियों के दूषण को बचाया न जा सकेगा। हिन्दी प्रकाशन व्यवसाय के लिए यह बहुत गम्भीर चुनौती है कि सत्साहित्य अधिक मूल्य का होने के कारण पाठकों में लोकप्रिय नहीं है जबकि अपराध, सेक्स, व्यभिचार आदि का साहित्य सस्ते मूल्य पर गली-गली में सहज सुलभ हो रहा है और पाठकों में दिन-प्रतिदिन लोकप्रिय होता जा रहा है।

श्री तिवारी ने प्रकाशक संघ को नियमित रूप से हिन्दी के सभी नवीनतम प्रकाशनों की वांगमय सूची प्रकाशित करने, निश्चित अन्तराल से पाठकों की अध्ययन सूचियों का सर्वेक्षण कराते रहने और सामयिक विषयों पर स्तरीय प्रकाशन करने का अनुरोध किया। श्री तिवारी ने प्रकाशकों से अनुरोध किया कि वे अपनी पुस्तकों की विक्री का कार्यक्षेत्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीधे पाठकों से जोड़े और पाठकों में ऐसी रुचि उत्पन्न करें जिससे कि वह उत्तम साहित्य क्रय कर पढ़ सकें।

सांयकाल अधिवेशन का उद्घाटन करते हुए प्रसिद्ध कवियित्री महादेवी वर्मा ने प्रकाशकों से अपनी आचार-संहिता बनाने की बात कही। उन्होंने कहा कि इस बात पर गम्भीरतापूर्वक विचार किया जाना चाहिए कि प्रकाशन में कोई जीवन-मूल्य कैसे आ सकता है ?

आचार-संहिता बनाने को कठिन पर आवश्यक बताते हुए महादेवीजी ने कहा कि यह कठिन इसलिए है कि आज कई तरह के प्रकाशक हैं—गंभीर साहित्य के प्रकाशक, अश्लील साहित्य के, उत्तेजक एवं सनसनी-खेज साहित्य के, कुंजी के प्रकाशक व 'दूसरों की चोरी करके' छापने वाले आदि, प्रश्न उठता है कि इनकी एक आचार-संहिता कैसे बने ? 'साहूकार और डाकू' की एक आचार संहिता कैसे हो ? आचार-संहिता की आवश्यकता पर बल देते हुए उन्होंने कहा कि ऐसा होने पर लेखक और प्रकाशक के बीच की दूरी कम होगी। उनके सम्बन्ध सुधरेंगे जिसका लाभ स्वभाविक तौर पर देश के 'सांस्कृतिक जगत्' को मिलेगा।

'सरकारी नीति' की चर्चा करते हुए महादेवी जी ने उसे 'अद्भुत' बताया। उन्होंने कहा कि इस नीति के कारण लेखक-प्रकाशक दोनों परेशान हैं—लेखक पुरुस्कार के लिए लड़े जा रहे हैं और प्रकाशकों की सारी दौड़ सरकारी-खरीद पर केन्द्रित हो गयी है।

हिन्दी में लेखक और प्रकाशक दोनों की स्थिति खराब बताते हुए उन्होंने हिन्दी प्रकाशकों से कहा कि उनका क्षेत्र व्यापक है और कर्त्तव्य कठिन है। उन्हें चाहिए कि वे सरकार, लेखक और पाठक से अपने सम्बन्धों को तय करें। 'स्वार्थ जरूर देखें, पर उसे परमार्थ न कहें।' आपने प्रकाशक अधिवेशनों में लेखकों को आमन्त्रित करने को 'शुभ लक्षण' बताया।

उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के उपाध्यक्ष डा० शिवमंगल सिंह 'सुमन' ने प्रकाशक को सब धन्धों से अलग एक 'पवित्र कर्म' बताया। उन्होंने कहा कि प्रकाशन का काम जन-जीवन से जुड़ना, जनता में व्याप्त होना है। उन्होंने दुख व्यक्त किया कि आज पढ़ने का महत्त्व समाप्त हो रहा है और पाठक तथा लेखक के बीच सम्बन्ध टूट गया है। उन्होंने आगाह किया कि यह स्थिति राष्ट्र के अस्तित्व के लिए गम्भीर खतरा बन सकती है।

प्रकाशकों से डा० सुमन ने अपेक्षा की कि वे लेखक और पाठक के बीच की कड़ी होने के नाते अपनी 'महत्त्वपूर्ण भूमिका' पहिचाने और लेखकों और तथा पाठकों की विश्वसनीयता अर्जित करें। डा० सुमन ने प्रकाशकों से मूल्यांकन नीति निर्धारित करने की बात कही। उन्होंने कहा कि 'मूल्य की अराजकता' रहने पर इसके पहले शिकार प्रकाशक स्वयं होंगे। इस सम्बन्ध में उन्होंने प्रकाशकों में नैतिकता जाग्रत करने की बात भी कही।

अन्त में समारोह के अध्यक्ष पद से बोलते हुए प्रकाशक श्री जवाहर चौधरी ने सभी आमन्त्रित व्यक्तियों को धन्यवाद दिया और महादेवी जी तथा डा० सुमन को विश्वास दिलाया कि उन्होंने अपने भाषण में जिन-जिन मुद्दों को उठाया है, प्रकाशक संघ उन पर चलने का पूर्ण प्रयत्न करेगा। उन शब्दों के साथ जबाहर चौधरी ने आदरणीय महादेवी जी से निवेदन किया कि आज के युग में जहाँ आपने प्रकाशकों से आचार-संहिता बनाने की बात कही है, वही बात लेखकों पर भी लागू होती है, लेखक भी कई प्रकार के हैं। कुछ मौलिक लिखते हैं, कुछ थोड़ी नकल करते हैं और कुछ एक-दम ही नकल कर देते हैं या अपनी लिखी एक पुस्तक का अनुबन्ध तीन या चार प्रकाशकों से (पुस्तक का नाम बदलकर) कर लेते हैं और इस प्रकार एक पुस्तक से तीन-चार बार धन अर्जित करते हैं। अतः आचार-संहिता लेखकों के लिए भी उतनी ही आवश्यक है, जितनी की प्रकाशक के लिए। प्रकाशक का तो प्रकाशन व्यवसाय ही है किन्तु लेखक तो स्रष्टा होता है, अतः उसमें नैतिकता का बाहुल्य होना ही चाहिए। नैतिकता विहीन लेखक ही प्रकाशक जगत् को बदनाम किए हुए हैं। फिर भी आदरणीय महादेवी जी और सुमन के सुझावों का सम्मान करते हुए श्री जवाहर चौधरी ने कहा कि हमें प्रकाशन जगत् से बहुत सी आशाएँ रखनी चाहिए और निकट भविष्य में ही जो भी कमियाँ इसमें हैं, वह भी हम दूर करने का भरसक प्रयत्न करेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रीय एकीकरण तथा शिक्षा–एक विवेचन

डॉ० आर० एस० मिश्र
प्रशिक्षण विभाग, एम० एल० के० कालेज, बलरामपुर (गोण्डा)

वर्तमान परिस्थितियों में भारतीय समाज विघटन की प्रक्रिया के मध्य गुजर रहा है। आज का व्यक्ति समाज की मान्यताओं, मूल्यों, रीति-रिवाजों, परम्पराओं तथा रूढ़ियों के प्रति बहुत सचेष्ट व जागरूक नहीं है। वैज्ञानिक प्रगति और उसकी चकाचौंध के परिणामस्वरूप बदलते हुए परिवेश एवं जीवन के मूल्य, औद्योगीकरण तथा नगरीकरण की प्रक्रियायें आदि सामाजिक बन्धनों को शिथिल करती जा रही हैं। व्यक्ति अपने परिवार, पास-पड़ौस, समूह तथा समूचे समाज से विमुख-सा होता जा रहा है। इसके दो परिणाम स्पष्टतः दृष्टिगोचर होते हैं। प्रथम तो यह कि ये विभिन्न सामाजिक संस्थायें अब अस्त-व्यस्त होती जा रही हैं—इनका स्वरूप विकृत होता जा रहा है, इनकी कार्य-प्रणाली बदलती जा रही है और इनका प्रभाव घटता जा रहा है। दूसरा परिणाम यह है कि व्यक्ति जो मूलतः एक सामाजिक प्राणी है, समाज के अभाव में जिसका अस्तित्व असम्भव है, वह भी निराशा और कुण्ठा से ग्रस्त होता जा रहा है तथा भौतिक उपलब्धियों से समृद्ध होते हुए भी वास्तविक सुख व संतोष से वंचित होता जा रहा है। यह बात राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में भी इसी रूप में चरितार्थ होती है। राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना को ही राष्ट्रीयता कहते हैं। आज का नागरिक इस भावना से उदासीन ही नहीं, विमुख-सा होता जा रहा है।

जब किसी राष्ट्र के नागरिक स्थान, खान-पान, वेश-भूषा, भाषा-साहित्य, जाति, समूह, धर्म, मूल्यों एवं मान्यताओं आदि के अन्तर होते हुए भी राष्ट्रहित को ध्यान में रखते हुए, अपने व्यक्तिगत या सामूहिक हितों का परित्याग कर अपने को एक समझते हैं और सारे भेदभाव भुला देते हैं, तो इस भावना को राष्ट्रीय एकता कहते हैं। एक विशाल राष्ट्र में भेदभाव और जाति-धर्म-गत तथा अन्य प्रकार के अन्तर होते तो अपरिहार्य हैं परन्तु इन सारी विभिन्नताओं को भूलकर एक भावात्मक एकता का होना ही राष्ट्रीयता की भावना का मूलाधार है। सैयदेन के शब्दों में, "भावात्मक एकता का अर्थ विभिन्नताओं की समाप्ति नहीं है। इसका अर्थ तो यह है कि व्यक्तियों को मतभेद का अधिकार है और अपनी इस विभिन्नता को वे निर्भय होकर तार्किक ढंग से अभिव्यक्त कर सकते हैं, लेकिन राष्ट्रीय एकता और आधारभूत निष्ठाओं को दृष्टि में रखते हुए ही।"

राष्ट्रीयता के इस आधार और कसौटी को ध्यान में रखते हुए यदि विचार किया जाय, तो इस समय राष्ट्रीय एकता को विभिन्न खतरों का सामना करना पड़ रहा है। हमारा देश, जो कि विभिन्न धर्मों, सभ्यताओं और संस्कृतियों का एक संगम है, जहाँ अतीत में जातियों, समुदायों और सम्प्रदायों के लोग अपनी विभिन्नताओं को भुलाकर एक सूत्र में बँधकर संश्लिष्ट जीवन का आदर्श प्रस्तुत करते रहे हैं वहीं आज समय की गति और युग के प्रभाव के फलस्वरूप विभिन्न पृथकवादी और विघटनवादी शक्तियाँ उग्र रूप में सिर उठाकर हमारे सम्मुख उपस्थित होकर हमारी एकता को चुनौती दे रही हैं और राष्ट्रीयता पर प्रहार कर रही हैं। इस बात की पुष्टि अभी हाल में प्रकाशित "स्वतन्त्र भारत" के सम्पादकीय से होती है कि "अभी हाल में देश के विभिन्न क्षेत्रों में ऐसी घटनाएँ हुई हैं जिनके प्रति उदासीन नहीं रहा जा सकता। अकाली सिखों के एक गुट के सम्मेलन में केन्द्रीय सरकार को यह चेतावनी दी गई है कि यदि उनकी माँगों को स्वीकार न किया गया, तो वे सीधी कार्यवाही करेंगे। कुछ अतिवादी लोगों ने 'खालिस्तान' की माँग उठाई है। हिन्दू-मुस्लिम दंगों की घटनाओं की पुनरावृत्ति कहीं न कहीं हो जाती है। आदिम जातियों में यदि ईसाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिशनरियों द्वारा धर्म-परिवर्तन का अभियान चलाया जाता है, तो कुछ क्षेत्रों में हरिजनों द्वारा धर्म-परिवर्तन कराने का कुचक्र चल रहा है। ऐसा प्रतीत होता है कि हमारी राष्ट्रीय एकता को विघटनकारी शक्तियाँ नष्ट करने पर तुली हुई हैं।"

यदि इन घटनाओं पर गहराई से विचार किया जाय, तो इसके कुछ ठोस कारण स्पष्टतया दिखाई पड़ते हैं और उनकी चर्चा यहाँ पर समीचीन होगी। सन् १९६१ ई० में भारत-सरकार द्वारा डॉ० सम्पूर्णानन्द की अध्यक्षता में गठित 'भावात्मक एकता समिति' ने जो प्रतिवेदन प्रस्तुत किया, उसके अनुसार "राष्ट्रीय भावात्मक एकता के मार्ग में बाधक तत्व—जातिवाद, साम्प्रदायिकता, क्षेत्रीयता, प्रान्तीयता, भाषावाद, युवकों में निराशा और आदर्शों का अभाव हैं।"

जातिवाद आज भारतीय समाज में घातक किन्तु एक व्यापक दुर्गुण है। हमारे देश में अनेक जातियाँ और उपजातियाँ विद्यमान हैं। एक जाति के लोग अपने को दूसरी जाति के लोगों से श्रेष्ठ या हीन समझते हैं। इससे उनमें एक-दूसरे के प्रति ईर्ष्या-द्वेष की भावना आती है और यह राष्ट्रीयता के मार्ग में बाधक हैं।

साम्प्रदायिकता इसका दूसरा बाधक तत्व है। इस देश में हिन्दू, मुसलमान, ईसाई तथा पारसी आदि विभिन्न सम्प्रदायों के लोग निवास करते हैं। आज दो भिन्न-भिन्न सम्प्रदायों के लोग आपस में संघर्ष करते हैं। देखने में यह आता है कि साम्प्रदायिकता के नाम पर अल्पसंख्यक माना जाने वाला समुदाय अधिक उग्र है और कदाचित अधिक दंगे कराता है। अल्पसंख्यकों के वोट के थोक व्यापार के कारण उनकी साम्प्रदायिकता की कोई चर्चा नहीं करता है और वह शनैः-शनैः क्रूरता और बर्बरता की ओर अग्रसर है।

क्षेत्रीयता और प्रान्तीयता की भावना के दुष्परिणाम भी राष्ट्रीयता की भावना में बाधक सिद्ध हो रहे हैं। भारतवर्ष भिन्न-भिन्न क्षेत्रों और प्रान्तों का देश है। इस कारण भिन्न-भिन्न क्षेत्रों के लोग अपने को एक-दूसरे से भिन्न मानते हैं तथा रहन-सहन, आचार-विचार, तौर-तरीके आदि की दृष्टि से एक नहीं हो पाते हैं।

भाषा की दृष्टि से भी देश में अनेकतायें हैं। भिन्न-भिन्न भाषा-भाषी लोग अपने को एक-दूसरे से भिन्न समझते हैं। यह हमारे देश का दुर्भाग्य है कि आजादी के चौंतीस वर्षों के बाद भी हम राष्ट्रभाषा के विवाद को न सुलझा सके। "वोटाश्रयी राजनीति" उर्दू के नाम पर प्रकारान्तर से हिन्दी पर कुठाराघात कर रही है। "आज चाहे उर्दू भाषा की माँग हो या नौकरियों में आरक्षण की·····ये माँगें निश्चय ही राष्ट्रीय भावना जागृत करने में बाधक हैं। ये सभी बातें राष्ट्रीयता पर कुठाराघात होंगी और एक ऐसा षड्यन्त्र साबित होंगी जिसके अन्तर्गत वे देश में रहने वाले मुसलमानों को राष्ट्रीय धारा में मिलने में बाधक होंगी।·····यह बात सभी जानते हैं कि राष्ट्रभाषा ऊपर से लादी नहीं जाती, वह तो जनमानस से उत्पन्न होती है और राष्ट्रभाषा का स्तर उसे जनता के अनुमोदन से ही मिलता है। आज स्वतन्त्रता के चौंतीस वर्ष बाद भी हिन्दी ही पूरे तौर से शासन की भाषा हिन्दी राज्यों में ही नहीं बन सकी, तो यह सोचना कि उर्दू शासन की भाषा स्वीकार हो जाय, एक विडम्बना मात्र है।"

राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना नागरिकों में न आने का एक महत्त्वपूर्ण कारण आज के युवकों और युवतियों का अन्धकारमय दीखने वाला भविष्य है। शिक्षित तथा अशिक्षित युवा समुदाय बेरोजगारी की समस्या से ग्रस्त है और निराश जीवन तथा अन्धकारमय भविष्य के मध्य वह राष्ट्रीयता के आदर्श का वरण नहीं कर पाता।

आज सम्पूर्ण सामाजिक जीवन और विशेषकर राजनीतिक जीवन में उच्चादर्शों का अभाव है। राष्ट्रहित अब स्वार्थों तक सिमट गया है। राजनीतिक क्षेत्र में जो भ्रष्टाचार, अनादर्श और पद-लोलुपता आ गई है वह भोली-भाली जनता को भी गुमराह कर रही है और आज समाज के प्रत्येक व्यक्ति का झुकाव क्रमोवेश इन दुर्गुणों की ओर बढ़ रहा है तथा वह राष्ट्र-हित से अपने को दूर लेता जा रहा है।

राष्ट्रीयता की दिशा में बाधक तत्वों पर विचार करने के पश्चात् अब यह विचारणीय है कि शिक्षा राष्ट्रीय एकीकरण की दिशा में किस प्रकार और क्या योगदान दे सकती है। भावात्मक एकता समिति ने अपने प्रतिवेदन में यह स्वीकार किया है कि "शिक्षा भावात्मक एकता को सुदृढ़ बनाने में एक बड़ी भूमिका अदा कर सकती है। शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान देना ही नहीं होना चाहिए अपितु इसे विद्यार्थियों के व्यक्तित्व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के सभी पक्षों का विकास करना चाहिए। इसे उनके दृष्टिकोण को विस्तृत करना चाहिए और उनमें एकता की भावना, राष्ट्रीयता और त्याग तथा सहनशक्ति की भावना का विकास करना चाहिए, जिसमें छोटे-छोटे समूहों के संकुचित हित देश के बड़े हितों में समाहित हो जाय।"

शिक्षा मात्र वैयक्तिक विकास की प्रक्रिया न होकर एक सामाजिक प्रक्रिया है जो समाज और राष्ट्रीय हितों को अनिवार्य रूप से अपने में समाहित करती है। यह समाज में वैचारिक क्रान्ति का एक महत्त्वपूर्ण साधन है। आज अराष्ट्रीयता और अराजकता का जो रूप हमारे सामने दिखाई पड़ रहा है उसके आधार पर हम यह बात कह सकते हैं कि हमारी शिक्षा-प्रणाली इस दृष्टि से अनुपयुक्त तथा असफल है और हमारे राष्ट्र के नवयुवकों और नवयुवतियों में राष्ट्रीयता की भावना उत्पन्न करने में पूर्णतया असफल है। इसका एक महत्त्व-पूर्ण कारण यह है कि हमारी आज की शिक्षा ब्रिटिश-शासन की देन है और थोड़े-बहुत परिवर्तनों के साथ लगभग उसी रूप में चली आ रही है जैसी कि अंग्रेजों के समय में प्रचलित थी। चूँकि अंग्रेजों के मन में भारत पर दीर्घकाल तक शासन करने की स्पृहा थी, इसलिए उन्होंने हमें ऐसी शिक्षा-पद्धति से वंचित रखा जिससे देशवासियों में राष्ट्रीयता की भावना विकसित हो सके। अंग्रेजी साम्राज्यवाद ने आजादी के साथ-साथ पाकिस्तान के रूप में एक देश का जन्म दिया, जो कि साम्प्रदायिकता का एक जीवन्त उदाहरण ही कहा जायेगा। डा० के० पी० अग्रवाल के शब्दों में, "श्री जिन्ना के नेतृत्व में मुस्लिम लीग ने मुसलमानों के हित की रक्षा के नाम पर देश के विभाजन की माँग उठाई। .....अंग्रेजी साम्राज्यवाद ने अपना मतलब साधने के लिए इसको हवा दी।.....अंततः देश को मजबूर होकर दुःखद विभाजन स्वीकार करना पड़ा।"

दुर्भाग्य है कि आज भी वही शिक्षा-प्रणाली बोझ के रूप में हमारे नवयुवकों तथा नवयुवतियों द्वारा ढोयी जा रही है। आज आवश्यकता है शिक्षा में उन आदर्शों को समाहित करने की, जिससे प्रत्येक देशवासी अपने को निजी स्वार्थों से ऊपर उठाकर राष्ट्र-हित और उसके प्रति समर्पण की बात सोच सके।

शासन-प्रणालियों की दृष्टि से वे देश जहाँ कि सत्ता किसी एक व्यक्ति के हाथों में निहित है, वहाँ राष्ट्रीयता का अभिप्राय शासक के आदर्शों की अनिवार्य रूप से स्वीकृति और उनका पालन है। इसे हम संकुचित राष्ट्रीयता कहेंगे। यदि हमें प्रायः युद्ध के लिए प्रेरित करती है। परन्तु भारत सदृश लोकतान्त्रिक देश में, जहाँ लोकतन्त्र केवल एक शासन-पद्धति ही नहीं है अपितु लोगों के जीवन-यापन की एक प्रक्रिया बनती जा रही है, जो प्रेम, सहानुभूति, सहयोग, सहनशीलता, ईमानदारी, दया, क्षमा, कर्त्तव्यनिष्ठा आदि गुणों पर निर्भर हैं; इसमें व्यक्तियों को वैचारिक स्वतन्त्रता रहती है तथा सह-अस्तित्व के सिद्धान्त को स्वीकार करती है। इसी कारण एक लोकतान्त्रिक देश में रहने वाले व्यक्ति राष्ट्रवादी होते हुए भी उच्च जीवनादर्शों के कारण अन्य देशों के अहित की बात नहीं सोचते हैं। इसे राष्ट्रीयता का व्यापक दृष्टिकोण कहा जाता है।

लोकतान्त्रिक राष्ट्रीयता की चर्चा के पश्चात् अब यह विचारणीय है कि भारत सदृश एक धर्म-निरपेक्ष लोकतान्त्रिक देश में जहाँ विभिन्न धर्मों, जातियों, रंगों और मतों के लोग निवास करते हैं और उन्हें अपना धर्म, पूजा, उपासना-पद्धति अपनाने की पूर्ण स्वतन्त्रता है, वहाँ प्रत्येक देशवासी में राष्ट्रीयता की भावना का संचार कैसे किया जाय। इस सन्दर्भ में १० अगस्त, १९६१ को राष्ट्रीय एकता के प्रश्न पर विचार हेतु भारत के विभिन्न राज्यों के मुख्यमन्त्रियों की एक बैठक हुई, जिसमें इस प्रश्न पर व्यापक रूप से विचार किया गया और निम्नलिखित सुझाव दिए गए—

"राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रचार-प्रसार,
समस्त भारतीय भाषाओं के लिए एक लिपि,
अंग्रेजी को अन्तर्राष्ट्रीय भाषा बनाए रखना,
त्रिभाषा सूत्र को अपनाना,
परीक्षा का माध्यम प्रादेशिक भाषा के साथ हिन्दी और अंग्रेजी भी,
विश्वविद्यालय-शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी या हिन्दी : भविष्य में हिन्दी ही,
शिक्षा में परिवर्तन और राष्ट्रीय एकता में सहायक पुस्तकों का निर्माण,
अखिल भारतीय सेवाओं के क्षेत्रों में वृद्धि तथा विघटनकारी तत्वों का अन्त।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरे विचार से उपर्युक्त संस्तुतियाँ व्यापक और पर्याप्त हैं तथा इन्हें ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय एकीकरण हेतु कुछ निम्नलिखित शैक्षिक कार्यक्रम निर्धारित किए जा सकते हैं :—

शैक्षिक उद्देश्यों में परिवर्तन—आज शिक्षा के व्यावसायिक तथा चारित्रिक विकास के उद्देश्यों के साथ ही राष्ट्रीय एकता के उद्देश्य की भी आवश्यकता है। इसके लिए पाठ्यक्रम में आवश्यक परिवर्तनों की आवश्यकता है जिससे उद्देश्य स्पष्ट हो सकें और प्रभावशाली ढंग से लागू किया जा सकें।

पाठ्यक्रम का नवीनीकरण—पाठ्यक्रम ऐसा हो जिसमें समाज-सेवा व राष्ट्र-सेवा को अनिवार्य स्थान मिले। राष्ट्रीय महत्त्व के पर्वों को विद्यालय में अच्छे ढंग से मनाया जाय और उसे पाठ्यक्रम का अंग स्वीकार किया जाय। प्राथमिक स्तर पर लोकगीतों और देश के विभिन्न भागों की कहानियों को पाठ्यक्रम में समाविष्ट करना चाहिए जिससे छात्रों के सामने देश के भिन्न-भिन्न भागों की भौगोलिक व सांस्कृतिक झाँकी उपस्थित हो सके। माध्यमिक स्तर के पाठ्यक्रम में नैतिक व धार्मिक शिक्षा तथा राष्ट्रीय महत्त्व की सांस्कृतिक क्रियाओं को स्थान दिया जाय। इस स्तर पर देश के आर्थिक व औद्योगिक विकास से सम्बन्धित विषयों का अध्ययन-अध्यापन होना चाहिए। विश्वविद्यालय स्तर पर भारत की विभिन्न भाषाओं, धर्मों और संस्कृतियों का तुलनात्मक अध्ययन होना चाहिए। इस स्तर पर शिक्षा का माध्यम हिन्दी भाषा को बनाया जाना चाहिए।

पाठ्य-पुस्तकों का परिमार्जन—पुस्तकें ऐसी होनी चाहिए जिससे छात्रों में राष्ट्र-प्रेम और एकता की भावना जागृत हो सके। पुस्तकों से ऐसी सामग्री निकाल दी जाय, जो राष्ट्रीय एकता में बाधक हो तथा ऐसी सामग्री का उसमें समावेश किया जाय जो एकता में सहायक हो। इस दृष्टि से विशेषतया भाषा, इतिहास और भूगोल के पुस्तकों की समीक्षा और आवश्यक परिवर्तन वांछनीय है।

शिक्षा में अवसर की समानता—शिक्षा के क्षेत्र में जाति, धर्म, सम्प्रदाय आदि के भेद को समाप्त करना होगा। छात्रवृत्ति प्रदान करने में या अध्यापकों के चयन में अथवा विद्यार्थियों के प्रवेश में योग्यता को ही आधार माना जाय। इस दृष्टि से वर्तमान समय में चल रहा आरक्षण, जो नौकरियों एवं शिक्षा-जगत में लागू है, उसे भी बन्द कर देने की आवश्यकता है। एक प्रतिभावान छात्र के स्थान पर एक सामान्य योग्यता का छात्र चुना जाय, तो यह प्रतिभा के साथ अन्याय है और इससे उस छात्र में व्यवस्था तथा राज्य के प्रति विद्रोह उत्पन्न होगा ही। अतः इससे बचने की आवश्यकता है।

दैनिक सामूहिक सभा का आयोजन—विद्यालय का कार्यक्रम पन्द्रह मिनट के दैनिक सामूहिक सभा से प्रारम्भ होना चाहिए। इसमें ईश-वन्दना, धार्मिक एवं नैतिक प्रवचन और राष्ट्र-गान को स्थान दिया जाय। समय-समय पर राष्ट्रीय एकता पर भाषण आयोजित किया जाय। सप्ताह के अन्तिम दिन दैनिक सभा का समय बढ़ा देना श्रेयस्कर होगा।

राष्ट्रीय पर्वों और राष्ट्रीय नेताओं के जन्म-दिवसों का आयोजन—पन्द्रह अगस्त, छब्बीस जनवरी तथा दो अक्तूबर ऐसे राष्ट्रीय पर्वों को उल्लास के साथ मनाना चाहिए और राष्ट्रीय स्तर के महान् पुरुषों; यथा—गांधी, पटेल, बोस और नेहरू आदि के जन्म दिवसों के कार्यक्रम में राष्ट्र के लिए इनके योगदान पर भाषण की प्रतियोगिता आयोजित की जाय और अधिकाधिक छात्रों को इसमें भाग लेने का अवसर दिया जाय।

राष्ट्रभाषा हिन्दी का विकास—भारत में राष्ट्रीय महत्त्व की भिन्न-भिन्न भाषाओं के आदर के साथ-साथ हमें हिन्दी को, जोकि देश के बहुसंख्यकों की भाषा है; उसको राष्ट्रभाषा के रूप में विकसित करना होगा। इसके लिए त्रिभाषा सूत्र को स्वीकार करके हिन्दी को राष्ट्रभाषा का वास्तविक स्थान देना होगा तभी विभिन्न भाषा-भाषी लोग एक सूत्र में बँधकर राष्ट्रीय हित की बात सोच सकेंगे।

अन्तर्प्रान्तीय सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं प्रदर्शनियों का आयोजन—वर्ष में एक बार भिन्न-भिन्न प्रान्तों में भिन्न-भिन्न संस्कृतियों से सम्बन्धित कार्यक्रम-लोकगीत, लोक नृत्य, झाँकियाँ आदि आयोजित किए जाने चाहिए। इसमें भाग लेने का छात्र-छात्राओं को अवसर दिया जाय और विभिन्न सांस्कृतिक विशेषताओं से सम्बन्धित तथ्यों पर प्रदर्शनियाँ लगाई जाय और उसे छात्रों को दिखाया जाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रीय स्तर पर छात्रों एवं शिक्षकों का आदान-प्रदान—यदि एक प्रान्त से छात्रों और शिक्षकों के दूसरे प्रान्त में जाने में सहायता दी जायगी, तो निश्चय ही भिन्न-भिन्न भाषा-भाषी लोग, भिन्न-भिन्न जाति और सम्प्रदाय के लोग मिलेंगे और सांस्कृतिक मेल-मिलाप होगा। इससे सांस्कृतिक उदारता का विकास होगा। इस दृष्टि से सारे देश में समान शिक्षा-व्यवस्था लागू की जानी चाहिए और छात्रों को एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त में जाने हेतु छात्रवृत्तियाँ प्रदान करके प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

देश-भ्रमण एवं राष्ट्रीय विभिन्नताओं के प्रति आदर—छात्रों के स्तर को ध्यान में रखते हुए कम और अधिक समय के लिए शैक्षिक यात्राओं का आयोजन होना चाहिए। राष्ट्रीय महत्त्व के ऐतिहासिक, भौगोलिक एवं सांस्कृतिक स्थानों को छात्रों को दिखाया जाय और उनके सम्मुख उन स्थानों के महत्त्व का प्रतिपादन किया जाय। उन्हें यह भी बताया जाय कि देश तरह-तरह की विभिन्नताओं से युक्त होते हुए भी एक है और अनेकताओं में भी एकता विद्यमान है।

उपर्युक्त शैक्षिक कार्यक्रमों के साथ-साथ ही शिक्षा के अनौपचारिक साधनों के सहयोग की भी आवश्यकता है। अन्तर्जातीय विवाह, अन्तर्प्रान्तीय विवाह, राष्ट्रीय स्तर के मेले, धार्मिक सम्मेलन आदि भी राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं और इनको प्रोत्साहन मिलना चाहिए।

आज हमारे देश में उपर्युक्त संस्तुतियाँ और सुझावों को स्वीकार करने तथा शिक्षा में उन्हें लागू करने के बावजूद भी राष्ट्रीय एकता पर समय-समय पर कुठाराघात हो रहा है। "आज साम्प्रदायिक दंगों का जो व्यापक और संगठित रूप सामने आ रहा है·····उससे यह स्पष्ट है कि राजनीतिक दलों की अल्पसंख्यकों के वोटों की खरीददारी अपना रंग ला रही है।·····इसी लालच के कारण राजनीतिक दलों ने अनुचित दबाव के द्वारा प्रशासन और पुलिस को असहाय-सा बना दिया है और वे कोई भी प्रभावशाली कदम उठाने में अपने को असमर्थ पा रहे हैं।"

देश की राजनीतिक परिस्थितियाँ बहुत-कुछ इन अराजक तत्त्वों और अराष्ट्रीय कहे जाने वाले लोगों को अनुकूलता प्रदान कर रही हैं; इसीलिए राजनेताओं का देश-हित के नाम पर यह प्रथम कर्त्तव्य होता है कि राष्ट्रीयता पर प्रहार रोकने में सहायता पहुँचायें, न कि स्वयं उस पर प्रहार करें। "राष्ट्रीय एकता के लिए यह जरूरी है कि हम किसी प्रकार की साम्प्रदायिक प्रवृत्ति से अपने को दूर रखें। इस प्रकार की प्रवृत्तियों का राजनीतिक दुरुपयोग बन्द होना चाहिए और इस सम्बन्ध में राष्ट्रीय सहमति और राजनीतिक आचार संहिता तैयार की जानी चाहिए। जहाँ तक आर्थिक विकास और गरीबी मिटाने की बात है उसमें भी सार्वदेशिक दृष्टिकोण और मानवीय शोषण को समाप्त करने की भावना को अपनाया जाना चाहिए। ऐसा होने पर ही हम राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ कर सकेंगे।"

आज देश के राजनीतिक दल, साम्प्रदायिक प्रवृत्तियों को भड़का कर उसका लाभ उठाना चाहते हैं; अल्पसंख्यकों के वोटों को हथियाने के लिए आरक्षण की हिमायत करते हैं, देश में घटित हो रही विभिन्न साम्प्रदायिक घटनाओं को सही रूप में न देखकर उसे राजनीतिक चश्मे से देखते हैं और अपने मतलब का वक्तव्य देते हैं। इसका परिणाम—राष्ट्रीय एकता पर कुठाराघात होता है परन्तु उन्हें यह नहीं भूलना चाहिए कि "किसी भी व्यक्ति के लिए सबसे अधिक निकटता का सम्बन्ध अपने देश के सिवा और क्या हो स ता है?"

अतः आज की आवश्यकता केवल राजनेताओं को यथार्थ के धरातल पर उतरकर राष्ट्रीय महत्त्व की घटनाओं को देखने और समझने की ही नहीं है; प्रत्युत राष्ट्रीय एकता के हित में विभिन्न संस्तुतियों के प्रभावी ढंग से क्रियान्वयन में सहयोग प्रदान करने की है। विभिन्न सुझाव जो समय-समय पर दिए गए हैं उनको शिक्षा जगत में लागू किया जाय और तत्पश्चात् शिक्षा राष्ट्रीय एकता में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

'साहित्य-परिचय' के पाठकों एवं सदस्यों से निवेदन

हम पूर्ण प्रयत्न करते हैं कि 'साहित्य-परिचय' पर आपका नाम व पता स्पष्ट अंकित हो। फिर भी यदि आपके नाम, पद या पते में कोई भूल हो, तो कृपया स्पष्ट पता अपने पद सहित आप कार्यालय को सूचित करें। पूरा पता रहने से, भविष्य में हम आपको अन्य महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ देने में समर्थ हो सकेंगे।

—व्यवस्थापक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विभिन्न विश्वविद्यालयों के नवीन पाठ्यक्रमानुसार—

छात्रों एवं पुस्तकालयों के लिये हमारा प्रकाशित

छात्रोपयोगी प्रशिक्षण साहित्य

☆ ☆ ☆

भारतीय शिक्षा
(Indian Education)

भारतीय शिक्षा के प्रवर्त्तक
सं० डा० आत्मानन्द मिश्र १५.००

शिक्षा में नव चिन्तन
सं० डा० रामपालसिंह (प्रेस में)

आदि और मध्ययुगीन भारत में शिक्षा
डा० सरयूप्रसाद चौबे १४.००

आधुनिक भारतीय शिक्षा [इतिहास और समस्याएँ]
पी० डी० पाठक, गुरसरनदास त्यागी १६.००

भारतीय शिक्षा का इतिहास
बी० पी० जौहरी, पी० डी० पाठक १५.६५
पुस्तकालय संस्करण २२.५०

भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ
पी० डी० पाठक १६.८०
पुस्तकालय संस्करण ३०.००

भारतीय शिक्षा की सामयिक समस्याएँ
रामखेलावन चौधरी,
राधावल्लभ उपाध्याय १५.००

भारतीय शिक्षा (प्राचीन से वर्तमान काल तक)
डा० सरयू प्रसाद चौबे १४.००

विश्व के श्रेष्ठ शिक्षाशास्त्री
डा ०रामशकल पांडेय १२.००

भारतीय शिक्षा के आयोग
(कोठारी कमीशन सहित)
पी० डी० पाठक, गुरसरनदास त्यागी १७.००

शिक्षा-मनोविज्ञान
(Educational Psychology)

शिक्षा-मनोविज्ञान
डा० एस० एस० माथुर १६.००

शिक्षा-मनोविज्ञान (संक्षिप्त संस्करण)
डा० एस० एस० माथुर १७.००

शिक्षा-मनोविज्ञान
पी० डी० पाठक १६.४०

शिक्षा-मनोविज्ञान
डा० रामपालसिंह वर्मा १८.००
राधावल्लभ उपाध्याय पु० सं० २८.००

Educational Psychology
Dr. S. S. Mathur 25.50
Lib. edn. 40.00

शिक्षा-सिद्धान्त और शिक्षणकला
(Principles and Methods of Education)

शिक्षा के सिद्धान्त
पी० डी० पाठक, गुरसरनदास त्यागी १५.००

शिक्षा के सामान्य सिद्धान्त
पी० डी० पाठक, गुरसरनदास त्यागी २४.००
पुस्तकालय संस्करण ३२.००

शिक्षा-सिद्धान्त
डा० एस० एस० माथुर १७.००

शिक्षा के मूल सिद्धान्त
डा० रामशकल पाण्डेय २१.००
पुस्तकालय संस्करण २८.००

शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार
डा० सरयूप्रसाद चौबे २०.००
पुस्तकालय संस्करण २४.००

Philosophical and Sociological Foundations of Education
Dr. S. P. Chaube, 20.00
Akhilesh Chaube Lib. edn. 30.00

Principles of Education
Dr. R. S. Pandey 16.00

A Sociological Approach to India Education
Dr. S. S. Mathur 28.00

शिक्षण-कला, शिक्षण तकनीक एवं नवीन पद्धतियाँ
डा० एस० एस० माथुर १८.००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सफल शिक्षण कला
पी० डी० पाठक १५.००

शिक्षण-तकनीकी
(Technology of Teaching)

शिक्षण-तकनीकी
शैलेन्द्र भूषण एवं
डा० अनिलकुमार वार्ष्णेय १०.००

शैक्षिक तकनीकी के मूल आधार
डा० एस० पी० कुलश्रेष्ठ १६.००

विद्यालय-प्रशासन
(School Administration)

Educational Administration 22.00
S. P. Sukhia Lib. edn. 30.00

विद्यालय प्रशासन एवं संगठन
एस० पी० सुखिया १४.१५

शैक्षिक एवं विद्यालय प्रशासन
भाई योगेन्द्रजीत १५.००

विद्यालय-संगठन एवं स्वास्थ्य शिक्षा
डा० रामपालसिंह वर्मा १२.००

विद्यालय व्यवस्था
श्री केशवप्रसाद ७.५०

शिक्षा-प्रशासन
डा० उमेशचन्द्र कुदेसिया १२.००

स्वास्थ्य-शिक्षा
(School Hygiene)

स्वास्थ्य-शिक्षा
डा० जी० पी० शैरी १६.००

School Health Education & Public Health
Dr. S. P. Chaube, 20.00
Akhilesh Chaube Lib. Edn. 30.00

मापन एवं मूल्यांकन
(Measurement & Evaluation)

शैक्षिक मूल्याँकन
डा० रामपालसिंह वर्मा १०.००

मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सरल मूल्यांकन
डा० रामपालसिंह वर्मा ६.००

मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन
डा० आर० एन० अग्रवाल,
डा० बिपिन अस्थाना १८.००

सांख्यिकी
(Statistics)

सांख्यिकी के मूल तत्त्व (सामाजिक विज्ञानों में)
डा० एच० के० कपिल २७.७०

मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी
डा० (श्रीमती) प्रीती वर्मा,
डा० डी० एन० श्रीवास्तव १७.००

प्रारम्भिक सांख्यिकी
डा० प्रीती वर्मा, डा० श्रीवास्तव १०.००

शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग
डा० सुरेश भटनागर ७.००

शिक्षा-दर्शन
(Philosophy of Education)

भारत में शिक्षा-दर्शन और शैक्षिक समस्याएँ
पाठक एवं त्यागी १७.००

शिक्षा-दर्शन
डा० रामनाथ शर्मा १५.००

शिक्षा-दर्शन
डा० रामशकल पाण्डेय १६.००

शिक्षा के दार्शनिक सिद्धान्त
पी० डी० पाठक, त्यागी १८.००

निर्देशन
(Guidance)

शैक्षिक मापन एवं निर्देशन
उमेश प्रसाद सिंह ४.००

शिक्षा में निर्देशन एवं परामर्श
डा० सीताराम जायसवाल १२.००

शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन
डा० रामपालसिंह वर्मा, उपाध्याय १६.००

तुलनात्मक-शिक्षा

तुलनात्मक शिक्षा
डा० सरयू प्रसाद चौबे २४.००

शिक्षा व्यवस्थाएँ
डा० सरयू प्रसाद चौबे १२.००

विषय-शिक्षण—इसके अन्तर्गत हिन्दी-शिक्षण, इतिहास, सामाजिक अध्ययन, नागरिकशास्त्र, भूगोल, विज्ञान, जीव-विज्ञान, गणित, संस्कृत, वाणिज्य, अर्थशास्त्र, गृहविज्ञान व अंग्रेजी-शिक्षण पर विभिन्न विद्वानों की लिखी सरल भाषा में पुस्तकें उपलब्ध हैं।

उक्त सभी प्रश्नपत्रों पर हिन्दी तथा अंग्रेजी में प्रश्नोत्तर रूप में भी पुस्तकें प्राप्य हैं।

सूचीपत्र निःशुल्क मँगायें

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा-२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जगदीश प्रसाद
न्याय मंत्री

विधान भवन
लखनऊ
दिनांक १७ मई, १९८२

सन्देश

हार्दिक प्रसन्नता की बात है कि विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा द्वारा संचालित और प्रकाशित मासिक पत्र 'साहित्य-परिचय' में उसके प्रकाशन के सत्रहवें वर्ष में पदार्पण करने के अवसर पर "नैतिक शिक्षा विशेषांक" के प्रकाशन का निश्चय किया गया है।

'साहित्य-परिचय' शैक्षिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक दृष्टि से एक अच्छा पत्र है और काफी समय से पाठकों के लिए रोचक और ज्ञानवर्धक सिद्ध हो रहा है। विद्यार्थियों के लिए पुस्तकीय शिक्षा के साथ नैतिक शिक्षा भी अत्यन्त आवश्यक है और इसके फलस्वरूप विद्यार्थियों का मनोबल ऊँचा होगा।

मैं इस विशेषांक की सफलता की कामना करता हुआ विनोद पुस्तक मन्दिर के अधिकारियों को उनके इस प्रसाद के लिए हृदय से धन्यवाद देता हूँ।

भवदीय
जगदीश प्रसाद

नैतिक शिक्षा विशेषांक

की प्रति मात्र ५.०० रु० में प्राप्त करें

- यदि आप किसी महाविद्यालय में अध्यापन-कार्य कर रहे हैं तथा हिन्दी, संस्कृत, शिक्षा (एजूकेशन), मनोविज्ञान आदि विषयों में से किसी भी विषय से आपका सम्बन्ध है,

तो आप इस योजना से लाभ उठा सकते हैं :—

- उक्त विषयों में से अपने विषय के विभाग के विभागाध्यक्ष एवं उस विभाग से सम्बन्धित अध्यापकों के नाम तथा पूरे पते हमें लिखकर भेजें। साथ में अपना संक्षिप्त परिचय भी कि आप किस महाविद्यालय में एवं किस विभाग में कार्यरत हैं।
- यदि आप बी० एड० कालेज में हैं तो बी० एड० के विभागाध्यक्ष एवं अध्यापकों के नाम तथा पते हमें भेजें अन्यथा ग्रेजुएट एवं पोस्ट-ग्रेजुएट विभाग के।
- जिनके भेजे पते हमें सर्वप्रथम व सही रूप से प्राप्त होंगे, उनको हम 'नैतिक शिक्षा विशेषांक' मात्र ५.०० रु० मूल्य की वी० पी० पी० से प्रेषित कर देंगे।

निश्चय ही आप इस योजना से लाभ उठाना चाहेंगे और मात्र ५.०० में 'नैतिक शिक्षा विशेषांक' की प्रति घर बैठे ही प्राप्त करेंगे।

—व्यवस्थापक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्राचार का शिष्टाचार

डॉ० रवीन्द्र अग्निहोत्री
प्रोफेसर एवं उप-प्राचार्य, गो० पी० शिक्षा महाविद्यालय, बगड़ (झुँझुनू)

चुटकुला वह शायद आपने भी सुना हो कि किसी पढ़े-लिखे फौजी जवान ने अपनी अधपढ़ी पत्नी को पत्र लिखना सिखाते हुए संबोधन बताया, "मेरे प्राणों के प्यारे", और समापन में बताया, "आपके चरणों की दासी।" पर वह ठहरी अधपढ़ी। उसने पत्र प्रारम्भ किया, "मेरे चरणों के दास", और समाप्त किया, "आपके प्राणों की प्यासी।" चुटकुले का प्रयोजन हँसाना भी है, और यह बताना भी कि पत्र सामाजिक शिष्टाचार का मूर्तरूप होता है। इस क्षेत्र में मनमानी नहीं चलती। सम्भवतः यही सोचकर अभी उस दिन एक सहधर्मी ने पूछ लेना आवश्यक समझा, "अंग्रेजी में जैसे रेस्पेक्टेड सर लिखते हैं वैसे हिन्दी में क्या लिखेंगे?" मैंने बिना कुछ सोचे मक्खीमार अनुवाद कर दिया, "मान्य महोदय" पर, उनका चेहरा देखकर लगा कि वे सन्तुष्ट नहीं हुए हैं। मैं आगे कुछ कहूँ इससे पहले वे बोले, "यह तो फॉरमल-सा हो गया, कोई इन-फॉरमल एड्रेस बताइये। असल में मैं अपने टीचर को पत्र लिखना चाहता हूँ, उसके लिए बताइए।" मुझे एकाएक याद आया कि अभी कुछ दिन पहले ही उच्च माध्यमिक कक्षाओं को पढ़ाने वाले एक व्याख्याता ने भी कहा था, "मुझे पत्र लिखना नहीं आता।" कुछ विस्मय में डूबा विस्फारित नेत्रों से अवाक् हो जब मैं उसे एकटक देखता रहा, तो उसने आगे कहना शुरू किया, "अब यही समझ में नहीं आता कि आपको संबोधन में क्या लिखूँ?....श्रीमान् गुरुजी, या पूज्य गुरुजी?....जब पढ़ता था तब यह सब किसी ने पढ़ाया नहीं। अब किसी से पूछते हुए शर्म आती है। स्वयं सीखने के लिए रचना शिक्षण की पुस्तकें देखता हूँ, तो वहाँ इस विषय में कुछ मिलता नहीं। मन में यह शंका होने लगती है कि क्या मेरी तरह ये पुस्तक-लेखक भी अंधकार में है?"...."पुस्तकालय में आकर नितान्त अविश्वासी मन से जब मैंने रचना शिक्षण की कुछ पुस्तकें स्वयं देखीं, तो उसके आक्षेप पर विश्वास करने के लिए विवश होना पड़ा।

रचना शिक्षण की इन पुस्तकों में पत्रों के प्रायः तीन या अधिक भी, भेद बताये गए हैं। पाठ्यक्रम में ये भेद उल्लिखित भी होते हैं, पर इन सबका शिक्षण कभी किया नहीं जाता। बात निभ इसलिए जाती है कि अभिनन्दन पत्र आदि के लिखने का अवसर तो वैसे ही नहीं आता है, बधाई पत्र लिखने के बजाय बाजार के छपे-छपाए कार्डों का या डाक विभाग के बधाई तारों का प्रयोग कर लिया जाता है। आवेदन पत्र आदि तो अब लिखने ही नहीं पड़ते। छपे हुए फार्मों पर अब आवेदन करना होता है। निमंत्रण पत्र लिखने का अवसर आ सकता था, पर प्रेस वालों के एलबम की कृपा से वह भी टल जाता है। रह गए व्यावसायिक और पारिवारिक पत्र, सो जब से वाणिज्य शिक्षा की लोकप्रियता बढ़ी है तब से व्यावसायिक पत्रों की शिक्षा की ओर प्रायः विद्यालयों में कुछ ध्यान दिया जाने लगा है। फिर भी वहाँ सीखने-सिखाने में जो कमियाँ रह जाती हैं उनकी पूर्ति का अवसर उस परिवेश में मिल जाता है जिसमें इस प्रकार के पत्र लिखने पड़ते हैं। कार्यालय के वरिष्ठ सहकर्मियों से, पत्र-व्यवहार की पुरानी फायलों से, अधिकारियों की डाँट-डपट से बहुत-कुछ सीखने को मिल जाता है, पर पारिवारिक पत्र विद्यालय में भी उपेक्षित रहते हैं, और परिवार में भी। विद्यालय में ये पत्र लिखवाए अवश्य जाते हैं, पर सिखाया सिर्फ यह जाता है कि तारीख यहाँ लिखो, स्थान का नाम यहाँ लिखो, संबोधन यहाँ और अभिवादन यहाँ, आदि। प्रायः यह मान लिया जाता है कि इन पत्रों में और क्या सिखाना? अतः इनसे सम्बद्ध सभी बातें अस्पष्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोड़ दी जाती है; उदाहरण के लिए, यह तो बताया जाता है कि बड़ों को संबोधन में आदरणीय, श्रद्धेय, पूज्य आदि लिखते हैं, पर यह नहीं बताया जाता कि इनमें अन्तर क्या है। प्रतिष्ठित लेखक की लिखी हुई रचना शिक्षण की एक ही पुस्तक में आपको "आदरणीय पिताजी" और "पूज्य पिताजी" दोनों लिखे मिल जायेंगे, मानो इनका विकल्प से प्रयोग हो सकता हो।

शिष्टाचार की दृष्टि से प्रार्थना-पत्र के प्रारम्भिक और अन्तिम भाग का जो महत्त्व है वही पारिवारिक पत्र में संबोधन और अभिवादन का है। बड़ों के लिए सामान्यतया प्रयुक्त किये जाने वाले संबोधन हैं—श्री, श्रीमान, आदरणीय, माननीय, श्रद्धेय, पूज्य, पूजनीय आदि। श्री और श्रीमान तो नितान्त औपचारिक संबोधन हैं, अतः इनका प्रयोग या तो अपरिचित व्यक्तियों के लिए किया जाता है या अल्प परिचित व्यक्तियों के लिए, या फिर ऐसे व्यक्तियों के लिए जिन्हें किन्हीं कारणों से हम औपचारिक सम्मान के अतिरिक्त अन्य कोई सम्मान देना ही नहीं चाहते। शेष संबोधनों का संबंध सम्मान के स्तर से है। स्थूल रूप से सम्मान की तीन कोटियाँ मानी जा सकती हैं—साधारण, औसत और विशिष्ट। आदरणीय, माननीय जैसे शब्दों से लगभग एक जैसी कोटि का सम्मान व्यक्त होता है। इनका अर्थ है—आदर के योग्य। यह साधारण कोटि का सम्मान है। मान्यवर भी लगभग इसी कोटि का शब्द है, पर पिछले दोनों शब्दों से कुछ आगे है; क्योंकि शब्द का अर्थ ही है—मान्य लोगों में श्रेष्ठ। श्रद्धेय, श्रद्धास्पद, इससे ऊपर की कोटि का सम्मान व्यक्त करते हैं। इससे भी ऊपर वाला विशिष्ट स्तर का सम्मान व्यक्त होता है—पूज्य या पूजनीय से। इन सभी संबोधनों से पूर्व "परम" विशेषण का प्रयोग करके इन्हें और विशिष्ट भी बनाया जा सकता है; जैसे—परम आदरणीय, परम श्रद्धेय, परम पूज्य आदि। साधारण कोटि के सम्मान के अधिकारी व्यक्तियों को भी यदि हम विशिष्ट सम्मान-सूचक संबोधन से संबोधित करेंगे, तो वे बुरा तो नहीं मानेंगे, पर इसे लोग अनावश्यक रूप से विनम्र बनने की हमारी चारित्रिक दुर्बलता अलबत्ता मान सकते हैं। इसके विपरीत, विशिष्ट सम्मान के अधिकारी व्यक्ति को यदि साधारण सम्मान-सूचक संबोधन से संबोधित किया जाय, तो स्थिति बिगड़ सकती है। अनेक बुजुर्ग लोगों को अनुपयुक्त संबोधन की शिकायत करते मैंने स्वयं सुना है। एक युवक ने अपने पिता को सम्बोधन में लिखा, "आदरणीय पिताजी", और साथ ही बड़े भाई को लिखा, "पूज्य भाई साहब"। यह संभव है कि वह पिता से भी अधिक सम्मान अपने भाई का करता हो, पर सामाजिक शिष्टाचार की दृष्टि से संबोधनों का यह क्रम उचित नहीं। बड़े भाई को पूज्य लिखना गलत नहीं, पर पिता को न लिखना तो गलत है, विशेष रूप से तब तो और भी गलत है जब पिता और भाई को साथ-साथ पत्र लिखा जा रहा हो। यों समझ लीजिये कि यदि भाई को भावना-वश लिखना उचित है, तो पिता को शिष्टाचार-वश लिखना आवश्यक है।

अंग्रेजी की परम्परा में संबोधन के पश्चात् अभिवादन नहीं लिखा जाता, और इस नकल पर कुछ लोग हिन्दी में भी नहीं लिखते। यह एक नई परम्परा शुरू हो रही है, या भारतीय परम्परा में स्तर भेद से अभिवादक की अनेक शैलियाँ विद्यमान हैं। बड़ों के लिए चरण स्पर्श, प्रणाम, नमस्ते आदि का प्रयोग किया जाता है। कुछ लोग "नमस्कार" का प्रयोग कर देते हैं जो उचित नहीं है क्योंकि इसका प्रयोग समवयस्कों के लिए ही किया जाता है। प्रणाम का प्रयोग सभी बड़ों के लिए किया जा सकता है, जबकि चरण स्पर्श का प्रयोग केवल पूज्य लोगों के लिए ही किया जाता है। यदि किसी को आदरणीय या श्रद्धेय से संबोधित किया है, तो नमस्ते/प्रणाम का अभिवादन उपयुक्त होगा, चरण स्पर्श बहुत उपयुक्त नहीं। यों तो श्रद्धेय उसी को कहेंगे जिसके प्रति श्रद्धा हो, और जिसके प्रति श्रद्धा है उसके चरण स्पर्श करने में संकोच कैसा? पर बात यह है कि श्रद्धेय की तुलना में पूज्य का दर्जा तो बड़ा ही है। अतः यदि श्रद्धेय को चरण स्पर्श लिखेंगे, तो पूज्य को क्या लिखेंगे? इस अन्तर को बनाये रखने के लिए यदि इनमें विभेद दिया जाय तो अच्छा रहेगा।

नमस्ते की व्याप्ति अधिक है। यह अपनी व्यंजना में छोटे, बड़े बराबर वाले सभी को समेट लेती है। नमस्ते करने की मुद्रा में इसका अर्थ अधिक अच्छी तरह व्यक्त होता हैं। मुद्रा है—हृदय-प्रदेश के पास दोनों हाथ जोड़कर और सिर झुकाकर। सिर बुद्धि का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतीक है, हृदय भावनाओं का और हाथ शारीरिक कर्म करने का। इस प्रकार व्यक्तित्व के तीनों पक्ष संज्ञानात्मक, भावनात्मक और क्रियात्मक इसमें समाहित हो जाते हैं। अतः जब बड़ों को नमस्ते करते हैं, तो आशय होता है कि मैं (बुद्धि से) आपको बड़ा मानता हूँ (मन से) श्रद्धा करता हूँ और (अपने शरीर से) आपकी सेवा करने के लिए उद्यत हूँ। बराबर वालों को नमस्ते करने का अर्थ होता है कि मैं बुद्धि से तुम्हारा हित-चिन्तन करता हूँ, मन से तुम्हें प्यार करता हूँ, शरीर से भी मैं वह सब करने को तैयार हूँ जिससे तुम्हारा हित सिद्ध होता हो। छोटों को नमस्ते करने का अर्थ होता है कि मैं बुद्धि से तुम्हारी भलाई की बात सोचता हूँ, मन से तुम्हें आशीर्वाद देता हूँ और शरीर से वह सब करूँगा जिससे तुम्हारी बेहतरी होती हो। यही कारण है कि जहाँ प्रणाम, चरण स्पर्श जैसे अभिवादनों के उत्तर में सर्वदा आशीर्वादात्मक शब्द ही कहे जाते हैं, वहाँ नमस्ते के उत्तर में प्रायः नमस्ते ही कहा जाता है। अतः नमस्ते ऐसा अभिवादन है, जिसका प्रयोग सभी के लिए किया जा सकता है, पर सामान्य और विशिष्ट का अन्तर अवश्य बना रहेगा।

इन सभी अभिवादनों को विशिष्ट बनाने के लिए इनमें पूर्व प्रायः "सादर" विशेषण का भी प्रयोग किया जाता है; जैसे—सादर नमस्ते, सादर प्रणाम आदि। कुछ लोगों की दृष्टि में यह सम्मान के भाव की आवृत्ति है, क्योंकि इन सभी अभिवादनों में अपनी विनय का तथा सम्बन्धित व्यक्ति के प्रति आदर का भाव तो स्पष्ट रूप से विद्यमान है ही। यह बात है तो सही, पर उसी प्रकार सही है जिस प्रकार केशव का यह कहना कि "राम-राम कहत डरत पुनरुक्ति दोष को।" सच्चाई यह है कि अनेक स्थानों पर पुनरुक्ति भी आवश्यक होती है। घर पर आये अतिथि से "आइये" और "आइये-आइये" कहने का पुनरावृत्तिजन्य अन्तर आप स्वयं महसूस कर सकते हैं। अपने शिष्ट व्यवहार के लिए प्रसिद्ध शहर लखनऊ में किसी को पान देते समय पान के दो बीड़े दिये जाते हैं, एक नहीं। मेरे घर में बहू आई, तो देखा कि जब वह पैर छूती है तो एक बार नहीं, तीन बार छूती है, और इससे जिस आनन्द की अनुभूति होती है वह एक बार छूने से सम्भव नहीं। अभिवादन का अवसर वस्तुतः है ही ऐसा अवसर जब एक सीमा तक पुनरावृत्ति का भी विशेष अनुकूल प्रभाव होता है, अतः इसे दोष न मानकर गुण ही मानना चाहिये।

स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान प्रेम को व्यंजित करने वाले कुछ अभिवादन प्रचलित हुए; जैसे—वन्दे-मातरम्, जयहिन्द आदि। आज भी कुछ लोग इनका प्रयोग करते हैं। वे यदि वस्तुतः देश-प्रेम से प्रेरित हों, तब तो स्वीकार्य है, पर यदि अज्ञानता का परिणाम हों तो उपयुक्त अभिवादन सीखना चाहिए। कुछ लोग "जय राम जी की", "राम-राम" आदि लिख देते हैं, जो उनकी धार्मिक भावना का प्रतीक होता है, या कुछ लोग बुजुर्गों को पत्र लिखते समय उनकी भावनाओं की रक्षा करने के लिए इस प्रकार के अभिवादनों का प्रयोग करते हैं। यों आधुनिक शिष्ट समाज में इनका प्रयोग सामान्यतया नहीं किया जाता।

कुछ लोग संक्षेपीकरण की कला का प्रदर्शन इस अवसर पर करने लगते हैं; जैसे—आ० भाई० सा०, सा० नमस्ते। कोई इस प्रकार अपनी कितनी भी योग्यता, व्यस्तता, संक्षेपप्रियता आदि व्यक्त करना चाहे, पर सम्बोधन और अभिवादन इससे अपना अर्थ खो बैठते हैं। ऐसा लगता है मानो कोई आस्थाहीन किसी धार्मिक कर्मकांड को विवशता में पूरा कर रहा है। उसमें न तो इतना साहस है कि इस कर्मकांड का विरोध कर सके, और न इतनी शालीनता है कि इसे विधिवत् सम्पन्न ही कर सके। निस्संदेह, संक्षेपीकरण उपयोगी कला है, पर यह स्मरण रखना चाहिए कि पत्र में संबोधन और अभिवादन के अवसर संक्षेपीकरण के नहीं होते। अमलतास हर बीमारी में नहीं दिया जाता।

समवयस्कों और छोटों को सम्बोधन में प्रिय, प्रियवर, परम प्रिय आदि का प्रयोग तथा अभिवादन में नमस्ते; नमस्कार आदि का प्रयोग करते हैं जिसे विशिष्ट बनाने के लिए इनसे पूर्व सप्रेम या सस्नेह का प्रयोग भी करते हैं। छोटों के लिए आशिष, आशीर्वाद, सुखी रहो आदि आशीर्वादात्मक शब्दों का भी प्रयोग किया जाता है। कुछ लोग समवयस्कों और छोटों को सम्बोधन में 'डियर' और अभिवादन में 'हैलो' का (देवनागरी लिपि में ही) प्रयोग करते हैं। यह अंग्रेजी की परम्परा में तो गलत है ही, इसीलिए भी कि हैलो का प्रयोग मिलने पर होता है, न कि पत्र में और हिन्दी की परम्परा में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिट नहीं बैठता। हिन्दी ने अंग्रेजी तथा अन्य भी विदेशी भाषाओं के शब्दों को निस्संकोच अपनाया है, पर ये वे ही शब्द हैं जिनके लिए हिन्दी में अपने शब्द नहीं थे। 'डियर' का अर्थ प्रिय ही है और यह हिन्दी में पहले से विद्यमान है। केवल प्रिय ही नहीं, संबोधनों एवं अभिवादनों की एक सम्पन्न परम्परा विद्यमान है, फिर 'डियर' और 'हैलो' की क्या आवश्यकता ? टेली-फोन पर बात शुरू करते समय 'हैलो' शब्द का प्रयोग किया जाता है, पर वह अभिवादन नहीं होता, श्रोता का ध्यान आकृष्ट करने के लिए कहा गया संकेत होता है। अंग्रेजी के जो शब्द हिन्दी के साथ घुल गए हैं, उनसे परहेज करने का तो प्रश्न ही नहीं उठता, किन्तु हिन्दी की स्वाभाविक धारा से अलग तैरते हुए अटपटे अंग्रेजी शब्दों को आँख मूँदकर स्वीकार कर लेना हिन्दी के संस्कार को भ्रष्ट करेगा, और उसे चूँ-चूँ का मुरब्बा बना कर रख देगा। अधकचरे अंग्रेजी दाँ—हिन्दी-भाषी फैशनवश अंग्रेजी के शब्द ठूँस-ठूँस कर हिन्दी को बड़ी क्षति पहुँचा रहे हैं। कुछ लोग आधा तीतर आधा बटेर वाली कहावत चरितार्थ करते हुए संबोधित अंग्रेजी में रोमन लिपि में लिखते हैं, और अभिवादन तथा शेष सारा पत्र हिन्दी में देवनागरी लिपि में। ऐसा प्रायः तब किया जाता है जब पत्र लेखक अंग्रेजी के सम्बन्ध सूचक शब्द का प्रयोग करता है; जैसे—अंकल आंटी, सर आदि। जहाँ तक अंकल और आंटी का प्रश्न है, वे हिन्दी में स्वीकार कर लिए गए हैं, पर चाचाजी, चाचीजी आदि के स्थानापन्न के रूप में नहीं। यह आधुनिक समाज के अस्पष्ट, अपरिभाषेय सम्बन्धों के लिए प्रयुक्त होते हैं, जिनमें औपचारिकता भी है, साथ ही कुछ निकटता भी है। आधुनिक समाज में सम्पर्क का क्षेत्र बढ़ा है और नए प्रकार के सम्बन्ध बने हैं जिनमें भाव पक्ष यद्यपि कमजोर है तथापि औपचारिक शिष्टाचार प्रबल है। "मि० मेहता आए हैं" कहने के बजाए "मेहता अंकल आए हैं" कहना बेहतर समझा जाता है। मेहता जी न चाचा है, न मामा, न ताऊ, न मौसा; ब स, अंकल हैं। इस रूप में अंकल-आंटी का प्रयोग हिन्दी में भी होता है। इसी प्रकार अपने अफसर को, तथा किन्हीं क्षेत्रों में अध्यापक को भी "सर" कहने की परम्परा हिन्दी में स्वीकार कर ली गई है। अतः हिन्दी में इनका प्रयोग किया जा सकता है। हमें भाषा और लिपि का अन्तर याद रखना चाहिए। शब्द किसी भी भाषा का हो, जिस लिपि का हम प्रयोग कर रहे हैं उसी में उस शब्द को लिखना चाहिए।

पत्र का मध्य भाग हमारे शरीर के मध्य भाग की तरह है। पत्र लिखने का प्रयोजन यहीं निहित रहता है। इस विषय-वस्तु की प्रस्तुति प्रभावी ढंग से की जानी चाहिए ताकि पढ़ने वाले पर अपेक्षित प्रभाव पड़े। पत्र लेखन को कला माना जाता है और वह सारी कला यहीं व्यक्त हो जाती है। विद्यालयों में सामान्य-तया पत्र लेखन को रचना का सरलतम रूप मान लिया जाता है, जबकि वास्तविकता यह है कि ऐसा पत्र लिखना टेढ़ी खीर है, जिसमें शब्दों का समुचित प्रयोग किया गया हो, जो भावों का वहन करने में समर्थ हो, जिसमें संजीवता हो, जिसमें पत्र लेखक की भावनाएँ भाषा का परिधान पहनकर साकार हो जाएँ, जो पढ़ने वाले के मन पर अभीष्ट प्रभाव डाल सके। अतः इस ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। पारिवारिक पत्रों के प्रसंग अनेकानेक हो सकते हैं। उन सबकी चर्चा करना तो संभव नहीं; हाँ, कुछेक सिद्धान्तों की चर्चा अवश्य की जा सकती है।

रचना शिक्षण की पुस्तकों की ही बात करें। इन पुस्तकों में पारिवारिक पत्रों का एक प्रिय विषय है रुपये मँगाने के लिए पिता को पत्र। मेरे देखने में जितने भी पत्र आये उन सबमें केवल यह लिखा मिला कि इतने रुपये भेज दीजिए। न पिछली बार प्राप्त रुपये के खर्च का कोई ब्यौरा, न भावी खर्चे का कोई अनुमानित विवरण, गोया पिता को इस सबसे कोई सरोकार ही नहीं ! एक पुस्तक से उद्धृत पत्र का नमूना देखिए—

".....फीस की धनराशि इस महीने में अधिक ली गई है और अब कुछ किताब-कापियाँ भी खरीदनी हैं। मेरे पास इस समय केवल बीस रुपए हैं जिनसे न तो मेरे खाने-पीने की व्यवस्था हो सकती है, और न किताबें ही खरीदी जा सकती हैं। इसलिए निवेदन है कि पत्र पाते ही मेरे लिए एक सौ रुपये का मनीआर्डर भेजने की कृपा करें।...."

व्याकरणगत अशुद्धियों की चर्चा न करके केवल शिष्टाचार पर हम अपना ध्यान केन्द्रित करें। फीस अधिक ली गई, सो तो ठीक, पर कितनी ली गई ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिक क्यों ली गई ? किताबें-कापियाँ कितने की लेनी हैं ? किताबें किन विषयों की लेनी हैं ? खाने-पीने की व्यवस्था अगर मेस/होटल में है, तो वहाँ कितने रुपये जमा कराने हैं ? कब तक जमा कराने हैं ? यदि खाना स्वयं बनाता है, तो खाद्य सामग्री आदि के लिए कितने धन की आवश्यकता है ? इस विवरण को लिखना इसलिए भी आवश्यक है ताकि बाहर रहने पर बच्चा अपना बजट बनाए, उसे पिता से स्वीकृत कराए और उसी के अनुसार खर्च करे। इस प्रकार उसके व्यय पर भी कुछ नियंत्रण रखने का पिता को सन्तोष मिल सके। पत्र एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा यह नियंत्रण रखने की कोशिश की जाती है। पिता धन देकर निश्चित नहीं हो जाता। उसकी चिन्ता का विषय यह भी होता है कि उस धन को किस प्रकार खर्च किया जा रहा है। एक अन्य पुस्तक से एक और उदाहरण प्रस्तुत है—

".....विद्यालय की ओर से एक सरस्वती यात्रा का आयोजन किया गया है। इसके लिए एक सौ तीस रुपये १० ता० तक जमा कराने हैं। अतः तुरन्त भेज दें। यात्रा में जेब खर्च के लिए भी सौ रुपये तो भेज ही दें।....."

पत्र का यह अंश एक विद्वान द्वारा लिखी रचना शिक्षण की पुस्तक से लिया गया है, पर इसमें गम्भीर दोष है। कहने को पत्र पिता को लिखा गया है, पर लग रहा है कि पत्र पिता को नहीं किसी फाइनेन्सर, बैंकर या कर्जदार को लिखा है जिससे किसी प्रकार रुपये वसूल करने हैं। क्या कहीं आने-जाने, घूमने-फिरने के लिए पिता से अनुमति माँगना आवश्यक नहीं ? सरस्वती यात्रा पर किस स्थान या किन स्थानों पर जा रहे हैं, कितने दिन के लिए जा रहे हैं, क्या यह सब बताने की कोई आवश्यकता ही नहीं ? सरस्वती यात्रा अनिवार्य नहीं होती, पर यदि पब्लिक स्कूल की शाही परम्परा का अनुकरण करते हुए किसी विद्यालय में अनिवार्य हो, तो भी इस बात को शिष्ट ढंग से तो कहा ही जा सकता था। फिर रुपये के लिए पिता से प्रार्थना की जा रही है या उसे आदेश दिया जा रहा है ? जो रुपये विद्यालय में जमा होंगे उनसे कौन-कौन-से खर्चे पूरे होंगे ? यदि पत्र वस्तुतः "पिता" को लिखना है, तो इन सब बातों का विवरण लिखना आवश्यक है। सम्बोधन और अभिवादन में विनम्रता, सम्मान और शील की जिस भावना को व्यक्त किया गया उसका निर्वाह विषय-वस्तु की प्रस्तुति में भी होना चाहिए। अन्यथा यदि हमारे विद्यालयों में रचना शिक्षण की पुस्तकों के सहारे ऐसे ही पत्र सिखाए जाते रहे, तो "बेटा बनकर सबने खाया, बाप बनकर किसी ने नहीं" जैसी लोकोक्तियों का अर्थ ही बदल जाएगा।

पारिवारिक पत्रों में पूरे परिवार का ध्यान रखना आवश्यक होता है। आप पत्र भले ही परिवार के किसी एक ही व्यक्ति को लिखें, पर परिवार के शेष लोग आपसे यह आशा रखते हैं कि पत्र लिखते समय आप उनका भी स्मरण करेंगे। अतः बड़े छोटे सभी के लिए या तो पत्र लिखें, या कम से कम दो पंक्तियों में सबके लिए यथोचित अभिवादन तो अवश्य लिखें।

पत्र के समापन में फिर यह ध्यान रखना चाहिए कि पत्र किसे लिखा गया है। जिस प्रकार संबोधन में नमस्ते का प्रयोग सभी के लिए किया जा सकता है उसी प्रकार समापन में भवदीय का प्रयोग सबके लिए किया जा सकता है। अंग्रेजी के शब्दों के अनुवाद के रूप में भवन्निष्ठ, भवद् सद्भावी जैसे शब्द भी अब चल रहे हैं, पर इनका प्रयोग सामान्यतया औपचारिक पत्रों में किया जाता है, पारिवारिक पत्रों में नहीं। पारिवारिक पत्रों में छोटों के लिए शुभचिन्तक, हितचिन्तक, हितैषी, शुभैषी, शुभाकांक्षी आदि लिखते हैं। बराबर वालों को "तुम्हारा" "अभिन्न मित्र", स्नेहाभिलाषी आदि का प्रयोग किया जाता है। बड़ों को लिखे जाने वाले पत्रों में इस स्थान पर भी सावधानी बरतने की आवश्यकता है। इन पत्रों में कृपाकांक्षी, आज्ञाकारी, चरण सेवक आदि शब्द लिखे जाते हैं। आज्ञाकारी आदि की तुलना में कृपाकांक्षी किंचित् औपचारिक है, अतः जिनके साथ परम आत्मीय सम्बन्ध नहीं होते वहीं इसका प्रयोग करना चाहिए।

उपर्युक्त चर्चा का यह आशय कदापि नहीं है कि पत्र लेखक को किसी अत्यन्त सीमित शब्द-संसार में बाँध दिया जाए। निस्संदेह पत्र-लेखन रचना का महत्त्वपूर्ण रूप है इसलिए रचनाकार को मिलने वाली अपेक्षित स्वतंत्रता पत्र-लेखक को भी मिलनी चाहिए। उसका मैं पूरा समर्थन करता हूँ, पर स्वतंत्रता में भी

[शेष पृष्ठ १६ पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[नवीन पाठ्यक्रमानुसार]

बी. टी. सी. परीक्षा (द्वि-वर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए हमारी प्रकाशित

वर्ष १९८२-८३ की पाठ्य एवं सन्दर्भ पुस्तकें

प्रथम वर्ष हेतु

प्रथम प्रश्नपत्र– शिक्षाशास्त्र

बेसिक शिक्षाशास्त्र दिनेशचन्द्र भारद्वाज ७.००
बेसिक शिक्षा सिद्धान्त प्रेमदत्त शर्मा ३.५०
शिक्षा के मूल सिद्धान्त डा० रामशकल पाण्डेय २१.००
शिक्षा के सामान्य सिद्धान्त पाठक, त्यागी २४.००
शिक्षा-सिद्धान्त डा० एस० एस० माथुर १७.००

द्वितीय प्रश्नपत्र–शिक्षा मनोविज्ञान

बेसिक शिक्षा मनोविज्ञान भारद्वाज ७.५०
शिक्षा मनोविज्ञान डा० एस० एस० माथुर १७.००
शिक्षा मनोविज्ञान पी० डी० पाठक १६.४०
शिक्षा मनोविज्ञान डा० वर्मा व उपाध्याय १८.००

तृतीय प्रश्नपत्र–शिक्षण सिद्धान्त

बेसिक शिक्षण सिद्धान्त दिनेशचन्द्र भारद्वाज ६.५०
शिक्षण कला, शिक्षण तकनीक एवं नवीन-पद्धतियाँ डा० एस० एस० माथुर १८.००
सफल शिक्षण कला पाठक, त्यागी १५.००

द्वितीय वर्ष हेतु

चतुर्थ प्रश्नपत्र–प्रारम्भिक शिक्षा की समस्यायें तथा अभिनव प्रवृत्तियाँ एवं शैक्षिक मूल्यांकन

प्राथमिक शिक्षा की समस्याएँ गंगामहेश मिश्र एवं अन्य ६.५०
शैक्षिक मूल्यांकन एवं परामर्श पी० डी० पाठक ५.५०

पंचम प्रश्नपत्र–पाठशाला प्रबन्ध, सामुदायिक एवं स्वास्थ्य शिक्षा

पाठशाला प्रबन्ध, स्वास्थ्य शिक्षा एवं सामुदायिक संगठन दिनेशचन्द्र भारद्वाज ७.००

खण्ड (ख) शिक्षण विधियाँ

सरल शिक्षण विधियाँ दिनेशचन्द्र भारद्वाज १०.००

सहायक पुस्तकें

● **बी० टी० सी० शिक्षा दिग्दर्शन** (गाइड) प्रथम वर्ष शर्मा एवं सतसंगी १५.००
● **बी० टी० सी० शिक्षा दिग्दर्शन** (गाइड) द्वितीय वर्ष ,, १२.५०

विशेष (१) अध्यापकों से प्रार्थना है कि वह उपहार प्रतियों (स्पेसीमेन) के लिये हमसे सीधे एवं तुरन्त सम्पर्क करें। अधिक पुस्तकें मँगाने पर अधिक कमीशन की भी सुविधा है।

(२) शिक्षण-विधियों के लिये अलग-अलग शिक्षण पर अलग-अलग पुस्तकें उपलब्ध हैं, कृपया हमको लिखें।

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

[पृष्ठ १५ का शेषांश]

तंत्र तो है न ! उस मर्यादा का तो पालन करना ही चाहिए, उसका स्खलन नहीं होना चाहिए। शिष्टाचार सम्बन्धी उन मूल्यों का आज थोक में अवमूल्यन हो रहा है, जिन पर हम आज तक गर्व करते रहे हैं। प्रश्न उन मूल्यों की पुनर्प्रतिष्ठा करने का नहीं, उनकी रक्षा करने का है, और यह दायित्व हर उस व्यक्ति का है जो उन मूल्यों से प्रेम करता है। आज सामान्यतया समस्त गुरुजनों से, और विशेषतया अध्यापकों से समाज यह अपेक्षा करता है कि वे मूल्यों के क्षय की संघटना के मात्र मूक द्रष्टा नहीं बनें, अपितु अपनी पूरी शक्ति से इसे रोकने का प्रयास करें। इसकी उपेक्षा करने का अर्थ है—अवमूल्यन की प्रक्रिया में भागीदार बनना। क्या आप इसके लिए तैयार हैं ?●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नैतिक शिक्षा विशेषांक 1982

'साहित्य-परिचय' का नैतिक शिक्षा विशेषांक पाकर हार्दिक प्रसन्नता हुई है, आभारी हूँ। निःसन्देह, आज हमारी शिक्षा-व्यवस्था अनेक कारणों से नैतिक मूल्यों की कमी के कारण प्रभावहीन होती जा रही है—जिससे मानसिक तनाव, सामाजिक विघटन और सांस्कृतिक बिखराव पैदा हुआ है। इस विशेषांक के 63 विद्वान लेखक शिक्षा से बहुत गहरे जुड़े हुए हैं, इसलिए प्रत्येक के चिन्तन में नैतिक मूल्यों के संकट से उत्पन्न खतरे को महसूस किया जा सकता है।

आप प्रतिवर्ष शिक्षा-जगत की ज्वलन्त समस्या लेकर इतने मनीषी-चिन्तकों को एक मंच पर एकत्र करते हैं, यह एक अभिनन्दनीय एवं प्रेरक कार्य है। आज सर्वत्र नैतिक मूल्यहीनता के कारण जो तनाव व्याप्त है उससे 'शिक्षा-शिक्षक-शिक्षार्थी' अधिक प्रभावित हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह सामयिक विशेषांक राष्ट्र के कर्णधारों को सोचने के लिए विवश करेगा। मेरी बधाइयाँ स्वीकारिए। —**डा० योगेन्द्र शर्मा 'अरुण'**
रीडर एवं अध्यक्ष, बी० एस० ए० कालेज, रुड़की

मैंने विशेषांक के अधिकांश निबन्ध पढ़े। विशेषांक सामग्री, सम्पादन, मुद्रण इत्यादि सभी दृष्टियों से सर्वांग सुन्दर है तथा छात्रों एवं अध्येताओं दोनों के लिए समान रूप से उपादेय हैं। आपके विशेषांकों की शृंखला में यह भी एक उत्तम कड़ी है। इस अनैतिकता के युग में यदि विशेषांक का थोड़ा भी प्रभाव पड़े, तो आपका, लेखकों का तथा प्रधान सम्पादक का श्रम सार्थक होगा।—**डा० इन्द्रपाल सिंह 'इन्द्र'**
अमरावती रोड, नागपुर—१०

विशेषांक में 63 विद्वानों के सारगर्भित एवं अत्यन्त महत्त्वपूर्ण लेख पढ़ने को मिले जिससे शिक्षाशास्त्र के एक अध्येता के रूप में मुझे एक महान उपयोगी ग्रंथ एवं तत्सम्बन्धी विषय-सामग्री ज्ञानवर्धन हेतु उपलब्ध हुई। विगत विशेषांकों के प्रकाशन द्वारा आपने शिक्षाशास्त्र के विभिन्न अंगों को जो पुष्टि प्रदान की है उसके लिए आप चिरस्मरणीय रहेंगे, यह मेरा विश्वास है। "नैतिक शिक्षा" विशेषांक अपने आप में एक पूर्ण ग्रंथ है और नैतिकता, धर्म, चरित्र एवं शिक्षा पर प्रचुर सामग्री इसमें प्राप्त है। लेखकगण भारत के चारों कोनों से अपने विचारों को फैलाने में प्रयत्नवान हुए हैं, इससे शिक्षाशास्त्र का चारों दिशाओं में जो प्रसार हो रहा है उसका सारा श्रेय निःसन्देह आपको है। —**लक्ष्मीनारायण गुप्त**
१२४, कृष्णनगर, इलाहाबाद

नैतिक शिक्षा विशेषांक बहुत ही सुन्दर ढंग से सजाया गया है। इसके लिए एक ही सुझाव है कि आपका जब भी विशेषांक निकले तो उस विषय से सम्बन्धित उत्तम पुस्तकों की सूची भी साथ जाए। इससे विद्वानों को तथा जो लेख में सन्दर्भ—लेखकों ने जिन पुस्तकों से लिए हैं, उनकी सन्दर्भ ग्रन्थ सूची प्रकाशित हो। इससे विशेषांक की मर्यादा बढ़ जाएगी। —**रघुवीर शरण बंसल**
बन्सल एण्ड कं०, दिल्ली—११००३२

विशेषांक सब प्रकार से प्रशंसनीय है। 'नैतिक शिक्षा' के हर पहलू पर गम्भीरतापूर्वक विभिन्न विद्वानों ने अपने विचार लिखे हैं। उनके सुसम्पादन हेतु आप बधाई के पात्र हैं। जिस परिश्रम से आपने विभिन्न स्रोतों से सामग्री प्राप्त की है, वह सार्थक हुआ है। यह विशेषांक अपने विषय का संग्रहणीय सन्दर्भ ग्रन्थ होगा, ऐसा मेरा विश्वास है। 'साहित्य परिचय' द्वारा आप शिक्षा-जगत को जो अमूल्य निधियाँ दे रहे हैं वे चिरस्मणीय रहेंगी। —**महाराज शरण शुक्ल**
धौंकलगंज (सीतापुर)

अपनी-अपनी दृष्टि में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

बिना लिफाफे खोले कृपया पत्र संख्या AG-009
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

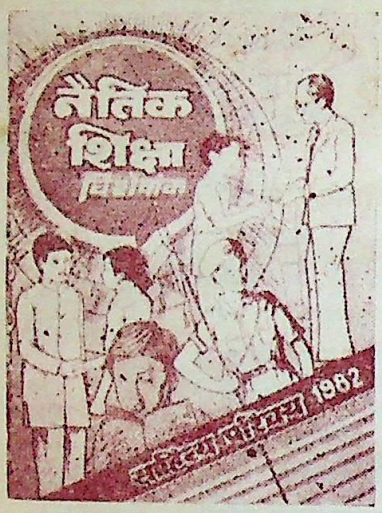

चिर-प्रतीक्षित

नैतिक शिक्षा विशेषांक

अब उपलब्ध है

31 जुलाई 1982 तक विशेष छूट

आज ही 17·00 धनादेश द्वारा भेजकर 7·00 का अतिरिक्त लाभ उठावें।

[नैतिक शिक्षा के सम्बन्ध में आज शिक्षा-शास्त्री भी बेचैन है। अध्यापक भी चिन्तित हैं और शोधार्थी भी व्याकुल हैं। यह व्याकुलता अनेक प्रकार से परिलक्षित हो रही है। नैतिक शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल करने के लिए मूक आन्दोलन चल रहे हैं, राज्य सरकारें पाठ्यक्रमों में नैतिक शिक्षा को अनिवार्य विषय घोषित कर रही है। अध्यापक गोष्ठियों में नैतिक शिक्षा पर विचार-मंथन हो रहा है। आज के सामाजिक पर्यावरण में प्रत्येक बालक, युवा एवं वृद्ध मानसिक तनाव से ग्रसित है। कुण्ठा की भावना पग-पग पर जन्म ले रही है। क्या इसका निराकरण सम्भव है ?—इसका हल हम सभी को खोजना है।]

प्रस्तुत नैतिक शिक्षा विशेषांक—इस प्रश्न के उत्तर की एक कड़ी है।

- 63 मूर्धन्य विद्वानों के तर्कपूर्ण विवेचनों को हमने 'नैतिक शिक्षा' विशेषांक में समायोजित किया है। नैतिक शिक्षा विशेषांक अपने आप में एक पूर्ण ग्रन्थ हैं और नैतिकता, धर्म, चरित्र एवं शिक्षा पर प्रचुर सामग्री इसमें संकलित की गई है, जिससे मानसिक तनाव, सामाजिक विघटन और सांस्कृतिक बिखराव के निदान में दिशा निर्देशन प्राप्त होगा तथा राष्ट्र के कर्णधारों को, प्रत्येक शिक्षाशास्त्री एवं बुद्धिजीवी को सोचने के लिए विवश करेगा। प्रत्येक व्यक्ति के लिए यह विशेषांक पठनीय है।
- विशेषांक की प्रतियाँ बहुत कम है। अपनी प्रति के लिए शीघ्र ही 17·00 रुपये का धनादेश भेजिए। 31 जुलाई 1982 तक 17·00 रुपए धनादेश प्राप्त होने पर 224 पृष्ठ का **नैतिक शिक्षा विशेषांक** का **सजिल्द संस्करण मूल्य 20·00 रजिस्टर्ड पोस्ट से भेजा जायगा।** इस प्रकार आप 7/- का शुद्ध लाभ अर्जित करेंगे।

साहित्य-परिचय के गत विशेषांक भी अब सीमित मात्रा में ही उपलब्ध हैं

आज ही अपना आदेश भेजकर अपनी विशेषांक की प्रति सुरक्षित करायें। अन्यथा आप शीघ्र ही इन सामयिक एवं सारगर्भित विशेषांकों से वंचित हो जायेंगे—

- 'शिक्षा-समस्या' विशेषांक 20·00
- 'शिक्षा और राजनीति' विशेषांक 20·00
- '10+2+3 शिक्षा प्रणाली' विशेषांक 20·00
- 'बाल समस्या' विशेषांक 20·00
- 'पाठ्यक्रम' विशेषांक 20·00
- 'शैक्षिक प्रगति' विशेषांक 20·00
- 'प्रौढ़ शिक्षा' विशेषांक 20·00
- 'नैतिक शिक्षा' विशेषांक 20·00

किन्हीं दो विशेषांक का आदेश प्राप्त होने पर रजिस्ट्री व्यय निःशुल्क। चार या चार से अधिक विशेषांक के लिए अतिरिक्त 15 प्रतिशत कमीशन। सभी विशेषांक सजिल्द भेजे जायेंगे। अपने आदेश के साथ अग्रिम राशि मनीआर्डर या ड्राफ्ट से भेजें।

व्यवस्थापक—साहित्य-परिचय

डा० रांगेय राघव मार्ग, आगरा–282002

प्रकाशक एवं मुद्रक : विनोद कुमार अग्रवाल द्वारा कैलाश प्रिंटिंग प्रेस, आगरा–2

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

12
1-11-82

जुलाई
1982

साहित्य समीक्षा

परिचायक – पत्र

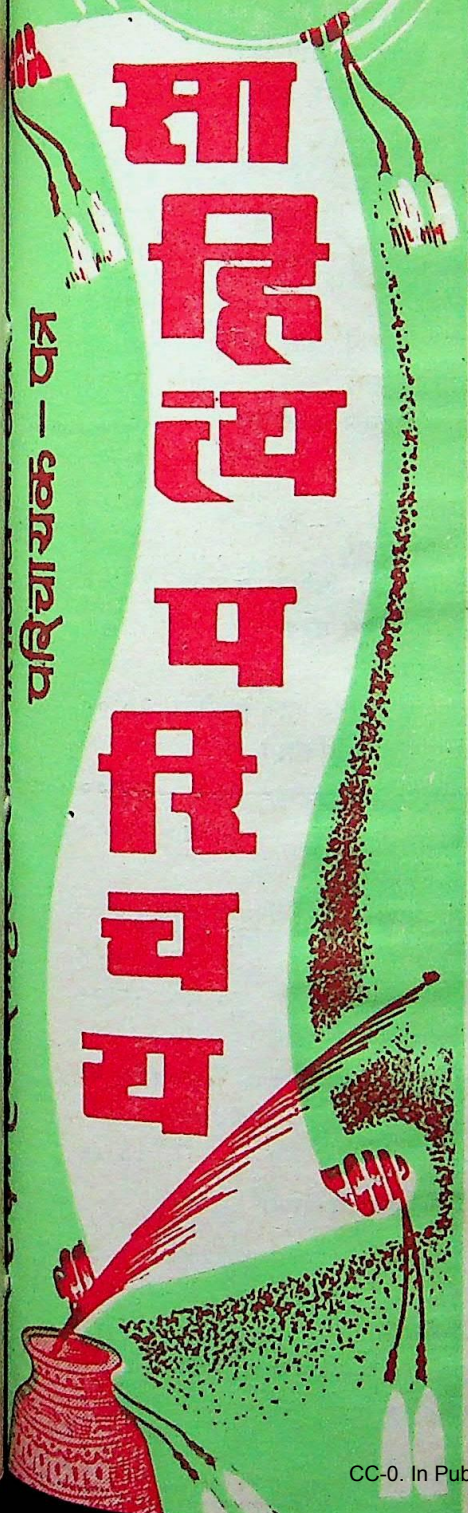

शैक्षिक सत्र 1982-83 के शुभारम्भ में

विश्वविद्यालय, महाविद्यालय तथा विद्यालयों के
प्राचार्यों, विभागाध्यक्षों, अध्यापकों एव
सम्बन्धित छात्रों को

हार्दिक शुभकामनाएँ

प्रेषित करते हुए उनसे आकांक्षा करते हैं कि
अपने विषय के दक्ष लेखकों की लिखी
छात्रोपयोगी तथा नवीन पाठ्यक्रमानुसार

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

द्वारा प्रकाशित

- प्रशिक्षण साहित्य
- गृहविज्ञान
- मनोविज्ञान
- हिन्दी एवं संस्कृत साहित्य
- बी० टी० सी० परीक्षा
- हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

तथा

- अहिन्दी प्रदेशों में हिन्दी परीक्षाओं की

पाठ्य एवं सहायक पुस्तकों को
छात्रों के मध्य अनुमोदित एवं पुस्तकालयों
के लिए चयन कर पूर्ववत् सहयोग देते रहेंगे।
सूचीपत्र निःशुल्क मँगायें।

●

कृपाकांक्षी

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोविज्ञान के श्रेष्ठ प्रकाशन

मनोविज्ञान की पद्धतियाँ एवं सिद्धान्त
डा० जे० डी० शर्मा २५·००

नैदानिक-मनोविज्ञान
डा० रामपाल सिंह वर्मा २५.००
प्रा. ले. : डा० एम. ए. शाह पु० सं० ३५.००

मनोविज्ञान के समकालीन सम्प्रदाय
डा० आर० के० ओझा १०.००

मनोविज्ञान के सम्प्रदाय
डा० रामपालसिंह वर्मा ८.५०

आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान २०.००
डा० प्रीती वर्मा, डा० श्रीवास्तव पु० सं० ३०.००

सामान्य मनोविज्ञान
डा० एस० एस० माथुर २०.००

सामान्य मनोविज्ञान की रूपरेखा
भाई योगेन्द्रजीत १०.००

असामान्य मनोविज्ञान के मूल आधार
डा० लाभसिंह, डा० तिवारी २१·२५
पुस्तकालय संस्करण ३२·००

असामान्य मनोविज्ञान (बी० ए० के लिए)
डा० लाभसिंह, डा० गोविन्द तिवारी २०.००

समाज मनोविज्ञान : प्रारम्भिक अध्ययन
डा० एस० एस० माथुर १४.००

समाज मनोविज्ञान (For Advanced Study)
डा० एस० एस० माथुर २५.००

शिक्षा-मनोविज्ञान
डा० एस० एस० माथुर १९.००

शिक्षा-मनोविज्ञान (संक्षिप्त संस्करण)
डा० एस० एस० माथुर १७.००

शिक्षा-मनोविज्ञान
प्रो० पी० डी० पाठक १६.४०

शिक्षा-मनोविज्ञान
डा० रामपालसिंह वर्मा, १८.००
डा० राधावल्लभ उपाध्याय पु० सं० २८.००

Educational Psychology 25.50
Dr. S. S. Mathur Lib. edn. 40.00

बाल मनोविज्ञान : बाल विकास
डा० प्रीती वर्मा, डा० श्रीवास्तव २२.५०

बाल मनोविज्ञान
भाई योगेन्द्रजीत १७.००

बाल विकास तथा पारिवारिक सम्बन्ध
डा० सरयूप्रसाद चौबे १५·००

सांख्यिकी के मूल तत्त्व
डा० एच० के० कपिल २७·७०

मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी
डा० (श्रीमती) प्रीती वर्मा,
डा० डी० एन० श्रीवास्तव १७·००

प्रारम्भिक सांख्यिकी
डा० प्रीती वर्मा, डा० श्रीवास्तव १०·००

शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग
सुरेश भटनागर ७·००

शिक्षा में सरल सांख्यिकी
डा० रामपालसिंह वर्मा ८·००

शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक अनुसंधान के मूलाधार
डा० गोविन्द तिवारी १८·००

मनोविज्ञान शोध-विधियाँ
प्रो० एम० ए० हकीम, बिपिन अस्थाना १५·००

शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्त्व
एस० पी० सुखिया
वी० पी० मेहरोत्रा, आर० एन० मेहरोत्रा २०·००

आधुनिक प्रयोगात्मक मनोविज्ञान
डा० प्रीती वर्मा, २४·००
डा० डी० एन० श्रीवास्तव पु० सं० ३५·००

प्रयोगात्मक मनोविज्ञान
प्रो० एम० ए० हकीम, डा० बिपिन अस्थाना १४·००

औद्योगिक मनोविज्ञान २०·००
डा० आर० के० ओझा पु० सं० २८·००

विकासात्मक मनोविज्ञान
भाई योगेन्द्रजीत (प्रेस में)

शैक्षिक मूल्यांकन
डा० रामपालसिंह वर्मा १०·००

मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन
डा० आर० एन० अग्रवाल,
डा० बिपिन अस्थाना १८·००

मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सरल मूल्यांकन
डा० रामपाल सिंह वर्मा ६·००

विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा-२
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-परिचय

[शिक्षा और साहित्य की प्रगति का परिचायक पत्र]

[वर्ष 17 : अंक 7]
जुलाई, 1982

●

सम्पादक
विनोद कुमार अग्रवाल
एम० ए०, साहित्यरत्न

●

स्वामित्व
विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

●

वार्षिक शुल्क : 15·00
रजिस्ट्री से विशेषांक मँगवाने पर
18·00
[विदेशों में—डाक व्यय सहित मात्र 40·00]

●

साहित्य-परिचय
डा० रांगेय राघव मार्ग
आगरा–2
फोन : 76486

सम्पादकीय

जुलाई के प्रथम सप्ताह में अधिकांश विद्यालय खुल गए हैं और उनमें नए सत्र का प्रारम्भ हो गया है। किन्तु वर्षा के अभाव में भीषण गर्मी पड़ रही है और नये सत्रारम्भ की प्रसन्नता न तो छात्रों में है, न शिक्षकों में और न ही अभिभावकों में। छोटे-छोटे बच्चे इस भयंकर धूप में विद्यालय जाने को बाध्य किए जा रहे हैं जबकि सभी को विदित है कि इससे भयंकर बीमारी की सम्भावना है। अधिकांश विद्यालय प्रातःकालीन हैं। छात्रों को मध्याह्न में 12 बजे या अपराह्न एक बजे छुट्टी दी जाती है। कुछ बड़े बालकों व किशोरों के लिए तो यह ठीक हो सकता है किन्तु नन्हें मुन्नों के लिए यह उचित नहीं कहा जा सकता है।

वस्तुतः नर्सरी, किण्डरगार्डन, मॉण्टेसरी व प्राथमिक विद्यालयों को जुलाई-अगस्त माह में तीन घण्टे से अधिक विद्यालय में रखने का कोई अधिक औचित्य नहीं है। किन्तु कार्यरत माता-पिता बच्चों के लिए व्यक्तिगत सेवक रखने की अपेक्षा नर्सरी स्कूल में भेजकर अपने दायित्व से मुक्त हो जाना अधिक श्रेयस्कर समझते हैं। इसमें आर्थिक लाभ भी है। माता-पिता दोनों नौकरी करके धनोपार्जन करते हैं और बच्चे को दस रुपये मासिक शुल्क देकर किसी नर्सरी में भेजकर 12 बजे दिन तक निश्चिन्त हो जाते हैं। निजी सेवक को दो-तीन सौ रुपये मासिक देना पड़ेगा। किन्तु इस भयावह स्थिति के कारण उनके बच्चों में जो कुण्ठा, निराशा आदि के भाव उत्पन्न होते हैं वे आगे चलकर उन्हें अच्छा नागरिक बनने के मार्ग में बाधा डालते हैं। तो फिर शिक्षा का उद्देश्य अप्राप्य ही रहेगा और इन्हें किसी भी विद्यालय में भेजने का कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं होगा।

ग्रामीण किसान नगरीय बालक की भ्रामक शिक्षा देखकर अपने बच्चों को अनिवार्य शिक्षा देने से भी कतराता है और अपने बच्चों को खेती के काम में लगाकर उनके अध्ययन को अवरुद्ध कर देता है।

ऐसा प्रतीत होता है कि नन्हें मुन्नों की शिक्षा को अभिभावक, शिक्षक व अन्य नागरिक अपनी स्वार्थमय दृष्टि से देखते हैं, अपना हित साधन करते हैं और बच्चों के भविष्य, उनके सुख-दुःख तथा राष्ट्र के भविष्य से उन्हें कोई सरोकार नहीं। बच्चों की शिक्षा के लिए भवन, बैठने की व्यवस्था, अवधि, समय आदि को मौसम, बच्चों की भलाई व राष्ट्रकल्याण की दृष्टि से समायोजित करने का उपाय यदि नहीं किया जाएगा, तो माध्यमिक स्तर व उच्च स्तर पर किये जा रहे शैक्षिक प्रयास भी निष्फल सिद्ध होंगे। अतः छोटे बालकों की शिक्षा की ओर भी समाज का ध्यान जाना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डा० (श्रीमती) जी० पी० शैरी द्वारा लिखित

बी० ए० गृह-विज्ञान की छात्राओं के लिए

गृह-विज्ञान-शिक्षण

गृह-व्यवस्था एवं गृह-कला
HOUSEHOLD MANAGEMENT & HOUSEHOLD ART

प्रस्तुत पुस्तक में इस तथ्य का पूर्णरूपेण ध्यान रखा गया है कि छात्र-छात्राओं को वांछित सामग्री एक ही स्थान पर उपलब्ध हो जाए। विभिन्न विश्वविद्यालयों की बी० ए०, बी० एस-सी० (गृह-विज्ञान) की परीक्षा हेतु निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार इसमें सम्पूर्ण विषय-सामग्री उपलब्ध है। सात खण्डों में विभक्त 36 अध्यायों में इसकी विषय-वस्तु को सरल, बोधगम्य एवं वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

दसवाँ संस्करण 1981 **मूल्य 15.00**

पोषण एवं आहार विज्ञान
FOODS AND NUTRITION

इस पुस्तक में विभिन्न विश्वविद्यालयों द्वारा बी० ए० (गृह-विज्ञान), के पाठ्यक्रम में निर्धारित 'पोषण एवं आहार विज्ञान" सम्बन्धी अपेक्षित सामग्री को सात खण्डों में विभाजित 35 अध्यायों में सरल, रोचक एवं व्यावहारिक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। इसमें माध्यमिक (हायर सैकेण्डरी) कक्षाओं में प्राप्त ज्ञान का अभिनव विकास है तथा बी० ए० स्तर की सामग्री का संयोजन है। **दसवाँ संस्करण 1981** **मूल्य 13·35**

मातृकला एवं शिशु कल्याण
MOTHERHOOD & CHILD WELFARE

प्रस्तुत पुस्तक में "मातृत्व एवं शिशु-कल्याण" सम्बन्धी विशिष्ट ज्ञान की आवश्यकता व उसकी प्राप्ति के साधन बताए गए हैं। इस पुस्तक की विषय-वस्तु आठ भागों में विभाजित करके 26 अध्यायों में प्रस्तुत की गई है।

ग्यारहवाँ संस्करण 1982 **मूल्य 14.00**

वस्त्र-विज्ञान के मूल सिद्धान्त
FUNDAMENTALS OF TEXTILES

वस्त्रोद्योग की महत्ता, उन्नति तथा विकासानुरूप वस्त्रोत्पादन तथा वस्त्रों की देखभाल व सफाई-धुलाई एक विस्तृत विषय बन गया है। आधुनिक गृहिणी को इस विषय का विधिवत् ज्ञान होना उपयोगी ही नहीं, आवश्यक प्रतीत होता है। वस्त्रोत्पादन तथा सफाई-धुलाई सम्बन्धी ज्ञान 'गृह-विज्ञान' विषय का एक विशेष अंग मान लिया गया है। आज यह विषय विश्वविद्यालयीन महत्त्व का हो गया है। प्रस्तुत पुस्तक में प्रारम्भ से अन्त तक लेखिका का केवल एक ही दृष्टिकोण रहा है कि छात्राएँ एवं गृहणियाँ वस्त्र विज्ञान से सम्बन्धित व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करें तथा उनमें वस्त्र की सुरक्षा, महत्त्व एवं चयन के प्रति रुचि उत्पन्न हो। पुस्तक पाँच खण्डों में विभाजित होकर अठारह अध्यायों में प्रस्तुत है।

बारहवाँ संस्करण 1981 **मूल्य 8.50**

स्वास्थ्य विज्ञान तथा जन स्वास्थ्य
HYGIENE & PUBLIC HEALTH

जी० डी० सतसंगी

प्रस्तुत पुस्तक विभिन्न विश्वविद्यालयों के बी० ए० (गृह-विज्ञान) के पाठ्यक्रमानुसार तैयार की गई है। विद्वान लेखक ने 14 अध्याओं में विषय-सामग्री को विभाजित करके सरल एवं सुबोध ढंग से प्रश्नोत्तर शैली में प्रस्तुत करने का पूरा-पूरा प्रयास किया है।

संशोधित एवं परिवर्द्धित तृतीय संस्करण 1981 **मूल्य 11.00**

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा-२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालक के विकास में अनौपचारिक शिक्षा का स्थान

विश्वनाथ बिहारीलाल
प्रवक्ता, शिक्षाशास्त्र, जवाहरलाल नेहरू महाविद्यालय, बाराबंकी

हम मानव के विकासात्मक इतिहास का विश्लेषण करें, तो यह बात सिद्ध हो जायगी कि हमारे पूर्वजों ने जो अनुभव प्राप्त किये, अपने उन्हीं प्राप्त किये अनुभवों को उन्होंने अपनी आने वाली पीढ़ी को हस्तान्तरण किया। हस्तान्तरण और ग्रहण करने की यही प्रवृत्ति सदियों तक चलती रही। परिणामस्वरूप आज हमारा इतना विकास हो सका है। इसी अनुभवों के लेन-देन की प्रक्रिया को और उसके विकास की प्रक्रिया को यदि 'शिक्षा' के नाम से पुकारा जाए, तो कोई अतिशयोक्ति न होगी।

वैसे तो आज के इस विकसित युग में शिक्षा का जो सामान्य अर्थ लगाया जाता है वह है—बालक का निश्चित अवधि से विद्यालय जाना प्रारम्भ करना और एक निश्चित अवधि तक विद्यालय में विभिन्न विषयों का अध्ययन करना व परीक्षाओं को पास करना। यही वर्तमान युग में शिक्षा का अर्थ हम लगाते हैं। इसी अर्थ को हम शिक्षा का संकुचित अर्थ भी कह सकते हैं। लेकिन इसका एक दूसरा पहलू भी है वह यह कि बालक जन्म लेते समय न तो सामाजिक प्राणी होता है और न ही असामाजिक; लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता जाता है और उसमें जो भी परिवर्तन होते हैं, चाहे वे किसी भी स्तर से हों, अर्थात् शारीरिक, मानसिक व सामाजिक आदि—उनको भी हम शिक्षा के अन्दर कह सकते हैं। शिक्षा का यह कार्य बालक के जन्म से लेकर उसकी मृत्यु तक चलता रहता है। शिक्षा के इस दूसरे स्वरूप को हम शिक्षा का व्यापक अर्थ कह सकते हैं।

बालक के विकास के बारे में यदि हम कहें कि केवल संकुचित या औपचारिक शिक्षा का ही महत्त्व ज्यादा है तो यह हमारी भूल होगी। बालक के व्यक्तित्व-विकास में जितना योगदान औपचारिक शिक्षा का है, उससे कहीं ज्यादा अनौपचारिक शिक्षा का है; क्योंकि बालक का पहला सम्बन्ध विद्यालय या विद्यालय के विभिन्न विषयों से नहीं होता; अपितु परिवार व पड़ोस से होता है, जिसे हम अनौपचारिक साधनों के अन्तर्गत स्थान देते हैं। वास्तव में बालक तीन प्रकार से शिक्षा प्राप्त करके अपना विकास करता है—आकस्मिक रूप से, अनौपचारिक रूप से तथा औपचारिक रूप से। आकस्मिक रूप से बालक अपने परिवार, पड़ोसी व साथियों के साथ व्यवहार करना, आदर करना व इसी तरह की अन्य क्रियाओं को सीखता है। उसकी यह प्रक्रिया अचेतन रूप से चलती रहती है। वह जैसा अपने बड़ों को करता हुआ देखता है, ठीक उसी तरह की क्रिया बाद में अपने साथियों के साथ व परिवार के सदस्यों के साथ करता है। अर्थात् वह जिस प्रकार के वातावरण में होगा, वह वैसी ही भूमिका अदा करेगा। यदि वातावरण में असामाजिक कार्य होगा तो निश्चित है कि बालक भी असामाजिक कार्य करेगा। ठीक इसके विपरीत यदि वातावरण में लोग सामाजिक कार्य करेंगे, तो निश्चित है कि बालक भी सामाजिक कार्य करेगा। बालक अपने व्यक्तित्व का निर्माण इन्हीं सार्वजनिक क्रियाओं के माध्यम से करता है।

आकस्मिक शिक्षा कोई नयी विचारधारा नहीं है। शिक्षा का यह रूप तो आदिकाल से चला आ रहा है। यह शिक्षा का प्राकृतिक रूप है, एक बालक अपने ज्ञान व अन्य महत्त्वपूर्ण सूचनाओं को इसी शिक्षा के माध्यम से ग्रहण करता है। परन्तु शिक्षा ग्रहण करने के इस रूप में अन्तर हो जाता है और यह अन्तर उसके अपने वातावरण पर निर्भर करता है; उदाहरण के लिए, एक बालक जो कि अधिकारी के घर होगा, और दूसरा बालक, जो निम्न वर्ग के घर होगा, उसके शिक्षा ग्रहण करने व विकास करने के अवसर में अन्तर होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा का यह रूप हम प्राचीन मानव-इतिहास के समय में पाते हैं। लेकिन जैसे-जैसे मनुष्य की आवश्यकताएँ बढ़ती गयीं, वैसे-वैसे शिक्षा व अनुभव बढ़ता गया, समाज की समस्याएँ बढ़ती गयीं। परिणामस्वरूप एक नयी प्रकार की शिक्षा का विकास हुआ। यह शिक्षा आकस्मिक शिक्षा का थोड़ा-सा परिवर्तित रूप थी। शिक्षा के इस स्वरूप को हम औपचारिक शिक्षा के नाम से जानते हैं। शिक्षा के इस स्वरूप में बालक व बालिकाओं के अनुभव ग्रहण करने में अन्तर आ गया। बालक अपने पिता व भाइयों के द्वारा अनुभव ग्रहण करता है तथा बालिकाएँ अपनी माँ व बहिनों के द्वारा शिक्षा ग्रहण करती हैं। शिक्षा के इसी स्वरूप में चर्च, मस्जिद व मन्दिरों का निर्माण प्रारम्भ हुआ। इनका मुख्य उद्देश्य तो आध्यात्मिक था, लेकिन साथ ही साथ ये शिक्षा व अनुभव प्रदान करने का कार्य भी करने लगे।

अनौपचारिक शिक्षा का महत्त्व बालक के व्यक्तित्व का पूर्ण विकास करना है और व्यक्तित्व का पूर्ण विकास तभी सम्भव है जब बालक मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों के अनुसार शिक्षा ग्रहण करे, अर्थात् अपनी रुचि, योग्यता व स्वभाव के अनुसार कार्य करे। इस महत्त्व के साथ ही साथ बालक अपने ज्ञान व अनुभव के क्षेत्र में भी वृद्धि करता जाता है और समाज का विकास करता जाता है।

यदि शिक्षा का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जाए तो यह बात सिद्ध हो जायेगी कि पहले मनुष्य की अपनी आवश्यकताएँ कम थीं, उसके ज्ञान व अनुभव की सीमा निश्चित थी तथा समाज की संस्कृति व सभ्यता का भी बहुत कम विकास हुआ था। पर समय के बीतने के साथ ही साथ मनुष्य इसी ज्ञान के कोष में अपने नये आविष्कार तथा ज्ञान व अनुभवों को जोड़ता गया और परिणामस्वरूप उसकी संस्कृति व सभ्यता का भी विस्तार होता गया। एक समय ऐसा भी आया कि मनुष्य के लिए यह दुष्कर हो गया कि वह अपनी सभी आवश्यकताओं की चीजों को बना लें। आवश्यकता—आविष्कार की जननी है, यह बात चरितार्थ हुई। बढ़ती हुई आवश्यकता ने समाज का आविष्कार किया, मनुष्य की आवश्यकताओं में वृद्धि हुई, व्यवसायों में वृद्धि हुई, समाज जटिल हो गया, संस्कृति और सभ्यता में विकास हुआ। इसके कारण माता-पिता जो पहले बालक की शिक्षा (अनुभव) के लिए जिम्मेदार थे, अपने ही व्यवसाय में अत्यधिक व्यस्त रहने लगे। अब वे समय के अभाव को अपने आने वाली पीढ़ी को शिक्षा देने में असमर्थ हो गये। समाज में अब कठिनाई इस बात की सामने आयी कि आखिर इस नयी पीढ़ी को कैसे शिक्षा दी जाए। इसी समस्या के समाधान के लिए तत्कालीन समाज ने एक ऐसी संस्था का निर्माण किया, जो शिक्षा (अनुभव) के हस्तान्तरण का कार्य करे। ऐसी संस्था जो यह कार्य करे, उसे विद्यालय का नाम दिया गया और ऐसी शिक्षा, जो इस संस्था के माध्यम से दी जाय, उसे औपचारिक शिक्षा कहा जाने लगा। ये विद्यालय वैदिक काल में आश्रम व्यवस्था के रूप में थे, बौद्ध काल में प्राचीर व विहारों के रूप में थे। मुस्लिम काल में मदरसे व मकतब के रूप में थे व ब्रिट्रिश काल में आजकल के विद्यालयों के रूप में थे।

औपचारिक शिक्षा का एकमात्र लक्ष्य था—धर्म, संस्कृति और ज्ञान व अनुभव को लिपिवद्ध करना। आजकल इस औपचारिक शिक्षा का सीधा सम्बन्ध नौकरी प्राप्त करना हो गया। इस प्रकार यह शिक्षा स्वयं व्यक्ति व समाज के विकास के लिए आवश्यक हो गयी है और इसीलिए हमारे संविधान-निर्माताओं ने १४ वर्ष के सभी बालक-बालिकाओं के लिए, चाहे वे किसी भी सम्प्रदाय, जाति, धर्म व वर्ग के हों, अनिवार्य शिक्षा की बात कही है।

इन उपर्युक्त विचारधारा के अनुसार हम शिक्षा के तीन वर्गीकरण कर सकते हैं—आकस्मिक, अनौपचारिक तथा औपचारिक शिक्षा। आकस्मिक शिक्षा, शिक्षा का वह रूप है जिसमें बालक प्राकृतिक रूप से अपने माँ-बाप, दोस्त तथा पड़ोसियों के साथ रहकर शिक्षा ग्रहण करता है। शिक्षा का यह रूप बालक के वातावरण, जिसमें वह रहता है, पूर्ण रूप से निर्भर रहता है। इस शिक्षा के लिए कोई व्यवस्थित व संगठित रूप से योजना का निर्माण नहीं किया जाता। अनौपचारिक शिक्षा व औपचारिक शिक्षा ठीक एक-दूसरे के विपरीत हैं। अनौपचारिक शिक्षा के लिए किसी विशेष स्थान या विद्यालय की आवश्यकता नहीं होती, जब कि औपचारिक शिक्षा के लिए एक विशेष स्थान होता है। अनौपचारिक शिक्षा के लिए अध्यापक व पाठ्यक्रम का अभाव होता, जबकि औपचारिक शिक्षा के लिए नहीं। अनौपचारिक शिक्षा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में एक परीक्षा व निश्चित समय-सारणी का होना आवश्यक है, जब कि औपचारिक शिक्षा के लिए ऐसा आवश्यक नहीं है। अनौपचारिक शिक्षा का समाज के विकास से कोई सम्बन्ध नहीं होता, औपचारिक शिक्षा का समाज के विकास से सीधा सम्बन्ध रहता है। अनौपचारिक शिक्षा के मुख्य लक्ष्य निम्नलिखित हो सकते हैं—

(१) अनौपचारिक शिक्षा का मुख्य लक्ष्य बालक के व्यक्तित्व के विकास के साथ ही बालक को वे सभी अनुभव दिलाना है, जो बालक अपने आर्थिक कठिनाइयों के कारण विद्यालय या औपचारिक शिक्षा से वंचित रह जाता है।

(२) यह शिक्षा बालक को अपने समाज की आवश्यकता के अनुरूप होती है।

(३) शिक्षा का यह उद्देश्य बालक को रचनात्मक व क्रियात्मक क्रियाओं को करने की प्रेरणा देती है।

(४) यह शिक्षा के द्वारा बालक के अन्दर व्यावसायिक क्षमता को विकसित करती है, जिसके द्वारा बालक अपने अभिभावकों की आर्थिक रूप से सहायता कर सकते हैं।

(५) चूँकि बालक अपनी रुचि, स्वभाव व योग्यता के अनुसार कार्य करते हैं अतः शिक्षा का यह स्वरूप मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का अनुसरण करती है।

इस उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर यह बात सत्य है कि शिक्षा के इन तीनों रूपों अर्थात् आकस्मिक, अनौपचारिक व औपचारिक को बिल्कुल अलग नहीं किया जा सकता। औपचारिक शिक्षा का अस्तित्व अनौपचारिक शिक्षा पर निर्भर करता है; जैसे—रेडियो, टेलीविजन को हम अनौपचारिक साधन के रूप में ले सकते हैं लेकिन इन साधनों के माध्यम से हम औपचारिक शिक्षा का भी प्रकार व प्रसार कर सकते हैं। विद्यालय एक औपचारिक संस्था के रूप में कार्य करता है लेकिन इस संस्था में बालक आकस्मिक रूप में शिक्षा प्राप्त करता रहता है। वास्तव में शिक्षा के इन तीनों रूपों की आवश्यकता बालक के व्यक्तित्व के विकास के लिए आवश्यक है। आज आवश्यकता इस बात की है कि इन तीनों रूपों के बीच एक सामंजस्य हो। आज का वातावरण इस प्रकार का है कि हमारा परिवार, समाज व देश केवल औपचारिक शिक्षा को ही महत्त्वपूर्ण स्थान देता है, लेकिन आज आवश्यकता इस बात की है कि शिक्षा में इन दो रूपों के विकास पर भी जोर दिया जाय।

लेकिन दुःख की बात यह है कि आज विश्व के विकसित और विकासशील देश शिक्षा के औपचारिक स्वरूप पर ज्यादा जोर देते हैं यहाँ तक कि संयुक्त राष्ट्र संघ भी औपचारिक शिक्षा के विकास हेतु आर्थिक सहायता भी देता है लेकिन आधुनिक शिक्षाशास्त्रियों, विशेषकर रूसो, पेस्टालॉजी आदि ने औपचारिक शिक्षा की आलोचना की और विद्यालय की एक 'कसाईखाने' से तुलना की; क्योंकि यह शिक्षा बालक के अन्दर निहित जन्मजात शक्तियों का उचित विकास करने में असमर्थ थी। शिक्षा का पाठ्यक्रम, शिक्षण-विषय, परीक्षा आदि सभी बालक की रुचि, योग्यता के अनुसार अनुपयुक्त थे। आज के सामाजिक विचारक व शिक्षाशास्त्री इस बात को स्वीकार करने लगे हैं कि औपचारिक शिक्षा, तकनीकी शिक्षा के विकास के लिए उपयुक्त नहीं है तथा यही शिक्षा आज की महानतम समस्या—बेरोजगारी के लिए भी जिम्मेदार है।

विकसित देशों ने इस समस्या के समाधान के लिए शिक्षा के अनौपचारिक स्वरूप पर विशेष जोर देना प्रारम्भ कर दिया है। अपने देश में कोठारी शिक्षा आयोग ने भी अपने प्रतिवेदन में सुझाव दिया था कि प्रत्येक बालक को औपचारिक शिक्षा के साथ ही साथ अनौपचारिक रूप से भी शिक्षित किया जाय। आयोग का यह भी सुझाव था कि अब समय आ गया है कि हम औपचारिक शिक्षा पर आधारित नहीं रह सकते है। अतः हमें अनौपचारिक शिक्षा पर आधारित होना होगा।

चूँकि शिक्षा एक जीवन-पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है, अतः बालक जन्म लेते ही शिक्षा (अनुभव) ग्रहण करना प्रारम्भ कर देता है और मृत्यु तक शिक्षा ग्रहण करता रहता है। शिक्षा ग्रहण करने का यह कार्य उसका परिवार से प्रारम्भ होता है और बाद में इसका स्वरूप बढ़कर एक राष्ट्रीय स्वरूप में बदल जाता है। अर्थात् राष्ट्र की यह जिम्मेदारी हो जाती है कि वह बालक की शिक्षा का उत्तरदायित्व स्वीकार करे व उसके लिए सुविधाएँ जुटावे।

[शेष पृष्ठ १२ पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विभिन्न विश्वविद्यालयों के नवीन पाठ्यक्रमानुसार—

छात्रों एवं पुस्तकालयों के लिये हमारा प्रकाशित

छात्रोपयोगी प्रशिक्षण साहित्य

☆ ☆ ☆

भारतीय शिक्षा
(Indian Education)

भारतीय शिक्षा के प्रवर्त्तक
सं० डा० आत्मानन्द मिश्र १५.००

शिक्षा में नव चिन्तन
सं० डा० रामपालसिंह (प्रेस में)

आदि और मध्ययुगीन भारत में शिक्षा
डा० सरयूप्रसाद चौबे १४.००

आधुनिक भारतीय शिक्षा [इतिहास और समस्याएँ]
पी० डी० पाठक, गुरसरनदास त्यागी १६.००

भारतीय शिक्षा का इतिहास
बी० पी० जौहरी, पी० डी० पाठक १५.६५
पुस्तकालय संस्करण २२.५०

भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ
पी० डी० पाठक १६.८०
पुस्तकालय संस्करण ३०.००

भारतीय शिक्षा की सामयिक समस्याएँ
रामखेलावन चौधरी,
राधावल्लभ उपाध्याय १५.००

भारतीय शिक्षा (प्राचीन से वर्तमान काल तक)
डा० सरयू प्रसाद चौबे १४.००

विश्व के श्रेष्ठ शिक्षाशास्त्री
डा ०रामशकल पांडेय १२.००

भारतीय शिक्षा के आयोग एवं समितियाँ
पी० डी० पाठक, गुरसरनदास त्यागी १७.००
पुस्तकालय संस्करण २२.००

शिक्षा-मनोविज्ञान
(Educational Psychology)

शिक्षा-मनोविज्ञान
डा० एस० एस० माथुर १६.००

शिक्षा-मनोविज्ञान (संक्षिप्त संस्करण)
डा० एस० एस० माथुर १७.००

शिक्षा-मनोविज्ञान
पी० डी० पाठक १६.४०

शिक्षा-मनोविज्ञान
डा० रामपालसिंह वर्मा १८.००
राधावल्लभ उपाध्याय पु० सं० २८.००

Educational Psychology
Dr. S. S. Mathur 25.50
Lib. edn. 40.00

शिक्षा-सिद्धान्त और शिक्षणकला
(Principles and Methods of Education)

शिक्षा के सिद्धान्त
पी० डी० पाठक, गुरसरनदास त्यागी १५.००

शिक्षा के सामान्य सिद्धान्त
पी० डी० पाठक, गुरसरनदास त्यागी २४.००
पुस्तकालय संस्करण ३२.००

शिक्षा-सिद्धान्त
डा० एस० एस० माथुर १७.००

शिक्षा के मूल सिद्धान्त
डा० रामशकल पाण्डेय २१.००
पुस्तकालय संस्करण २८.००

शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार
डा० सरयूप्रसाद चौबे २०.००
पुस्तकालय संस्करण २४.००

Philosophical and Sociological Foundations of Education
Dr. S. P. Chaube, 20.00
Akhilesh Chaube Lib. edn. 30.00

An Introduction to Major Philosophies of Education
Dr. R. S. Pandey 14·00
Lib. Edn. 20·00

Principles of Education
Dr. R. S. Pandey 16.00

A Sociological Approach to India Education
Dr. S. S. Mathur 28.00

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षण-कला, शिक्षण तकनीक एवं नवीन पद्धतियाँ
डा० एस० एस० माथुर १८.००

सफल शिक्षण कला
पी० डी० पाठक १५.००

शिक्षण-तकनीकी (Technology of Teaching)

शिक्षण-तकनीकी
शैलेन्द्र भूषण एवं
डा० अनिलकुमार वार्ष्णेय १०.००

शैक्षिक तकनीकी के मूल आधार
डा० एस० पी० कुलश्रेष्ठ १६.००

विद्यालय-प्रशासन (School Administration)

Educational Administration 22.00
S. P. Sukhia Lib. edn. 30.00

विद्यालय प्रशासन एवं संगठन
एस० पी० सुखिया १४.१५

शैक्षिक एवं विद्यालय प्रशासन
भाई योगेन्द्रजीत १५.००

विद्यालय-संगठन एवं स्वास्थ्य शिक्षा
डा० रामपालसिंह वर्मा १२.००

विद्यालय व्यवस्था श्री केशवप्रसाद ७.५०

शिक्षा-प्रशासन डा० उमेशचन्द्र कुदेसिया १२.००

स्वास्थ्य-शिक्षा (School Hygiene)

स्वास्थ्य-शिक्षा डा० जी० पी० शैरी १६.००

School Health Education & Public Health
Dr. S. P. Chaube, 20.00
Akhilesh Chaube Lib. Edn. 30.00

मापन एवं मूल्यांकन (Measurement & Evaluation)

शैक्षिक मूल्याँकन
डा० रामपालसिंह वर्मा १०.००

मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सरल मूल्यांकन
डा० रामपालसिंह वर्मा ६.००

Measurement and Evaluation in Psychology & Education
Dr. Bipin Asthana & Dr. Agrawal (In Press)

मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन
डा० आर० एन० अग्रवाल,
डा० बिपिन अस्थाना १८.००

सांख्यिकी (Statistics)

सांख्यिकी के मूल तत्त्व (सामाजिक विज्ञानों में)
डा० एच० के० कपिल २७.७०

मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी
डा० (श्रीमती) प्रीती वर्मा,
डा० डी० एन० श्रीवास्तव १७.००

प्रारम्भिक सांख्यिकी
डा० प्रीती वर्मा, डा० श्रीवास्तव १०.००

शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग
डा० सुरेश भटनागर ७.००

शिक्षा-दर्शन (Philosophy of Education)

भारत में शिक्षा-दर्शन और शैक्षिक समस्याएँ
पाठक एवं त्यागी १७.००

शिक्षा-दर्शन डा० रामनाथ शर्मा १५.००

शिक्षा-दर्शन डा० रामशकल पाण्डेय १६.००

शिक्षा के दार्शनिक सिद्धान्त
पी० डी० पाठक, त्यागी १८.००

निर्देशन (Guidance)

शैक्षिक मापन एवं निर्देशन
उमेश प्रसाद सिंह ४.००

शिक्षा में निर्देशन एवं परामर्श
डा० सीताराम जायसवाल १२.००

शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन
डा० रामपालसिंह वर्मा, उपाध्याय १६.००

तुलनात्मक-शिक्षा

तुलनात्मक शिक्षा
डा० सरयू प्रसाद चौबे २४.००

शिक्षा व्यवस्थाएँ डा० सरयू प्रसाद चौबे १२.००

विषय-शिक्षण—इसके अन्तर्गत हिन्दी-शिक्षण, इतिहास, सामाजिक अध्ययन, नागरिकशास्त्र, भूगोल, विज्ञान, जीव-विज्ञान, गणित, संस्कृत, वाणिज्य, अर्थशास्त्र, गृहविज्ञान व अंग्रेजी-शिक्षण पर विभिन्न विद्वानों की लिखी सरल भाषा में पुस्तकें उपलब्ध हैं।

उक्त सभी प्रश्नपत्रों पर हिन्दी तथा अंग्रेजी में प्रश्नोत्तर रूप में भी पुस्तकें प्राप्य हैं।

सूचीपत्र निःशुल्क मँगायें

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा-२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

SECOND REVISED & ENLARGED EDITION

B. Ed. GUIDE

For

Students of Indian Universities

●

By

Indra Sharma, *M. Sc., B. Ed.*

&

N. R. Sharma, *M. A., L. T.*

Ex. Assistant Professor of Education

R. B. S. College, Agra.

(Retired) Principal, Senior Secondary Schools, Delhi.

●

The present edition of the book has been written according to the recent syllabi prescribed by various universities of India, especially those of Agra, Kanpur, Meerut, Gorakhpur, Nagpur, Vikram, Shivaji, Bombay and Poona. Every effort has been taken to present the entire subject- matter systematically in four parts on Principles of Education and Techniques of Teaching, Educational Psychology, Problems of Indian Education, Educational Administration and Health Education in a lucid style :

The other characteristics of the book are as follows :—

- The course content in each paper has been put at one place.
- Only standard books have been consulted in writing of the answers.
- Questions have been solved at length and where necessary hints have been given to avoid duplication.
- Though the book is in question-answer form, yet coherence of treatment has been preserved.
- The language is simple and clearly intelligible to an average student.
- One of the authors claims to have a long teaching experience in a training college of U. P. and an administrative experience in Senior Secondary Schools of Delhi.

It is sincerely hoped that the book will be warmly welcomed and will prove beneficial to students. Any suggestions for the improvement will be thankfully received.

Size Demy Page 1250 Price Rs. 51.00

VINOD PUSTAK MANDIR, AGRA

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालकों में नैतिकता बोध बनाम समाजीकरण की प्रक्रिया

कुमारी उर्मिला सारस्वत
आर्य विद्यापीठ शिक्षक-प्रशिक्षण महाविद्यालय, भुसावर (भरतपुर)

"Do as Romans do, behave as Romans behave." यही तो नैतिकता एवं समाजीकरण का सम्प्रत्यय है। समाज के लोगों के हितों, अधिकारों की रक्षा हेतु बनाए गए प्रतिमानों व निर्धारित नियमों के अनुसार आचरण करना ही तो नैतिकता है। ये नियम, उपनियम, मानदण्ड एवं प्रतिमान व्यक्ति, समाज एवं देशकाल-सापेक्ष होते हैं, जो परिवर्तनशील हैं। यही कारण है कि एक देश और समाज के नैतिक मूल्य अन्यों से भिन्न हो सकते हैं और भिन्न होते भी हैं।

जिस प्रकार कुरूपता के अस्तित्व में ही सौन्दर्य की परख होती है, उसी प्रकार अनैतिकता के परिप्रेक्ष्य में ही नैतिकता के सम्प्रत्यय को परिभाषित किया जा सकता है।

नैतिकता के शब्दकोशीय अर्थ के अतिरिक्त कहें तो प्रत्यक्ष या परोक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से किसी के अधिकारों का हनन या समाप्तप्राय करना ही अनैतिक है। किसी की वस्तु ले लेना (जिस पर व्यक्ति-विशेष का अधिकार नहीं है) अथवा अनधिकृत रूप से अधिकार जमाना पाप एवं अनैतिकता है अर्थात् मानव-मूल्यों, मानवाधिकारों, मानव-हितों की रक्षा तथा कर्त्तव्यपालन ही 'नैतिकता' है।

प्राचीन भारतीय मान्यता के अनुसार बीज में वृक्ष की सम्पूर्ण सम्भावनाएँ, विशिष्टताएँ एवं विलक्षणताएँ विद्यमान होती हैं और उपयुक्त वातावरण की सम्प्राप्ति होने पर उसकी सन्निहित विशिष्टताएँ दृष्टिगत होने लगती हैं, ठीक उसी प्रकार बालक को जन्म से ही अनन्त शक्ति-सम्पन्न एवं ब्रह्म के गुणों से युक्त माना है। तभी तो मदालसा पुत्र-आत्मा को शुद्धोऽसि-बुद्धोऽसि-ब्रह्मोऽसि जैसे वाक्यों से सम्बोधित करके उसके अनन्त स्वरूप एवं शक्ति का आभास कराती है और यही कारण है कि मदालसा पुत्र परिपक्व एवं आत्म-निर्भर होते ही वैराग्य ले लेते हैं। भारतीय दर्शन के अनुसार पूर्वार्जित संस्कारों के कारण ही कोई बालक शान्त, गम्भीर, उदासीन, चंचल, उद्दण्ड, उच्छृंखल, बलवान, परपीड़क, दयालु, संयमी, मूर्ख, मूढ़, तेजस्वी, मलीन होता है, किन्तु आज पाश्चात्य विचारकों के उपर्युक्त विचारधारा के विपरीत विचार हैं। उनके अनुसार जन्म के समय बालक न तो नैतिक होता है और न अनैतिक; न अच्छा होता है और न बुरा; जैसा भी बालक भविष्य में बनता है, उसका सम्पूर्ण श्रेय वातावरण को जाता है। प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक वाट्सन ने कहा था—"बालक पूर्णतः वातावरण की देन तथा उपज है। मुझे एक सामान्य बालक दो। मैं उसे डाक्टर, इञ्जीनियर, चोर, डाकू, अपराधी—जो चाहूँ, बना सकता हूँ।"

'अति सर्वत्र वर्जयेत्' के अनुसार देखें तो बालक का मानवीय एवं सामाजिक रूप सांस्कृतिक वातावरण की देन है। रामू नामक बालक (जिसको जन्म लेते ही भेड़िया जंगल में ले गया था) जिसका भौतिक, सांस्कृतिक वातावरण के अभाव में समाजीकरण नहीं हुआ था और सामाजिक प्रतिमानों, मानवीय एवं नैतिक मूल्यों को आत्मसात् न कर पाने के कारण उसका समाज में रहना कठिन हो गया था, यह तथ्य सर्वविदित है। शारीरिक दुर्बलता तथा मानसिक आवश्यकता के कारण मनुष्य को समाज में दूसरों के साथ रहना पड़ता है, यह उसकी मूलभूत आवश्यकता—भोजन, अस्तित्व, सुरक्षा तथा सेक्स-जीवन की तरह ही है। वह एकाकी जीवन व्यतीत नहीं कर सकता, क्योंकि वह एक सामाजिक प्राणी है। शताब्दियों के विकासोपरान्त मानव वर्तमान की भौतिक सम्पन्नता सामाजिक स्थिति एवं स्तर को प्राप्त कर सका है। उसने स्वयं के लिए बहुत-से सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक संगठन निर्मित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किए हैं, जिनके माध्यम से वह अपनी दैनिक, भौतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। यथासम्भव अधिकाधिक सुख-सुविधा, समृद्धि, सम्पन्नता की प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील रहता है। इस स्थिति में निश्चय ही व्यावहारिक मानदण्ड पारस्परिक सम्बन्धों की अन्तःक्रिया हेतु स्थापित किए जाते हैं, जिसके द्वारा परस्पर मानव-व्यवहारों का विश्लेषण तथा व्याख्या, पद, प्रतिष्ठा, वय के अनुसार किस व्यक्ति-विशेष के साथ वैयक्तिक या सामूहिक रूप से किस प्रकार का व्यवहार किया जाय, की जाती है। यदि मानव का भी पशु-पक्षियों के समान कोई सामाजिक-सांस्कृतिक वातावरण न होता, तो वह भी मानवेतर प्राणियों के समान एकाकी रहते हुए इसकी आवश्यकता अनुभव न करता, तो कर्त्तव्यों का पालन व्यवहारों की नैतिकता, सामाजिक शिष्टाचार एवं मर्यादा का प्रश्न ही नहीं उठता। वह भी स्वच्छन्द जीवन व्यतीत करता और स्वयं को निष्प्रयोजन किन्हीं नियमों के बन्धन में न जकड़ता। क्योंकि मानव-प्राणी को समाज के अन्य लोगों के साथ रहना ही है, तो उसके लिए पारस्परिक सम्बन्धों एवं व्यवहारों की मर्यादाएँ भी स्थापित करना अनिवार्य-सा प्रतीत होता है और इन तथाकथित सर्वमान्य नियमों, शिष्टाचारों, मूल्यों, प्रतिमानों के विपरीत कार्य अथवा व्यवहार करने वालों को असभ्य, उद्दण्ड समझा जाता है। यद्यपि उपर्युक्त मर्यादाओं के अनुसार आचरण न करने वालों को कानून कोई दण्ड नहीं देता; क्योंकि इसको साधारण एवं लौकिक दृष्टि से न देखा जा सकता है और न ही परिभाषित किया जा सकता है। ये तो मानव-जीवन को समुचित, सन्तुलित मानवी रूप में ढालने, सुन्दरतम एवं सरल बनाने के लिए आवश्यक है, क्योंकि इन सभी का प्रभाव मनुष्य एवं तत्सम्बन्धित समाज पर पड़ता है। मनुष्य के एकाकी रहने की दशा में नैतिकता जैसे सूक्ष्म भाव की समीक्षा एवं परीक्षा करने की आवश्यकता ही न होती। व्यक्ति संगठित समाज में रहता है और परस्पर आश्रित है। प्रत्येक सामाजिक प्राणी के मन में यह इच्छा होती है कि वह समुचित सहायता, सहानुभूति दूसरों से प्राप्त करे। दूसरे लोगों के विचार व्यक्ति-विशेष के प्रति सकारात्मक हों, तब उस स्थिति में नैतिकता को समझना तदनुसार आचरण करना अनिवार्य-सा हो जाता है।

नैतिकता का मूल तत्त्व यह है कि प्रत्येक व्यक्ति सदैव ध्यान रखे कि जैसा व्यवहार उसे अच्छा लगता है, वैसा ही अन्य प्राणियों को भी अच्छा लगता है, जो उसे बुरा लगता है, वैसा ही दूसरों को भी प्रिय नहीं होता। अतः 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' मानकर सबके साथ ऐसा आचरण करना चाहिए जैसा कि वह स्वयं के प्रति चाहता है। बालक जैसे-जैसे वृद्धि एवं विकास को प्राप्त करता है, वह अपनी दुनियाँ (World of his own) से निकलकर मानव-दुनियाँ (World of man) में प्रवेश करता है। यह स्वभावगत परिवर्तन नहीं, अपितु समाजीकरण है।

बालक में मानसिक विकास के साथ संश्लेषण-विश्लेषण की क्षमता तथा भाषायी कौशल की संप्राप्ति पर नैतिकता एवं सामाजिकता ऐसे सम्प्रत्यय का भी विकास होने लगता है। विवेक, बुद्धि, तर्क-शक्ति के आधार पर श्रेय और प्रेय, अच्छे और बुरे में अन्तर बालक व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर करता है। इस प्रकार मानसिक विकास के साथ नैतिकता एवं समाजीकरण का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध होता है। वैसे यदि देखा जाय तो नैतिकता एवं सामाजिकता सीखी और सिखाई जाती है। यह प्रसिद्ध अधिगम सिद्धान्त अनुकरण द्वारा सीखना होता है। नैतिकता एवं सामाजिकता का विकास एवं अधिगम घर व परिवार से प्रारम्भ होता है। भविष्य में बालक क्या और कैसा बनेगा? इसका निर्णय (यदि विशेष प्रतिकूल परिस्थितियाँ न आएँ तो) जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में ही हो जाता है। क्योंकि बचपन में सीखी गई आदतों एवं स्वभाव को बदला नहीं जा सकता, परिष्कृत ही किया जा सकता है।

शैशवावस्था में बालक में अपने माता-पिता के साथ स्नेह सम्बन्धों के द्वारा अपनी कुछ सुख-सुविधाओं को स्थगित कर देना दूसरे परिवारी सदस्यों—भाई-बहिनों का ध्यान रखना, आदर-सम्मान करना, आत्म-संयम की शिक्षा द्वारा भविष्य में उत्तरदायित्व एवं कर्त्तव्य-बोध का सम्प्रत्यय परिवार में ही विकसित होता है। इसीलिए विद्वानों ने परिवार को अनुभवों की प्रथम पाठशाला कहा है, जहाँ पर प्रथमतः बालक के सर्वांगीण विकास की प्रक्रिया का प्रारम्भ होता है। बालक की इस विकास-प्रक्रिया के दो आयामों—सभी प्रकार के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विकास के (शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, सौन्दर्यात्मक, नैतिक, धार्मिक) व्यवहार के सम्प्रत्यय का विकास तथा उपर्युक्त 'विकास के सम्प्रत्यय का बोध' में परखा जाना चाहिए, अर्थात् सर्वप्रथम बालकों को यह बोध कराना चाहिए या होना चाहिए कि इन सभी विकास-प्रक्रियाओं की व्यावहारिकता की सार्थकता क्या है, तत्पश्चात् ऐसा ही क्यों करना चाहिए।

सामाजिक मान्यताओं के अनुसार व्यवहार करना बालक धीरे-धीरे सीखता है। साधारणतः बालक सकारात्मक पुनर्बलन द्वारा जितना सीखता है उतना नकारात्मक दण्ड विधान या उचितानुचित का ज्ञान देने से नहीं सीखता।

बालक के कोमल, कोरे एवं पवित्र हृदय पर प्रारंभ से ही माता-पिता के मन में एक-दूसरे के प्रति उत्पन्न सन्देह, वैमनस्य, निराशा, भग्नाशा, व्यभिचार, दुराचार और अन्त में विवाह जैसे पवित्र बन्धन को विच्छेद करने की मनोवृत्ति अपना अमिट प्रभाव अङ्कित कर देते हैं। बालक नैतिकता सीखे तो कहाँ से, क्योंकि बालक के आत्मीय जन झूठ, फरेब, छल-कपट करते हुए अत्याचारी, भ्रष्टाचारी, अनैतिक होते हुए नित्यप्रति लड़ते, झगड़ते, मारपीट तथा एक-दूसरे पर दोषारोपण करते रहते हैं। इसके विपरीत कुछ परिवारों में सदस्य सच्चरित्र, सदाचारी, देशभक्त, दयालु, कर्त्तव्यनिष्ठ, कर्मठ तथा ईमानदार होते हैं, तो बालक तथाकथित उदात्त संस्कारों एवं गुणों को आत्मसात करते हुए नैतिक सुनागरिक तथा सामाजिक प्राणी बनता है। इस प्रकार परिवारी सदस्यों के संस्कार, विचार, व्यवहार बालक के सकारात्मक समाजीकरण एवं निर्माण में कच्चे माल की भूमिका निभाते हैं। यदि यह कच्चा माल निम्न श्रेणी का सड़ा-गला या खराब है, तो उससे बनी वस्तु में भी उत्कृष्टता नहीं लाई जा सकती।

उत्कृष्ट कोटि के एवं उत्तम विधि से तराशे गए हीरे एवं दर्पण पर भी धूल-मिट्टी की मलिनता देखी जा सकती है उसी प्रकार बालक भी पास-पड़ौस के वातावरण, संगी-साथियों की आदतों, संस्कारों से अछूता नहीं रह सकता और आजकल तो परिवार के सुसंस्कारों की अपेक्षा समवयस्क संगी-साथियों के कुसंस्कारों की छाप अधिक देखी जा सकती है; हड़तालें या तोड़फोड़ करना, विपरीत लिङ्गियों के साथ छेड़छाड़ करना वह परिवार से नहीं, पड़ौस या साथियों से सीखता है। इसलिए आवश्यक है कि बालक का सकारात्मक समाजीकरण करने या नैतिक मूल्यों का विकास करने के लिए जहाँ बालक रहे वहाँ का सांस्कृतिक वातावरण, घर, परिवार से प्राप्त प्रतिमानों, नैतिक एवं सामाजिक मानव-मूल्यों तथा मानदण्डों की प्रति पुष्टि करने वाला हो। विपरीत वातावरण प्राप्त होने पर बालक के मन में अन्तर्द्वन्द्व ही बन सकते हैं।

बालक के मानसिक, सामाजिक एवं नैतिक विकास में विद्यालय की भूमिका एवं उत्तरदायित्व अन्य अभिकरणों की अपेक्षा बढ़ जाता है; क्योंकि विद्यालय ज्ञान-रूपी नेत्रों का दाता है। परिवार तो केवल किसी भी आदत, स्वभाव, गुण को सिखाता भर है। वह उसकी उत्कृष्टता, व्यावहारिकता की परीक्षा नहीं लेता और लेता भी है, तो प्रत्येक परिवार को अपने ही बालकों में उत्कृष्ट गुणों का आधान दीखता है। परिवार जहाँ परिवारनिष्ठ जीवन-मूल्यों, नैतिक, आध्यात्मिक, धार्मिक, मानवीय, सांस्कृतिक मूल्यों, प्रतिमानों का संक्रमण करता है वहाँ विद्यालय समष्टिगत एवं सार्वजनीन मूल्यों में नैतिक प्रतिमानों तथा उदात्त गुणों के विकास पर बल देता है। कक्षा में खेल के मैदान में समाज आदि में प्राप्त नैतिक प्रतिमानों में यदि समानता होती है, तो बालक का समाजीकरण सकारात्मक होता है। बालक में बढ़ती हुई अनुशासनहीनता, विवेकहीनता का कारण नकारात्मक समाजीकरण है। देश, समाज एव मानव जाति के भावी भविष्य को देखते हुए आवश्यक है कि बालकों का स्वस्थ, सन्तुलित, सकारात्मक समाजीकरण द्वारा आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता, आत्मानुशासन के ठोस स्तम्भों पर आत्मविकास का दायित्व वहन करके उदात्त व्यक्तित्व निर्मित होने से जो मानव व्यक्तित्व का सम्प्रत्यय उभरेगा वही नैतिक है, व्यक्तिगत निर्णयों का समूहीकरण या समाजीकरण है जो कुछ इसके विपरीत है वही अनैतिक है; क्योंकि नीति से भावी मार्ग निर्धारित होता है। इस दृष्टि से नैतिकता का मापदण्ड भविष्यपरक होना आवश्यक है।

विद्यालय में आयोजित खेल-कूद, सांस्कृतिक कार्यक्रम, सामूहिक क्रियाएँ, शिक्षक के आदर्श उदाहरण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'पढ़ो समझो करो' (गीता प्रेस, गोरखपुर से प्रकाशित पुस्तक) ऐसी उदात्त भावनाओं, कर्त्तव्यों, कार्यों के विचारों से गुम्फित पुस्तकें बालक का सच्चे एवं वास्तविक अर्थों में चारित्रिक बनाम नैतिक विकास करते हुए उसका सकारात्मक समाजीकरण (जिसकी महती आवश्यकता है) कर सकती हैं। बालकों में नैतिक विकास के लिए 'नैतिक शिक्षा' ऐसे पाठ्यक्रम की विशेष आवश्यकता नहीं, अपितु अनुकरणीय, प्रेरणास्पद उदाहरण प्रस्तुत करने की आवश्यकता है। नैतिक विकास हेतु कोरे उपदेश प्रभावशाली कदापि नहीं हो सकते। वास्तविकता तो यह है कि बालकों का नैतिक, सुदृढ़ चारित्रिक विकास वही कर सकता है, जो स्वयं नैतिक एवं चरित्रवान है। "वस्तुतः वही दूसरों को महान होने, बनने का अहसास करा सकता है, जो स्वयं महान है।"

[पृष्ठ ५ का शेषांश]

कोठारी आयोग ने इस बात पर जोर दिया था कि ऐसे राष्ट्र, जो आर्थिक रूप से ज्यादा विकसित न हो और जो औपचारिक शिक्षा की पूर्ण व्यवस्था नहीं कर सकते वहाँ शिक्षा के अनौपचारिक साधनों के द्वारा बालक का विकास किया जाना चाहिए; विशेषकर भारत में जहाँ गरीबी, बेरोजगारी, जनसंख्या, भोजन ऐसी मौलिक समस्यायें मौजूद हों, शिक्षा के अनौपचारिक रूप पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। क्योंकि औपचारिक शिक्षा समाज की आवश्यकताओं को पूरा नहीं करती, बल्कि व्यक्ति के पूर्ण विकास के लिए आवश्यक है कि आकस्मिक, अनौपचारिक और औपचारिक सभी प्रकार की शिक्षा का एक मिला-जुला स्वरूप हो। अनौपचारिक शिक्षा आर्थिक रूप से पिछड़े देशों के लिए ही उपयुक्त नहीं है बल्कि आर्थिक रूप से उन्नत देशों के लिए भी आवश्यक है। क्योंकि विकसित देश एक आत्मनिर्भर समाज का निर्माण करना चाहते हैं। अनौपचारिक शिक्षा, विशेषकर उस समाज व परिवार के लिए आवश्यक है, जो औपचारिक शिक्षा ग्रहण करने में सक्षम नहीं है।

लेकिन दुर्भाग्य की बात है कि कोठारी आयोग द्वारा दिया प्रतिवेदन केवल फाइलों तक ही सीमित है। हमारी सरकार, चाहे वह किसी भी पार्टी की हो, इस विकराल समस्या की ओर ध्यान देने की आवश्यकता महसूस नहीं करती है। लेकिन यह बात सही है कि आज समय की पहली आवश्यकता है कि शिक्षा में परिवर्तन हो, यह बात हमारे अधिकारी व राजनेता सभी कहते हैं लेकिन उसमें परिवर्तन करने की क्षमता शायद किसी में नहीं है। वे केवल आदेश देना जानते हैं या सुझाव देना जानते हैं; उसको परिवर्तन करने की तथा रचनात्मक कार्य की ओर किसी का ध्यान नहीं जाता।

इन उपर्युक्त बातों के माध्यम से हम कह सकते हैं कि आज अनौपचारिक शिक्षा का महत्त्व औपचारिक शिक्षा से कहीं अधिक है।

नैतिक शिक्षा विशेषांक

की प्रति मात्र ५.०० रु० में प्राप्त करें

- यदि आप किसी महाविद्यालय में अध्यापन-कार्य कर रहे हैं तथा हिन्दी, संस्कृत, शिक्षा (एजूकेशन), मनोविज्ञान आदि विषयों में से किसी भी विषय से आपका सम्बन्ध है,

तो आप इस योजना से लाभ उठा सकते हैं :—

- उक्त विषयों में से अपने विषय के विभाग के विभागाध्यक्ष एवं उस विभाग से सम्बन्धित अध्यापकों के नाम तथा पूरे पते हमें लिखकर भेजें। साथ में अपना संक्षिप्त परिचय भी कि आप किस महाविद्यालय में एवं किस विभाग में कार्यरत हैं।
- यदि आप बी० एड० कालेज में हैं तो बी० एड० के विभागाध्यक्ष एवं अध्यापकों के नाम तथा पते हमें भेजें अन्यथा ग्रेजुएट एवं पोस्ट-ग्रेजुएट विभाग के।
- जिनके भेजे पते हमें सर्वप्रथम व सही रूप से प्राप्त होंगें, उनको हम 'नैतिक शिक्षा विशेषांक' मात्र ५.०० रु० मूल्य की वी० पी० पी० से प्रेषित कर देंगे।

निश्चय ही आप इस योजना से लाभ उठाना चाहेंगे और मात्र ५.०० में 'नैतिक शिक्षा विशेषांक' की प्रति घर बैठे ही प्राप्त करेंगे।

—व्यवस्थापक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

AN INTRODUCTION TO

Major Philosophies of Education

By

Dr. R. S. Pandey

Reader of Education,

Allahabad University, Allahabad.

- The book is divided into seven sections. The first section establishes the need for educational philosophy. It throws light on nature, scope, need, origin and functions of educational philosophy. Second section deals with metaphysical and epistemological theories in the context of education. Third, Fourth, Fifth, and Sixth sections are devoted to different educational philosophies, *viz.*, naturalism, idealism, pragmatism and realism. The last section consists of major conclusions.
- The book contains rich material on educational philosophy. The language is simple and the style is lucid. The book would be useful for M. A. and M. Ed. students of Indian Universities. B. A. & B. Ed. students having English medium would also find this book useful.

Size : Demy **pp. : 204** **Price : Rs. 14·00**
Lib. Edu. : Rs. 20·00

VINOD PUSTAK MANDIR, AGRA

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग की परीक्षाओं के लिए

सं २०३९ सन् (१९८२) के नवीन पाठ्यक्रमानुसार

दिग्दर्शन (गाइडें)

प्रथमा दिग्दर्शन (गाइड)	प्रो० श्रीभगवान शर्मा	२२.५०
मध्यमा दिग्दर्शन (गाइड)	डा० कृष्णदेव शर्मा	२५.००
साहित्यरत्न दिग्दर्शन (गाइड)—प्रथम खण्ड	,,	२५.००
साहित्यरत्न दिग्दर्शन (गाइड)—द्वितीय खण्ड	,,	२५.००
उपवैद्य दिग्दर्शन (गाइड)	वैद्य अनिलकुमार व्यास	१५.००
वैद्य विशारद दिग्दर्शन (गाइड)—प्रथम खण्ड	वैद्य शिवकुमार व्यास	१५.००
वैद्य विशारद दिग्दर्शन (गाइड)—द्वितीय खण्ड	,,	२०.००
आयुर्वेदरत्न दिग्दर्शन (गाइड)—प्रथम खण्ड	वैद्य भूदेव शर्मा व्यास	२५.००
आयुर्वेदरत्न दिग्दर्शन (गाइड)—द्वितीय खण्ड	,,	२५.००

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा—२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नई पुस्तकें

शिक्षा, मनोविज्ञान एवं गृहविज्ञान

Educational Administration (Ist Edition) S. P. Sukhiya, Demy, Pages 412, Price Rs. 22·00, Lib. Edn. Rs. 30·00

Educational and Vocational Guidance (Ist Edition) N. R. Sharma, Demy, Pages 236, Price Rs. 15·00

शिक्षण-तकनीकी (प्रथम संस्करण) शैलेन्द्र भूषण, डा० अनिल कुमार वार्ष्णेय, डिमाई, पृष्ठ १८६, मूल्य १०·००

शैक्षिक तकनीकी के मूल आधार डा० एस० पी० कुलश्रेष्ठ, डिमाई, पृष्ठ ३३२, मूल्य १६·००

नैदानिक मनोविज्ञान (प्रथम संस्करण, ८२) डा० वर्मा एवं शाह, डिमाई, मूल्य २५·००, पु० सं० ३५·००

शिक्षा-मनोविज्ञान (संशोधित द्वितीय संस्करण) डा० रामपालसिंह, राधावल्लभ उपाध्याय, डिमाई, पृष्ठ ५१२, मूल्य १८·००, पुस्तकालय संस्करण २८·००

आधुनिक प्रयोगात्मक मनोविज्ञान (चतुर्थ संशोधित एवं परिवर्द्धित संस्करण) डा० प्रीती वर्मा, डा० डी० एन० श्रीवास्तव, डिमाई, पृष्ठ ६५४, मूल्य २४·००, पुस्तकालय संस्करण ३५·००

आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान (संशोधित एवं परिवर्द्धित तृतीय संस्करण) डा० प्रीती वर्मा, डा० डी० एन० श्रीवास्तव, डिमाई, पृष्ठ ५२६, मूल्य २०·००, पुस्तकालय संस्करण ३०·००

असामान्य मनोविज्ञान के मूलाधार (संशोधित चतुर्थ संस्करण) डा० लाभसिंह, डा० गोविन्द तिवारी, डिमाई, पृष्ठ ५४२, मूल्य २१·२५, पुस्तकालय संस्करण ३२·००

गणित-शिक्षण (संशोधित चौदहवाँ संस्करण) डा० एम० एस० रावत, डा० मुकुटबिहारीलाल अग्रवाल, डिमाई, पृष्ठ २७०, मूल्य १०·००

भूगोल-अध्यापन (संशोधित तृतीय संस्करण) डा० जगदीश प्रसाद वर्मा, डिमाई, पृष्ठ ३६६, मूल्य १४·००

शिक्षा के दार्शनिक सिद्धान्त (संशोधित आठवाँ संस्करण) पी० डी० पाठक, जी० एस० डी० त्यागी, डिमाई, पृष्ठ ४४८, मूल्य १८·००

शिक्षा के सिद्धान्त (संशोधित चतुर्थ संस्करण) पी० डी० पाठक, जी० एस० डी० त्यागी, डिमाई, पृष्ठ ३८०, मूल्य १५·००

मातृकला एवं शिशु-कल्याण (संशोधित ग्यारहवाँ संस्करण, १९८२) डा० (श्रीमती) जी० पी० शैरी, डिमाई, पृष्ठ ३८४, मूल्य १४·००

औद्योगिक मनोविज्ञान (संशोधित छठवाँ संस्करण) डा० राजकुमार ओझा, डिमाई, पृष्ठ ५३२, मूल्य २०·००, पुस्तकालय संस्करण २८·००

विद्यालय संगठन एवं स्वास्थ्य-शिक्षा (संशोधित तृतीय संस्करण) डा० रामपालसिंह वर्मा, डिमाई, पृष्ठ २६८, मूल्य १२·००

भारतीय शिक्षा के आयोग एवं समितियाँ (पंचम संस्करण, १९८२) पी० डी० पाठक, जी० एस० डी० त्यागी, डिमाई, पृष्ठ ३८४, मूल्य १७·००, पुस्तकालय संस्करण २२·००

इतिहास-शिक्षण (संशोधित एवं परिवर्द्धित आठवाँ संस्करण) जी० डी० सतसंगी, डिमाई, पृष्ठ १२८, मूल्य ६·००

मातृ भाषा शिक्षण (संशोधित सातवाँ संस्करण) के० क्षत्रिया, डिमाई, पृष्ठ ४४८, मूल्य १६·००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विविध

हिन्दी साहित्य चिन्तन (पूर्णतया संशोधित एवं परिवर्द्धित द्वितीय संस्करण, १९८२) डा० इन्द्रपालसिंह 'इन्द्र', डिमाई, पृष्ठ ४१२, मूल्य २०·००

ब्रजलोक साहित्य और संस्कृति (प्रथम संस्करण) डा० राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी, डिमाई, पृष्ठ १७०, मूल्य ८·००

हिन्दी साहित्य का सरल इतिहास (संशोधित संस्करण) राजनाथ शर्मा, क्राउन, पृष्ठ २९४, मूल्य ५·३०

जयशंकर प्रसाद और स्कन्दगुप्त (संशोधित तेरहवाँ संस्करण) डा० राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी, क्राउन, पृष्ठ ३४४, मूल्य १०·००

शिशुपालवधं महाकाव्यम्—सर्ग १, २ (संशोधित पंचम संस्करण) डा० पारसनाथ द्विवेदी, क्राउन, पृष्ठ २९०, मूल्य १०·००

मेघदूतम्—सम्पूर्ण (संशोधित पंचम संस्करण) डा० रामकृष्ण आचार्य, क्राउन, पृष्ठ ३१४, मूल्य ९·००

मेघदूतम्—पूर्व मेघः (संशोधित तृतीय संस्करण) डा० रामकृष्ण आचार्य, क्राउन, पृष्ठ २२६, मूल्य ६·५०

संस्कृत निबन्ध कौमुदी (संशोधित पंचम संस्करण) डा० बाबूराम त्रिपाठी, क्राउन, पृष्ठ १७४, मूल्य ५·५०

अभिज्ञान शाकुन्तलम् (चतुर्थ अंक) (संशोधित तृतीय संस्करण) डा० रामकृष्ण आचार्य, क्राउन, पृष्ठ ९०, मूल्य ४·००

पन्ना पुखराज (उपन्यास) अनिरुद्ध पांडेय, डिमाई, पृष्ठ ५००, मूल्य ४७·५०

ढोड़ाय चरित मानस (उपन्यास) सतीनाथ भादुड़ी, डिमाई, पृष्ठ ३३६, मूल्य ४५·००

हरि मन्दिर (उपन्यास) हरनामदास सहराई, डिमाई, पृष्ठ २१५, मूल्य ३५·००

उत्तर कथा भाग २ (उपन्यास) नरेश मेहता, डिमाई, पृष्ठ ५४६, मूल्य ६०·००

कोयले का रंग लाल (उपन्यास) निर्मल घोष, क्राउन, पृष्ठ ७७, मूल्य १०·००

सुजान (उपन्यास) मिथिलेशकुमारी मिश्र, क्राउन, पृष्ठ १३५, मूल्य १५·००

दायरे अपने-अपने (उपन्यास) मदन गोपाल, क्राउन, पृष्ठ १६५, मूल्य २५·००

पतित पावनी (उपन्यास) विराज, क्राउन, पृष्ठ १२२, मूल्य १५·००

हिन्दी उपन्यास में प्रतीकात्मक शिल्प (शोध ग्रन्थ) डा० सुशीला शर्मा, डिमाई, पृष्ठ ४८३, मूल्य ९५·००

नरेश मेहता कविता की ऊर्ध्वयात्रा (आलोचना) राम कमल राय, डिमाई, पृष्ठ १२२, मूल्य २४·००

गीता प्रबोध भाग ६ (आलोचना) प्रबोध चतुर्वेदी, डिमाई, पृष्ठ २००, मूल्य १०·००

गीता प्रबोध भाग ७ (आलोचना) प्रबोध चतुर्वेदी, डिमाई, पृष्ठ १४०, मूल्य ७·००

कंचन मृग (काव्य संकलन) लक्ष्मीकान्त वर्मा, डिमाई, पृष्ठ १२४, मूल्य ३०·००

तुम मेरा मौन हो (काव्य संकलन) नरेश मेहता, डिमाई, पृष्ठ १००, मूल्य ३०·००

रंगारंग गज़लें (काव्य संकलन) सं० प्रकाश पण्डित, क्राउन, पृष्ठ १४४, मूल्य २०·००

छितवन की छाँह (निबन्ध संग्रह) विद्या निवास मिश्र, क्राउन, पृष्ठ १३३, मूल्य १८·००

मंगली की टिकुली (कहानी) भैरवप्रसाद गुप्त, क्राउन, पृष्ठ १६०, मूल्य २०·००

प्रतिमा (कहानी) प्रेम दीवान, क्राउन, पृष्ठ १४४, मूल्य १८·००

वीर का वचन (कहानी) यादवेन्द्र शर्मा, क्राउन, पृष्ठ ४३, मूल्य ६·००

धर्म-ज्ञान की कहानियाँ (कहानी) राजकुमार अनिल, क्राउन, पृष्ठ ३९, मूल्य ६·००

पिता का कर्ज (कहानी) जयव्रत चटर्जी, क्राउन, पृष्ठ ४०, मूल्य ६·००

भये प्रकट कृपाला (कहानी) राजकुमार भाटिया, क्राउन, पृष्ठ ४०, मूल्य ६·००

सामाजिक कहानियाँ (कहानी) बिराज, क्राउन, पृष्ठ ४०, मूल्य ५·००

शिक्षाप्रद कहानियाँ (कहानी) राजकुमार, क्राउन, पृष्ठ ३०, मूल्य ५·००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[नवीन पाठ्यक्रमानुसार]

बी. टी. सी. परीक्षा (द्वि-वर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए हमारी प्रकाशित

वर्ष १९८२-८३ की पाठ्य एवं सन्दर्भ पुस्तकें

प्रथम वर्ष हेतु

प्रथम प्रश्नपत्र– शिक्षाशास्त्र

बेसिक शिक्षाशास्त्र दिनेशचन्द्र भारद्वाज ७.००
बेसिक शिक्षा सिद्धान्त प्रेमदत्त शर्मा ३.५०
शिक्षा के मूल सिद्धान्त डा० रामशकल पाण्डेय २१.००
शिक्षा के सामान्य सिद्धान्त पाठक, त्यागी २४.००
शिक्षा-सिद्धान्त डा० एस० एस० माथुर १७.००

द्वितीय प्रश्नपत्र–शिक्षा मनोविज्ञान

बेसिक शिक्षा मनोविज्ञान भारद्वाज ७.५०
शिक्षा मनोविज्ञान डा० एस० एस० माथुर १७.००
शिक्षा मनोविज्ञान पी० डी० पाठक १६.४०
शिक्षा मनोविज्ञान डा० वर्मा व उपाध्याय १८.००

तृतीय प्रश्नपत्र–शिक्षण सिद्धान्त

बेसिक शिक्षण सिद्धान्त दिनेशचन्द्र भारद्वाज ६.५०
शिक्षण कला, शिक्षण तकनीक एवं नवीन-पद्धतियाँ डा० एस० एस० माथुर १८.००
सफल शिक्षण कला पाठक, त्यागी १५.००

द्वितीय वर्ष हेतु

चतुर्थ प्रश्नपत्र–प्रारम्भिक शिक्षा की समस्यायें तथा अभिनव प्रवृत्तियाँ एवं शैक्षिक मूल्यांकन

प्राथमिक शिक्षा की समस्याएँ गंगामहेश मिश्र एवं अन्य ६.५०
शैक्षिक मूल्यांकन एवं परामर्श पी० डी० पाठक (प्रेस में)

पंचम प्रश्नपत्र–पाठशाला प्रबन्ध, सामुदायिक एवं स्वास्थ्य शिक्षा

पाठशाला प्रबन्ध, स्वास्थ्य शिक्षा एवं सामुदायिक संगठन दिनेशचन्द्र भारद्वाज ७.००

खण्ड (ख) शिक्षण विधियाँ

सरल शिक्षण विधियाँ दिनेशचन्द्र भारद्वाज १०.००

सहायक पुस्तकें

● **बी० टी० सी० शिक्षा दिग्दर्शन** (गाइड) प्रथम वर्ष शर्मा एवं सतसंगी १५.००
● **बी० टी० सी० शिक्षा दिग्दर्शन** (गाइड) द्वितीय वर्ष ,, १२.५०

विशेष (१) अध्यापकों से प्रार्थना है कि वह उपहार प्रतियों (स्पेसीमेन) के लिये हमसे सीधे एवं तुरन्त सम्पर्क करें। अधिक पुस्तकें मंगाने पर अधिक कमीशन की भी सुविधा है।

(२) शिक्षण-विधियों के लिये अलग-अलग शिक्षण पर अलग-अलग पुस्तकें उपलब्ध हैं, कृपया हमको लिखें।

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

'साहित्य-परिचय' के पाठकों एवं सदस्यों से निवेदन

हम पूर्ण प्रयत्न करते हैं कि 'साहित्य-परिचय' पर आपका नाम व पता स्पष्ट अंकित हो। फिर भी यदि आपके नाम, पद या पते में कोई भूल हो, तो कृपया स्पष्ट पता अपने पद सहित आप कार्यालय को सूचित करें। पूरा पता रहने से, भविष्य में हम आपको अन्य महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ देने में समर्थ हो सकेंगे।

—व्यवस्थापक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा के क्षेत्र में एक नवीन प्रामाणिक पुस्तक

शैक्षिक-तकनीकी के मूल आधार

[FOUNDATIONS OF EDUCATIONAL TECHNOLOGY]

लेखक

डा० एस० पी० कुलश्रेष्ठ, डी० ए० वी० कॉलेज, देहरादून

परिचय—आधुनिक युग में तकनीकी क्षेत्र में जो नवीन आविष्कार हो रहे हैं उनका प्रयोग शिक्षा की प्रक्रिया को सबल बनाने के लिए 'शैक्षिक तकनीकी' के नाम से एक नवीन दृष्टिकोण तथा एक अभिनव विचारधारा को जन्म दे रहा है। 'शैक्षिक तकनीकी में इस बात पर बल दिया जा रहा है कि शिक्षा के प्रत्येक अंग को मजबूत एवं प्रभावपूर्ण बनाने के लिए विज्ञान एवं तकनीकी की नवीन खोजों से जो भी मदद ली जा सके—लेनी चाहिये।' प्रस्तुत पुस्तक में विभिन्न प्रकार की तकनीकियों; यथा—व्यवहार-तकनीकी, शिक्षण-तकनीकी, शिक्षा तकनीकी आदि पर प्रकाश डाला गया है। शिक्षण की परिभाषाओं को वर्गीकृत किया गया है। शिक्षा के सिद्धान्तों का भारतीय विद्यालय-परिप्रेक्ष्य में विवेचन किया गया है। शिक्षण-विधियों, शिक्षण-उपागमों, क्रियानुसंधान तथा शिक्षण-अधिगम व्यवस्था आदि विषयों का सरल भाषा में, वैज्ञानिक तथा तकनीकी सन्दर्भ में एक नवीन दृष्टिकोण से वर्णन किया गया है। यह पुस्तक शिक्षा-तकनीकी चेतना का विकास शिक्षकों में करने के उद्देश्य से लिखी गयी है। इसमें बी० एड०, एम० एड०, एम० फिल० (एजूकेशन), पोस्ट-ग्रेजुएट इन टेक्नालॉजी आदि के छात्रों के लिये सभी महत्त्वपूर्ण विषयों पर प्रामाणिक सामग्री चयनित की गयी है।

- प्रस्तुत पुस्तक में विभिन्न प्रकार के सम्बन्धित प्रत्ययों—व्यवहार तकनीकी, शिक्षा तकनीकी, शिक्षण तकनीकी, निर्देश तकनीकी तथा निर्देशात्मक प्रारूपों का विवेचन किया गया है और उनमें अन्तर एवं सम्बन्ध भी प्रदर्शित किया गया है।
- शिक्षण के स्वरूप का विशद तथा वैज्ञानिक विवेचन पुस्तक में किया गया है। हिन्दी में प्रथम बार शिक्षण के विभिन्न सिद्धान्तों तथा उनके शैक्षिक उपयोगों का विस्तार से भारतीय परिप्रेक्ष्य में वर्णन किया गया है।
- शिक्षण अवस्थाओं तथा शिक्षण संधानों (Phases and operations of teaching) पर भी इस पुस्तक में प्रकाश डाला गया है।
- विभिन्न प्रकार के परम्परागत तथा नवीन शिक्षण के उपागमों तथा विधियों (Teaching Strategies) की प्रकृति, विशेषताओं व सीमाओं पर प्रकाश डाला गया है; साथ ही उनके प्रयोग को और अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए सुझाव प्रस्तुत किये गये हैं।
- शिक्षण-प्रतिमानों (Teaching Models) तथा शिक्षण के स्तरों का विश्लेषणात्मक वर्णन इस पुस्तक में दिया गया है।
- शिक्षण-अधिगम व्यवस्था के अन्तर्गत शिक्षण के नियोजन, संगठन, मार्गदर्शन तथा नियन्त्रण की विभिन्न विधियों का विवरण प्रस्तुत किया गया है।
- क्रियानुसंधान, शिक्षण और सीखने में सम्बन्ध तथा शैक्षिक तकनीकी में किये जा रहे शोध एवं प्रयोगों का विवरण भी इसमें दिया गया है।
- पाठ-योजना के विभिन्न अंगों तथा पाठ-योजना में प्रचलित विचारधाराओं पर भी प्रकाश डाला गया है। विभिन्न प्रकार की पाठ-योजनाओं; यथा—विस्तृत पाठ-योजना, लघु पाठ-योजना, सूक्ष्म पाठ-योजना, मूल्यांकन पाठ-योजना, हर्बर्ट पाठ-योजना तथा R. C. E. पाठ-योजना आदि के नमूने भी इसमें दिये गये हैं।
- इस पुस्तक की भाषा-शैली सरल तथा बोधगम्य है। तकनीकी शब्दों के साथ-साथ अंग्रेजी शब्द भी दिये गये हैं।

आकार : डिमाई **पृष्ठ संख्या : ३३२** **मूल्य : १६.००**

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिना टिकट प्रेषण करने का प्रमाण-पत्र संख्या—AG-009

साहित्य-परिचय [जुलाई, 1982] पंजीबद्ध संख्या—L. AG.-038

[पूर्णत: संशोधित एवं परिमार्जित तेरहवाँ संस्करण १९८२-८३]

विभिन्न विश्वविद्यालयों की बी० एड० परीक्षा के नवीन पाठ्यक्रमानुसार प्रश्नोत्तर शैली में लिखित प्रशिक्षण विद्यालयों में तहलका मचाने वाली विद्यार्थियों की लोकप्रिय पुस्तक

★

अद्यतन तेरहवें संस्करण में मेरठ, गोरखपुर, फैजाबाद एवं विशेष रूप से म० प्र० के विक्रम विश्वविद्यालय के नये पाठ्यक्रमानुसार विभिन्न प्रकरण जोड़कर पुस्तक को अधुनातन रूप दिया गया है।

बी० एड० दिग्दर्शन

(गाइड)

सम्पादक

भाई योगेन्द्रजीत

दिनेशचन्द्र भारद्वाज

विनोदकुमार अग्रवाल

अनुक्रमणिका

- शिक्षा सिद्धान्त तथा भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक विचारधारा
- शिक्षा मनोविज्ञान
- भारतीय शिक्षा का इतिहास और समस्याएँ
- पाश्चात्य शैक्षिक विचारधारा
- विद्यालय प्रशासन, संगठन और स्वास्थ्य-विज्ञान
- शिक्षण-कला एवं विभिन्न विषयों का शिक्षण

प्रमुख विशेषताएँ

☆ प्रस्तुत संस्करण में 'शिक्षा-सिद्धान्त' के प्रथम प्रश्नपत्र में शिक्षा और समाज, शिक्षा और राजनीति, शिक्षा और अर्थशास्त्र, शिक्षा और विज्ञान, नैतिक शिक्षा, शिक्षा की नवीन प्रवृत्तियाँ—मनोवैज्ञानिक, वैज्ञानिक एवं समाहारक तथा स्वतन्त्रता और अनुशासन आदि नवीन अध्यायों का समावेश किया गया है।

☆ द्वितीय प्रश्नपत्र में मनोविज्ञान व्यवहार के रूप में, अध्ययन आदतों का विकास, निदानात्मक परीक्षण तथा उपचारात्मक शिक्षण, समाजमितिक एवं क्रियात्मक अनुसन्धान की प्रायोजना आदि विशेष प्रकरणों का समावेश।

☆ अन्य प्रश्नपत्रों में राष्ट्रीय शिक्षा नीति, आजीवन शिक्षा, औपचारिक व अनौपचारिक शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा, विद्यालय तथा समुदाय, जनसंख्या-शिक्षण, शैक्षिक तकनीकी आदि कतिपय विशिष्ट अध्यायों का उल्लेख विशेष रूप से उ० प्र० एवं म० प्र० की शिक्षा के सन्दर्भ में किया गया है।

☆ इसमें प्रश्नों का विस्तार एवं आकार विद्यार्थियों की आवश्यकतानुसार दिया गया है। जटिल एवं सूक्ष्म विषयों का प्रतिपादन, सरल, स्पष्ट और वैज्ञानिक ढंग से सरल भाषा में किया गया है।

☆ **प्रस्तुत संस्करण का मुख्य आकर्षण** : शिक्षणकला नामक खण्ड के अन्तर्गत विभिन्न विषयों—हिन्दी, इतिहास, अर्थशास्त्र, नागरिकशास्त्र, भूगोल, विज्ञान, गणित तथा गृहविज्ञान की शिक्षण-पद्धतियों के सम्बन्ध में सम्पूर्ण सामग्री को सरल एवं सुबोध ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

सूचना—म० प्र० के विक्रम विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम का अनुपूरक ३·०० रु० मे उपलब्ध है।

इस प्रकार प्रस्तुत संस्करण सभी दृष्टियों से उत्तम एवं उपलब्ध गाइडों में सर्वश्रेष्ठ व सस्ता है।

आकार : डिमाई पृष्ठ संख्या : १४५० मूल्य : ४५·००

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा-२

प्रकाशक एवं मुद्रक : विनोद कुमार अग्रवाल द्वारा कैलाश प्रिंटिंग प्रेस, आगरा-2

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
1-11-82

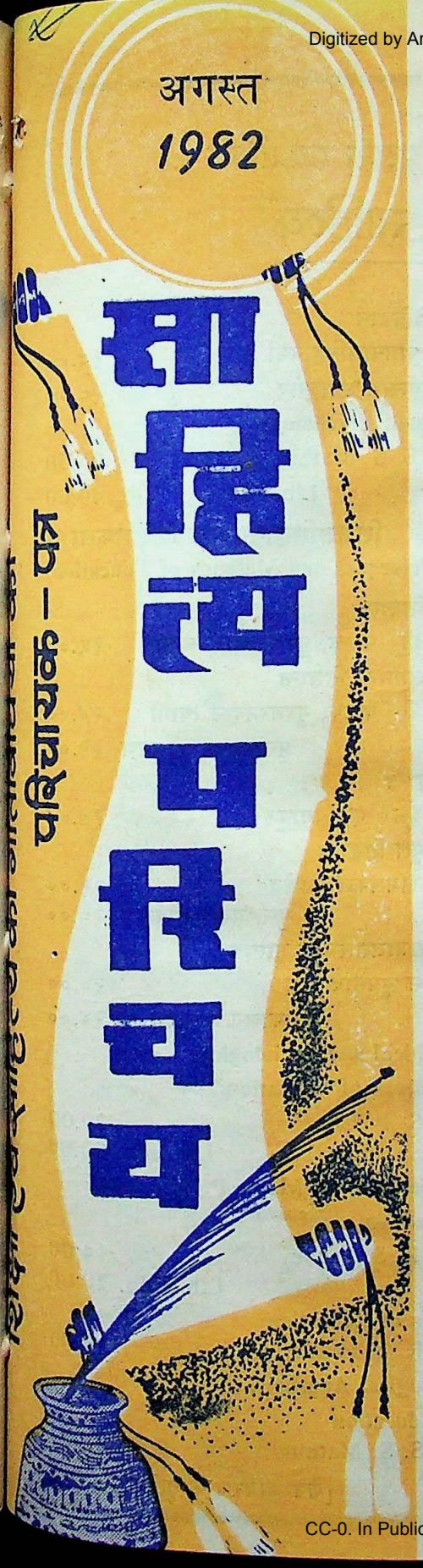

'साहित्य-परिचय'

का

नैतिक-शिक्षा विशेषांक

'विनोद पुस्तक मन्दिर', उत्तर प्रदेश की ऐतिहासिक नगरी, आगरा का प्रसिद्ध हिन्दी-प्रकाशन-प्रतिष्ठान है। इस प्रतिष्ठान की ओर से प्रकाशन-जगत् की बहुकोणीय गति-प्रगति का सन्देश वहन करने वाला मासिक पत्र 'साहित्य-परिचय' पिछले सत्रह वर्षों से प्रकाशित हो रहा है। इस अवधि में इसके कुल तेरह विशेषांक प्रकाश में आये हैं, जिनके द्वारा शिक्षाशास्त्र के अतिरिक्त शैक्षिक विधि और शैक्षिक विकास से सम्बद्ध मूल्यवान साहित्य का प्रस्तवन प्राविधिक और वैज्ञानिक दृष्टि से हुआ है, साथ ही शिक्षा जगत् के लिये अनिवार्य शोध-स्वाध्याय-सामग्री भी उपन्यस्त हुई है। कहना न होगा कि व्यापक विषयों से सम्बद्ध इन विशेषांकों ने शिक्षाशास्त्र के अध्ययन-अनुशीलन के क्षेत्र में ऐतिहासिक क्रोशशिला की स्थापना की है।

'साहित्य-परिचय' का यथाप्रस्तुत तेरहवाँ नैतिक शिक्षा विशेषांक (मूल्य : पन्द्रह रुपये; सजिल्द पुस्तकालय-संस्करण : बीस रुपये) अपने पूर्ववर्ती उत्कृष्ट विशेषांकों की परम्परा का बखूबी निर्वाह करता है। इस विशेषांक में आधिकारिक लेखनियों द्वारा प्रसूत कुल तिरेसठ रचनाएँ समाकलित हैं; जिनके द्वारा नैतिक शिक्षा के विभिन्न आयामों पर प्रामाणिकता के साथ प्रकाश-निक्षेप किया गया है। इसमें वैयक्तिक और सामाजिक जीवन की गतिशीलता के बाधक और विबोधक दोनों प्रकार के तत्त्वों की विवेचना के साथ विद्यार्थियों के कर्त्तव्यों का प्रतिपादन बड़ी समीचीनता के साथ हुआ है; जिसका मुख्य उद्देश्य छात्रों की आधुनिक शिक्षण-विधि का परिष्करण और उन्नयन है। यह विशेषांक न केवल शिक्षार्थियों, अपितु राष्ट्र की वर्त्तमान नीतिभ्रष्टता से चिन्तित शिक्षाशास्त्रियों और शिक्षाशास्त्र के अध्यापकों के लिये भी दिशा-निर्देशक सिद्ध होगा, इनमें संशय नहीं।

शुद्ध मुद्रण का आदर्श उपस्थापित करने वाले इस विशेषांक के परामर्शदाता डॉ० सरयूप्रसाद चौबे, प्रधान सम्पादक डॉ० रामशकल पाण्डेय एवं सम्पादक श्री विनोद कुमार अग्रवाल का यह सामयिक सत्प्रयत्न अवश्य ही साधुवादार्ह है।

—परिषद्-पत्रिका
(जुलाई—१९८२)
बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्
पटना-४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विभिन्न विश्वविद्यालयों के नवीन पाठ्यक्रमानुसार—

छात्रों एवं पुस्तकालयों के लिये हमारा प्रकाशित

छात्रोपयोगी प्रशिक्षण साहित्य

☆ ☆ ☆

भारतीय शिक्षा
(Indian Education)

भारतीय शिक्षा के प्रवर्त्तक
सं० डा० आत्मानन्द मिश्र १५.००

शिक्षा में नव चिन्तन
सं० डा० रामपालसिंह (प्रेस में)

आदि और मध्ययुगीन भारत में शिक्षा
डा० सरयूप्रसाद चौबे १४.००

आधुनिक भारतीय शिक्षा [इतिहास और समस्याएँ]
पी० डी० पाठक, गुरसरनदास त्यागी १६.००

भारतीय शिक्षा का इतिहास
बी० पी० जौहरी; पी० डी० पाठक १५.६५
पुस्तकालय संस्करण २२.५०

भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ
पी० डी० पाठक १६.८०
पुस्तकालय संस्करण ३०.००

भारतीय शिक्षा की सामयिक समस्याएँ
रामखेलावन चौधरी,
राधावल्लभ उपाध्याय १५.००

भारतीय शिक्षा (प्राचीन से वर्तमान काल तक)
डा० सरयू प्रसाद चौबे १४.००

विश्व के श्रेष्ठ शिक्षाशास्त्री
डा ०रामशकल पांडेय १२.००

भारतीय शिक्षा के आयोग एवं समितियाँ
पी० डी० पाठक, गुरसरनदास त्यागी १७.००
पुस्तकालय संस्करण २२.००

शिक्षा-मनोविज्ञान
(Educational Psychology)

शिक्षा-मनोविज्ञान
डा० एस० एस० माथुर १६.००

शिक्षा-मनोविज्ञान (संक्षिप्त संस्करण)
डा० एस० एस० माथुर १७.००

शिक्षा-मनोविज्ञान
पी० डी० पाठक १६.४०

शिक्षा-मनोविज्ञान
डा० रामपालसिंह वर्मा १८.००
राधावल्लभ उपाध्याय पु० सं० २८.००

Educational Psychology
Dr. S. S. Mathur 25.50
Lib. edn. 40.00

शिक्षा-सिद्धान्त और शिक्षणकला
(Principles and Methods of Education)

शिक्षा के सिद्धान्त
पी० डी० पाठक, गुरसरनदास त्यागी १५.००

शिक्षा के सामान्य सिद्धान्त
पी० डी० पाठक, गुरसरनदास त्यागी २४.००
पुस्तकालय संस्करण ३२.००

शिक्षा-सिद्धान्त
डा० एस० एस० माथुर १७.००

शिक्षा के मूल सिद्धान्त
डा० रामशकल पाण्डेय २१.००
पुस्तकालय संस्करण २८.००

शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार
डा० सरयूप्रसाद चौबे २०.००
पुस्तकालय संस्करण २४.००

Philosophical and Sociological Foundations of Education
Dr. S. P. Chaube, 20.00
Akhilesh Chaube Lib. edn. 30.00

An Introduction to Major Philosophies of Education
Dr. R. S. Pandey 14·00
Lib. Edn. 20·00

Principles of Education
Dr. R. S. Pandey 16.00

A Sociological Approach to India Education
Dr. S. S. Mathur 28.00

[शेष आवरण के तृतीय पृष्ठ पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-परिचय

[शिक्षा और साहित्य की प्रगति का परिचायक पत्र]

[वर्ष 17 : अंक 8]
अगस्त, 1982

सम्पादक
विनोद कुमार अग्रवाल
एम० ए०, साहित्यरत्न

स्वामित्व
विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

वार्षिक शुल्क : 15·00
रजिस्ट्री से विशेषांक मँगवाने पर
18·00
[विदेशों में—डाक व्यय सहित मात्र 40·00]

साहित्य-परिचय
डा० रांगेय राघव मार्ग
आगरा—2
फोन : 76486

किशोरावस्था में संवेगात्मक जीवन

यह परम्परागत विश्वास है कि किशोरावस्था गम्भीर उथल-पुथल की अवस्था है। गम्भीर उथल-पुथल का तात्पर्य संवेगात्मक अवस्था से है। बाल्यावस्था और प्रौढ़ावस्था की अपेक्षा किशोरावस्था में संवेगात्मक अस्थिरता और अति संवेगात्मकता अपेक्षाकृत अधिक होती है। यदि बालकों में संवेगात्मक विकास का अध्ययन किया जाय तो पता चलता है कि बाल्यावस्था और प्रौढ़ावस्था में संवेगात्मक स्थिरता, किशोरावस्था की अपेक्षा अधिक पाई जाती है। हरलॉक और उसके अनुयायियों का विचार है कि संवेगात्मक अस्थिरता और अति संवेगात्मकता का मुख्य कारण किशोरावस्था में होने वाले शारीरिक और ग्रन्थीय परिवर्तन हैं। कुछ अन्य मनोवैज्ञानिकों ने सामाजिक सम्बन्धों की व्यापकता को बताया है, जिसके कारण समायोजन में जटिलता उत्पन्न होती है और फलस्वरूप संवेगात्मक तनाव, संवेगात्मक अस्थिरता, और अन्त में अति संवेगात्मकता के लक्षण उत्पन्न होते हैं। अति संवेगात्मकता या संवेगात्मकता का सभी किशोरों में पाया जाना आवश्यक नहीं है। यह देखा गया है कि जिन किशोरों की शिक्षा-दीक्षा उपयुक्त ढंग से चलती है, उनमें इस प्रकार के लक्षण अपेक्षाकृत कम मात्रा में पाये जाते हैं। उपरोक्त कारणों के अतिरिक्त कुछ अन्य कारण भी सार्थक एवं महत्त्वपूर्ण हैं; जैसे—अनुपयुक्त पारिवारिक सम्बन्ध, परिवारीजनों का अधिक हस्तक्षेप, विद्यालय की असफलताएँ, नवीन परिस्थितियों में कुसमायोजन, लक्ष्य प्राप्ति में आने वाली कठिनाइयाँ आदि। तीन प्रकार के व्यक्ति विशेष रूप से उसमें संवेगात्मक अस्थिरता और अति संवेगात्मकता के लक्षण उत्पन्न करते हैं। पहले प्रकार के वह हैं जो उसके परिवार से सम्बन्धित होते हैं, दूसरे प्रकार के वह लोग हैं जो उसके विद्यालय से सम्बन्धित होते हैं और तीसरे प्रकार के वह लोग हूँ जो इसकी मित्रमण्डली में आते हैं अथवा उसके साथी समूह के सदस्य। उपरोक्त के अतिरिक्त प्रत्येक किशोर का कोई न कोई विपरीत सेक्स का व्यक्ति होता है जिससे वह अपने व्यक्तिगत सम्बन्ध बढ़ाना चाहता है। परन्तु जब इनके यह सपने तृप्त नहीं हो पाते हैं तो वे चिन्तित हो उठते हैं और उनमें संवेगात्मक असन्तुलन और तनाव उत्पन्न हो जाता है।

इस दिशा में कुछ अध्यापकों से यह स्पष्ट है कि किशोरावस्था में अति संवेगात्मकता केवल पूर्व किशोरावस्था में ही अधिक होती है। इसके बाद धीरे-धीरे उनकी अति संवेगात्मकता, सामान्य संवेगात्मक अभिव्यक्ति में परिवर्तित होती जाती है। किशोरावस्था की अन्तिम अवधि में कुछ नई समस्याएँ उत्पन्न होती हैं जिनके फलस्वरूप

[शेष पृष्ठ १४ पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[नवीन पाठ्यक्रमानुसार]

बी. टी. सी. परीक्षा (द्वि-वर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए हमारी प्रकाशित वर्ष १९८२–८३ की पाठ्य एवं सन्दर्भ पुस्तकें

प्रथम वर्ष हेतु

प्रथम प्रश्नपत्र– शिक्षाशास्त्र

बेसिक शिक्षाशास्त्र दिनेशचन्द्र भारद्वाज ७.००
बेसिक शिक्षा सिद्धान्त प्रेमदत्त शर्मा ३.५०
शिक्षा के मूल सिद्धान्त डा० रामशकल पाण्डेय २१.००
शिक्षा के सामान्य सिद्धान्त पाठक, त्यागी २४.००
शिक्षा-सिद्धान्त डा० एस० एस० माथुर १७.००

द्वितीय प्रश्नपत्र–शिक्षा मनोविज्ञान

बेसिक शिक्षा मनोविज्ञान भारद्वाज ७.५०
शिक्षा मनोविज्ञान डा० एस० एस० माथुर १७.००
शिक्षा मनोविज्ञान पी० डी० पाठक १६.४०
शिक्षा मनोविज्ञान डा० वर्मा व उपाध्याय १८.००

तृतीय प्रश्नपत्र–शिक्षण सिद्धान्त

बेसिक शिक्षण सिद्धान्त दिनेशचन्द्र भारद्वाज ६.५०
शिक्षण कला, शिक्षण तकनीक एवं नवीन-पद्धतियाँ डा० एस० एस० माथुर १८.००
सफल शिक्षण कला पाठक, त्यागी १५.००

द्वितीय वर्ष हेतु

चतुर्थ प्रश्नपत्र–प्रारम्भिक शिक्षा की समस्यायें तथा अभिनव प्रवृत्तियाँ एवं शैक्षिक मूल्यांकन

प्राथमिक शिक्षा की समस्याएँ गंगामहेश मिश्र एवं अन्य ७.००
शैक्षिक मूल्यांकन एवं परामर्श पी० डी० पाठक ४.००

पंचम प्रश्नपत्र–पाठशाला प्रबन्ध, सामुदायिक एवं स्वास्थ्य शिक्षा

पाठशाला प्रबन्ध, स्वास्थ्य शिक्षा एवं सामुदायिक संगठन दिनेशचन्द्र भारद्वाज ७.००

खण्ड (ख) शिक्षण विधियाँ

सरल शिक्षण विधियाँ दिनेशचन्द्र भारद्वाज १०.००
उद्यान-विज्ञान शिक्षण एम० एल० वर्मा ६.००
कृषि शिक्षण तथा बागवानी ,, ,, ६.००
गृह-शिल्प शिक्षण सत्यनारायण दुबे 'शरतेन्दु' ३.००
बी० टी० सी० वाणिज्य शिक्षण उदयवीर सक्सेना ४.००
शिल्प-शिक्षण सत्यनारायण दुबे ८.००
काष्ठकला-शिक्षण ,, ,, ५.००
बी० टी० सी० पुस्तक कला शिक्षण ,, ,, ५.००

सहायक पुस्तकें

● **बी० टी० सी० शिक्षा दिग्दर्शन** (गाइड) प्रथम वर्ष [संस्करण १९८२/८३] शर्मा एवं सतसंगी १५.००
● **बी० टी० सी० शिक्षा दिग्दर्शन** (गाइड) द्वितीय वर्ष [संस्करण १९८२/८३] ,, १२.५०

विशेष (१) अध्यापकों से प्रार्थना है कि वह उपहार प्रतियों (स्पेसीमेन) के लिये हमसे सीधे एवं तुरन्त सम्पर्क करें। अधिक पुस्तकें मँगाने पर अधिक कमीशन की भी सुविधा है।

(२) शिक्षण-विधियों के लिये अलग-अलग शिक्षण पर अलग-अलग पुस्तकें उपलब्ध हैं, कृपया हमको लिखें।

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्मा की शिक्षा ही शिक्षा की आत्मा है

डॉ० जमनालाल बायती
सहायक प्रधानाध्यापक, राजकीय हायर सैकेण्डरी स्कूल, जालौर (राज०)

"मनुष्य से बढ़कर कुछ भी श्रेष्ठ नहीं है।"

—महाभारत

× × ×

"अब तक आपने सुना कि पुरस्कार प्राप्त अध्यापकों ने उद्यान लगाये, भवन बनवाये, प्रयोगशालाएँ बनवाईं, क्रीड़ांगणों का रखरखाव किया, इसी भाँति और भी कई बातों की गिनती की। क्या यही सब शिक्षा है? इन पुरस्कार प्राप्त अध्यापकों में से किसी के लिए यह नहीं कहा गया कि इन्होंने इन्सान बनाया, सुनागरिक बनाया।"

—राजस्थान के राज्यपाल द्वारा शिक्षक सम्मान समारोह में दिए गये भाषण से।

× × ×

"आज जिस धर्म-कर्म-हीन शिक्षा से निकल कर जीवन तथा समाज में प्रवेश कर रहे हैं, वह शिक्षा हमको उपयुक्त दृष्टि देने के बजाय 'थोथा चना बाजे घना' वाली कहावत ही चरितार्थ कर रही है। ज्ञान का मनुष्य भीतर से खोखला तथा कुरूप है। इसलिए यह प्रदर्शन तथा आडम्बर का, उग्रता तथा अनुशासन-हीनता का एवं लापरवाही एवं उदण्डता का शिकार है।"

—श्री दयालचन्द सोनी के 'अनौपचारिका' में छपे ताजा लेख से।

× × ×

"आप मुझे मछली देंगे तो मैं आज अपना पेट भर सकूँगा, किन्तु यदि आप मुझे मछली पकड़ना सिखा दें तो मैं हमेशा ही पेट भर सकूँगा।"

—एक विदेशी कहावत

यह लेख एमिटी इण्टरनेशनल द्वारा राजस्थान से प्रथम स्थान पर पुरस्कृत हुआ है।

●

× × ×

आज विश्व की सामाजिक स्थिति बड़ी तनावपूर्ण है। विश्व में शांति युद्ध चरम सीमा पर पहुँच चुका है। अन्य शब्दों में इसे मनोवैज्ञानिक युद्ध भी कहा जाता है। विज्ञान का विकास इतना अधिक हो चुका है कि बात की बात में विश्व का संहार किया जा सकता है। न केवल इतना ही, किसी भी देश की आन्तरिक स्थिति भी संतोषजनक नहीं कही जा सकती। खाद्यान्नों के अवैध संग्रह पर रोज छापे मारे जा रहे हैं; प्राणलेवा नकली दवाइयाँ बनाई जा रही हैं; हल्दी तथा मिर्च में ईंटें पिसवा कर खुले बाजार में बेची जा रही हैं; शिक्षण संस्थाओं में अध्यापकों का घेराव किया जा रहा है; हड़-तालें हो रही हैं। कोई दिन ऐसा नहीं जाता जब समाचार पत्रों में बलात्कार, आत्महत्या के समाचार न छपे हों। दहेज को लेकर कई महिलायें जीवन से हाथ धो रही हैं; इञ्जीनियर घटिया किस्म की सामग्री से पुल बना रहे हैं; जनसाधारण ही नहीं, सम्पन्न लोग भी रोज कर की चोरी में पकड़े जा रहे हैं; विद्यार्थी ही नहीं, कई अन्य लोग भी बिना टिकट रेलों में यात्रा करते हुए पकड़े जा रहे हैं; विद्यार्थी सार्वजनिक सम्पत्ति को नष्ट कर रहे हैं, उसे आग की भेंट चढ़ा रहे हैं; कर्मचारी समय पर कार्य नहीं निपटाते हैं, राष्ट्रीय चरित्र गर्त में डूब गया है; निर्माणाधीन मकान की ईंटें रातोंरात चुरा ली जाती हैं। न तो युवा बुजुर्गों की सीख मानते हैं तथा न बुजुर्ग लोग युवा लोगों के मन की बात जानने का प्रयत्न करते हैं। लगता है दोनों ने प्रतिष्ठा का प्रश्न बना लिया है।

सम्पूर्ण मानव-समाज को दो भागों में—सम्पन्न और विपन्न या शोषित तथा शोषक—बाँटा जा सकता है। शिक्षित युवावर्ग में उत्तरोत्तर बढ़ रही आस्था-हीनता, बेचैनी, आक्रोश, निराशा आदि इसी असंतुलित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शैक्षिक विकास का फल है। आज मानव समाज धर्म, भाषा, आर्थिक स्थिति, संस्कृति तथा क्षेत्रीयता के आधार पर टुकड़ों में बँट गया है तथा एक-दूसरे के साथ कण्ठच्छेदी प्रतिशोध करते हैं। ऐसी शिक्षा हमारे लिए उपयोगी कदापि नहीं हो सकती जो मानव को एक कार्य के लिए उपयुक्त तथा अन्य कार्यों के लिए अनुपयुक्त बनाती हो। साधारणतया शिक्षा की आवश्यकता दोनों ही प्रकार से मानव समाजों को है—विकसित तथा विकासशील राष्ट्रों को भी, किन्तु इन दो प्रकार के राष्ट्रों की आवश्यकतायें भिन्न हैं। हमारा राष्ट्र एक विकासशील या विकासोन्मुखी राष्ट्र है। अतः इसकी कुछ समस्याएँ वही हैं जो अन्य विकासोन्मुखी राष्ट्रों की हैं। किन्तु साथ ही हमारी कुछ ऐसी विशिष्ट समस्याएँ भी हैं जो अन्य देशों की समस्याओं से सर्वथा भिन्न हैं। हमारा देश एक ऐसा देश है जहाँ विभिन्न भागों में भिन्न-भिन्न प्रकार की संस्कृति पाई जाती हैं। समाज में कई ऐसी जातियाँ हैं जिनमें शिक्षा प्राप्त करने का प्रचलन नहीं के बराबर है। हमारे शिक्षाशास्त्री शिक्षा-प्राप्ति के समान अवसर की बातें करते समय इन कबीलों तथा जातियों को शिक्षोपार्जन के समान अवसर प्रदान करने के उद्देश्य पर बल देते हैं। किन्तु इस प्रयत्न का परिणाम भिन्न होता है। जो जातियाँ शिक्षा के क्षेत्र में आगे हैं, वे इन अवसरों का अपेक्षाकृत अधिक लाभ उठाती हैं तथा जो जातियाँ अथवा कबीले शिक्षा के क्षेत्र में पीछे हैं वे अपने स्थान से अधिक आगे नहीं बढ़ पाते हैं। सम्भवतः ये अपनी वर्तमान स्थिति से इतने संतुष्ट हैं कि स्थिति से बाहर आना ही नहीं चाहते, किन्तु इसके साथ ही साथ कबीले अपने चारों तरफ होने वाले परिवर्तनों के प्रति सजग हैं। भारतीय मानवशास्त्र परिषद् ने कुछ समय पहले हिमालय की तराई के लोगों की संस्कृति तथा समाज का अध्ययन कर निष्कर्ष प्रस्तुत किया है कि कबीले नवीन शिक्षा-प्रणाली तथा तकनीकी शिक्षा के प्रति जागरूक हैं। इस समय देश उन्हें उपयोगी शिक्षा प्रदान कर उनकी जागरूकता का समुचित प्रयोग करके लाभान्वित हो सकता है। आज सभी राष्ट्र यह स्वीकार करते हैं कि यदि किसी भी दृष्टि से राष्ट्र को ऊपर उठाना है तो शिक्षा पर बल देना बहुत आवश्यक है। प्रत्येक राष्ट्र की सामाजिक तथा आर्थिक आय-वृद्धि के लिए शिक्षा के महत्त्व को स्वीकार किया जाना अत्यन्त आवश्यक है।

भारत की शैक्षिक परम्परा यद्यपि शानदार है किन्तु उसका निकट अतीत और वर्तमान बहुत-कुछ शोचनीय हैं। अभी तक विद्यालयों में जाने योग्य सभी बालक विद्यालयों में नहीं जा पाये, इसका अर्थ यह नहीं है कि जो वर्ग शिक्षा-प्राप्ति के बाहर है, उसे शिक्षा की कम आवश्यकता है। वस्तुतः उसे इसकी आवश्यकता कहीं अधिक है। देश के आर्थिक तथा सामाजिक पिछड़ेपन का मूल कारण भी शैक्षणिक पिछड़ापन ही है। आज देश की जो समस्याएँ हैं, आवश्यक नहीं कि वे कल भी उसी उग्रता के साथ रहें, और यह भी आवश्यक नहीं कि आज की समस्याएँ कल भी समस्याओं के ही रूप में रहें। ऐसे अनेक उदाहरण मौजूद हैं, जिनमें कारखानों के मजदूरों को पेंसिल-स्लेट कारखानों द्वारा प्रदान की गई और उनकी शिक्षा की समुचित व्यवस्था में प्रत्येक व्यक्ति ने यथासम्भव सहायता की, मजदूरों ने भी इस अवस्था का स्वागत किया। किन्तु जो नारियाँ और पुरुष गाँवों में हैं, जिनका इस प्रकार के कारखानों से भी कोई सम्बन्ध नहीं है, उन तक शिक्षा कैसे पहुँचाई जाय, यह विचारणीय विषय है। दूरदर्शन द्वारा शिक्षा को इन व्यक्तियों तक पहुँचाने का प्रयत्न सरकार कर रही है, किन्तु इस कार्य की सफलता तभी सम्भव है जब इसमें उसे प्रत्येक शिक्षित व्यक्ति का सहयोग प्राप्त हो, जब शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़े हुए वर्गों को आगे लायें तथा उनमें छिपे हुए प्रबुद्ध व्यक्तियों के उत्थान के लिए समान अवसर तथा समुचित सहायता प्रदान करें। वह समय दूर नहीं है जब भारत को अपने बुद्धिजीवियों तथा विशेषज्ञों की प्रथम पंक्ति इस देश के उत्थान के लिए प्रस्तुत करनी पड़ेगी, ऐसी स्थिति में अपने देश का भार किन व्यक्तियों पर होगा ? भारत में लगभग सभी क्षेत्रों में कौशल तथा बुद्धि की दृष्टि से अनेक व्यक्तियों के नाम लिये जा सकते हैं।

विद्यालयों की संरचना कुछ इस प्रकार की होती है कि छात्र पूर्णतः शिक्षकों पर निर्भर रहें। परिणामस्वरूप छात्रों की पहल शक्ति, जिज्ञासा एवं सृजनात्मकता कुण्ठित हो जाती है और वे दब्बू, निष्क्रिय तथा एक ही ढर्रे पर चलने वाले बन कर रह जाते हैं। एक कक्षा में सभी छात्रों को एक साथ एक ही बात, एक ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकार से, एक ही पाठ-योजना की सहायता से बिना उसकी मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं पर ध्यान दिये, पढ़ाई जाती है और छात्रों की वैयक्तिक संज्ञान शक्ति अथवा अभिरुचि का कोई ध्यान नहीं रखा जाता।

शिक्षा के उद्देश्य आज संक्रमण काल से निकल रहे हैं। भिन्न-भिन्न विद्वानों ने शिक्षा के भिन्न-भिन्न उद्देश्य बताये हैं; यथा—व्यक्तित्व का विकास, बालक की प्रकृत्तिदत्त सीमाओं तक अधिकतम विकास, बालक का समाजोपयोगी सदस्य के रूप में विकास का सर्वाङ्गीण विकास, बालक के भावी जीवन की तैयारी, अच्छे-बुरे की पहचान या विवेक का विकास, उचित आदतों के निर्माण से सद्गुणों का विकास, आनन्द की प्राप्ति के लिए नैसर्गिक शक्तियों का संतुलित विकास, आत्मा की अनुभूति और अभिव्यक्ति, अवकाश का समाजोपयोगी उपयोग, सांस्कृतिक विकास, मानसिक विकास, व्यावसायिक कुशलता, नेतृत्व का विकास, सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना का विकास, सम्पूर्ण जीवन को पवित्र बना कर मोक्ष की प्राप्ति—'सा विद्या या विमुक्तये' तात्विक दृष्टि से सत्यासत्य तथा व्यावहारिक दृष्टि से कर्त्तव्याकर्त्तव्य का ज्ञान, सत्यं-शिवं-सुन्दरम् की प्राप्ति, व्यक्ति में स्वयं को पर्यावरण के अनुकूल बनाने की क्षमता का विकास करना ही नहीं अपितु पर्यावरण को अपने अनुकूल ढालने की व्यक्ति में योग्यता उत्पन्न करना भी शिक्षा के उद्देश्यों में से एक है।

प्राचीन काल में शिक्षा का मूल उद्देश्य ही मोक्ष की प्राप्ति था। आज भी उसे कई अन्य उद्देश्यों के साथ एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य माना जाता है। दूसरे शब्दों में, सम्पूर्ण जीवन को पवित्र बनाकर, आत्मा को शिक्षित कर मोक्ष प्राप्त करना ही शिक्षा का उद्देश्य है। इसी दृष्टि से पाठ्यक्रम की विषयवस्तु का संयोजन करना होता है, सदाचार के उपदेश दिये जाते हैं, स्वस्थ तथा संस्कार युक्त वातावरण की रचना की जाती है। शिक्षा का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कार्य है—नियन्त्रण स्थापित करने के बजाय बालक के मानस का विकास करना। जीवन के प्रति छात्र का दृष्टिकोण विस्तृत हो, उसमें ज्ञान की ज्योति जगे जिससे वह आत्मसंयम तथा आत्मसम्मान का अभ्यास कर सके। वह अपने से बड़ों का आदर करना सीखे, माता-पिता का कहना माने, बड़े हित के लिए छोटे स्वार्थ का त्याग करना सीखे, वातावरण के साथ समंजन करना सीखे, पड़ोसियों की भावनाओं का आदर करे, किसी की विचारधारा से, उसके मत से असहमत होते हुए भी धैर्य से उसकी बात सुने, सहिष्णुता का विकास करे। सहिष्णुता का अर्थ है कि हम दूसरों के दृष्टिकोणों को सहन करें। यदि हम प्रत्येक मनुष्य को आत्म-विकास का अवसर देना चाहते हैं तथा उसके व्यक्तित्व का आदर करते हैं तो हमें व्यक्तिगत भिन्नताओं को सहन करना होगा। प्रत्येक प्रकार के अन्तर चाहे वे विचारों में हों या कार्यों में, आदर के साथ सहन करना चाहिए। समाज को अपने सदस्यों के सर्वोच्च विकास में सहायता करनी चाहिए। समानता का केवल यही अर्थ नहीं है कि हर मनुष्य अपना आत्म विकास तथा सुख प्राप्त करने के लिए बराबर है, वरन् समाज द्वारा प्रत्येक मनुष्य को आत्मानुभूति प्राप्त करने तथा अपना आत्म विकास करने का पूरा अवसर मिलना चाहिए। केवल अपने तुच्छ स्वार्थों में, सांसारिकताओं में लिप्त न रहे, बल्कि आत्मा के क्रमिक विकास का प्रयत्न करे, प्राप्त ज्ञान को व्यवहार में लाकर, प्रयोग परीक्षण करके, मनन-चिन्तन करके, आत्मा की शिक्षा के साथ मुक्ति लाभ करे। सम्पूर्ण विश्व को परिवार माने, विश्व-बन्धुत्व या विश्व-नागरिकता के सम्प्रत्यय में अटूट विश्वास हो, अच्छे या बुरे में भेद कर सके, उसकी बुद्धि प्रखर हो, कभी भी तथा कहीं भी मतभेद होने पर बाहुबल से नहीं वरन् विवेक से, शान्त मस्तिष्क से, विचार-विमर्श से मतैक्य ला सके। ऐसी शिक्षा की आज प्रथम स्थान पर सर्वोच्च आवश्यकता है।

आत्मा की शिक्षा पाकर मनुष्य केवल अपने लिए ही नहीं जीता है। वह केवल अपने लिए ही नहीं अर्थात् वह केवल अपने स्वार्थ के लिए ही नहीं मरता है बल्कि दूसरों के लिए भी जीता है और दूसरों के लिए मरता भी है। आत्मा की शिक्षा ही मनुष्य को अपने स्वार्थों से ऊपर उठाती है। बुद्ध की समस्त जीवों के प्रति करुणा में, महात्मा ईसा की दया में तथा गांधी की अहिंसा में आत्मा की शिक्षा के दर्शन होते हैं। मनुष्य केवल अपने स्वयं के लिए ही नहीं जीये वरन् सबके साथ मिलकर सबके लिए जीये, मनुष्य केवल अपने स्वयं के लिए ही नहीं हो, वह सबके लिए हो तथा सब उसके हों, सच्चे मनुष्यत्व का तथा सच्चे सुख का यही एकमात्र रास्ता है। इसी आधार पर कहा जा सकता है कि आत्मा की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा ही शिक्षा की आत्मा है; या यों कहिए कि आत्मा की शिक्षा ही शिक्षा-व्यवस्था का मूल है। नैतिक मूल्य व्यक्ति और समाज के कल्याणकारी आधार हैं, जिनकी प्रतिष्ठा से व्यक्ति का पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन उद्देश्यपूर्ण तथा उज्ज्वल होता है। आज के युग में भौतिक प्रगति के लिए विज्ञान की जितनी आवश्यकता है, उसको कल्याणकारी बनाने के लिए आध्यात्मिक मूल्यों की पूर्व प्रतिष्ठा होनी ही चाहिए।

आत्मा की शिक्षा हमें अंधविश्वासों के गढ़े में गिरने एवं संकुचित बनने से बचाती है तथा दुष्ट प्रवृत्तियों का दमन करने में सहायक होती है। यदि मनुष्य साक्षर हो, वैज्ञानिक ज्ञान भी रखता हो पर आत्मा की शिक्षा के क्षेत्र में शून्य हो तो वह मनुष्य बिना नीति निर्दिष्ट किये, सेवा की भावना से परे रह कर तथा परोपकार की दिशा न पाकर मोक्ष कदापि नहीं पा सकता, उसका कल्याण नहीं हो सकता। आत्मा की शिक्षा के अभाव में विज्ञान अँधा है तथा विज्ञान रहित आत्मा की शिक्षा पंगु है। विज्ञान ने यदि अणु शक्ति, टैंक या अन्य विस्फोटक वस्तुएँ दी हैं तो आत्मा की शिक्षा के अभाव में ही ये सब विनाशकारी हो सकते हैं और यदि आत्मा की शिक्षा के साथ-साथ विज्ञान की शिक्षा दी गई, तो ये सभी तत्व सृजनात्मक या रचनात्मक कार्यों के लिए भी प्रयोग किये जा सकते हैं। नीति आत्मा की शिक्षा का प्राण है तथा आत्मा की शिक्षा नैतिक जीवन का आधार है। आत्मा की शिक्षा मानव को तभी सुखी बना सकेगी जब वह शिक्षा विज्ञान पर आधारित हो। अन्यथा इस भौतिक एवं स्वकेन्द्रित युग में मनुष्य का जीवित रहना कठिन हो जायेगा। अतः आत्मा की शिक्षा वैज्ञानिक दृष्टिकोण सहित सुदृढ़ धरातल पर विकसित की जानी चाहिए।

कहा जाता है कि "जैसा खावे अन्न वैसा होवे मन"। इसके अनुसार स्पष्ट है कि आदमी की विचारधारा उद्देश्य, प्राथमिकताओं पर उसके भोजन का बहुत प्रभाव पड़ता है और जिसके पास खाने को अन्न ही नहीं है, वह न तो दर्शन बना सकता है और न प्राथमिकतायें तय कर सकता है, भूखे का मनोविज्ञान ही पृथक होता है। कालान्तर में शिक्षा का उद्देश्य जीविकोपार्जन माना जाने लगा। इसी सन्दर्भ में कार्यानुभव का ध्येय वाक्य भी सामने आया शिक्षा-प्रणाली में कार्यानुभव को समुचित स्थान दिया जाय जिससे समाज को हर प्रकार के कार्य करने के लिए योग्य व्यक्ति मिल सकें। पेट भरा हुआ, भूख से मुक्ति पाया हुआ व्यक्ति ही समाज के लिए उपयोगी सदस्य सिद्ध हो सकता है। कार्यानुभव शिक्षा को दैनिक जीवन के लिए अधिक उपयोगी बनाता है। सामान्यतया देखा जाता है कि छात्र जब शिक्षा पूर्ण करके वास्तविक एवं व्यावहारिक जीवन में प्रवेश करता है तब उसे जिस प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है, उन समस्याओं के समाधान में उसे अपनी अर्जित शिक्षा से बहुत अधिक सहयोग नहीं मिलता है। आज औपचारिक व्यवस्था काफी अपव्ययी अर्थात् मँहगी है। इससे सभी छात्रों की अभिरुचि और उनके समय का ध्यान रख पाना कठिन है। यूनेस्को की बहुचर्चित रिपोर्ट "लर्निंग टू बी" का मूल सार यह है कि भविष्य की शिक्षा के चार प्रमुख उद्देश्य होंगे—

१—एक अन्तरराष्ट्रीय समुदाय की रचना करना,
२—प्रजातन्त्र में विश्वास उत्पन्न करना,
३—मानव का सम्पूर्ण विकास करना, और
४—जीवन-पर्यन्त शिक्षा प्रदान करना।

इनमें से प्रथम तीन उद्देश्यों को अप्रत्यक्ष रूप से आत्मा की शिक्षा ही कह सकते हैं। भविष्य की शिक्षा को गतिशील, सामाजिक, असमानताओं और अन्यायों से मुक्ति दिलाने वाली तथा परम्परागत होना चाहिये। उसे राष्ट्र-विशेष की सामाजिक, आर्थिक तथा राजनैतिक विकास की अवस्थाओं तथा आवश्यकताओं के अनुसार सशक्त व समर्थ होना चाहिए। ऐसा तभी सम्भव है जबकि शिक्षाशास्त्री, सामाजिक व राजनैतिक नेता अधिकारी तथा शिक्षक सभी समाज व शिक्षा के भविष्य के बारे में खुले दिमाग से सृजनात्मक चिन्तन करें तथा व्यावहारिक कार्य करें। प्रत्येक सीखने वाले को स्वयं ही अपनी शिक्षा का उत्तरदायित्व सम्भालना होगा। एक सीखने वाला समाज (लर्निंग सोसायटी) अथवा सीखने वाला वातावरण (लर्निंग इनवाइरनमेन्ट) बनाया जाय। शिक्षा की औपचारिक व्यवस्थाओं के स्थान पर पूर्णतया खुली या गतिशील व्यवस्थाएँ होनी चाहिये जिससे कोई भी सिखाने वाला अपनी इच्छा, क्षमता तथा गति के अनुसार अपने जीवन के लिए उपयोगी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानव विकास में बाल्यावस्था का महत्त्व

सूर्य कुमार श्रीवास्तव
मनोविज्ञान विभाग, डी० ए० वी० कालेज, कानपुर

मानव व्यक्तित्व के विकास को समझने के लिए आनुवंशिकता तथा पर्यावरण की कालगत क्रिया तथा अन्तर्क्रिया का अध्ययन आवश्यक है। किसी व्यक्ति के जैव, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक विकास के स्तर के निर्धारण में इन तत्त्वों के कार्य को इस प्रकार बताया जा सकता है—

आनुवंशिकता × पर्यावरण × काल = विकास स्तर!

हिर्श (१९६२) का कहना है कि किसी भी क्षण-विशेष पर पर्यावरण न केवल आनुवंशिकता के साथ ही वरन् विकास के एक प्राप्त स्तर के साथ भी अन्तर्क्रिया करता है। विकास का यह स्तर पुनः गत अनुभवों को प्रतिबिम्बित करता है और इस प्रकार यह वंशगत विकास तथा अपने स्तर तक के सीखने का परिणाम होता है।

विकास का अर्थ—प्राणी के भीतर विकास गर्भाधान से ही प्रारम्भ हो जाता है तथा जीवन-पर्यन्त तक चलता है। यह किसी न किसी रूप में चलता रहता है। उसके जीवन-प्रसार में शारीरिक एवं मानसिक क्षमताओं के स्वरूप में जो क्रमिक परिवर्तन उत्पन्न होते हैं, उन्हीं का नाम 'विकास' है। परिवर्तन प्रायः एक से नहीं रहते, मुख्यतः परिवर्तन प्रारम्भ में रचनात्मक होते हैं तथा बाद में विनाश के सूचक रहते हैं। क्योंकि जीवन के प्रारम्भिक दिनों में प्राणी के भीतर विवृद्धि तथा अन्तिम अवस्थाओं में ह्रास होता है। रचनात्मक परिवर्तन प्राणी में परिपक्वता लाते हैं और विनाशात्मक वृद्धावस्था की ओर ले जाते हैं। इस प्रकार विकास एक प्रत्यय है। इसके अन्तर्गत सम्पूर्ण शारीरिक और मानसिक दशाओं तथा परिवर्तनों का समावेश है। इस क्षेत्र में बाल्यावस्था का महत्त्व अधिक होता है क्योंकि इस अवस्था में बालक अपने आस-पास के वातावरण पर नियन्त्रण करना सीखता है। इस सम्बन्ध में कठिनाई आने पर अपनी वाणी का सहारा लेता है। उसमें जिज्ञासा की प्रवृत्ति होती है।

इस प्रकार विकास की प्रतिक्रिया तब तक चलती रहती है जब तक व्यक्ति पूर्णता को प्राप्त नहीं कर लेता है। दूसरे शब्दों में, हम विकास को एकीकरण की क्रिया कह सकते हैं। प्रत्येक व्यक्ति में प्रायः किसी न किसी प्रकार के परिवर्तन होते रहते हैं, चाहे वे मानसिक हों अथवा शारीरिक, उन्हें हम विकास ही कहते हैं। मानव में होने वाले परिवर्तन अत्यन्त उपयोगी होते हैं। हरलॉक का कथन है कि "विकास का अभिप्राय है—व्यवस्थित तथा समनुगत परिवर्तन जो परिपक्वता की प्राप्ति में सहायक हो।"

"व्यवस्थित" शब्द का अर्थ है कि इन परिवर्तनों में कोई न कोई क्रम अवश्य रहेगा और प्रत्येक परिवर्तन अपने पूर्व परिवर्तन पर निर्भर करेगा। "समनुगत" शब्द का तात्पर्य है कि ये परिवर्तन सम्बन्ध नहीं होंगे। इनमें परस्पर संतुलन रहेगा। जैसा कि महान अमेरिकन जीववैज्ञानिक ई० जी० कान्विलन (१९२३) ने एक बार कहा था—"मानव का विकास समस्त आश्चर्यों की चरम परिणति है।"

बाल्यावस्था का महत्त्व—मानव-विकास में बाल्यावस्था का महत्त्व अधिक पाया जाता है। बाल्यावस्था का समय ६ वर्ष से ११ वर्ष तक कहलाता है। जब शिशु शैशवावस्था को छोड़कर बाल्यावस्था में प्रवेश करता है तब तक उसका पर्याप्त विकास हो चुका होता है। सांसारिक परिस्थितियों से वह कुछ परिचित-सा भी होने लगता है। उसकी रुचियों तथा इच्छाओं का स्वरूप प्रायः निश्चित-सा होने लगता है। बाल्यावस्था में शारीरिक विकास बड़ी तेजी से होता है। आम तौर पर इस अवस्था में बालक का स्वास्थ्य अच्छा रहता है तथा शारीरिक शक्ति बढ़ जाती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल्यावस्था में ही बालक की सामाजिक भावना का विकास होता है। इस अवस्था में बालक किसी न किसी समुदाय का सदस्य बन जाता है। समुदाय के प्रति उसके मन में असीम श्रद्धा का भाव होता है तथा अपने समुदाय के हित के लिए वह बड़े से बड़ा त्याग करने के लिए भी सदा तत्पर रहता है। वह अपना अपमान सहन कर लेगा परन्तु उस समुदाय का नहीं, जिसका वह सदस्य है। इसी अवस्था में ही बालचर जैसी संस्थाएँ बालक के लिए बड़ी उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं क्योंकि यही वह समय है जबकि बालक में सहयोग, सहानुभूति, सहनशीलता तथा स्पर्धा आदि भावनाओं का विकास होने लगता है।

बाल्यावस्था में बालक की स्मरण-शक्ति का विकास बड़ी तीव्र गति से होता है। बालक की स्थायी स्मृति में वृद्धि होने लगती है तथा किसी पदार्थ के प्रति बालक का अवधान बढ़ने लगता है। बाल्यावस्था में जिज्ञासा की प्रवृत्ति विशेष रूप से प्रकाशित होती है। बालक अपने वातावरण से सम्बन्धित वस्तुओं के सम्बन्ध में बहुत-कुछ जानना चाहता है।.....'यह वस्तु ऐसी क्यों है।" "इस काम को कैसे पूरा करोगे ? यह पक्षी कहाँ जा रहे हैं ?" इस प्रकार के प्रश्नों की वह झड़ी-सी लगा देता है। अध्यापकों तथा बालक के माता-पिता का कर्त्तव्य है कि बालक के प्रश्नों का उचित रूप से समाधान करें। यदि वे बालकों को डरायेंगे या धमकायेंगे अथवा उसकी जिज्ञासाओं की उपेक्षा करेंगे तो उनकी जिज्ञासा वृत्ति दब जाएगी।

बाल्यावस्था में बालक की संचय प्रवृत्ति का भी परिचय मिलने लगता है। वह कई प्रकार के पदार्थों का संचय करता है। साथ ही साथ बालकों में रचनात्मक प्रवृत्ति भी सजग हो उठती है। वे कभी गीली मिट्टी से, कभी कंकड़-पत्थर इत्यादि से कुछ न कुछ बनाते ही रहेंगे।

बालक के भीतर सामाजिक व्यवहारों की उत्पत्ति उसके सामाजिक विकास की द्योतक होती है। बालकों का सामाजिक विकास बहुत कुछ उसके स्वास्थ्य और शारीरिक बनावट पर निर्भर करता है। अस्वस्थ, कुरूप, कुण्ठित विकास वाले बच्चे की अपेक्षा स्वस्थ, सुन्दर बालकों का सामाजिक विकास अधिक सामान्य ढंग से होता है। बाल्यावस्था में बालक को मनोरंजन का अवसर प्रदान करने से बालक के भीतर आत्म-विश्वास और आत्म-निर्भरता के गुणों का विकास होता है। जिन बालकों को ऐसे अवसर कभी नहीं मिलते वे इन गुणों से विहीन हो जाते हैं और इस कारण उनके व्यक्तित्व के भीतर अनेक असामाजिक प्रवृत्तियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। बालक का समाजीकरण घर के भीतर ही प्रारम्भ हो जाता है। अतः उसके सामाजिक विकास पर घर और घर की दशाओं का बड़ा गम्भीर प्रभाव पड़ता है। परिवार की सामाजिक, आर्थिक स्थिति के अतिरिक्त उसके आकार पर भी बालक की सामाजिकता निर्भर करती है। छोटे परिवारों में बालक की देखभाल उचित होती है और माता-पिता का पूरा स्नेह मिलता है। बड़े परिवारों में बालक के भीतर दुर्गुणों के विकसित होने की अधिक सम्भावना रहती है। माता-पिता व बालकों के परस्पर सम्बन्धों का भी प्रभाव पड़ता है।

दो वर्षों के भीतर ही प्रमुख संवेगों का उदय बच्चों में सामान्यतः हो जाता है। बालक के संवेग के साथ कुछ विशिष्ट व्यवहार संघात सम्बन्धित होते हैं जो उस संवेग की दशा में संयत करते हैं। जब बालक भयभीत होता है तो वह भयावह वस्तुओं, घटनाओं या व्यक्तियों से छुटकारा पाने का प्रयास करता है। भय की दशा में बच्चों के भीतर रोने, काँपने और चीखने की अभिव्यक्तियाँ दिखलाई पड़ती हैं। ऐसी दशा में बालक के रोंगटे खड़े हो जाते हैं, हृदय की धड़कन बढ़ जाती है, सांस की गति मन्द तथा स्वर धीमा पड़ जाता है। बालक के भीतर भय की उत्पत्ति के कई कारण हो सकते हैं। जैसे बालकों की व्यक्तिगत अप्रिय अनुभूतियाँ जैसे कभी आग से जल जाना या कभी किसी जानवर के काट लेने पर उस विशेष जानवर से डरना तथा एक कारण यह भी हो सकता है कि बालक अनुकरण करता है। जब बच्चे अपने माता-पिता और व्यक्तियों को किसी वस्तु से डरते देखते हैं तो खुद भी डरने लगते हैं। जहाँ तक भय के निवारण का प्रश्न है यथासम्भव बालक को भयानक परिस्थितियों से दूर रखना चाहिए और भय को उनके मन से समूल नष्ट कर देना चाहिए। निरन्तर भय का शिकार बने रहने से बालक कायर और दब्बू हो जाता है और उत्तम कोटि का सामाजिक समायोजन नहीं स्थापित कर पाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भय की तरह क्रोध की अवस्था में भी बालक के भीतर व बाहर अनेक प्रकार के परिवर्तन दिखलाई पड़ते हैं। क्रोध की प्रतिक्रियाएँ मुख्यतः आक्रामक होती हैं। छोटे बालक अपने क्रोध को रोकर, चीजों को तोड़फोड़ कर तथा बड़ों को मार-पीट कर व्यक्त करते हैं। कुछ बड़े बालकों में क्रोधावस्था में इधर-इधर भागने और जोर से चिल्लाने की प्रतिक्रियाएँ देखी जाती हैं। बालकों में क्रोध की उत्पत्ति के कई कारण होते हैं। छोटे बालकों की शारीरिक क्रियाओं को अवरुद्ध कर देने से वे क्रुद्ध हो जाते हैं। किसी बालक में मारपीट से या उसे बार-बार चिढ़ाने से उसमें क्रोध की उत्पत्ति होती है। क्रोध बालकों के स्वास्थ्य के लिए अहितकर होता है। क्रोधी बालकों का सामाजिक समायोजन उत्तम कोटि का नहीं हो पाता है।

बालक का क्रियात्मक विकास, उसके सामाजिक विकास में भी सहायता पहुँचाता है। बालक अथवा बालिका की "स्व" सम्बन्धी धारणा भी उसकी क्रियात्मक विकास के अनुरूप ही बनती है। वह अपनी शारीरिक तथा क्रियात्मक शक्ति के आधार पर ही अपने सम्बन्ध में सोचता है। बालकों में अथाह क्रियाशीलता होती है। मिटलमैन का कथन है कि बालक बालिकाओं की खेल की पृष्ठभूमि में क्रियात्मक योग्यताएँ ही रहती हैं। उनकी खेल क्रियाओं का स्वरूप ऐसा होता है—

कुछ करने की व्यग्रता
↓
खेल क्रिया
↓
संतोष प्राप्ति
↓
तनाव दूर होना

पाँच-छः वर्ष की अवस्था में कुछ की व्यग्रता अपनी चरम सीमा पर होती है, फिर वह मन्द पड़ जाती है और उद्देश्य-पूर्ति की ओर प्रेरित होती है। यदि इस क्रियाशीलता का दमन किया जाता है तो बालक को क्रोध आ जाता है अथवा और विकृत तरीकों से सन्तोष खोजने लगता है। अतएव प्राथमिक विद्यालयों में जो शिक्षण प्रदान किया जाय, उसमें क्रियाशीलता को प्रमुख स्थान मिलना चाहिए। ६-८ वर्ष के बालक कठोर शारीरिक क्रियाएँ करने में हर्ष का अनुभव करते हैं; जैसे—दौड़ना, ऊपर चढ़ना, गेंद से खेलना आदि। लेकिन बालिकाओं में यह प्रवृत्ति अपेक्षाकृत कम होती है। इन वर्षों में बालक ऐसी क्रियाएँ कर लेते हैं जिनमें आँख और हाथ का समन्वय हो। प्राथमिक कक्षाओं के बालक रेत में बहुत सुन्दर घर बना सकते हैं। कागज से नाव, गेंद, वायुयान आदि कई पदार्थों की रचना कर लेते हैं। थोड़े से अभ्यास से कई चीजों का निर्माण हो सकता है।

बाल्यावस्था और शिक्षा—ऊपर बाल्यावस्था की जिन विशेषताओं की चर्चा की गयी है उनके आधार पर यह स्पष्ट हो गया होगा कि इस अवस्था में बालक में क्रियाशीलता की प्रधानता होती है। इसलिए बाल्यावस्था का मानव-विकास में अत्यधिक महत्त्व है। बालक की शिक्षा इस प्रकार की होनी चाहिए जिसमें क्रियाशीलता की भावना का पोषण हो। किण्डरगार्टन पद्धति, मॉण्टेसरी पद्धति आदि विधियों में क्रिया के आधार पर ही शिक्षा का आयोजन किया गया है। साथ ही साथ इस बात पर भी पर्याप्त ध्यान दिया जाय कि बालक को शिक्षा में हस्त कलाओं का भी आयोजन हो जिससे उनकी रचनात्मक प्रवृत्ति का प्रकाशन भली-भाँति हो सके।

जीवन की प्रत्येक अवधि में प्रत्येक व्यक्ति को विशेष प्रकार के ऐसे कार्य करने होते हैं जिनको उनका समाज तथा स्वयं उसकी आवश्यकताएँ उस पर आरोपित करती हैं। व्यक्ति इन कार्यों का अपने पूर्व-अधिगमों और परिपक्वता की सतत प्रक्रिया के द्वारा समाधान करता है (हैवीघर्स्ट : १९५२)। उदाहरण के लिए, पर्यावरण का दवाव तथा स्वयं अपना विकास किसी बालक को क्रमशः चलना और बोलना सीखने की ओर प्रेरित करता है। चलना तथा बोलना प्रत्येक छोटे बच्चे का "विकासात्मक कार्य" है और इन तथा अन्य कार्यों का जिस सफलता के साथ अर्जन किया जाता है, उसका व्यक्ति की सामान्य समायोजन और सुख पर तथा बाद के कार्यों की सीखने की सफलता पर अत्यधिक प्रभाव पड़ता है।

सारांश—इस प्रकार सम्पूर्ण मानव-विकास में बाल्यावस्था का बहुत ही महत्त्व समझा जाता है क्योंकि बाल्यावस्था के भीतर शारीरिक, मानसिक, सांवेगिक और सामाजिक परिवर्तन होते रहते हैं, जो कि अपने में एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शैक्षिक जगत के ख्याति प्राप्त लेखक—

डॉ० सरयूप्रसाद चौबे, रिटायर्ड प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र संकाय, विश्वविद्यालय, गोरखपुर द्वारा लिखित

दो महत्त्वपूर्ण पुस्तकें

☆ ☆ ☆

हमारी शिक्षा समस्यायें

शीघ्र ही प्रकाश्य

प्रस्तुत ग्रन्थ दो खण्डों—'विभिन्न स्तरों पर शिक्षा-समस्यायें' तथा 'कुछ अन्य सामान्य शिक्षा समस्यायें'—में विभाजित है। विश्वविद्यालय स्तर के लिए यह एक मानक ग्रन्थ के रूप में तैयार की गई है। विविध समस्याओं के विवेचन के क्रम में उनके समाधान की ओर भी संकेत किया गया है। पुस्तक की भाषा सरल और सरस है। इसमें प्रयुक्त पारिभाषिक शब्द भारत सरकार द्वारा स्वीकृत शब्दावली से लिये गये हैं।

प्रथम खण्ड—इसमें विवेचित कुछ प्रस्तुत विषय इस प्रकार हैं :—पूर्व-प्राथमिक, प्राथमिक, माध्यमिक, विश्वविद्यालयीय स्तर पर समस्यायें, शैक्षिक प्रशासन, अनिवार्य शिक्षा तथा बहुउद्देश्यीय विद्यालय आदि, आदि।

द्वितीय खण्ड—इसमें विश्व की शिक्षा—समस्यायें, ज्ञान का विस्फोटन और पाठ्यक्रम के निर्धारण की समस्या, स्त्री-शिक्षा, सामाजिक, प्राविधिक, धार्मिक, नैतिक, शिक्षण-पद्धति, अध्यापक-प्रशिक्षण, पब्लिक स्कूल, राजनीति और शिक्षा, भाषा-समस्या, कार्यानुभव, व्यावसायीकरण, नवीन विकास, प्रयोग, शिक्षा की प्रगति आदि, आदि, विषयों की विवेचना है।

पुस्तक बी० एड०, एम० एड० तथा शिक्षा-शास्त्र के बी० ए० और एम० ए० के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी है।

तुलनात्मक शिक्षा

इस पुस्तक में तुलनात्मक शिक्षा के सिद्धान्तों तथा ग्रेट ब्रिटेन, रूस, यू० एस० ए०, फ्रान्स, चीन, जापान, टर्की और भारत के राष्ट्रीय शिक्षा-संगठनों का विशद विवेचन है। इस नवीन संस्करण में यथा-स्थान नये आँकड़े तथा विषय-सामग्री जोड़ दी गई हैं। इस विषय पर हिन्दी में लिखित किसी अन्य पुस्तक में इतने अधिक विषयों का इतने विस्तार से समावेश नहीं किया है जितना कि प्रस्तुत ग्रन्थ में विवेचित है। पुस्तक सभी विधि से विश्वविद्यालय स्तर के स्नातक और उत्तर स्नातक कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी है। देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों में यह पुस्तक मानक ग्रन्थ के रूप में मान्यता प्राप्त कर चुकी है। पुस्तक का तृतीय संशोधित एवं परिवर्द्धित संस्करण अब उपलब्ध है।

आकार : डिमाई | पृष्ठ संख्या : 816 | मूल्य : 37·50

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

[पृष्ठ १ का शेषांश]

संवेगात्मक तनाव पुनः एक बार बढ़ जाता है। इस अवधि की अधिकांश समस्याएँ सेक्स और रोमांस से सम्बन्धित होती हैं। अध्ययनों में यह देखा गया है कि किशोरों का सेक्स और रोमांस का जीवन यदि सामान्य और सरल ढंग से चलता रहता है तो उनका जीवन अति सुखद होता है। कुछ अध्ययनों में यह सिद्ध किया गया है कि किशोरावस्था के अन्त में जब उनकी स्कूल की शिक्षा पूर्ण हो जाती है तो वह अपने भविष्य के सम्बन्ध में सोचकर चिन्तित हो जाते हैं और इस चिन्ता के फल-स्वरूप भी कभी-शभी उनमें संवेगात्मक तनाव उत्पन्न हो जाता है।

—**'बाल मनोविज्ञान : बाल विकास' से**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्कृत साहित्य

☆

का

☆

☆

विद्यार्थी उपयोगी प्रकाशन

☆

☆

☆

विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा

कादम्बरी कथामुखम्	डा० कृष्ण अवतार बाजपेयी	१२.००
संस्कृत साहित्य का सुबोध इतिहास	डा० राजकिशोरसिंह	१२.००
संस्कृत साहित्य की प्रवृत्तियाँ	डा० जयकिशन प्रसाद	१८.००
संस्कृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास	डा० बाबूराम त्रिपाठी	१६.००
संस्कृत नाट्य साहित्य	डा० जयकिशन प्रसाद	१२.००
प्राचीन भारतीय कला एवं संस्कृति	डा० राजकिशोरसिंह, उषा यादव	२८.००
भारतीय संस्कृति	डा० राजकिशोरसिंह	२०.००
संस्कृत भाषा-विज्ञान	डा० राजकिशोरसिंह	१२.००
संस्कृत व्याकरणम्	डा० बाबूराम त्रिपाठी	२४.००
भारतीय दर्शन	डा० रामकृष्ण आचार्य एवं बाबूराम त्रिपाठी	१२.००
संस्कृत निबन्धांजलिः	डा० रामकृष्ण आचार्य	१५.००
ऋक्-सूक्त-समुच्चयः	डा० रामकृष्ण आचार्य	२०.००
मेघदूतम् [सम्पूर्ण, सटीक]	डा० रामकृष्ण आचार्य	९.००
मेघदूतम् [पूर्वमेघ, सटीक]	डा० रामकृष्ण आचार्य	६.५०
संस्कृत वाङ्मय : मौखिकी	डा० गोविन्द त्रिगुणायत	६.००
वैदिक साहित्य का इतिहास	डा० राजकिशोर सिंह	८.००
संस्कृत साहित्य का इतिहास	डा० द्वारिकाप्रसाद	९.००
काव्यप्रकाश : एक अध्ययन	डा० पारसनाथ द्विवेदी	६.५०
ध्वन्यालोकः एक अध्ययन	डा० पारसनाथ द्विवेदी	३.५०
कालिदास और अभिज्ञान शाकुन्तलम्	डा० जयकिशन प्रसाद	५.५०
चतुर्वेद	डा० जयकिशन प्रसाद	५.००
कालिदास और मेघदूत	डा० जयकिशन प्रसाद	५.००
सुबोध संस्कृत भाषा-विज्ञान	डा० जयकिशन प्रसाद	५.००
साहित्य दर्पण : एक अध्ययन	डा० जयकिशन प्रसाद	५.००
संस्कृत निबन्ध कौमुदी	डा० बाबूराम त्रिपाठी	४.००
रघुवंशम् [प्रथम सर्ग]	डा० जयकिशन प्रसाद	४.५०
रघुवंशम् [द्वितीय सर्ग]	डा० रामकृष्ण आचार्य	४.००
रघुवंशम् [१३ वाँ सर्ग]	डा० रामकृष्ण आचार्य	३.००
अभिज्ञान शाकुन्तलम् : चतुर्थ अंक	डा० रामकृष्ण आचार्य	४.००
अपरीक्षितकारकम् (पंचतन्त्र से)	डा० पारसनाथ द्विवेदी	४.५०
शिशुपालवधम् महाकाव्यम् [सर्ग १, २]	डा० पारसनाथ द्विवेदी	१०.००
शिशुपाल वधम् [सर्ग १]	डा० पारसनाथ द्विवेदी	६.००
कुमार सम्भवम् [प्रथम सर्ग]	डा० जयकिशन प्रसाद	६.००
कुमार सम्भवम् [पंचम सर्ग]	डा० पारसनाथ द्विवेदी	५.००
किरातार्जुनीयम् [प्रथम सर्ग]	पं० वेणीमाधव शास्त्री मुसलगाँवकर	५.००
किरातार्जुनीयम् [द्वितीय सर्ग]	पं० वेणीमाधव शास्त्री मुसलगाँवकर	६.००
भारतीय दर्शन (प्रश्नोत्तर)	डा० राजकिशोरसिंह	८.००
भारतीय संस्कृति [प्रश्नोत्तर में]	डा० जयकिशन प्रसाद	५.००
प्राचीन भारत का सांस्कृतिक इतिहास तथा संस्कृत साहित्य का इतिहास	डा० जयकिशनप्रसाद खण्डेलवाल	७.००
संस्कृत निबन्ध कौमुदी	डा० बाबूराम त्रिपाठी	५.५०
व्याकरण कौमुदी [भाग–१]	,, ,,	३.००
चन्द्रालोक : पंचम मयूख	डा० पारसनाथ द्विवेदी	२.५०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नई पुस्तकें

शिक्षा एवं मनोविज्ञान

मनोविज्ञान की पद्धतियाँ एवं सिद्धान्त (संशोधित तृतीय संस्करण), डा० जे० डी० शर्मा, डिमाई, पृष्ठ ६२४, मूल्य २५·००

प्रयोगात्मक मनोविज्ञान (संशोधित तृतीय संस्करण) एम० ए० हकीम, डा० विपिन अस्थाना, डिमाई, पृष्ठ ३६२, मूल्य १४·००

An Introduction to Major Philosophies of Education (1st Edition) Dr. R. S. Pandey, Demy, pp. 204, Price Rs. 14·00, Lib. Edn. Rs. 20·00.

विकासात्मक मनोविज्ञान (संशोधित तृतीय संस्करण) भाई योगेन्द्रजीत, डिमाई, पृष्ठ ३६२, मूल्य १५·००

तुलनात्मक शिक्षा (संशोधित तृतीय संस्करण) डा० सरयूप्रसाद चौबे, डिमाई, पृष्ठ ८१६, मूल्य ३७·५०

शिक्षा-मनोविज्ञान (संशोधित सत्रहवाँ संस्करण) भाई योगेन्द्रजीत, क्राउन, पृष्ठ ३३२, मूल्य १०·००

वस्त्र-विज्ञान के मूल सिद्धान्त (तेरहवाँ संस्करण) डा० जी० पी० शैरी, डिमाई, पृष्ठ २०४, मूल्य ८·५०

शैक्षिक मूल्यांकन (बी० टी० सी० के द्विवर्षीय पाठ्यक्रमानुसार) पी० डी० पाठक, डिमाई, मूल्य ४·००

पाठशाला-प्रबन्ध, स्वास्थ्य शिक्षा एवं सामुदायिक संगठन (बी० टी० सी० के द्विवर्षीय पाठ्यक्रमानुसार) दिनेशचन्द्र भारद्वाज, डिमाई, मूल्य ७·००

विविध

हिन्दी के प्रतिनिधि एकांकीकार (प्रथम संस्करण) डा० द्वारिकाप्रसाद सक्सेना, डिमाई, पृष्ठ ४६०, मूल्य ३०·००

नवीन साहित्यिक निबन्ध (संशोधित तृतीय संस्करण) डा० गोविन्द त्रिगुणायत, डिमाई, पृष्ठ ४४८, मूल्य २२·५०

साहित्यिक निबन्ध (संशोधित उन्नीसवाँ संस्करण) राजनाथ शर्मा, डिमाई, पृष्ठ ६६२, मूल्य ३५·००

अभिनव साहित्यिक निबन्ध (संशोधित द्वितीय संस्करण) डा० राजेश्वरप्रसाद चतुर्वेदी, डिमाई, पृष्ठ ६४०, मूल्य ३०·००

पंचतन्त्रम् : अपरीक्षितकारकम् (संशोधित चतुर्थ संस्करण) डा० पारसनाथ द्विवेदी, क्राउन, पृष्ठ १३६, मूल्य ४·५०

पंचवटी (आलोचनात्मक) डा० कृष्णदेव शर्मा, क्राउन, पृष्ठ १८४, मूल्य ५·००

[पृष्ठ ७ का शेषांश]

बोलते हों, किसी भी धर्म या मत को क्यों न मानते हों, राष्ट्र-समस्याओं में, उसके दुःख-सुख में, उसकी समृद्धि में हम सभी समभागी हैं, अपनी समस्त विविधताओं के होते हुए भी सांस्कृतिक एवं भावात्मक दृष्टि से हम सभी एक हैं तथा आत्मिक दृष्टि से सुशिक्षित हैं।

उपसंहार—सद्व्यवहार के बिना बौद्धिक स्वतन्त्रता और साहस के अवांछित परिणाम उत्पन्न होने की सम्भावना है, उसी प्रकार लोगों में कार्य-शक्ति, परिश्रम, संघर्ष और उत्साह का विकास भी संशय से खाली नहीं है यदि इसके साथ ही शान्तिप्रियता, सन्तोष और आत्म-विश्लेषण का प्रशिक्षण न हो जो कि भारतीय संस्कृति के साथ आत्मिक शिक्षा की विशेषताएँ रही हैं—निःसन्देह तात्कालिक आवश्यकताओं के कारण हमें क्रियाशीलता पर अधिक बल देना चाहिए किन्तु इसके लिए हम उन स्थायी और शाश्वत मूल्यों का 'सा विद्या या विमुक्तये' का बलिदान नहीं कर सकते, जिसकी गोद में पल कर मानवता उच्चतम शिखर पर पहुँचती है। अतः यह कहना शत-प्रतिशत सही है कि आत्मा की शिक्षा ही शिक्षा की आत्मा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षण-कला, शिक्षण तकनीक एवं नवीन पद्धतियाँ
डा० एस० एस० माथुर १८.००

सफल शिक्षण कला
पी० डी० पाठक १५.००

शिक्षण-तकनीकी
(Technology of Teaching)

शिक्षण-तकनीकी
शैलेन्द्र भूषण एवं
डा० अनिलकुमार वार्ष्णेय १०.००

शैक्षिक तकनीकी के मूल आधार
डा० एस० पी० कुलश्रेष्ठ १६.००

विद्यालय-प्रशासन
(School Administration)

Educational Administration 22.00
S. P. Sukhia Lib. edn. 30.00

विद्यालय प्रशासन एवं संगठन
एस० पी० सुखिया १४.१५

शैक्षिक एवं विद्यालय प्रशासन
भाई योगेन्द्रजीत १५.००

विद्यालय-संगठन एवं स्वास्थ्य शिक्षा
डा० रामपालसिंह वर्मा १२.००

विद्यालय व्यवस्था श्री केशवप्रसाद ७.५०

शिक्षा-प्रशासन डा० उमेशचन्द्र कुदेसिया १२.००

स्वास्थ्य-शिक्षा
(School Hygiene)

स्वास्थ्य-शिक्षा डा० जी० पी० शैरी १६.००

School Health Education & Public Health
Dr. S. P. Chaube, 20.00
Akhilesh Chaube Lib. Edn. 30.00

मापन एवं मूल्यांकन
(Measurement & Evaluation)

शैक्षिक मूल्याँकन
डा० रामपालसिंह वर्मा १०.००

मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सरल मूल्यांकन
डा० रामपालसिंह वर्मा ६.००

Measurement and Evaluation in Psychology & Education
Dr. Bipin Asthana & Dr. Agrawal
(In Press)

मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन
डा० आर० एन० अग्रवाल,
डा० बिपिन अस्थाना १८.००

सांख्यिकी
(Statistics)

सांख्यिकी के मूल तत्त्व (सामाजिक विज्ञानों में)
डा० एच० के० कपिल २७.७०

मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी
डा० (श्रीमती) प्रीती वर्मा,
डा० डी० एन० श्रीवास्तव १७.००

प्रारम्भिक सांख्यिकी
डा० प्रीती वर्मा, डा० श्रीवास्तव १०.००

शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग
डा० सुरेश भटनागर ७.००

शिक्षा-दर्शन
(Philosophy of Education)

भारत में शिक्षा-दर्शन और शैक्षिक समस्याएँ
पाठक एवं त्यागी १७.००

शिक्षा-दर्शन डा० रामनाथ शर्मा १५.००

शिक्षा-दर्शन डा० रामशकल पाण्डेय १६.००

शिक्षा के दार्शनिक सिद्धान्त
पी० डी० पाठक, त्यागी १८.००

निर्देशन
(Guidance)

शैक्षिक मापन एवं निर्देशन
उमेश प्रसाद सिंह ४.००

शिक्षा में निर्देशन एवं परामर्श
डा० सीताराम जायसवाल १२.००

शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन
डा० रामपालसिंह वर्मा, उपाध्याय १६.००

तुलनात्मक-शिक्षा

तुलनात्मक शिक्षा
डा० सरयू प्रसाद चौबे ३७.५०

शिक्षा व्यवस्थाएँ डा० सरयू प्रसाद चौबे १२.००

विषय-शिक्षण—इसके अन्तर्गत हिन्दी-शिक्षण, इतिहास, सामाजिक अध्ययन, नागरिकशास्त्र, भूगोल, विज्ञान, जीव-विज्ञान, गणित, संस्कृत, वाणिज्य, अर्थशास्त्र, गृहविज्ञान व अंग्रेजी-शिक्षण पर विभिन्न विद्वानों की लिखी सरल भाषा में पुस्तकें उपलब्ध हैं।

उक्त सभी प्रश्नपत्रों पर हिन्दी तथा अंग्रेजी में प्रश्नोत्तर रूप में भी पुस्तकें प्राप्य हैं।

सूचीपत्र निःशुल्क मँगायें

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग द्वारा संचालित

✡ प्रथमा ✡ विशारद ✡ साहित्यरत्न

✡ उपवैद्य ✡ वैद्य विशारद एवं ✡ आयुर्वेदरत्न

आदि परीक्षाओं की

सं० २०३९ (१९८२) के लिए

पाठ्य एवं सहायक पुस्तकों की सूचियाँ

हमारे यहाँ से निःशुल्क उपलब्ध हैं

[सम्मेलन द्वारा (१) प्रथमा, (२) विशारद एवं (३) साहित्यरत्न परीक्षाओं की विवरण पत्रिकाएँ हमारे द्वारा प्रथक-प्रथक प्रकाशित की जाती हैं, जो हमारे यहाँ से उपलब्ध हैं।]

अधिक जानकारी हेतु सम्मेलन की बड़ी विवरण पत्रिका ५-५० धनादेश से डाक व्यय सहित भेजकर रजिस्टर्ड डाक द्वारा हमसे प्राप्त करें।

✡ हम सम्मेलन परीक्षाओं की पुस्तकों के प्रमुख विक्रेता हैं।

✡ एम० ए० हिन्दी, संस्कृत, मनोविज्ञान, गृहविज्ञान, बी० टी० सी० तथा बी० एड० की सभी पाठ्य एवं सहायक पुस्तकें हमारे यहाँ से उचित मूल्य पर प्राप्त होती हैं तथा पुस्तक-सूची निःशुल्क भेजी जाती है।

✡ हमारे यहाँ पुस्तकें तुरन्त वी० पी० पैकिट द्वारा भेजने की व्यवस्था है।

✡ ग्राहकों की मांग के अनुसार सही पुस्तकें भेजना हमारी विशेषता है।

✡ सम्मेलन की परीक्षाओं के सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की समस्या के लिये हमारी सेवाएँ सहर्ष प्रस्तुत हैं।

सम्मेलन परीक्षाओं के दिग्दर्शन (गाइडें) नवीन पाठ्यक्रमानुसार सभी तैयार हैं। कृपया पत्र-व्यवहार करें।

हमारी प्रमुख विशेषता है—

● शीघ्र एवं सन्तोषजनक सेवा ● मधुर व्यवहार

● प्रत्येक पत्र का तुरन्त एवं समुचित उत्तर

कृपया एक बार सेवा का अवसर दें।

विनोद पुस्तक मन्दिर

डा० रांगेय राघव मार्ग, आगरा.

प्रकाशक एवं मुद्रक : विनोद कुमार अग्रवाल द्वारा अग्रवाल प्रिंटिंग प्रेस, आगरा–2
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

17.1-83

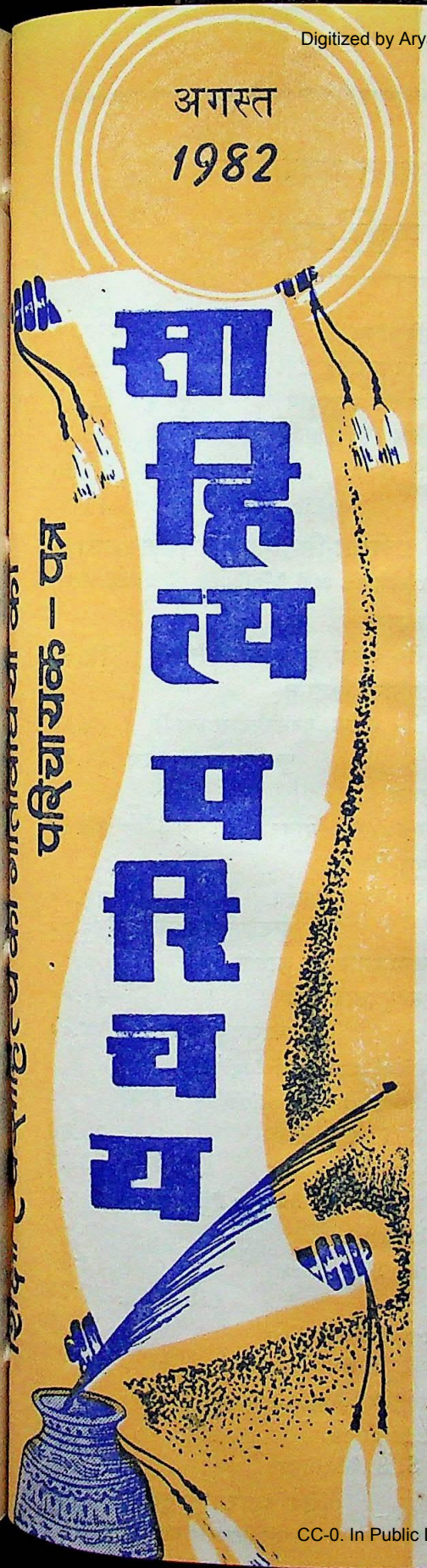

'साहित्य-परिचय'

का

नैतिक-शिक्षा विशेषांक

'विनोद पुस्तक मन्दिर', उत्तर प्रदेश की ऐतिहासिक नगरी, आगरा का प्रसिद्ध हिन्दी-प्रकाशन-प्रतिष्ठान है। इस प्रतिष्ठान की ओर से प्रकाशन-जगत् की बहुकोणीय गति-प्रगति का सन्देश वहन करने वाला मासिक पत्र 'साहित्य-परिचय' पिछले सत्रह वर्षों से प्रकाशित हो रहा है। इस अवधि में इसके कुल तेरह विशेषांक प्रकाश में आये हैं, जिनके द्वारा शिक्षाशास्त्र के अतिरिक्त शैक्षिक विधि और शैक्षिक विकास से सम्बद्ध मूल्यवान साहित्य का प्रस्तवन प्राविधिक और वैज्ञानिक दृष्टि से हुआ है, साथ ही शिक्षा जगत् के लिये अनिवार्य शोध-स्वाध्याय-सामग्री भी उपन्यस्त हुई है। कहना न होगा कि व्यापक विषयों से सम्बद्ध इन विशेषांकों ने शिक्षाशास्त्र के अध्ययन-अनुशीलन के क्षेत्र में ऐतिहासिक क्रोशशिला की स्थापना की है।

'साहित्य-परिचय' का यथाप्रस्तुत तेरहवाँ नैतिक शिक्षा विशेषांक (मूल्य : पन्द्रह रुपये; सजिल्द पुस्तकालय-संस्करण : बीस रुपये) अपने पूर्ववर्ती उत्कृष्ट विशेषांकों की परम्परा का बखूबी निर्वाह करता है। इस विशेषांक में आधिकारिक लेखनियों द्वारा प्रसूत कुल तिरेसठ रचनाएँ समाकलित हैं; जिनके द्वारा नैतिक शिक्षा के विभिन्न आयामों पर प्रामाणिकता के साथ प्रकाश-निक्षेप किया गया है। इसमें वैयक्तिक और सामाजिक जीवन की गतिशीलता के बाधक और विबोधक दोनों प्रकार के तत्त्वों की विवेचना के साथ विद्यार्थियों के कर्तव्यों का प्रतिपादन बड़ी समीचीनता के साथ हुआ है; जिसका मुख्य उद्देश्य छात्रों की आधुनिक शिक्षण-विधि का परिष्करण और उन्नयन है। यह विशेषांक न केवल शिक्षार्थियों, अपितु राष्ट्र की वर्त्तमान नीतिभ्रष्टता से चिन्तित शिक्षा-शास्त्रियों और शिक्षाशास्त्र के अध्यापकों के लिये भी दिशानिर्देशक सिद्ध होगा, इनमें संशय नहीं।

शुद्ध मुद्रण का आदर्श उपस्थापित करने वाले इस विशेषांक के परामर्शदाता डॉ० सरयूप्रसाद चौबे, प्रधान सम्पादक डॉ० रामशकल पाण्डेय एवं सम्पादक श्री विनोद कुमार अग्रवाल का यह सामयिक सत्प्रयत्न अवश्य ही साधुवादार्ह है।

—परिषद्-पत्रिका

(जुलाई—१९८२)

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्

पटना-४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विभिन्न विश्वविद्यालयों के नवीन पाठ्यक्रमानुसार—

छात्रों एवं पुस्तकालयों के लिये हमारा प्रकाशित

छात्रोपयोगी प्रशिक्षण साहित्य

☆ ☆ ☆

भारतीय शिक्षा
(Indian Education)

भारतीय शिक्षा के प्रवर्त्तक
सं० डा० आत्मानन्द मिश्र १५.००

शिक्षा में नव चिन्तन
सं० डा० रामपालसिंह (प्रेस में)

आदि और मध्ययुगीन भारत में शिक्षा
डा० सरयूप्रसाद चौबे १४.००

आधुनिक भारतीय शिक्षा [इतिहास और समस्याएँ]
पी० डी० पाठक, गुरसरनदास त्यागी १६.००

भारतीय शिक्षा का इतिहास
बी० पी० जौहरी, पी० डी० पाठक १५.९५
पुस्तकालय संस्करण २२.५०

भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ
पी० डी० पाठक १९.८०
पुस्तकालय संस्करण ३०.००

भारतीय शिक्षा की सामयिक समस्याएँ
रामखेलावन चौधरी,
राधावल्लभ उपाध्याय १५.००

भारतीय शिक्षा (प्राचीन से वर्तमान काल तक)
डा० सरयू प्रसाद चौबे १४.००

विश्व के श्रेष्ठ शिक्षाशास्त्री
डा ०रामशकल पांडेय १२.००

भारतीय शिक्षा के आयोग एवं समितियाँ
पी० डी० पाठक, गुरसरनदास त्यागी १७.००
पुस्तकालय संस्करण २२.००

शिक्षा-मनोविज्ञान
(Educational Psychology)

शिक्षा-मनोविज्ञान
डा० एस० एस० माथुर १९.००

शिक्षा-मनोविज्ञान (संक्षिप्त संस्करण)
डा० एस० एस० माथुर १७.००

शिक्षा-मनोविज्ञान
पी० डी० पाठक १६.४०

शिक्षा-मनोविज्ञान
डा० रामपालसिंह वर्मा १८.००
राधावल्लभ उपाध्याय पु० सं० २८.००

Educational Psychology
Dr. S. S. Mathur 25.50
Lib. edn. 40.00

शिक्षा-सिद्धान्त और शिक्षणकला
(Principles and Methods of Education)

शिक्षा के सिद्धान्त
पी० डी० पाठक, गुरसरनदास त्यागी १५.००

शिक्षा के सामान्य सिद्धान्त
पी० डी० पाठक, गुरसरनदास त्यागी २४.००
पुस्तकालय संस्करण ३२.००

शिक्षा-सिद्धान्त
डा० एस० एस० माथुर १७.००

शिक्षा के मूल सिद्धान्त
डा० रामशकल पाण्डेय २१.००
पुस्तकालय संस्करण २८.००

शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार
डा० सरयूप्रसाद चौबे २०.००
पुस्तकालय संस्करण २४.००

Philosophical and Sociological Foundations of Education
Dr. S. P. Chaube, 20.00
Akhilesh Chaube Lib. edn. 30.00

An Introduction to Major Philosophies of Education
Dr. R. S. Pandey 14·00
Lib. Edn. 20·00

Principles of Education
Dr. R. S. Pandey 16.00

A Sociological Approach to India Education
Dr. S. S. Mathur 28.00

[शेष आवरण के तृतीय पृष्ठ पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-परिचय

[शिक्षा और साहित्य की प्रगति का परिचायक पत्र]

[वर्ष 17 : अंक 8]
अगस्त, 1982

सम्पादक
विनोद कुमार अग्रवाल
एम० ए०, साहित्यरत्न

स्वामित्व
विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

वार्षिक शुल्क : 15·00
रजिस्ट्री से विशेषांक मँगवाने पर
18·00
[विदेशों में—डाक व्यय सहित मात्र 40·00]

साहित्य-परिचय
डा० रांगेय राघव मार्ग
आगरा—2
फोन : 76486

किशोरावस्था में संवेगात्मक जीवन

यह परम्परागत विश्वास है कि किशोरावस्था गम्भीर उथल-पुथल की अवस्था है। गम्भीर उथल-पुथल का तात्पर्य संवेगात्मक अवस्था से है। बाल्यावस्था और प्रौढ़ावस्था की अपेक्षा किशोरावस्था में संवेगात्मक अस्थिरता और अति संवेगात्मकता अपेक्षाकृत अधिक होती है। यदि बालकों में संवेगात्मक विकास का अध्ययन किया जाय तो पता चलता है कि बाल्यावस्था और प्रौढ़ावस्था में संवेगात्मक स्थिरता, किशोरावस्था की अपेक्षा अधिक पाई जाती है। हरलॉक और उसके अनुयायियों का विचार है कि संवेगात्मक अस्थिरता और अति संवेगात्मकता का मुख्य कारण किशोरावस्था में होने वाले शारीरिक और ग्रन्थीय परिवर्तन हैं। कुछ अन्य मनोवैज्ञानिकों ने सामाजिक सम्बन्धों की व्यापकता को बताया है, जिसके कारण समायोजन में जटिलता उत्पन्न होती है और फलस्वरूप संवेगात्मक तनाव, संवेगात्मक अस्थिरता, और अन्त में अति संवेगात्मकता के लक्षण उत्पन्न होते हैं। अति संवेगात्मकता या संवेगात्मकता का सभी किशोरों में पाया जाना आवश्यक नहीं है। यह देखा गया है कि जिन किशोरों की शिक्षा-दीक्षा उपयुक्त ढंग से चलती है, उनमें इस प्रकार के लक्षण अपेक्षाकृत कम मात्रा में पाये जाते हैं। उपरोक्त कारणों के अतिरिक्त कुछ अन्य कारण भी सार्थक एवं महत्त्वपूर्ण हैं; जैसे—अनुपयुक्त पारिवारिक सम्बन्ध, परिवारीजनों का अधिक हस्तक्षेप, विद्यालय की असफलताएँ, नवीन परिस्थितियों में कुसमायोजन, लक्ष्य प्राप्ति में आने वाली कठिनाइयाँ आदि। तीन प्रकार के व्यक्ति विशेष रूप से उसमें संवेगात्मक अस्थिरता और अति संवेगात्मकता के लक्षण उत्पन्न करते हैं। पहले प्रकार के वह हैं जो उसके परिवार से सम्बन्धित होते हैं, दूसरे प्रकार के वह लोग हैं जो उसके विद्यालय से सम्बन्धित होते हैं और तीसरे प्रकार के वह लोग हूँ जो इसकी मित्रमण्डली में आते हैं अथवा उसके साथी समूह के सदस्य। उपरोक्त के अतिरिक्त प्रत्येक किशोर का कोई न कोई विपरीत सेक्स का व्यक्ति होता है जिससे वह अपने व्यक्तिगत सम्बन्ध बढ़ाना चाहता है। परन्तु जब इनके यह सपने तृप्त नहीं हो पाते हैं तो वे चिन्तित हो उठते हैं और उनमें संवेगात्मक असन्तुलन और तनाव उत्पन्न हो जाता है।

इस दिशा में कुछ अध्यापकों से यह स्पष्ट है कि किशोरावस्था में अति संवेगात्मकता केवल पूर्व किशोरावस्था में ही अधिक होती है। इसके बाद धीरे-धीरे उनकी अति संवेगात्मकता, सामान्य संवेगात्मक अभिव्यक्ति में परिवर्तित होती जाती है। किशोरावस्था की अन्तिम अवधि में कुछ नई समस्याएँ उत्पन्न होती हैं जिनके फलस्वरूप

[शेष पृष्ठ १४ पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[नवीन पाठ्यक्रमानुसार]

बी. टी. सी. परीक्षा (द्वि-वर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए हमारी प्रकाशित वर्ष १९८२-८३ की पाठ्य एवं सन्दर्भ पुस्तकें

प्रथम वर्ष हेतु

प्रथम प्रश्नपत्र- शिक्षाशास्त्र

बेसिक शिक्षाशास्त्र दिनेशचन्द्र भारद्वाज ७.००
बेसिक शिक्षा सिद्धान्त प्रेमदत्त शर्मा ३.५०
शिक्षा के मूल सिद्धान्त डा० रामशकल पाण्डेय २१.००
शिक्षा के सामान्य सिद्धान्त पाठक, त्यागी २४.००
शिक्षा-सिद्धान्त डा० एस० एस० माथुर १७.००

द्वितीय प्रश्नपत्र-शिक्षा मनोविज्ञान

बेसिक शिक्षा मनोविज्ञान भारद्वाज ७.५०
शिक्षा मनोविज्ञान डा० एस० एस० माथुर १७.००
शिक्षा मनोविज्ञान पी० डी० पाठक १६.४०
शिक्षा मनोविज्ञान डा० वर्मा व उपाध्याय १८.००

तृतीय प्रश्नपत्र-शिक्षण सिद्धान्त

बेसिक शिक्षण सिद्धान्त दिनेशचन्द्र भारद्वाज ६.५०
शिक्षण कला, शिक्षण तकनीक एवं नवीन-पद्धतियाँ डा० एस० एस० माथुर १८.००
सफल शिक्षण कला पाठक, त्यागी १५.००

द्वितीय वर्ष हेतु

चतुर्थ प्रश्नपत्र-प्रारम्भिक शिक्षा की समस्यायें तथा अभिनव प्रवृत्तियाँ एवं शैक्षिक मूल्यांकन

प्राथमिक शिक्षा की समस्याएँ गंगामहेश मिश्र एवं अन्य ७.००
शैक्षिक मूल्यांकन एवं परामर्श पी० डी० पाठक ४.००

पंचम प्रश्नपत्र-पाठशाला प्रबन्ध, सामुदायिक एवं स्वास्थ्य शिक्षा

पाठशाला प्रबन्ध, स्वास्थ्य शिक्षा एवं सामुदायिक संगठन दिनेशचन्द्र भारद्वाज ७.००

खण्ड (ख) शिक्षण विधियाँ

सरल शिक्षण विधियाँ दिनेशचन्द्र भारद्वाज १०.००
उद्यान-विज्ञान शिक्षण एम० एल० वर्मा ६.००
कृषि शिक्षण तथा बागवानी ,, ,, ६.००
गृह-शिल्प शिक्षण सत्यनारायण दुबे 'शरतेन्दु' ३.००
बी० टी० सी० वाणिज्य शिक्षण उदयवीर सक्सेना ४.००
शिल्प-शिक्षण सत्यनारायण दुबे ८.००
काष्ठकला-शिक्षण ,, ,, ५.००
बी० टी० सी० पुस्तक कला शिक्षण ,, ,, ५.००

सहायक पुस्तकें

● **बी० टी० सी० शिक्षा दिग्दर्शन** (गाइड) प्रथम वर्ष [संस्करण १९८२/८३] शर्मा एवं सतसंगी १५.००
● **बी० टी० सी० शिक्षा दिग्दर्शन** (गाइड) द्वितीय वर्ष [संस्करण १९८२/८३] ,, १२.५०

विशेष (१) अध्यापकों से प्रार्थना है कि वह उपहार प्रतियों (स्पेसीमेन) के लिये हमसे सीधे एवं तुरन्त सम्पर्क करें। अधिक पुस्तकें मँगाने पर अधिक कमीशन की भी सुविधा है।

(२) शिक्षण-विधियों के लिये अलग-अलग शिक्षण पर अलग-अलग पुस्तकें उपलब्ध हैं, कृपया हमको लिखें।

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्मा की शिक्षा ही शिक्षा की आत्मा है

डॉ० जमनालाल बायती
सहायक प्रधानाध्यापक, राजकीय हायर सैकेण्डरी स्कूल, जालौर (राज०)

"मनुष्य से बढ़कर कुछ भी श्रेष्ठ नहीं है।"

—महाभारत

× × ×

"अब तक आपने सुना कि पुरस्कार प्राप्त अध्यापकों ने उद्यान लगाये, भवन बनवाये, प्रयोगशालाएँ बनवाईं, क्रीड़ांगणों का रखरखाव किया, इसी भाँति और भी कई बातों की गिनती की। क्या यही सब शिक्षा है? इन पुरस्कार प्राप्त अध्यापकों में से किसी के लिए यह नहीं कहा गया कि इन्होंने इन्सान बनाया, सुनागरिक बनाया।"

—राजस्थान के राज्यपाल द्वारा शिक्षक सम्मान समारोह में दिए गये भाषण से।

× × ×

"आज जिस धर्म-कर्म-हीन शिक्षा से निकल कर जीवन तथा समाज में प्रवेश कर रहे हैं, वह शिक्षा हमको उपयुक्त दृष्टि देने के बजाय 'थोथा चना बाजे घना' वाली कहावत ही चरितार्थ कर रही है। ज्ञान का मनुष्य भीतर से खोखला तथा कुरूप है। इसलिए यह प्रदर्शन तथा आडम्बर का, उग्रता तथा अनुशासन-हीनता का एवं लापरवाही एवं उदण्डता का शिकार है।"

—श्री दयालचन्द सोनी के 'अनौपचारिका' में छपे ताजा लेख से।

× × ×

"आप मुझे मछली देंगे तो मैं आज अपना पेट भर सकूँगा, किन्तु यदि आप मुझे मछली पकड़ना सिखा दें तो मैं हमेशा ही पेट भर सकूँगा।"

—एक विदेशी कहावत

यह लेख एमिटी इण्टरनेशनल द्वारा राजस्थान से प्रथम स्थान पर पुरस्कृत हुआ है।

●

× × ×

आज विश्व की सामाजिक स्थिति बड़ी तनावपूर्ण है। विश्व में शांति युद्ध चरम सीमा पर पहुँच चुका है। अन्य शब्दों में इसे मनोवैज्ञानिक युद्ध भी कहा जाता है। विज्ञान का विकास इतना अधिक हो चुका है कि बात की बात में विश्व का संहार किया जा सकता है। न केवल इतना ही, किसी भी देश की आन्तरिक स्थिति भी संतोषजनक नहीं कही जा सकती। खाद्यान्नों के अवैध संग्रह पर रोज छापे मारे जा रहे हैं; प्राणलेवा नकली दवाइयाँ बनाई जा रही हैं; हल्दी तथा मिर्च में ईंटें पिसवा कर खुले बाजार में बेची जा रही हैं; शिक्षण संस्थाओं में अध्यापकों का घेराव किया जा रहा है; हड़तालें हो रही हैं। कोई दिन ऐसा नहीं जाता जब समाचार पत्रों में बलात्कार, आत्महत्या के समाचार न छपे हों। दहेज को लेकर कई महिलायें जीवन से हाथ धो रही हैं; इञ्जीनियर घटिया किस्म की सामग्री से पुल बना रहे हैं; जनसाधारण ही नहीं, सम्पन्न लोग भी रोज कर की चोरी में पकड़े जा रहे हैं; विद्यार्थी ही नहीं, कई अन्य लोग भी बिना टिकट रेलों में यात्रा करते हुए पकड़े जा रहे हैं; विद्यार्थी सार्वजनिक सम्पत्ति को नष्ट कर रहे हैं, उसे आग की भेंट चढ़ा रहे हैं; कर्मचारी समय पर कार्य नहीं निपटाते हैं, राष्ट्रीय चरित्र गर्त में डूब गया है; निर्माणाधीन मकान की ईंटें रातोंरात चुरा ली जाती हैं। न तो युवा बुजुर्गों की सीख मानते हैं तथा न बुजुर्ग लोग युवा लोगों के मन की बात जानने का प्रयत्न करते हैं। लगता है दोनों ने प्रतिष्ठा का प्रश्न बना लिया है।

सम्पूर्ण मानव-समाज को दो भागों में—सम्पन्न और विपन्न या शोषित तथा शोषक—बाँटा जा सकता है। शिक्षित युवावर्ग में उत्तरोत्तर बढ़ रही आस्था-हीनता, बेचैनी, आक्रोश, निराशा आदि इसी असंतुलित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शैक्षिक विकास का फल है। आज मानव समाज धर्म, भाषा, आर्थिक स्थिति, संस्कृति तथा क्षेत्रीयता के आधार पर टुकड़ों में बँट गया है तथा एक-दूसरे के साथ कष्ठच्छेदी प्रतिशोध करते हैं। ऐसी शिक्षा हमारे लिए उपयोगी कदापि नहीं हो सकती जो मानव को एक कार्य के लिए उपयुक्त तथा अन्य कार्यों के लिए अनुपयुक्त बनाती हो। साधारणतया शिक्षा की आवश्यकता दोनों ही प्रकार से मानव समाजों को है—विकसित तथा विकासशील राष्ट्रों को भी, किन्तु इन दो प्रकार के राष्ट्रों की आवश्यकतायें भिन्न हैं। हमारा राष्ट्र एक विकासशील या विकासोन्मुखी राष्ट्र है। अतः इसकी कुछ समस्याएँ वही हैं जो अन्य विकासोन्मुखी राष्ट्रों की हैं। किन्तु साथ ही हमारी कुछ ऐसी विशिष्ट समस्याएँ भी हैं जो अन्य देशों की समस्याओं से सर्वथा भिन्न हैं। हमारा देश एक ऐसा देश है जहाँ विभिन्न भागों में भिन्न-भिन्न प्रकार की संस्कृति पाई जाती हैं। समाज में कई ऐसी जातियाँ हैं जिनमें शिक्षा प्राप्त करने का प्रचलन नहीं के बराबर है। हमारे शिक्षाशास्त्री शिक्षा-प्राप्ति के समान अवसर की बातें करते समय इन कबीलों तथा जातियों को शिक्षोपार्जन के समान अवसर प्रदान करने के उद्देश्य पर बल देते हैं। किन्तु इस प्रयत्न का परिणाम भिन्न होता है। जो जातियाँ शिक्षा के क्षेत्र में आगे हैं, वे इन अवसरों का अपेक्षाकृत अधिक लाभ उठाती हैं तथा जो जातियाँ अथवा कबीले शिक्षा के क्षेत्र में पीछे हैं वे अपने स्थान से अधिक आगे नहीं बढ़ पाते हैं। सम्भवतः ये अपनी वर्तमान स्थिति से इतने संतुष्ट हैं कि स्थिति से बाहर आना ही नहीं चाहते, किन्तु इसके साथ ही साथ कबीले अपने चारों तरफ होने वाले परिवर्तनों के प्रति सजग हैं। भारतीय मानवशास्त्र परिषद् ने कुछ समय पहले हिमालय की तराई के लोगों की संस्कृति तथा समाज का अध्ययन कर निष्कर्ष प्रस्तुत किया है कि कबीले नवीन शिक्षा-प्रणाली तथा तकनीकी शिक्षा के प्रति जागरूक हैं। इस समय देश उन्हें उपयोगी शिक्षा प्रदान कर उनकी जागरूकता का समुचित प्रयोग करके लाभान्वित हो सकता है। आज सभी राष्ट्र यह स्वीकार करते हैं कि यदि किसी भी दृष्टि से राष्ट्र को ऊपर उठाना है तो शिक्षा पर बल देना बहुत आवश्यक है। प्रत्येक राष्ट्र की सामाजिक तथा आर्थिक आय-वृद्धि के लिए शिक्षा के महत्त्व को स्वीकार किया जाना अत्यन्त आवश्यक है।

भारत की शैक्षिक परम्परा यद्यपि शानदार है किन्तु उसका निकट अतीत और वर्तमान बहुत-कुछ शोचनीय हैं। अभी तक विद्यालयों में जाने योग्य सभी बालक विद्यालयों में नहीं जा पाये, इसका अर्थ यह नहीं है कि जो वर्ग शिक्षा-प्राप्ति के बाहर है, उसे शिक्षा की कम आवश्यकता है। वस्तुतः उसे इसकी आवश्यकता कहीं अधिक है। देश के आर्थिक तथा सामाजिक पिछड़ेपन का मूल कारण भी शैक्षणिक पिछड़ापन ही है। आज देश की जो समस्याएँ हैं, आवश्यक नहीं कि वे कल भी उसी उग्रता के साथ रहें, और यह भी आवश्यक नहीं कि आज की समस्याएँ कल भी समस्याओं के ही रूप में रहें। ऐसे अनेक उदाहरण मौजूद हैं, जिनमें कारखानों के मजदूरों को पेंसिल-स्लेट कारखानों द्वारा प्रदान की गई और उनकी शिक्षा की समुचित व्यवस्था में प्रत्येक व्यक्ति ने यथासम्भव सहायता की, मजदूरों ने भी इस अवस्था का स्वागत किया। किन्तु जो नारियाँ और पुरुष गाँवों में हैं, जिनका इस प्रकार के कारखानों से भी कोई सम्बन्ध नहीं है, उन तक शिक्षा कैसे पहुँचाई जाय, यह विचारणीय विषय है। दूरदर्शन द्वारा शिक्षा को इन व्यक्तियों तक पहुँचाने का प्रयत्न सरकार कर रही है, किन्तु इस कार्य की सफलता तभी सम्भव है जब इसमें उसे प्रत्येक शिक्षित व्यक्ति का सहयोग प्राप्त हो, जब शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़े हुए वर्गों को आगे लायें तथा उनमें छिपे हुए प्रबुद्ध व्यक्तियों के उत्थान के लिए समान अवसर तथा समुचित सहायता प्रदान करें। वह समय दूर नहीं है जब भारत को अपने बुद्धिजीवियों तथा विशेषज्ञों की प्रथम पंक्ति इस देश के उत्थान के लिए प्रस्तुत करनी पड़ेगी, ऐसी स्थिति में अपने देश का भार किन व्यक्तियों पर होगा? भारत में लगभग सभी क्षेत्रों में कौशल तथा बुद्धि की दृष्टि से अनेक व्यक्तियों के नाम लिये जा सकते हैं।

विद्यालयों की संरचना कुछ इस प्रकार की होती है कि छात्र पूर्णतः शिक्षकों पर निर्भर रहें। परिणामस्वरूप छात्रों की पहल शक्ति, जिज्ञासा एवं सृजनात्मकता कुण्ठित हो जाती है और वे दब्बू, निष्क्रिय तथा एक ही ढर्रे पर चलने वाले बन कर रह जाते हैं। एक कक्षा में सभी छात्रों को एक साथ एक ही बात, एक ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकार से, एक ही पाठ-योजना की सहायता से बिना उसकी मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं पर ध्यान दिये, पढ़ाई जाती है और छात्रों की वैयक्तिक संज्ञान शक्ति अथवा अभिरुचि का कोई ध्यान नहीं रखा जाता।

शिक्षा के उद्देश्य आज संक्रमण काल से निकल रहे हैं। भिन्न-भिन्न विद्वानों ने शिक्षा के भिन्न-भिन्न उद्देश्य बताये हैं; यथा—व्यक्तित्व का विकास, बालक की प्रकृत्तिदत्त सीमाओं तक अधिकतम विकास, बालक का समाजोपयोगी सदस्य के रूप में विकास का सर्वाङ्गीण विकास, बालक के भावी जीवन की तैयारी, अच्छे-बुरे की पहचान या विवेक का विकास, उचित आदतों के निर्माण से सद्गुणों का विकास, आनन्द की प्राप्ति के लिए नैसर्गिक शक्तियों का संतुलित विकास, आत्मा की अनुभूति और अभिव्यक्ति, अवकाश का समाजोपयोगी उपयोग, सांस्कृतिक विकास, मानसिक विकास, व्यावसायिक कुशलता, नेतृत्व का विकास, सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना का विकास, सम्पूर्ण जीवन को पवित्र बना कर मोक्ष की प्राप्ति—'सा विद्या या विमुक्तये' तात्विक दृष्टि से सत्यासत्य तथा व्यावहारिक दृष्टि से कर्त्तव्याकर्त्तव्य का ज्ञान, सत्यं-शिवं-सुन्दरम् की प्राप्ति, व्यक्ति में स्वयं को पर्यावरण के अनुकूल बनाने की क्षमता का विकास करना ही नहीं अपितु पर्यावरण को अपने अनुकूल ढालने की व्यक्ति में योग्यता उत्पन्न करना भी शिक्षा के उद्देश्यों में से एक है।

प्राचीन काल में शिक्षा का मूल उद्देश्य ही मोक्ष की प्राप्ति था। आज भी उसे कई अन्य उद्देश्यों के साथ एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य माना जाता है। दूसरे शब्दों में, सम्पूर्ण जीवन को पवित्र बनाकर, आत्मा को शिक्षित कर मोक्ष प्राप्त करना ही शिक्षा का उद्देश्य है। इसी दृष्टि से पाठ्यक्रम की विषयवस्तु का संयोजन करना होता है, सदाचार के उपदेश दिये जाते हैं, स्वस्थ तथा संस्कार युक्त वातावरण की रचना की जाती है। शिक्षा का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कार्य है—नियन्त्रण स्थापित करने के बजाय बालक के मानस का विकास करना। जीवन के प्रति छात्र का दृष्टिकोण विस्तृत हो, उसमें ज्ञान की ज्योति जगे जिससे वह आत्मसंयम तथा आत्मसम्मान का अभ्यास कर सके। वह अपने से बड़ों का आदर करना सीखे, माता-पिता का कहना माने, बड़े हित के लिए छोटे स्वार्थ का त्याग करना सीखे, वातावरण के साथ समंजन करना सीखे, पड़ोसियों की भावनाओं का आदर करे, किसी की विचारधारा से, उसके मत से असहमत होते हुए भी धैर्य से उसकी बात सुने, सहिष्णुता का विकास करे। सहिष्णुता का अर्थ है कि हम दूसरों के दृष्टिकोणों को सहन करें। यदि हम प्रत्येक मनुष्य को आत्म-विकास का अवसर देना चाहते हैं तथा उसके व्यक्तित्व का आदर करते हैं तो हमें व्यक्तिगत भिन्नताओं को सहन करना होगा। प्रत्येक प्रकार के अन्तर चाहे वे विचारों में हों या कार्यों में, आदर के साथ सहन करना चाहिए। समाज को अपने सदस्यों के सर्वोच्च विकास में सहायता करनी चाहिए। समानता का केवल यही अर्थ नहीं है कि हर मनुष्य अपना आत्म विकास तथा सुख प्राप्त करने के लिए बराबर है, वरन् समाज द्वारा प्रत्येक मनुष्य को आत्मानुभूति प्राप्त करने तथा अपना आत्म विकास करने का पूरा अवसर मिलना चाहिए। केवल अपने तुच्छ स्वार्थों में, सांसारिकताओं में लिप्त न रहे, बल्कि आत्मा के क्रमिक विकास का प्रयत्न करे, प्राप्त ज्ञान को व्यवहार में लाकर, प्रयोग परीक्षण करके, मनन-चिन्तन करके, आत्मा की शिक्षा के साथ मुक्ति लाभ करे। सम्पूर्ण विश्व को परिवार माने, विश्व-बन्धुत्व या विश्व-नागरिकता के सम्प्रत्यय में अटूट विश्वास हो, अच्छे या बुरे में भेद कर सके, उसकी बुद्धि प्रखर हो, कभी भी तथा कहीं भी मतभेद होने पर बाहुबल से नहीं वरन् विवेक से, शान्त मस्तिष्क से, विचार-विमर्श से मतैक्य ला सके। ऐसी शिक्षा की आज प्रथम स्थान पर सर्वोच्च आवश्यकता है।

आत्मा की शिक्षा पाकर मनुष्य केवल अपने लिए ही नहीं जीता है। वह केवल अपने लिए ही नहीं अर्थात् वह केवल अपने स्वार्थ के लिए ही नहीं मरता है बल्कि दूसरों के लिए भी जीता है और दूसरों के लिए मरता भी है। आत्मा की शिक्षा ही मनुष्य को अपने स्वार्थों से ऊपर उठाती है। बुद्ध की समस्त जीवों के प्रति करुणा में, महात्मा ईसा की दया में तथा गांधी की अहिंसा में आत्मा की शिक्षा के दर्शन होते हैं। मनुष्य केवल अपने स्वयं के लिए ही नहीं जीये वरन् सबके साथ मिलकर सबके लिए जीये, मनुष्य केवल अपने स्वयं के लिए ही नहीं हो, वह सबके लिए हो तथा सब उसके हों, सच्चे मनुष्यत्व का तथा सच्चे सुख का यही एकमात्र रास्ता है। इसी आधार पर कहा जा सकता है कि आत्मा की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा ही शिक्षा की आत्मा है; या यों कहिए कि आत्मा की शिक्षा ही शिक्षा-व्यवस्था का मूल है। नैतिक मूल्य व्यक्ति और समाज के कल्याणकारी आधार हैं, जिनकी प्रतिष्ठा से व्यक्ति का पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन उद्देश्यपूर्ण तथा उज्ज्वल होता है। आज के युग में भौतिक प्रगति के लिए विज्ञान की जितनी आवश्यकता है, उसको कल्याणकारी बनाने के लिए आध्यात्मिक मूल्यों की पूर्व प्रतिष्ठा होनी ही चाहिए।

आत्मा की शिक्षा हमें अंधविश्वासों के गढ़े में गिरने एवं संकुचित बनने से बचाती है तथा दुष्ट प्रवृत्तियों का दमन करने में सहायक होती है। यदि मनुष्य साक्षर हो, वैज्ञानिक ज्ञान भी रखता हो पर आत्मा की शिक्षा के क्षेत्र में शून्य हो तो वह मनुष्य बिना नीति निर्दिष्ट किये, सेवा की भावना से परे रह कर तथा परोपकार की दिशा न पाकर मोक्ष कदापि नहीं पा सकता, उसका कल्याण नहीं हो सकता। आत्मा की शिक्षा के अभाव में विज्ञान अँधा है तथा विज्ञान रहित आत्मा की शिक्षा पंगु है। विज्ञान ने यदि अणु शक्ति, टैंक या अन्य विस्फोटक वस्तुएँ दी हैं तो आत्मा की शिक्षा के अभाव में ही ये सब विनाशकारी हो सकते हैं और यदि आत्मा की शिक्षा के साथ-साथ विज्ञान की शिक्षा दी गई, तो ये सभी तत्व सृजनात्मक या रचनात्मक कार्यों के लिए भी प्रयोग किये जा सकते हैं। नीति आत्मा की शिक्षा का प्राण है तथा आत्मा की शिक्षा नैतिक जीवन का आधार है। आत्मा की शिक्षा मानव को तभी सुखी बना सकेगी जब वह शिक्षा विज्ञान पर आधारित हो। अन्यथा इस भौतिक एवं स्वकेन्द्रित युग में मनुष्य का जीवित रहना कठिन हो जायेगा। अतः आत्मा की शिक्षा वैज्ञानिक दृष्टिकोण सहित सुदृढ़ धरातल पर विकसित की जानी चाहिए।

कहा जाता है कि "जैसा खावे अन्न वैसा होवे मन"। इसके अनुसार स्पष्ट है कि आदमी की विचारधारा उद्देश्य, प्राथमिकताओं पर उसके भोजन का बहुत प्रभाव पड़ता है और जिसके पास खाने को अन्न ही नहीं है, वह न तो दर्शन बना सकता है और न प्राथमिकतायें तय कर सकता है, भूखे का मनोविज्ञान ही पृथक होता है। कालान्तर में शिक्षा का उद्देश्य जीविकोपार्जन माना जाने लगा। इसी सन्दर्भ में कार्यानुभव का ध्येय वाक्य भी सामने आया शिक्षा-प्रणाली में कार्यानुभव को समुचित स्थान दिया जाय जिससे समाज को हर प्रकार के कार्य करने के लिए योग्य व्यक्ति मिल सकें। पेट भरा हुआ, भूख से मुक्ति पाया हुआ व्यक्ति ही समाज के लिए उपयोगी सदस्य सिद्ध हो सकता है। कार्यानुभव शिक्षा को दैनिक जीवन के लिए अधिक उपयोगी बनाता है। सामान्यतया देखा जाता है कि छात्र जब शिक्षा पूर्ण करके वास्तविक एवं व्यावहारिक जीवन में प्रवेश करता है तब उसे जिस प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है, उन समस्याओं के समाधान में उसे अपनी अर्जित शिक्षा से बहुत अधिक सहयोग नहीं मिलता है। आज औपचारिक व्यवस्था काफी अपव्ययी अर्थात् मँहगी है। इससे सभी छात्रों की अभिरुचि और उनके समय का ध्यान रख पाना कठिन है। यूनेस्को की बहुचर्चित रिपोर्ट "लर्निंग टू बी" का मूल सार यह है कि भविष्य की शिक्षा के चार प्रमुख उद्देश्य होंगे—

१—एक अन्तरराष्ट्रीय समुदाय की रचना करना,
२—प्रजातन्त्र में विश्वास उत्पन्न करना,
३—मानव का सम्पूर्ण विकास करना, और
४—जीवन-पर्यन्त शिक्षा प्रदान करना।

इनमें से प्रथम तीन उद्देश्यों को अप्रत्यक्ष रूप से आत्मा की शिक्षा ही कह सकते हैं। भविष्य की शिक्षा को गतिशील, सामाजिक, असमानताओं और अन्यायों से मुक्ति दिलाने वाली तथा परम्परागत होना चाहिये। उसे राष्ट्र-विशेष की सामाजिक, आर्थिक तथा राजनैतिक विकास की अवस्थाओं तथा आवश्यकताओं के अनुसार सशक्त व समर्थ होना चाहिए। ऐसा तभी सम्भव है जबकि शिक्षाशास्त्री, सामाजिक व राजनैतिक नेता अधिकारी तथा शिक्षक सभी समाज व शिक्षा के भविष्य के बारे में खुले दिमाग से सृजनात्मक चिन्तन करें तथा व्यावहारिक कार्य करें। प्रत्येक सीखने वाले को स्वयं ही अपनी शिक्षा का उत्तरदायित्व सम्भालना होगा। एक सीखने वाला समाज (लर्निंग सोसायटी) अथवा सीखने वाला वातावरण (लर्निंग इनवाइरनमेन्ट) बनाया जाय। शिक्षा की औपचारिक व्यवस्थाओं के स्थान पर पूर्णतया खुली या गतिशील व्यवस्थाएँ होनी चाहिये जिससे कोई भी सिखाने वाला अपनी इच्छा, क्षमता तथा गति के अनुसार अपने जीवन के लिए उपयोगी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञान किसी भी स्रोत से प्राप्त कर सके। विद्यालय शिक्षण-सामग्री के केन्द्र बनें। शिक्षक आवश्यकता पड़ने पर सहायता व मार्गदर्शन करें तथा समाज के विविध औपचारिक और अनौपचारिक साधन शिक्षा प्राप्ति में सहायक हों आयु सीमा, विषयों, पाठ्यक्रमों, स्तरों, परीक्षाओं के कृत्रिम अवरोधक समाप्त कर दिये जाएँ तथा पुनः शिक्षा के विचार को क्रियात्मक स्वरूप प्रदान किया जाए। किस प्रकार शिक्षा को भविष्य की माँगों के अनुरूप उपयोगी बनाया जाए। यह स्पष्ट रूप से समझ लिया जाना चाहिए कि भारत को विदेशों की नकल मात्र न तो करनी चाहिये और न ऐसा पूर्णतया संभव ही है। भारतीय संस्कृति, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक परिस्थितियों तथा संविधान के नव परिवर्तनों के अनुसार ही शिक्षा का भावी स्वरूप होना चाहिये। बालकों के सामने उन व्यक्तियों के जीवन के प्रेरक उदाहरण प्रस्तुत किये जाने चाहिए, जिन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में स्वयं की सुरक्षा एवं सुविधा से अधिक मूल्यवान एवं महत्त्वपूर्ण वस्तुएँ प्राप्त करने के लिए स्वयं को समर्पित कर दिया। शिक्षा के माध्यम से बालकों में उचित-अनुचित का निर्णय प्रचलित फैशन अथवा जनमत के प्रभाव के आधीन करने की उपेक्षा स्वयं अपने चिन्तन के आधार पर करने की योग्यता विकसित करें।

शिक्षा का उद्देश्य बालक को जीवन के लिए तैयार करना होता है। इस हेतु बालक को ऐसे सृजनात्मक ज्ञान देने की परम्परा रही है जो भावी जीवन में उसके लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है। ऐसे ज्ञान को बालकों के आयु वर्ग के अनुसार पाठ्यक्रम के रूप में निर्धारित किया जाता है और पाठ्यक्रम पुस्तकों में नियोजित करके छात्रों को दिया जा रहा है। कहना न होगा कि यह योजना कुछ समय पूर्व तक काफी सफलतापूर्वक काम करती रही है। किन्तु अब वह कालातीत हो चुकी है और वर्तमान में जो पीढ़ी शिक्षा प्राप्त कर रही है, उसका काम इससे चलता दिखाई नहीं देता।

शिक्षा का उद्देश्य यदि आध्यात्मिक विकास मान लिया जाय या मोक्ष-प्राप्ति या आत्मा की शुद्धता मान लिया जाय तो धर्म शिक्षा के बहुत निकट आ जाता है। आज समाज में इतना अनाचार फैला हुआ है कि इतना पहले कभी नहीं सुना जाता था। राष्ट्रीय चरित्र का दिन-प्रतिदिन ह्रास होता जा रहा है। इन सब बुराइयों की जड़ शिक्षा में विशाल दृष्टिकोण का अभाव है। आज के इस चरम सीमा के भौतिक विकास के साथ आत्मा की शिक्षा की नितान्त आवश्यकता है। केवल सांसारिक सुखों से ही मानव-शान्ति नहीं पा सकता क्योंकि सांसारिक सुख तो अन्तहीन शृंखला है। सांसारिक सुख लालसा बढ़ाते हैं जो मनुष्य को जीवन में शान्ति देने के बजाय अशान्ति पैदा करते हैं। यदि नैतिक शिक्षा को उचित रूप दिया जाय तो छात्रों के मस्तिष्क में विश्व-बंधुत्व की व विश्व-प्रेम व मानव-कल्याण की भावना विकसित की जा सकती है, जो प्रेम, समानता, एकता, सदाचार आदि शाश्वत मूल्यों पर आधारित है। यदि मानव-सभ्यता को विनाश से बचाना है, तो शिक्षा की व्यवस्था आत्मा की शिक्षा या नैतिक शिक्षा के आधार पर करनी होगी। बालक के अपने आध्यात्मिक पक्ष का प्रबलतम विकास करने के लिए सभी धर्मों को सामान्य बातों से उसे परिचित कराना होगा। धार्मिक शिक्षा का अर्थ किसी एक धर्म को तोते के समान नहीं वरन् सभी धर्मों को व उसकी मूलभूत विशेषताओं को बालक के व्यावहारिक जीवन में उतारने के अभ्यास से है। इस प्रकार नैतिक शिक्षा आत्मा की शिक्षा का ही दूसरा नाम है। वर्तमान शिक्षा को जड़ता की स्थिति से उबार कर वांछित अनौपचारिकता मुक्त वातावरण एवं सृजनात्मक दिशा प्रदान कर सकते हैं और इस प्रकार उसे पूर्ण अराजकता की स्थिति की ओर अग्रसर होने से बचाया जा सकता है। जब तक हम स्वयं के भारतीय होने में गर्व नहीं करेंगे और अपने को बिहारी, असमी, बंगाली, पंजाबी, गुजराती आदि रूपों में सोचना बन्द नहीं करेंगे तब तक हमसे इस भावनात्मक एकता के साथ ही आत्मा की शिक्षा, जिसे शिक्षा की आत्मा या हृदय ही कहा जाना चाहिये, का विकास नहीं हो सकता। महात्मा गाँधी, रवीन्द्र नाथ ठाकुर, तिलक, जवाहरलाल ऐसे राष्ट्रीय नेताओं और हमारे अनगिनत संत-महात्माओं का सबसे बड़ा योगदान यही रहा है कि उन्होंने हमको एक महान देश का नागरिक होने में गर्व करना सिखाया है। यह देश के किसी कोने में क्यों न बसते हों, कोई भाषा क्यों न

[शेष पृष्ठ १६ पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डा० (श्रीमती) जी० पी० शौरी द्वारा लिखित

बी० ए० गृह-विज्ञान की छात्राओं के लिए

गृह-विज्ञान-शिक्षण

गृह-व्यवस्था एवं गृह-कला
HOUSEHOLD MANAGEMENT & HOUSEHOLD ART

प्रस्तुत पुस्तक में इस तथ्य का पूर्णरूपेण ध्यान रखा गया है कि छात्र-छात्राओं को वांछित सामग्री एक ही स्थान पर उपलब्ध हो जाए। विभिन्न विश्वविद्यालयों की बी० ए०, बी० एस-सी० (गृह-विज्ञान) की परीक्षा हेतु निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार इसमें सम्पूर्ण विषय-सामग्री उपलब्ध है। सात खण्डों में विभक्त 36 अध्यायों में इसकी विषय-वस्तु को सरल, बोधगम्य एवं वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

ग्यारहवाँ संस्करण 1982 **16.50**

पोषण एवं आहार विज्ञान
FOODS AND NUTRITION

इस पुस्तक में विभिन्न विश्वविद्यालयों द्वारा बी० ए० (गृह-विज्ञान), के पाठ्यक्रम में निर्धारित "पोषण एवं आहार विज्ञान" सम्बन्धी अपेक्षित सामग्री को सात खण्डों में विभाजित 35 अध्यायों में सरल, रोचक एवं व्यावहारिक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। इसमें माध्यमिक (हायर सैकेण्डरी) कक्षाओं में प्राप्त ज्ञान का अभिनव विकास है तथा बी० ए० स्तर की सामग्री का संयोजन है। **दसवाँ संस्करण 1981** **मूल्य 13.35**

मातृकला एवं शिशु कल्याण
MOTHERHOOD & CHILD WELFARE

प्रस्तुत पुस्तक में "मातृत्व एवं शिशु-कल्याण" सम्बन्धी विशिष्ट ज्ञान की आवश्यकता व उसकी प्राप्ति के साधन बताए गए हैं। इस पुस्तक की विषय-वस्तु आठ भागों में विभाजित करके 26 अध्यायों में प्रस्तुत की गई है।

ग्यारहवाँ संस्करण 1982 **मूल्य 14.00**

वस्त्र-विज्ञान के मूल सिद्धान्त
FUNDAMENTALS OF TEXTILES

वस्त्रोद्योग की महत्ता, उन्नति तथा विकासानुरूप वस्त्रोत्पादन तथा वस्त्रों की देखभाल व सफाई-धुलाई एक विस्तृत विषय बन गया है। आधुनिक गृहिणी को इस विषय का विधिवत् ज्ञान होना उपयोगी ही नहीं, आवश्यक प्रतीत होता है। वस्त्रोत्पादन तथा सफाई-धुलाई सम्बन्धी ज्ञान 'गृह-विज्ञान' विषय का एक विशेष अंग मान लिया गया है। आज यह विषय विश्वविद्यालयीन महत्त्व का हो गया है। प्रस्तुत पुस्तक में प्रारम्भ से अन्त तक लेखिका का केवल एक ही दृष्टिकोण रहा है कि छात्राएँ एवं गृहणियाँ वस्त्र विज्ञान से सम्बन्धित व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करें तथा उनमें वस्त्र की सुरक्षा, महत्त्व एवं चयन के प्रति रुचि उत्पन्न हो। पुस्तक पाँच खण्डों में विभाजित होकर अठारह अध्यायों में प्रस्तुत है।

तेरहवाँ संस्करण 1982 **मूल्य 8.50**

स्वास्थ्य विज्ञान तथा जन स्वास्थ्य
HYGIENE & PUBLIC HEALTH

जी० डी० सतसंगी

प्रस्तुत पुस्तक विभिन्न विश्वविद्यालयों के बी० ए० (गृह-विज्ञान) के पाठ्यक्रमानुसार तैयार की गई है। विद्वान लेखक ने 14 अध्याओं में विषय-सामग्री को विभाजित करके सरल एवं सुबोध ढंग से प्रश्नोत्तर शैली में प्रस्तुत करने का पूरा-पूरा प्रयास किया है।

संशोधित एवं परिवर्द्धित चतुर्थ संस्करण 1982 (प्रेस में)

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा-२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रशिक्षण साहित्य
(Methods of Teaching)
सम्बन्धी

उपयोगी प्रकाशन

भाषा$_{1,2}$ की शिक्षण विधियाँ एवं पाठ नियोजन

	डा० लक्ष्मीनारायण शर्मा	18.00
हिन्दी-शिक्षण	डा० रामशकल पाण्डेय	12.50
हिन्दी भाषा-शिक्षण	भाई योगेन्द्रजीत	14.00
मातृभाषा-शिक्षण	के० क्षत्रिया	16.00
इतिहास शिक्षण	गुरसरनदास त्यागी	11.00
इतिहास-शिक्षण की रूपरेखा	भाई योगेन्द्रजीत	8.00
सामाजिक अध्ययन का शिक्षण	गुरसरनदास त्यागी	9.00
शिक्षक महाविद्यालयों में सामाजिक अध्ययन शिक्षण	सतगुरु शरण, दिनेश प्रकाश शर्मा	8.00
नागरिक शास्त्र का शिक्षण	गुरसरनदास त्यागी	9.00
नागरिक शास्त्र शिक्षण-कला	डा० उमेश चन्द्र कुदेसिया	(प्रेस में)
भूगोल-अध्यापन	जगदीश प्रसाद वर्मा	14.00
भूगोल-शिक्षण	एच० एन० सिंह	9.00
नवीन विज्ञान-शिक्षण	रावत एवं अग्रवाल	8.50
विज्ञान-शिक्षण	डी० एस० रावत	8.50
जीव विज्ञान-शिक्षण	शैलेन्द्र भूषण	7.00
गणित-शिक्षण	रावत एवं अग्रवाल	10.00
संस्कृत-शिक्षण	डा० रामशकल पाण्डेय	9.45
गृह विज्ञान-शिक्षण	डा० जी० पी० शैरी	10.50
वाणिज्य-शिक्षण	उदयवीर सक्सेना	7.00
अर्थशास्त्र-शिक्षण	गुरुसरनदास त्यागी	8.00
समाज-शिक्षा	तेजसिंह तरुण	6.00
Essentials of English Teaching	R. K. Jain	20.00
Let us Learn English	M. S. Sachdeva	14.00

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग की परीक्षाओं के लिए
सं २०३९ सन् (१९८२) के नवीन पाठ्यक्रमानुसार

दिग्दर्शन (गाइडें)

●प्रथमा दिग्दर्शन (गाइड)	प्रो० श्रीभगवान शर्मा	२२.५०
●मध्यमा दिग्दर्शन (गाइड)	डा० कृष्णदेव शर्मा	२५.००
●साहित्यरत्न दिग्दर्शन (गाइड)—प्रथम खण्ड	,,	२५.००
●साहित्यरत्न दिग्दर्शन (गाइड)—द्वितीय खण्ड	,,	२५.००
●उपवैद्य दिग्दर्शन (गाइड)	वैद्य अनिलकुमार व्यास	१५.००
●वैद्य विशारद दिग्दर्शन (गाइड)—प्रथम खण्ड	वैद्य शिवकुमार व्यास	१५.००
●वैद्य विशारद दिग्दर्शन (गाइड)—द्वितीय खण्ड	,,	२०.००
●आयुर्वेदरत्न दिग्दर्शन (गाइड)—प्रथम खण्ड	वैद्य भूदेव शर्मा व्यास	२५.००
●आयुर्वेदरत्न दिग्दर्शन (गाइड)—द्वितीय खण्ड	,,	२५.००

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा-२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोविज्ञान के श्रेष्ठ प्रकाशन

मनोविज्ञान की पद्धतियाँ एवं सिद्धान्त
डा० जे० डी० शर्मा २५·००

नैदानिक-मनोविज्ञान
डा० रामपाल सिंह वर्मा २५.००
प्रा. ले. : डा० एम. ए. शाह पु० सं० ३५.००

मनोविज्ञान के समकालीन सम्प्रदाय
डा० आर० के० ओझा १०.००

मनोविज्ञान के सम्प्रदाय
डा० रामपालसिंह वर्मा ८.५०

आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान २०.००
डा० प्रीती वर्मा, डा० श्रीवास्तव पु० सं० ३०.००

सामान्य मनोविज्ञान
डा० एस० एस० माथुर २०.००

सामान्य मनोविज्ञान की रूपरेखा
भाई योगेन्द्रजीत १०.००

असामान्य मनोविज्ञान के मूल आधार
डा० लाभसिंह, डा० तिवारी २१·२५
पुस्तकालय संस्करण ३२·००

असामान्य मनोविज्ञान (बी० ए० के लिए)
डा० लाभसिंह, डा० गोविन्द तिवारी २०.००

समाज मनोविज्ञान : प्रारम्भिक अध्ययन
डा० एस० एस० माथुर १४.००

समाज मनोविज्ञान (For Advanced Study)
डा० एस० एस० माथुर २५.००

शिक्षा-मनोविज्ञान
डा० एस० एस० माथुर १६.००

शिक्षा-मनोविज्ञान (संक्षिप्त संस्करण)
डा० एस० एस० माथुर १७.००

शिक्षा-मनोविज्ञान
प्रो० पी० डी० पाठक १६.४०

शिक्षा-मनोविज्ञान
डा० रामपालसिंह वर्मा, १८.००
डा० राधावल्लभ उपाध्याय पु० सं० २८.००

Educational Psychology 25.50
Dr. S. S. Mathur Lib. edn. 40.00

बाल मनोविज्ञान : बाल विकास
डा० प्रीती वर्मा, डा० श्रीवास्तव २२.५०

बाल मनोविज्ञान
भाई योगेन्द्रजीत १७.००

बाल विकास तथा पारिवारिक सम्बन्ध
डा० सरयूप्रसाद चौबे १५·००

सांख्यिकी के मूल तत्त्व
डा० एच० के० कपिल २७·७०

मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी
डा० (श्रीमती) प्रीती वर्मा,
डा० डी० एन० श्रीवास्तव १७·००

प्रारम्भिक सांख्यिकी
डा० प्रीती वर्मा, डा० श्रीवास्तव १०·००

शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग
सुरेश भटनागर ७·००

शिक्षा में सरल सांख्यिकी
डा० रामपालसिंह वर्मा ८·००

शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक अनुसंधान के मूलाधार
डा० गोविन्द तिवारी १८·००

मनोविज्ञान शोध-विधियाँ
प्रो० एम० ए० हकीम, बिपिन अस्थाना १५·००

शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्त्व
एस० पी० सुखिया
वी० पी० मेहरोत्रा, आर० एन० मेहरोत्रा २०·००

आधुनिक प्रयोगात्मक मनोविज्ञान
डा० प्रीती वर्मा, २४·००
डा० डी० एन० श्रीवास्तव पु० सं० ३५·००

प्रयोगात्मक मनोविज्ञान
प्रो० एम० ए० हकीम, डा० बिपिन अस्थाना १४·००

औद्योगिक मनोविज्ञान २०·००
डा० आर० के० ओझा पु० सं० २८·००

विकासात्मक मनोविज्ञान
भाई योगेन्द्रजीत १५.००

शैक्षिक मूल्यांकन
डा० रामपालसिंह वर्मा १०·००

मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन
डा० आर० एन० अग्रवाल,
डा० बिपिन अस्थाना १८·००

मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सरल मूल्यांकन
डा० रामपाल सिंह वर्मा ६·००

विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा-2

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानव विकास में बाल्यावस्था का महत्त्व

सूर्य कुमार श्रीवास्तव
मनोविज्ञान विभाग, डी० ए० वी० कालेज, कानपुर

मानव व्यक्तित्व के विकास को समझने के लिए आनुवंशिकता तथा पर्यावरण की कालगत क्रिया तथा अन्तर्क्रिया का अध्ययन आवश्यक है। किसी व्यक्ति के जैव, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक विकास के स्तर के निर्धारण में इन तत्त्वों के कार्य को इस प्रकार बताया जा सकता है—

आनुवंशिकता × पर्यावरण × काल = विकास स्तर!

हिर्श (१९६२) का कहना है कि किसी भी क्षण-विशेष पर पर्यावरण न केवल आनुवंशिकता के साथ ही वरन् विकास के एक प्राप्त स्तर के साथ भी अन्तर्क्रिया करता है। विकास का यह स्तर पुनः गत अनुभवों को प्रतिबिम्बित करता है और इस प्रकार यह वंशगत विकास तथा अपने स्तर तक के सीखने का परिणाम होता है।

विकास का अर्थ—प्राणी के भीतर विकास गर्भाधान से ही प्रारम्भ हो जाता है तथा जीवन-पर्यन्त तक चलता है। यह किसी न किसी रूप में चलता रहता है। उसके जीवन-प्रसार में शारीरिक एवं मानसिक क्षमताओं के स्वरूप में जो क्रमिक परिवर्तन उत्पन्न होते हैं, उन्हीं का नाम 'विकास' है। परिवर्तन प्रायः एक से नहीं रहते, मुख्यतः परिवर्तन प्रारम्भ में रचनात्मक होते हैं तथा बाद में विनाश के सूचक रहते हैं। क्योंकि जीवन के प्रारम्भिक दिनों में प्राणी के भीतर विवृद्धि तथा अन्तिम अवस्थाओं में ह्रास होता है। रचनात्मक परिवर्तन प्राणी में परिपक्वता लाते हैं और विनाशात्मक वृद्धावस्था की ओर ले जाते हैं। इस प्रकार विकास एक प्रत्यय है। इसके अन्तर्गत सम्पूर्ण शारीरिक और मानसिक दशाओं तथा परिवर्तनों का समावेश है। इस क्षेत्र में बाल्यावस्था का महत्त्व अधिक होता है क्योंकि इस अवस्था में बालक अपने आस-पास के वातावरण पर नियन्त्रण करना सीखता है। इस सम्बन्ध में कठिनाई आने पर अपनी वाणी का सहारा लेता है। उसमें जिज्ञासा की प्रवृत्ति होती है।

इस प्रकार विकास की प्रतिक्रिया तब तक चलती रहती है जब तक व्यक्ति पूर्णता को प्राप्त नहीं कर लेता है। दूसरे शब्दों में, हम विकास को एकीकरण की क्रिया कह सकते हैं। प्रत्येक व्यक्ति में प्रायः किसी न किसी प्रकार के परिवर्तन होते रहते हैं, चाहे वे मानसिक हों अथवा शारीरिक, उन्हें हम विकास ही कहते हैं। मानव में होने वाले परिवर्तन अत्यन्त उपयोगी होते हैं। हरलॉक का कथन है कि "विकास का अभिप्राय है—व्यवस्थित तथा समनुगत परिवर्तन जो परिपक्वता की प्राप्ति में सहायक हो।"

"व्यवस्थित" शब्द का अर्थ है कि इन परिवर्तनों में कोई न कोई क्रम अवश्य रहेगा और प्रत्येक परिवर्तन अपने पूर्व परिवर्तन पर निर्भर करेगा। "समनुगत" शब्द का तात्पर्य है कि ये परिवर्तन सम्बन्ध नहीं होंगे। इनमें परस्पर संतुलन रहेगा। जैसा कि महान अमेरिकन जीववैज्ञानिक ई० जी० कान्विलन (१९२३) ने एक बार कहा था—"मानव का विकास समस्त आश्चर्यों की चरम परिणति है।"

बाल्यावस्था का महत्त्व—मानव-विकास में बाल्यावस्था का महत्त्व अधिक पाया जाता है। बाल्यावस्था का समय ६ वर्ष से ११ वर्ष तक कहलाता है। जब शिशु शैशवावस्था को छोड़कर बाल्यावस्था में प्रवेश करता है तब तक उसका पर्याप्त विकास हो चुका होता है। सांसारिक परिस्थितियों से वह कुछ परिचित-सा भी होने लगता है। उसकी रुचियों तथा इच्छाओं का स्वरूप प्रायः निश्चित-सा होने लगता है। बाल्यावस्था में शारीरिक विकास बड़ी तेजी से होता है। आम तौर पर इस अवस्था में बालक का स्वास्थ्य अच्छा रहता है तथा शारीरिक शक्ति बढ़ जाती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल्यावस्था में ही बालक की सामाजिक भावना का विकास होता है। इस अवस्था में बालक किसी न किसी समुदाय का सदस्य बन जाता है। समुदाय के प्रति उसके मन में असीम श्रद्धा का भाव होता है तथा अपने समुदाय के हित के लिए वह बड़े से बड़ा त्याग करने के लिए भी सदा तत्पर रहता है। वह अपना अपमान सहन कर लेगा परन्तु उस समुदाय का नहीं, जिसका वह सदस्य है। इसी अवस्था में ही बालचर जैसी संस्थाएँ बालक के लिए बड़ी उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं क्योंकि यही वह समय है जबकि बालक में सहयोग, सहानुभूति, सहनशीलता तथा स्पर्धा आदि भावनाओं का विकास होने लगता है।

बाल्यावस्था में बालक की स्मरण-शक्ति का विकास बड़ी तीव्र गति से होता है। बालक की स्थायी स्मृति में वृद्धि होने लगती है तथा किसी पदार्थ के प्रति बालक का अवधान बढ़ने लगता है। बाल्यावस्था में जिज्ञासा की प्रवृत्ति विशेष रूप से प्रकाशित होती है। बालक अपने वातावरण से सम्बन्धित वस्तुओं के सम्बन्ध में बहुत-कुछ जानना चाहता है।.....'यह वस्तु ऐसी क्यों है।" "इस काम को कैसे पूरा करोगे ? यह पक्षी कहाँ जा रहे हैं ?" इस प्रकार के प्रश्नों की वह झड़ी-सी लगा देता है। अध्यापकों तथा बालक के माता-पिता का कर्त्तव्य है कि बालक के प्रश्नों का उचित रूप से समाधान करें। यदि वे बालकों को डरायेंगे या धमकायेंगे अथवा उसकी जिज्ञासाओं की उपेक्षा करेंगे तो उनकी जिज्ञासा वृत्ति दब जाएगी।

बाल्यावस्था में बालक की संचय प्रवृत्ति का भी परिचय मिलने लगता है। वह कई प्रकार के पदार्थों का संचय करता है। साथ ही साथ बालकों में रचनात्मक प्रवृत्ति भी सजग हो उठती है। वे कभी गीली मिट्टी से, कभी कंकड़-पत्थर इत्यादि से कुछ न कुछ बनाते ही रहेंगे।

बालक के भीतर सामाजिक व्यवहारों की उत्पत्ति उसके सामाजिक विकास की द्योतक होती है। बालकों का सामाजिक विकास बहुत कुछ उसके स्वास्थ्य और शारीरिक बनावट पर निर्भर करता है। अस्वस्थ, कुरूप, कुण्ठित विकास वाले बच्चे की अपेक्षा स्वस्थ, सुन्दर बालकों का सामाजिक विकास अधिक सामान्य ढंग से होता है। बाल्यावस्था में बालक को मनोरंजन का अवसर प्रदान करने से बालक के भीतर आत्म-विश्वास और आत्म-निर्भरता के गुणों का विकास होता है। जिन बालकों को ऐसे अवसर कभी नहीं मिलते वे इन गुणों से विहीन हो जाते हैं और इस कारण उनके व्यक्तित्व के भीतर अनेक असामाजिक प्रवृत्तियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। बालक का समाजीकरण घर के भीतर ही प्रारम्भ हो जाता है। अतः उसके सामाजिक विकास पर घर और घर की दशाओं का बड़ा गम्भीर प्रभाव पड़ता है। परिवार की सामाजिक, आर्थिक स्थिति के अतिरिक्त उसके आकार पर भी बालक की सामाजिकता निर्भर करती है। छोटे परिवारों में बालक की देखभाल उचित होती है और माता-पिता का पूरा स्नेह मिलता है। बड़े परिवारों में बालक के भीतर दुर्गुणों के विकसित होने की अधिक सम्भावना रहती है। माता-पिता व बालकों के परस्पर सम्बन्धों का भी प्रभाव पड़ता है।

दो वर्षों के भीतर ही प्रमुख संवेगों का उदय बच्चों में सामान्यतः हो जाता है। बालक के संवेग के साथ कुछ विशिष्ट व्यवहार संघात सम्बन्धित होते हैं जो उस संवेग की दशा में संयत करते हैं। जब बालक भयभीत होता है तो वह भयावह वस्तुओं, घटनाओं या व्यक्तियों से छुटकारा पाने का प्रयास करता है। भय की दशा में बच्चों के भीतर रोने, काँपने और चीखने की अभिव्यक्तियाँ दिखलाई पड़ती हैं। ऐसी दशा में बालक के रोंगटे खड़े हो जाते हैं, हृदय की धड़कन बढ़ जाती है, सांस की गति मन्द तथा स्वर धीमा पड़ जाता है। बालक के भीतर भय की उत्पत्ति के कई कारण हो सकते हैं। जैसे बालकों की व्यक्तिगत अप्रिय अनुभूतियाँ जैसे कभी आग से जल जाना या कभी किसी जानवर के काट लेने पर उस विशेष जानवर से डरना तथा एक कारण यह भी हो सकता है कि बालक अनुकरण करता है। जब बच्चे अपने माता-पिता और व्यक्तियों को किसी वस्तु से डरते देखते हैं तो खुद भी डरने लगते हैं। जहाँ तक भय के निवारण का प्रश्न है यथासम्भव बालक को भयानक परिस्थितियों से दूर रखना चाहिए और भय को उनके मन से समूल नष्ट कर देना चाहिए। निरन्तर भय का शिकार बने रहने से बालक कायर और दब्बू हो जाता है और उत्तम कोटि का सामाजिक समायोजन नहीं स्थापित कर पाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भय की तरह क्रोध की अवस्था में भी बालक के भीतर व बाहर अनेक प्रकार के परिवर्तन दिखलाई पड़ते हैं। क्रोध की प्रतिक्रियाएँ मुख्यतः आक्रामक होती हैं। छोटे बालक अपने क्रोध को रोकर, चीजों को तोड़फोड़ कर तथा बड़ों को मार-पीट कर व्यक्त करते हैं। कुछ बड़े बालकों में क्रोधावस्था में इधर-इधर भागने और जोर से चिल्लाने की प्रतिक्रियाएँ देखी जाती हैं। बालकों में क्रोध की उत्पत्ति के कई कारण होते हैं। छोटे बालकों की शारीरिक क्रियाओं को अवरुद्ध कर देने से वे क्रुद्ध हो जाते हैं। किसी बालक में मारपीट से या उसे बार-बार चिड़ाने से उसमें क्रोध की उत्पत्ति होती है। क्रोध बालकों के स्वास्थ्य के लिए अहितकर होता है। क्रोधी बालकों का सामाजिक समायोजन उत्तम कोटि का नहीं हो पाता है।

बालक का क्रियात्मक विकास, उसके सामाजिक विकास में भी सहायता पहुँचाता है। बालक अथवा बालिका की "स्व" सम्बन्धी धारणा भी उसकी क्रियात्मक विकास के अनुरूप ही बनती है। वह अपनी शारीरिक तथा क्रियात्मक शक्ति के आधार पर ही अपने सम्बन्ध में सोचता है। बालकों में अथाह क्रियाशीलता होती है। मिटलमैन का कथन है कि बालक बालिकाओं की खेल की पृष्ठभूमि में क्रियात्मक योग्यताएँ ही रहती हैं। उनकी खेल क्रियाओं का स्वरूप ऐसा होता है—

कुछ करने की व्यग्रता
↓
खेल क्रिया
↓
संतोष प्राप्ति
↓
तनाव दूर होना

पाँच-छः वर्ष की अवस्था में कुछ की व्यग्रता अपनी चरम सीमा पर होती है, फिर वह मन्द पड़ जाती है और उद्देश्य-पूर्ति की ओर प्रेरित होती है। यदि इस क्रियाशीलता का दमन किया जाता है तो बालक को क्रोध आ जाता है अथवा और विकृत तरीकों से सन्तोष खोजने लगता है। अतएव प्राथमिक विद्यालयों में जो शिक्षण प्रदान किया जाय, उसमें क्रियाशीलता को प्रमुख स्थान मिलना चाहिए। ६-८ वर्ष के बालक कठोर शारीरिक क्रियाएँ करने में हर्ष का अनुभव करते हैं; जैसे—दौड़ना, ऊपर चढ़ना, गेंद से खेलना आदि। लेकिन बालिकाओं में यह प्रवृत्ति अपेक्षाकृत कम होती है। इन वर्षों में बालक ऐसी क्रियाएँ कर लेते हैं जिनमें आँख और हाथ का समन्वय हो। प्राथमिक कक्षाओं के बालक रेत में बहुत सुन्दर घर बना सकते हैं। कागज से नाव, गेंद, वायुयान आदि कई पदार्थों की रचना कर लेते हैं। थोड़े से अभ्यास से कई चीजों का निर्माण हो सकता है।

बाल्यावस्था और शिक्षा—ऊपर बाल्यावस्था की जिन विशेषताओं की चर्चा की गयी है उनके आधार पर यह स्पष्ट हो गया होगा कि इस अवस्था में बालक में क्रियाशीलता की प्रधानता होती है। इसलिए बाल्यावस्था का मानव-विकास में अत्यधिक महत्त्व है। बालक की शिक्षा इस प्रकार की होनी चाहिए जिसमें क्रियाशीलता की भावना का पोषण हो। किण्डरगार्टन पद्धति, मॉण्टेसरी पद्धति आदि विधियों में क्रिया के आधार पर ही शिक्षा का आयोजन किया गया है। साथ ही साथ इस बात पर भी पर्याप्त ध्यान दिया जाय कि बालक को शिक्षा में हस्त कलाओं का भी आयोजन हो जिससे उनकी रचनात्मक प्रवृत्ति का प्रकाशन भली-भाँति हो सके।

जीवन की प्रत्येक अवधि में प्रत्येक व्यक्ति को विशेष प्रकार के ऐसे कार्य करने होते हैं जिनको उनका समाज तथा स्वयं उसकी आवश्यकताएँ उस पर आरोपित करती हैं। व्यक्ति इन कार्यों का अपने पूर्व-अधिगमों और परिपक्वता की सतत प्रक्रिया के द्वारा समाधान करता है (हैवीघर्स्ट : १९५२)। उदाहरण के लिए, पर्यावरण का दबाव तथा स्वयं अपना विकास किसी बालक को क्रमशः चलना और बोलना सीखने की ओर प्रेरित करता है। चलना तथा बोलना प्रत्येक छोटे बच्चे का "विकासात्मक कार्य" है और इन तथा अन्य कार्यों का जिस सफलता के साथ अर्जन किया जाता है, उसका व्यक्ति की सामान्य समायोजन और सुख पर तथा बाद के कार्यों की सीखने की सफलता पर अत्यधिक प्रभाव पड़ता है।

सारांश—इस प्रकार सम्पूर्ण मानव-विकास में बाल्यावस्था का बहुत ही महत्त्व समझा जाता है क्योंकि बाल्यावस्था के भीतर शारीरिक, मानसिक, सांवेगिक और सामाजिक परिवर्तन होते रहते हैं, जो कि अपने में एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शैक्षिक जगत के ख्याति प्राप्त लेखक—

डॉ० सरयूप्रसाद चौबे, रिटायर्ड प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र संकाय, विश्वविद्यालय, गोरखपुर द्वारा लिखित

दो महत्त्वपूर्ण पुस्तकें

☆ ☆ ☆

हमारी शिक्षा समस्यायें

शीघ्र ही प्रकाश्य

प्रस्तुत ग्रन्थ दो खण्डों—'विभिन्न स्तरों पर शिक्षा-समस्यायें' तथा 'कुछ अन्य सामान्य शिक्षा समस्यायें'—में विभाजित है। विश्वविद्यालय स्तर के लिए यह एक मानक ग्रन्थ के रूप में तैयार की गई है। विविध समस्याओं के विवेचन के क्रम में उनके समाधान की ओर भी संकेत किया गया है। पुस्तक की भाषा सरल और सरस है। इसमें प्रयुक्त पारिभाषिक शब्द भारत सरकार द्वारा स्वीकृत शब्दावली से लिये गये हैं।

प्रथम खण्ड—इसमें विवेचित कुछ प्रस्तुत विषय इस प्रकार हैं :—पूर्व-प्राथमिक, प्राथमिक, माध्यमिक, विश्वविद्यालयीय स्तर पर समस्यायें, शैक्षिक प्रशासन, अनिवार्य शिक्षा तथा बहुउद्देश्यीय विद्यालय आदि, आदि।

द्वितीय खण्ड—इसमें विश्व की शिक्षा—समस्यायें, ज्ञान का विस्फोटन और पाठ्यक्रम के निर्धारण की समस्या, स्त्री-शिक्षा, सामाजिक, प्राविधिक, धार्मिक, नैतिक, शिक्षण-पद्धति, अध्यापक-प्रशिक्षण, पब्लिक स्कूल, राजनीति और शिक्षा, भाषा-समस्या, कार्यानुभव, व्यावसायीकरण, नवीन विकास, प्रयोग, शिक्षा की प्रगति आदि, आदि, विषयों की विवेचना है।

पुस्तक बी० एड०, एम० एड० तथा शिक्षा-शास्त्र के बी० ए० और एम० ए० के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी है।

तुलनात्मक शिक्षा

इस पुस्तक में तुलनात्मक शिक्षा के सिद्धान्तों तथा ग्रेट ब्रिटेन, रूस, यू० एस० ए०, फ्रान्स, चीन, जापान, टर्की और भारत के राष्ट्रीय शिक्षा-संगठनों का विशद विवेचन है। इस नवीन संस्करण में यथा-स्थान नये आँकड़े तथा विषय-सामग्री जोड़ दी गई हैं। इस विषय पर हिन्दी में लिखित किसी अन्य पुस्तक में इतने अधिक विषयों का इतने विस्तार से समावेश नहीं किया है जितना कि प्रस्तुत ग्रन्थ में विवेचित है। पुस्तक सभी विधि से विश्वविद्यालय स्तर के स्नातक और उत्तर स्नातक कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी है। देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों में यह पुस्तक मानक ग्रन्थ के रूप में मान्यता प्राप्त कर चुकी है। पुस्तक का तृतीय संशोधित एवं परिवर्द्धित संस्करण अब उपलब्ध है।

आकार : डिमाई पृष्ठ संख्या : 816 मूल्य : 37·50

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

[पृष्ठ १ का शेषांश]

संवेगात्मक तनाव पुनः एक बार बढ़ जाता है। इस अवधि की अधिकांश समस्याएँ सेक्स और रोमांस से सम्बन्धित होती हैं। अध्ययनों में यह देखा गया है कि किशोरों का सेक्स और रोमांस का जीवन यदि सामान्य और सरल ढंग से चलता रहता है तो उनका जीवन अति सुखद होता है। कुछ अध्ययनों में यह सिद्ध किया गया है कि किशोरावस्था के अन्त में जब उनकी स्कूल की शिक्षा पूर्ण हो जाती है तो वह अपने भविष्य के सम्बन्ध में सोचकर चिन्तित हो जाते हैं और इस चिन्ता के फल-स्वरूप भी कभी-शभी उनमें संवेगात्मक तनाव उत्पन्न हो जाता है।

—**'बाल मनोविज्ञान : बाल विकास' से**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्कृत साहित्य

☆

का

☆

☆

विद्यार्थी उपयोगी प्रकाशन

☆

☆

☆

विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा

कादम्बरी कथामुखम्	डा० कृष्ण अवतार बाजपेयी	१२.००
संस्कृत साहित्य का सुबोध इतिहास	डा० राजकिशोरसिंह	१२.००
संस्कृत साहित्य की प्रवृत्तियाँ	डा० जयकिशन प्रसाद	१८.००
संस्कृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास	डा० बाबूराम त्रिपाठी	१६.००
संस्कृत नाट्य साहित्य	डा० जयकिशन प्रसाद	१२.००
प्राचीन भारतीय कला एवं संस्कृति	डा० राजकिशोरसिंह, उषा यादव	२८.००
भारतीय संस्कृति	डा० राजकिशोरसिंह	२०.००
संस्कृत भाषा-विज्ञान	डा० राजकिशोरसिंह	१२.००
संस्कृत व्याकरणम्	डा० बाबूराम त्रिपाठी	२४.००
भारतीय दर्शन	डा० रामकृष्ण आचार्य एवं बाबूराम त्रिपाठी	१२.००
संस्कृत निबन्धांजलिः	डा० रामकृष्ण आचार्य	१५.००
ऋक्-सूक्त-समुच्चयः	डा० रामकृष्ण आचार्य	२०.००
मेघदूतम् [सम्पूर्ण, सटीक]	डा० रामकृष्ण आचार्य	९.००
मेघदूतम् [पूर्वमेघ, सटीक]	डा० रामकृष्ण आचार्य	६.५०
संस्कृत वाङ्मय : मौखिकी	डा० गोविन्द त्रिगुणायत	६.००
वैदिक साहित्य का इतिहास	डा० राजकिशोर सिंह	८.००
संस्कृत साहित्य का इतिहास	डा० द्वारिकाप्रसाद	९·००
काव्यप्रकाश : एक अध्ययन	डा० पारसनाथ द्विवेदी	६·५०
ध्वन्यालोकः एक अध्ययन	डा० पारसनाथ द्विवेदी	३.५०
कालिदास और अभिज्ञान शाकुन्तलम्	डा० जयकिशन प्रसाद	५.५०
चतुर्वेद	डा० जयकिशन प्रसाद	५.००
कालिदास और मेघदूत	डा० जयकिशन प्रसाद	५.००
सुबोध संस्कृत भाषा-विज्ञान	डा० जयकिशन प्रसाद	५.००
साहित्य दर्पण : एक अध्ययन	डा० जयकिशन प्रसाद	५.००
संस्कृत निबन्ध कौमुदी	डा० बाबूराम त्रिपाठी	४.००
रघुवंशम् [प्रथम सर्ग]	डा० जयकिशन प्रसाद	४.५०
रघुवंशम् [द्वितीय सर्ग]	डा० रामकृष्ण आचार्य	४.००
रघुवंशम् [१३ वाँ सर्ग]	डा० रामकृष्ण आचार्य	३.००
अभिज्ञान शाकुन्तलम् : चतुर्थ अंक	डा० रामकृष्ण आचार्य	४.००
अपरीक्षितकारकम् (पंचतन्त्र से)	डा० पारसनाथ द्विवेदी	४.५०
शिशुपालवधम् महाकाव्यम् [सर्ग १, २]	डा० पारसनाथ द्विवेदी	१०.००
शिशुपाल वधम् [सर्ग १]	डा० पारसनाथ द्विवेदी	६.००
कुमार सम्भवम् [प्रथम सर्ग]	डा० जयकिशन प्रसाद	६.००
कुमार सम्भवम् [पंचम सर्ग]	डा० पारसनाथ द्विवेदी	५.००
किरातार्जुनीयम् [प्रथम सर्ग]	पं० वेणीमाधव शास्त्री मुसलगाँवकर	५.००
किरातार्जुनीयम् [द्वितीय सर्ग]	पं० वेणीमाधव शास्त्री मुसलगाँवकर	६.००
भारतीय दर्शन (प्रश्नोत्तर)	डा० राजकिशोरसिंह	८.००
भारतीय संस्कृति [प्रश्नोत्तर में]	डा० जयकिशन प्रसाद	५.००
प्राचीन भारत का सांस्कृतिक इतिहास तथा संस्कृत साहित्य का इतिहास	डा० जयकिशनप्रसाद खण्डेलवाल	७.००
संस्कृत निबन्ध कौमुदी	डा० बाबूराम त्रिपाठी	५.५०
व्याकरण कौमुदी [भाग–१]	,, ,,	३.००
चन्द्रालोक : पंचम मयूख	डा० पारसनाथ द्विवेदी	२.५०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नई पुस्तकें

शिक्षा एवं मनोविज्ञान

मनोविज्ञान की पद्धतियाँ एवं सिद्धान्त (संशोधित तृतीय संस्करण), डा० जे० डी० शर्मा, डिमाई, पृष्ठ ६२४, मूल्य २५·००

प्रयोगात्मक मनोविज्ञान (संशोधित तृतीय संस्करण) एम० ए० हकीम, डा० विपिन अस्थाना, डिमाई, पृष्ठ ३६२, मूल्य १४·००

An Introduction to Major Philosophies of Education (1st Edition) Dr. R. S. Pandey, Demy, pp. 204, Price Rs. 14·00, Lib. Edn. Rs. 20·00.

विकासात्मक मनोविज्ञान (संशोधित तृतीय संस्करण) भाई योगेन्द्रजीत, डिमाई, पृष्ठ ३६२, मूल्य १५·००

तुलनात्मक शिक्षा (संशोधित तृतीय संस्करण) डा० सरयूप्रसाद चौबे, डिमाई, पृष्ठ ८१६, मूल्य ३७·५०

शिक्षा-मनोविज्ञान (संशोधित सत्रहवाँ संस्करण) भाई योगेन्द्रजीत, क्राउन, पृष्ठ ३३२, मूल्य १०·००

वस्त्र-विज्ञान के मूल सिद्धान्त (तेरहवाँ संस्करण) डा० जी० पी० शैरी, डिमाई, पृष्ठ २०४, मूल्य ८·५०

शैक्षिक मूल्याँकन (बी० टी० सी० के द्विवर्षीय पाठ्यक्रमानुसार) पी० डी० पाठक, डिमाई, मूल्य ४·००

पाठशाला-प्रबन्ध, स्वास्थ्य शिक्षा एवं सामुदायिक संगठन (बी० टी० सी० के द्विवर्षीय पाठ्यक्रमानुसार) दिनेशचन्द्र भारद्वाज, डिमाई, मूल्य ७·००

विविध

हिन्दी के प्रतिनिधि एकांकीकार (प्रथम संस्करण) डा० द्वारिकाप्रसाद सक्सेना, डिमाई, पृष्ठ ४६०, मूल्य ३०·००

नवीन साहित्यिक निबन्ध (संशोधित तृतीय संस्करण) डा० गोविन्द त्रिगुणायत, डिमाई, पृष्ठ ४४८, मूल्य २२·५०

साहित्यिक निबन्ध (संशोधित उन्नीसवाँ संस्करण) राजनाथ शर्मा, डिमाई, पृष्ठ ६६२, मूल्य ३५·००

अभिनव साहित्यिक निबन्ध (संशोधित द्वितीय संस्करण) डा० राजेश्वरप्रसाद चतुर्वेदी, डिमाई, पृष्ठ ६४०, मूल्य ३०·००

पंचतन्त्रम् : अपरीक्षितकारकम् (संशोधित चतुर्थ संस्करण) डा० पारसनाथ द्विवेदी, क्राउन, पृष्ठ १३६, मूल्य ४·५०

पंचवटी (आलोचनात्मक) डा० कृष्णदेव शर्मा, क्राउन, पृष्ठ १८४, मूल्य ५·००

[पृष्ठ ७ का शेषांश]

बोलते हों, किसी भी धर्म या मत को क्यों न मानते हों, राष्ट्र-समस्याओं में, उसके दुःख-सुख में, उसकी समृद्धि में हम सभी समभागी हैं, अपनी समस्त विविधताओं के होते हुए भी सांस्कृतिक एवं भावात्मक दृष्टि से हम सभी एक हैं तथा आत्मिक दृष्टि से सुशिक्षित हैं।

उपसंहार—सद्व्यवहार के बिना बौद्धिक स्वतन्त्रता और साहस के अवांछित परिणाम उत्पन्न होने की सम्भावना है, उसी प्रकार लोगों में कार्य-शक्ति, परिश्रम, संघर्ष और उत्साह का विकास भी संशय से खाली नहीं है यदि इसके साथ ही शान्तिप्रियता, सन्तोष और आत्म-विश्लेषण का प्रशिक्षण न हो जो कि भारतीय संस्कृति के साथ आत्मिक शिक्षा की विशेषताएँ रही हैं—निःसन्देह तात्कालिक आवश्यकताओं के कारण हमें क्रियाशीलता पर अधिक बल देना चाहिए किन्तु इसके लिए हम उन स्थायी और शाश्वत मूल्यों का 'सा विद्या या विमुक्तये' का बलिदान नहीं कर सकते, जिसकी गोद में पल कर मानवता उच्चतम शिखर पर पहुँचती है। अतः यह कहना शत-प्रतिशत सही है कि आत्मा की शिक्षा ही शिक्षा की आत्मा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षण-कला, शिक्षण तकनीक एवं नवीन पद्धतियाँ
डा० एस० एस० माथुर १८.००

सफल शिक्षण कला
पी० डी० पाठक १५.००

शिक्षण-तकनीकी
(Technology of Teaching)

शिक्षण-तकनीकी
शैलेन्द्र भूषण एवं
डा० अनिलकुमार वार्ष्णेय १०.००

शैक्षिक तकनीकी के मूल आधार
डा० एस० पी० कुलश्रेष्ठ १६.००

विद्यालय-प्रशासन
(School Administration)

Educational Administration 22.00
S. P. Sukhia Lib. edn. 30.00

विद्यालय प्रशासन एवं संगठन
एस० पी० सुखिया १४.१५

शैक्षिक एवं विद्यालय प्रशासन
भाई योगेन्द्रजीत १५.००

विद्यालय-संगठन एवं स्वास्थ्य शिक्षा
डा० रामपालसिंह वर्मा १२.००

विद्यालय व्यवस्था श्री केशवप्रसाद ७.५०

शिक्षा-प्रशासन डा० उमेशचन्द्र कुदेसिया १२.००

स्वास्थ्य-शिक्षा
(School Hygiene)

स्वास्थ्य-शिक्षा डा० जी० पी० शैरी १६.००

School Health Education & Public Health
Dr. S. P. Chaube, 20.00
Akhilesh Chaube Lib. Edn. 30.00

मापन एवं मूल्यांकन
(Measurement & Evaluation)

शैक्षिक मूल्याँकन
डा० रामपालसिंह वर्मा १०.००

मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सरल मूल्यांकन
डा० रामपालसिंह वर्मा ६.००

Measurement and Evaluation in Psychology & Education
Dr. Bipin Asthana & Dr. Agrawal
(In Press)

मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन
डा० आर० एन० अग्रवाल,
डा० बिपिन अस्थाना १८.००

सांख्यिकी
(Statistics)

सांख्यिकी के मूल तत्त्व (सामाजिक विज्ञानों में)
डा० एच० के० कपिल २७.७०

मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी
डा० (श्रीमती) प्रीती वर्मा,
डा० डी० एन० श्रीवास्तव १७.००

प्रारम्भिक सांख्यिकी
डा० प्रीती वर्मा, डा० श्रीवास्तव १०.००

शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग
डा० सुरेश भटनागर ७.००

शिक्षा-दर्शन
(Philosophy of Education)

भारत में शिक्षा-दर्शन और शैक्षिक समस्याएँ
पाठक एवं त्यागी १७.००

शिक्षा-दर्शन डा० रामनाथ शर्मा १५.००

शिक्षा-दर्शन डा० रामशकल पाण्डेय १६.००

शिक्षा के दार्शनिक सिद्धान्त
पी० डी० पाठक, त्यागी १८.००

निर्देशन
(Guidance)

शैक्षिक मापन एवं निर्देशन
उमेश प्रसाद सिंह ४.००

शिक्षा में निर्देशन एवं परामर्श
डा० सीताराम जायसवाल १२.००

शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन
डा० रामपालसिंह वर्मा, उपाध्याय १६.००

तुलनात्मक-शिक्षा

तुलनात्मक शिक्षा
डा० सरयू प्रसाद चौबे ३७.५०

शिक्षा व्यवस्थाएँ डा० सरयू प्रसाद चौबे १२.००

विषय-शिक्षण—इसके अन्तर्गत हिन्दी-शिक्षण, इतिहास, सामाजिक अध्ययन, नागरिकशास्त्र, भूगोल, विज्ञान, जीव-विज्ञान, गणित, संस्कृत, वाणिज्य, अर्थशास्त्र, गृहविज्ञान व अंग्रेजी-शिक्षण पर विभिन्न विद्वानों की लिखी सरल भाषा में पुस्तकें उपलब्ध हैं।

उक्त सभी प्रश्नपत्रों पर हिन्दी तथा अंग्रेजी में प्रश्नोत्तर रूप में भी पुस्तकें प्राप्य हैं।

सूचीपत्र निःशुल्क मँगायें

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिना टिकट प्रेषण करने का प्रमाण पत्र संख्या—AG-009

साहित्य-परिचय [अगस्त, 1982] पंजीबद्ध संख्या—L. AG.-038

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग द्वारा संचालित

☼ प्रथमा ☼ विशारद ☼ साहित्यरत्न

☼ उपवैद्य ☼ वैद्य विशारद एवं ☼ आयुर्वेदरत्न

आदि परीक्षाओं की

सं० २०३९ (१९८२) के लिए

पाठ्य एवं सहायक पुस्तकों की सूचियाँ

हमारे यहाँ से निःशुल्क उपलब्ध हैं

[सम्मेलन द्वारा (१) प्रथमा, (२) विशारद एवं (३) साहित्यरत्न परीक्षाओं की विवरण पत्रिकाएँ हमारे द्वारा प्रथक-प्रथक प्रकाशित की जाती हैं, जो हमारे यहाँ से उपलब्ध हैं।]

अधिक जानकारी हेतु सम्मेलन की बड़ी विवरण पत्रिका ५-५० धनादेश से डाक व्यय सहित भेजकर रजिस्टर्ड डाक द्वारा हमसे प्राप्त करें।

☼ हम सम्मेलन परीक्षाओं की पुस्तकों के प्रमुख विक्रेता हैं।

☼ एम० ए० हिन्दी, संस्कृत, मनोविज्ञान, गृहविज्ञान, बी० टी० सी० तथा बी० एड० की सभी पाठ्य एवं सहायक पुस्तकें हमारे यहाँ से उचित मूल्य पर प्राप्त होती हैं तथा पुस्तक-सूची निःशुल्क भेजी जाती है।

☼ हमारे यहाँ पुस्तकें तुरन्त वी० पी० पैकिट द्वारा भेजने की व्यवस्था है।

☼ ग्राहकों की मांग के अनुसार सही पुस्तकें भेजना हमारी विशेषता है।

☼ सम्मेलन की परीक्षाओं के सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की समस्या के लिये हमारी सेवाएँ सहर्ष प्रस्तुत हैं।

सम्मेलन परीक्षाओं के दिग्दर्शन (गाइडें) नवीन पाठ्यक्रमानुसार सभी तैयार हैं। कृपया पत्र-व्यवहार करें।

हमारी प्रमुख विशेषता है—

- शीघ्र एवं सन्तोषजनक सेवा
- मधुर व्यवहार
- प्रत्येक पत्र का तुरन्त एवं समुचित उत्तर

कृपया एक बार सेवा का अवसर दें।

विनोद पुस्तक मन्दिर

डा. रांगेय राघव मार्ग, आगरा.

प्रकाशक एवं मुद्रक : विनोद कुमार अग्रवाल द्वारा कैलाश प्रिंटिंग प्रेस, आगरा—2

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

12
12.1.83

अक्टूबर
1982

साहित्य समीक्षा

पत्रिकायक – पत्र

शैक्षिक जगत के ख्याति प्राप्त लेखक —

डॉ० सरयूप्रसाद चौबे, रिटायर्ड प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र संकाय, विश्वविद्यालय, गोरखपुर द्वारा लिखित

दो महत्त्वपूर्ण पुस्तकें

☆ ☆ ☆

तुलनात्मक शिक्षा

मूल्य : 40·00

इस पुस्तक में तुलनात्मक शिक्षा के सिद्धान्तों तथा ग्रेट ब्रिटेन, रूस, यू० एम० ए०, फ्रान्स, चीन, जापान, टर्की और भारत के राष्ट्रीय शिक्षा-संगठनों का विशद विवेचन है। इस नवीन संस्करण में यथा-स्थान नये आँकड़े तथा विषय-सामग्री जोड़ दी गई हैं। इस विषय पर हिन्दी में लिखित किसी अन्य पुस्तक में इतने अधिक विषयों का इतने विस्तार से समावेश नहीं किया है जितना कि प्रस्तुत ग्रन्थ में विवेचित है। पुस्तक सभी विधि से विश्वविद्यालय स्तर के स्नातक और उत्तर स्नातक कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी है। देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों में यह पुस्तक मानक ग्रन्थ के रूप में मान्यता प्राप्त कर चुकी है। पुस्तक का तृतीय संशोधित एवं परिवर्द्धित संस्करण अब उपलब्ध है।

आकार : डिमाई पृष्ठ संख्या : 874 तृतीय संस्करण : 1983

हमारी शिक्षा समस्याएँ

मूल्य : 18·00

प्रस्तुत ग्रन्थ दो खण्डों—'विभिन्न स्तरों पर शिक्षा-समस्यायें' तथा 'कुछ अन्य सामान्य शिक्षा समस्यायें'—में विभाजित है। विश्वविद्यालय स्तर के लिए यह एक मानक ग्रन्थ के रूप में तैयार की गई है। विविध समस्याओं के विवेचन के क्रम में उनके समाधान की ओर भी संकेत किया गया है। पुस्तक की भाषा सरल और सरस है। इसमें प्रयुक्त पारिभाषिक शब्द भारत सरकार द्वारा स्वीकृत शब्दावली से लिये गये हैं।

प्रथम खण्ड—इसमें विवेचित कुछ प्रस्तुत विषय इस प्रकार हैं :— पूर्व-प्राथमिक, प्राथमिक, माध्यमिक, विश्वविद्यालयीय स्तर पर समस्यायें, शैक्षिक प्रशासन, अनिवार्य शिक्षा तथा बहुउद्देश्यीय विद्यालय आदि, आदि।

द्वितीय खण्ड—इसमें विश्व की शिक्षा—समस्यायें, ज्ञान का विस्फोटन और पाठ्यक्रम के निर्धारण की समस्या, स्त्री-शिक्षा, सामाजिक, प्राविधिक, धार्मिक, नैतिक, शिक्षण-पद्धति, अध्यापक-प्रशिक्षण, पब्लिक स्कूल, राजनीति और शिक्षा, भाषा-समस्या, कार्यानुभव, व्यावसायीकरण, नवीन विकास, प्रयोग, शिक्षा की प्रगति आदि, आदि, विषयों की विवेचना है।

उक्त दोनों पुस्तकें एम० एड०, बी० एड० तथा शिक्षा-शास्त्र के एम० ए० और बी० ए० के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी है।

आकार : डिमाई पृष्ठ संख्या : 432 प्रथम संस्करण : 1983

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी जगत् के ख्याति प्राप्त लेखक डा० द्वारिकाप्रसाद सक्सेना का हिन्दी साहित्य की समृद्धि हेतु एक और नवीन ग्रन्थ

हिन्दी के प्रतिनिधि एकांकीकार

डा० द्वारिका प्रसाद सक्सेना

एम. ए. (हिन्दी संस्कृत) पी-एच. डी., डी-लिट्.

अवकाश प्राप्त रीडर तथा अध्यक्ष. हिन्दी विभाग

एन. आर. ई. सी. कालेज, खुरजा

(मेरठ विश्वविद्यालय)

आज हिन्दी में जिस पाश्चात्य शिल्प पर आधारित एकांकी का प्रचार एवं प्रसार दिखाई दे रहा है। वह हिन्दी-जगत् में सर्वथा नवीन एवं अद्यतन विकास है, क्योंकि आज से ५० वर्ष पूर्व भारतेन्दु जी ने 'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति', 'पाखण्ड-विडम्बन', 'धनंजय विजय', 'भारत दुर्दशा,' 'विषस्य विषमौषधम्,' 'अँधेर नगरी आदि, बालमुकंद भट्ट ने 'बाल-विवाह', प्रताप नारायण मिश्र ने 'कलि कौतुक', किशोरीलाल गोस्वामी ने 'चौपट चपेट', बदरीनाथ चौधरी प्रेमघन ने 'प्रयाग-राम गमन' आदि लिखकर हिन्दी में एक अंक वाले नाटकों का शुभारम्भ कर दिया था, तथापि इन नाटकों को न तो आधुनिक एकांकी के शिल्प की दृष्टि से एकांकी कह सकते हैं न कथा-योजना की दृष्टि से ये आधुनिक एकांकी के निकट हैं और न अन्तर्द्वन्द्व या आन्तरिक संघर्ष की दृष्टि से ये नाटक आधुनिक एकांकी की श्रेणी में आते हैं, अपितु इनका झुकाव पूर्णतया संस्कृत रूपकों की ओर ही रहा है और वे पूर्णतया संस्कृत एकांकी रचना-पद्धति पर आधारित हैं। अतः आधुनिक एकांकी की शिल्प-विधि, कथा-विन्यास, संघर्ष निरूपण आदि से कोसों दूर रहने के कारण भारतेन्दु युग के एकांकियों को आधुनिक एकांकी की श्रेणी में नही रखा जा सकता।

आज हिन्दी एकांकी की रचना विपुल मात्रा में हुई है और हो रही है तथा विविध प्रकार के एकांकी दिन-प्रतिदिन लिखे जा रहे हैं।

प्रस्तुत आलोचना ग्रन्थ में केवल उन्हीं एकांकीकारों को स्थान दिया गया है जो बहुचर्चित एवं बहूश्रुत हैं तथा जिनके एकांकियों ने इस साहित्यिक विधा को अधिकाधिक विकसित बनाने में स्तुत्य प्रयास किया है। हिन्दी के सुधी पाठक इस पुस्तक के माध्यम से एकांकी कला का सर्वाङ्गीण अध्ययन करके इस साहित्यिक विधा के मर्म तक पहुँचने का प्रयास करेंगे और हिन्दी की इस नूतन कला के रहस्य को अच्छी तरह जानकर आनन्द प्राप्त करेंगे।

एकांकीकार

डा. रामकुमार वर्मा
भुदनेश्वर प्रसाद
उदयशंकर भट्ट
सेठ गोविन्ददास
उपेन्द्रनाथ 'अश्क'
जगदीशचन्द्र माथुर
विष्णु प्रभाकर
विनोद रस्तोगी
लक्ष्मीनारायण मिश्र

आकार : डिमाई

पृष्ठ ४६०

मूल्य : ३०.००

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-परिचय

[शिक्षा और साहित्य की प्रगति का परिचायक पत्र]

[वर्ष 17 : अंक 9-10]
सितम्बर-अक्टूबर, 1982

●

सम्पादक
विनोद कुमार अग्रवाल
एम० ए०, साहित्यरत्न

●

स्वामित्व
विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

●

वार्षिक शुल्क : 15·00
रजिस्ट्री से विशेषांक मँगवाने पर
18·00
[विदेशों में—डाक व्यय सहित मात्र 40·00]

●

साहित्य-परिचय
डा० रांगेय राघव मार्ग
आगरा–2
फोन : 76486

सम्पादकीय

आजकल बी० एड० के पाठ्यक्रम में सुधार के लिए अनेक प्रयास हो रहे हैं। अध्यापक शिक्षा की राष्ट्रीय परिषद् (NLTE) ने भी अनेक वर्षों के राष्ट्रीय चिन्तन के परिणामस्वरूप एक फ्रेमवर्क तैयार किया है जिसके आधार पर बी० एड० के पाठ्यक्रम में सुधार करने के लिए अनेक सुझाव दिये गये हैं। इस फ्रेमवर्क की रचना में देश के मूर्धन्य शिक्षाशास्त्रियों का योगदान रहा है।

इस फ्रेमवर्क में अनेक अच्छाइयाँ हैं जिन्हें अस्वीकार नहीं किया जा सकता। शिक्षणाभ्यास पर अधिक बल देकर राष्ट्रीय परिषद् ने एक अच्छा कार्य किया है। आजकल अनेक विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में शिक्षणाभ्यास केवल औपचारिकता का निर्वाह करने के लिए किया जाता है। येन-केन-प्रकारेण छात्राध्यापक कुछ पाठ पढ़ाने का नाटक कर लेता है और कभी-कभी यह नाटक भी नहीं होता वरन् पाठ पढ़ा देने का मिथ्याचरण किया जाता है। प्रशिक्षण महाविद्यालयों की यह स्थिति अत्यन्त शोचनीय है जिसे बदला जाना चाहिए। राष्ट्रीय परिषद् के फ्रेमवर्क में शिक्षणाभ्यास पर अधिक बल दिया गया है। यह एक अच्छी बात है।

किन्तु नवीनता के चक्कर में राष्ट्रीय परिषद् ने शिक्षण-सिद्धान्तों की उपेक्षा करके अपने किये हुए पर पानी फेर दिया है। सिद्धान्त के प्रश्नपत्रों में भी शिक्षा-सिद्धान्त के प्रश्नपत्र को विदा कर दिया है। शिक्षाशास्त्र के अनेक प्राध्यापकों के गले के नीचे यह बात नहीं उतरती कि शिक्षा-सिद्धान्त को न पढ़ाकर छात्राध्यापकों से हम किस शुभ कार्य की आशा करते हैं। शिक्षा-सिद्धान्त को पढ़ाने का प्रमुख प्रयोजन छात्राध्यापकों के दृष्टिकोण में परिवर्तन लाना है और इस दृष्टि से इस प्रश्नपत्र की अनिवार्यता सिद्ध होती है। ऐसा लगता है कि राष्ट्रीय परिषद् ने जल्दबाजी में यह फ्रेमवर्क तैयार कराया है। अतः इसमें संशोधन की आवश्यकता है। अच्छा हो, यदि परिषद् स्वयं इसमें संशोधन की पहल करे। यदि ऐसा नहीं होता, तो इस फ्रेमवर्क की व्यावहारिकता पर प्रश्नचिह्न लग जाएगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोविज्ञान के श्रेष्ठ प्रकाशन

मनोविज्ञान की पद्धतियाँ एवं सिद्धान्त
डा० जे० डी० शर्मा २५·००

नैदानिक-मनोविज्ञान
डा० रामपाल सिंह वर्मा २५.००
प्रा. ले. : डा० एम. ए. शाह पु० सं० ३५.००

मनोविज्ञान के समकालीन सम्प्रदाय
डा० आर० के० ओझा १०.००

मनोविज्ञान के सम्प्रदाय
डा० रामपालसिंह वर्मा ६.५०

आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान २०.००
डा० प्रीती वर्मा, डा० श्रीवास्तव पु० सं० ३०.००

सामान्य मनोविज्ञान
डा० एस० एस० माथुर २०.००

सामान्य मनोविज्ञान की रूपरेखा
भाई योगेन्द्रजीत १०.००

असामान्य मनोविज्ञान के मूल आधार
डा० लाभसिंह, डा० तिवारी २१·२५
पुस्तकालय संस्करण ३२·००

असामान्य मनोविज्ञान (बी० ए० के लिए)
डा० लाभसिंह, डा० गोविन्द तिवारी २०.००

समाज मनोविज्ञान : प्रारम्भिक अध्ययन
डा० एस० एस० माथुर १४.००

समाज मनोविज्ञान (For Advanced Study)
डा० एस० एस० माथुर २५.००

शिक्षा-मनोविज्ञान
डा० एस० एस० माथुर १६.००

शिक्षा-मनोविज्ञान (संक्षिप्त संस्करण)
डा० एस० एस० माथुर १७.००

शिक्षा-मनोविज्ञान
प्रो० पी० डी० पाठक १६.४०

शिक्षा-मनोविज्ञान
डा० रामपालसिंह वर्मा, १८.००
डा० राधावल्लभ उपाध्याय पु० सं० २८.००

Educational Psychology 25.50
Dr. S. S. Mathur Lib. edn. 40.00

बाल मनोविज्ञान : बाल विकास
डा० प्रीती वर्मा, डा० श्रीवास्तव २२.५०

बाल मनोविज्ञान
भाई योगेन्द्रजीत १७.००

बाल विकास तथा पारिवारिक सम्बन्ध
डा० सरयूप्रसाद चौबे १५·००

सांख्यिकी के मूल तत्त्व
डा० एच० के० कपिल २७·७०

मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी
डा० (श्रीमती) प्रीती वर्मा,
डा० डी० एन० श्रीवास्तव १७·००

प्रारम्भिक सांख्यिकी
डा० प्रीती वर्मा, डा० श्रीवास्तव १०·००

शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग
सुरेश भटनागर ७·००

शिक्षा में सरल सांख्यिकी
डा० रामपालसिंह वर्मा ८·००

शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक अनुसंधान के मूलाधार
डा० गोविन्द तिवारी १८·००

मनोविज्ञान शोध-विधियाँ
प्रो० एम० ए० हकीम, बिपिन अस्थाना १५·००

शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्त्व
एस० पी० सुखिया
वी० पी० मेहरोत्रा, आर० एन० मेहरोत्रा २०·००

आधुनिक प्रयोगात्मक मनोविज्ञान
डा० प्रीती वर्मा, २४·००
डा० डी० एन० श्रीवास्तव पु० सं० ३५·००

प्रयोगात्मक मनोविज्ञान
प्रो० एम० ए० हकीम, डा० बिपिन अस्थाना १४·००

औद्योगिक मनोविज्ञान २०·००
डा० आर० के० ओझा पु० सं० २८·००

विकासात्मक मनोविज्ञान
भाई योगेन्द्रजीत १५.००

शैक्षिक मूल्यांकन
डा० रामपालसिंह वर्मा १०·००

मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन
डा० आर० एन० अग्रवाल,
डा० बिपिन अस्थाना १८·००

मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सरल मूल्यांकन
डा० रामपाल सिंह वर्मा ६·००

विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा-२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुहावरा-कोष के आधार पर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के प्रकार

डॉ० हरिशंकरलाल विद्यार्थी
प्रवक्ता, बी० एड० विभाग, शिवपति महाविद्यालय, शोहरतगढ़ (बस्ती)

विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का मूल्यांकन करने हेतु मनोवैज्ञानिक बहुधा जीवन-वृत्त विधि, साक्षात्कार विधि, प्रश्नावली विधि, निर्माण-परीक्षण विधि, पेंसिल-कागज विधि, व्यक्तित्व परिस्थिति अध्ययन विधि, परिस्थिति-परीक्षण विधि, प्रक्षेपी विधि, मनोविश्लेषण विधि आदि का प्रयोग करते हैं। कुछ मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तित्व का वर्गीकरण एवं विवेचन अन्तःस्रावी, जैविक प्रकार, फ्रायडियन प्रकार आदि के अन्तर्गत भी किया है। स्वभाव के आधार पर—मन्द, खिन्न, क्रोधी, आशामय; शारीरिक प्रकार—सुडौलकाय, लम्बकाय, गोलकाय, डायसप्लास्टिक; मानसिक आधार पर अन्तर्मुखी, विकासोन्मुख, बहिर्मुखी आदि भेद भी व्यक्तित्व के स्वरूप पर पर्याप्त प्रकाश डालते हैं।

किन्तु दैनिक जीवन में कुछ थोड़े विशिष्ट व्यक्तियों को छोड़कर, जिन्हें मनोविज्ञान का ज्ञान है, शेष लगभग सभी, व्यक्तित्व का प्रत्यक्षीकरण उपर्युक्त दृष्टिकोण के अनुसार नहीं करते। वे अपने पूर्व ज्ञान-अनुभव के आधार पर व्यक्तित्व का अंकन करते हैं। सरलता की दृष्टि से विभिन्न प्रकार के व्यक्तित्व के लिए जन-साधारण ने भाषा का संक्षेपीकरण कर लिया है। वे अपनी भाषा में व्यक्तित्व के लिए सुगम मुहावरों का प्रयोग करते हैं। मनोवैज्ञानिकों ने अब तक व्यक्तित्व सम्बन्धी इस लोक-ज्ञान तथा व्यक्तित्व से सम्बन्धित मुहावरों के अध्ययन-अनुसन्धान पर ध्यान केन्द्रित नहीं किया है, जबकि मुहावरों पर किया गया प्रयोग स्वप्न-प्रतीकों की भाँति रोचक एवं ज्ञानवर्धक हो सकता है।

इतिहास-वृत्त विधि में मुहावरों का संकलन निश्चय ही एक पूरक विधि के रूप में अपनाया जा सकता है। क्योंकि मुहावरे जीवन की महत्त्वपूर्ण संवेगात्मक घटनाओं, दृष्टिकोणों, रुचियों, कुण्ठाओं, द्वन्द्वों तथा चित्त-प्रकृति आदि से जुड़े पाये जाते हैं।

मुहावरों पर स्वभाव की छाप रहती है। मुहावरे संयोजित स्वभावोक्ति हैं। उदाहरणार्थ, अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी विद्यार्थियों के मुहावरा-कोष में रोचक एवं महत्त्वपूर्ण अन्तर पाया जाता है।

अध्ययन की लगभग सभी विधियों से उपलब्ध आँकड़ों की विश्वसनीयता के परीक्षण के लिए अध्ययनकर्ता विषयी के अन्तर्दर्शन का भी आश्रय लेता है। मुहावरों के द्वारा अन्तर्दर्शन में बड़ी ही सुविधा प्राप्त होती है। मुहावरों के माध्यम से मनोवैज्ञानिक मन की गहराइयों में सरलता से पैठ सकता है। मुहावरों का विश्लेषण, मनोविश्लेषण की सहज विधि है। मुहावरों का प्रयोग प्रक्षेपी विधि के रूप में भी किया जा सकता है। मुहावरों के आधार पर कोई अकुशल अध्ययनकर्ता भी अपने विषयी से सफल आत्मीय सम्बन्ध स्थापित कर सकता है। मनःचिकित्सकों को रुग्ण मन द्वारा निर्मित मुहावरों का अध्ययन, निदान एवं उपचार की प्रक्रिया में अवश्य करना चाहिये। उलझे मन को सुलझाने में मुहावरे बहुत सक्षम हैं। प्रायः मनस्ताप के रोगियों का मुहावरा-कोष सामान्य व्यक्तियों की तुलना में वृहद् पाया जाता है।

महाविद्यालय एवं माध्यमिक स्तर के जिन विद्यार्थियों ने अपनी व्यक्तिगत, शैक्षिक अथवा व्यावसायिक समस्याओं के निराकरण या अपने मानसिक विकारों के उपचार हेतु सम्पर्क स्थापित किया, उनके मुहावरों का संकलन किया गया। विद्यार्थियों के मुहावरों में व्यक्तिगत भिन्नता पाई गई। मुहावरों की मनोवैज्ञानिक विश्लेषण की प्रक्रिया में विद्यार्थी बहुत उपयोगी अन्तर्दृष्टि प्राप्त कर सके। अनेक मनोविकारग्रस्त समस्यात्मक छात्र/छात्राओं को स्वयं उनके अपने मुहावरों ने पथ-प्रदर्शन प्रदान किया। (इस सम्बन्ध में लेखक द्वारा लिखित पारिवारिक-चिकित्सा भाग १, २ का अवलोकन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया जा सकता है।) विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का वर्गीकरण उनके मुहावरों के आधार पर इस प्रकार किया गया—धोबी का कुत्ता, कोल्हू का बैल, काठ का उल्लू, वगुला भगत, आस्तीन का साँप, गप्पी, आलसी, निराश, दब्बू, झगड़ालू, घमण्डी, बेशर्म, शक्की, लालची, लाजवाब, दिलेर, दिलदार, मिठबोला, स्वावलम्बी, सन्तोषी, वफादार, दूरदर्शी।

दूरदर्शी विद्यार्थियों के व्यक्तित्व की विशेषताओं का वर्णन इस प्रकार किया जा सकता है—

'मैं दूरदर्शी हूँ'—दूर तक सोचता हूँ। गागर में सागर भरता हूँ। मुझे गीता का ज्ञान है। दूध पानी अलग कर सकता हूँ। ठण्डे दिमाग से काम लेता हूँ। चन्दन विष व्यापत नहीं लिपटे रहत भुजंग। मैं चन्दन हूँ। मुझे तो चन्दन की चुटकी भली गाड़ी भरी न काठ। आगा-पीछा सोचकर काम करता हूँ। चादर देखकर पैर फैलाता हूँ। मेरा ज्ञानचक्षु खुला है। मैं उड़ती चिड़िया पहचानता हूँ। मुझे मिलकर रहना आता है। चिन्तनशील हूँ। मौके का घूँसा तलवार से बढ़कर समझता हूँ। बिंध गया सो मोती, रह गया सो सीप। बड़ों के कहे और आँवले के खाये का पीछे स्वाद आता है। धोबी बस कर क्या करे, दिगम्बरों के गाँव। मैं आगा परख लेता हूँ। पक्की नींव पर ही महल खड़ा करता हूँ। ध्यान रखता हूँ कि साँप मरै, लाठी न टूटै। आँख-कान खुले रखता हूँ। सौ बात की एक बात कहता हूँ—किन्तु दूसरों की नस पहचान लेता हूँ। आलोचना तथा घटनाओं से सीख लेता हूँ। सेवा से मेवा खाता हूँ। दूसरों का महल देखकर अपनी झोंपड़ी नहीं गिराता। सूझबूझ से काम लेता हूँ। इशारा काफी है। मैं भावों में बहता नहीं, तैरता हूँ। अपने में गुण ही नहीं देखता, दोष भी देखता हूँ। बद न बोले गर कोई मेरी सुने, यह है गुम्बद की सदा जैसी कहे वैसी सुने। इसलिए मैं मीठा सत्य बोलता हूँ। सीख न दीजै बांदरा, अपनी हानि कराय। सोना पहन ढक चल, पूत ले झुक चल। इसलिये मैं विनय को महत्त्व देता हूँ। मुझे दूसरों से सहारा नहीं, सहयोग चाहिए। स्वधर्म का पालन करता हूँ। मैं दूरदर्शी हूँ। नाना प्रकार के पशु-पक्षियों की परख मनुष्य उनकी बोली से कर लेता है। किन्तु वह स्वयं मनुष्यों की बोली समझकर उसके व्यक्तित्व के सम्बन्ध में निश्चित निर्णय ले पाने में बहुधा धोखा खाता है। भाषा विज्ञान के क्षेत्र में व्यक्तित्व सम्बन्धी अनेक सूक्ष्मदर्शी अध्ययन कर पाना सम्भव है। बोली के आधार पर व्यक्तित्व वर्गीकरण करने की कोई वैज्ञानिक विधि अब तक उपलब्ध नहीं है। इस प्रयास में मुहावरों का योगदान सराहनीय सिद्ध हो सकता है। प्रस्तुत अध्ययन इसी दिशा में किया गया एक लघु प्रयास है।●

[पाठकों से निवेदन है कि यदि वे मुहावरों से सम्बन्धित कोई अनुसन्धान कार्य कर रहे हों, तो लेखक को सूचित करने की कृपा करें।—सं०]

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग की परीक्षाओं के लिए

सं २०३९ सन् (१९८२) के नवीन पाठ्यक्रमानुसार

दिग्दर्शन (गाइडें)

●प्रथमा दिग्दर्शन (गाइड)	प्रो० श्रीभगवान शर्मा	२२.५०
●मध्यमा दिग्दर्शन (गाइड)	डा० कृष्णदेव शर्मा	२५.००
●साहित्यरत्न दिग्दर्शन (गाइड)—प्रथम खण्ड	,,	२५.००
●साहित्यरत्न दिग्दर्शन (गाइड)—द्वितीय खण्ड	,,	२५.००
●उपवैद्य दिग्दर्शन (गाइड)	वैद्य अनिलकुमार व्यास	१५.००
●वैद्य विशारद दिग्दर्शन (गाइड)—प्रथम खण्ड	वैद्य शिवकुमार व्यास	१५.००
●वैद्य विशारद दिग्दर्शन (गाइड)—द्वितीय खण्ड	,,	२०.००
●आयुर्वेदरत्न दिग्दर्शन (गाइड)—प्रथम खण्ड	वैद्य भूदेव शर्मा व्यास	२५.००
●आयुर्वेदरत्न दिग्दर्शन (गाइड)—द्वितीय खण्ड	,,	२५.००

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा—२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शीघ्रता करें—

प्रत्येक पुस्तकालय के लिये शुभ सूचना

दीपावली के शुभ अवसर पर

अधिकतम कमीशन ३० प्रतिशत का लाभ

उठाते हुए हमारे निम्न प्रकाशनों को क्रय करें

यह सुविधा मात्र एक मास के लिये है :

० सूरदास और संतकवि नटनगोपाल नायकी स्वामिगल का तुलनात्मक अध्ययन	डा० के० आर० विट्टलदास	60·00
० चैतन्य सम्प्रदाय : सिद्धान्त और साहित्य	डा० नरेशचन्द्र बंसल	75·00
० हिन्दी-चित्रपट का गीति-साहित्य	डा० ओंकारप्रसाद माहेश्वरी	32·00
० माखनलाल चतुर्वेदी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व	डा० कृष्णदेव शर्मा	50·00
० भारतीय उपन्यासों में वर्णन-कला का तुलनात्मक मूल्यांकन	डा० इन्दिरा जोशी	50·00
० हिन्दी उपन्यास की प्रवृत्तियाँ	डा० शशिभूषण सिंहल	40·00
० प्रसाद-दर्शन	डा० द्वारिकाप्रसाद सक्सेना	25·00
० वृन्द-ग्रन्थावली	डा० जनार्दनराव चेलेर	40·00
० वृन्द और उनका साहित्य	,,	40·00
० हिन्दी और तेलुगु वैष्णव-भक्ति साहित्य : तुलनात्मक अध्ययन	डा० के० रामनाथन्	40·00
० रीतिकाल और आधुनिक हिन्दी कविता	डा० रमेशकुमार शर्मा	30·00
० कृष्णभक्ति साहित्य में रीतिकाव्य परम्परा	डा० राजकुमारी मित्तल	30·00
० ब्रज और बुन्देली लोकगीतों में कृष्णकथा	डा० शालिग्राम गुप्त	40·00
० हिन्दी और कन्नड में भक्ति आन्दोलन का तुलनात्मक अध्ययन	डा० हिरण्मय	40·00
० नाथपंथ और निर्गुण सन्तकाव्य	डा० कोमलसिंह सोलंकी	40·00
० सन्त वैष्णव काव्य पर तांत्रिक प्रभाव	डा० विश्वम्भरनाथ उपाध्याय	40·00
० आलवार भक्तों का तमिल प्रबन्धम् और हिन्दी कृष्ण-काव्य	डा० मलिक मोहम्मद	50·00
० कामायनी में काव्य, संस्कृति और दर्शन,	डा० द्वारिकाप्रसाद सक्सेना	30·00
० हिन्दी में प्रत्यय विचार	डा० मुरारीलाल उपाध्याय	40·00
० हिन्दी समास रचना का अध्ययन	डा० रमेशचन्द्र जैन	20·00

[शेष अगले पृष्ठ पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

० हिन्दी वाङ्मय : बीसवी शती	सं० डा० नगेन्द्र	100·00
० भारतीय साहित्य : तुलनात्मक अध्ययन	सं० डा० ब्रजेश्वर वर्मा	20·00
० 'नवीन' और उनका काव्य	प्रो० जगदीशप्रसाद श्रीवास्तव	20·00
० चिन्तन की वीथियाँ	वेदव्रत शर्मा	15·00
० पाश्चात्य समीक्षा : सिद्धान्त और वाद	सत्यदेव मिश्र	20·00
० ब्रज लोक साहित्य और संस्कृति	डा० राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी	8·00
० स्वतन्त्रता परवर्ती हिन्दी उपन्यास	प्रेम कुमार	6·00
० आधुनिक हिन्दी कविता की भूमिका	डा० शम्भुनाथ पाण्डेय	40.00
० ब्रज साहित्य का मूल्यांकन	डा० भगवानसहाय पचौरी	40·00
० सूफी-काव्य-विमर्श	डा० श्याम मनोहर पाण्डेय	20·00
० काव्य, यथार्थ और प्रगति	डा० रांगेय राघव	5·00
० साधारणीकरण, संप्रेषण और प्रतिबद्धता	डा० तारकनाथ बाली	10·00
० लोक साहित्य : सिद्धान्त और प्रयोग	डा० श्रीराम शर्मा	30·00
० हिन्दी भाषा का विकासात्मक इतिहास	डा० द्वारिकाप्रसाद सक्सेना	15·00
० संत कबीर (एक यथार्थपरक मूल्यांकन)	डा० लक्ष्मीदत्त बी० पंडित	15·00
० हिन्दी के प्रतिनिधि एकांकीकार	डा० द्वारिकाप्रसाद सक्सेना	30·00
० श्रीरामचरितमानस की काव्यकला	डा० हरिहरनाथ हुक्कू	15·00
० आँसू-भाष्य	डा० द्वारिकाप्रसाद सक्सेना	10·00
० प्रियप्रवास में काव्य, संस्कृति और दर्शन	,,	12·00
० ध्रुवस्वामिनी में कला, संस्कृति और दर्शन	,,	8.00
० साकेत में काव्य, संस्कृति और दर्शन	,,	15·00
० पदमावत में काव्य, संस्कृति और दर्शन	,,	50·00
० असमिया साहित्य और साहित्यकार	चित्र महंत	8·00
० आधुनिक भारतीय मानस का संकट	लोकनाथ भराली	6.00
० डॉ० आत्मानन्द मिश्र अभिनन्दन ग्रन्थ	सं० डा० सरयूप्रसाद चौबे डा० रामशकल पाण्डेय, श्री बैस व अन्य	40·00
० पाठ्य-पुस्तकें : कुछ विचार	द्वारिकाप्रसाद माहेश्वरी	10·00
० अपभ्रंश साहित्य और व्याकरण	डा० जयकिशन प्रसाद	5·00
० LET US LEARN ENGLISH	M. S. Sachdeva	14·00

नोट—30 प्रतिशत कमीशन नगद के आदेशों पर ही है, उधार के आदेशों पर नहीं। बिल्टी बैंक या बी० पी० से ही भेजी जायगी। कृपया आदेश देते समय अपने समीपस्थ रेलवे स्टेशन का नाम स्पष्ट लिखें। 1000·00 रु० का आदेश होने पर F.O.R. गन्तव्य स्थान की भी सुविधा है।

—व्यवस्थापक

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नैतिकता और धर्म : अन्तर और सम्बन्ध

भू देव शास्त्री
८३/२७ जोन्सगंज, अजमेर

नैतिकता और धर्म को पाठ्यक्रमों का अंग बनाने के लिए यह पूरी तरह आवश्यक है कि पाठ्यक्रम-निर्माता उन दोनों के अन्तर और सम्बन्ध को सही ढंग से समझ लें। उन दोनों को समझने के लिए उन दोनों के स्वरूपों को पृथक् समझना आवश्यक है। इन दोनों का शास्त्रीय एवं पारिभाषिक ढंग से विवेचन न करके मैं व्यावहारिक रूप में ही इनकी चर्चा इस लेख में कर रहा हूँ।

जब कक्षा में छात्र और छात्राएँ अपने अध्यापकों से 'समाज' शब्द का अर्थ पूछते हैं, तब प्राय: उन्हें बता दिया जाता है कि मनुष्यों के समूह को 'समाज' कहते हैं। पर यह अर्थ सही नहीं है। सिनेमाघर से निकलने वाली भीड़ को हम समूह तो कह सकते हैं, पर समाज नहीं। समाज मनुष्यों का समूह तो होता ही है, पर वह 'कुछ और' भी होता है। वह 'कुछ और' ही वस्तुत: समाज का प्राण होता है और वही समाज को समूह से अलग करके 'समाज' नाम देता है।

समाज मनुष्यों का ही होता है, पशुओं अथवा पक्षियों का नहीं। उनके समूह को संस्कृत कोशकारों ने 'समज' कहा है। समाज का प्रत्येक घटक (व्यक्ति) प्रत्येक दूसरे व्यक्ति के साथ प्रत्यक्षत: अथवा अप्रत्यक्षत: सम्बद्ध होता है। किसी समाज के व्यक्ति और व्यक्ति के बीच विद्यमान ये सम्बन्ध कभी बिल्कुल स्पष्ट होते हैं और कभी बहुत सूक्ष्म, पर होते अवश्य हैं। हम यों भी कह सकते हैं कि समाज के सभी व्यक्ति अन्तर-सम्बन्धों के जाल में बँधे रहते हैं और जो व्यक्ति उस जाल में बँधे हुए नहीं रहते, वे उस समाज के घटक नहीं होते। चूँकि समाज के व्यक्ति अन्तर-सम्बन्धों में बँधे रहते हैं, इसीलिए उनके बीच मिथ:क्रिया भी होती रहती है। इस मिथ:क्रिया के माध्यम से ही वे एक-दूसरे की आत्मिक, शारीरिक और सामाजिक आवश्यकताएँ पूरी किया करते हैं। यदि व्यक्ति अपने आप में पूर्ण होते, तो उनकी आवश्यकताएँ भी न होतीं और यदि आवश्यकताएँ न होतीं, तो उनके बीच न कोई मिथ:क्रिया होती और न कोई अन्तर-सम्बन्ध बनते। अन्तर-सम्बन्धों के अभाव में समूह, समाज भी न बन पाता। सब व्यक्ति किसी विशाल भवन के स्तम्भों के समान अपना-अपना स्वतन्त्र अस्तित्व लिए परस्पर निरपेक्ष खड़े रहते।

समाज के व्यक्तियों के बीच सम्बन्ध दो प्रकार के हो सकते हैं—(१) अस्वस्थ और (२) स्वस्थ। उन सम्बन्धों को हम अस्वस्थ कहेंगे, जिनके मूल में सम्पूर्ण समाज की कल्याण भावना न हो। सम्बन्धों की अस्वस्थता के अनेक स्तर होते हैं। अस्वस्थता का क्षेत्र वहीं से आरम्भ हो जाता है, जहाँ से कल्याण भावना का क्षेत्र सम्पूर्ण समाज की तुलना में थोड़ा भी संकुचित होने लगता है। यह संकुचन जितना ही अधिक बढ़ता जाता है, अस्वस्थता की मात्रा भी उतनी ही बढ़ती जाती है। जब कल्याण-भावना व्यक्ति में ही सीमित होकर रह जाती है, तब उस पर आधारित सम्बन्धों को अस्वस्थतम कहा जाता है और वे सम्बन्ध स्वस्थ कहे जाते हैं, जिनके मूल में सम्पूर्ण समाज की कल्याण-भावना रहती है। इस भावना को हम सर्वोदय की भावना भी कह सकते हैं। पूर्ण स्वस्थता अधिकतम व्यक्तियों के अधिकतम हित से ऊपर की वस्तु है। उसमें सबके पूर्ण कल्याण की भावना रहती है।

प्रत्येक समाज यह चाहता है कि उसके घटक व्यक्तियों के सम्बन्ध पूर्णतया स्वस्थ रहें जिससे वह कम से कम संघर्ष वाले मार्ग से सब व्यक्तियों की सुविधा, पारस्परिक सद्भाव तथा सुन्दरता को दृष्टि में रखते हुए अधिक से अधिक तीव्र गति से सामाजिक सुख और शान्ति के लक्ष्य पर पहुँच सके। इस दृष्टि से वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ व्यवहार-नियम तथा आचार-नियम बनाता है। वह निश्चित करता है कि किस परिस्थिति में क्या करणीय है और क्या अकरणीय। करणीय व्यवहारों के साथ प्रशंसा तथा अनिन्दा का तथा अकरणीय व्यवहारों के साथ निन्दा तथा अप्रशंसा का सम्बन्ध भी वह जोड़ देता है। समाज द्वारा निर्धारित उक्त व्यवहार-नियमों की समष्टि को 'शिष्टाचार' तथा आचार-नियमों की समष्टि को 'नीति' अथवा 'नैतिकता' कहा जाता है। व्यवहार-नियमों का पालन न करने वाले को अशिष्ट कहते हैं। जो व्यक्ति आचार-नियमों का श्रद्धा से पालन करता है, उसे नैतिक, और पालन न करने वाले को अनैतिक कहा जाता है।

जो कुछ ऊपर कहा गया है, इससे स्पष्ट है कि नैतिकता की अवधारणा स्पष्ट तथा समाज-सापेक्ष है। इसलिए विभिन्न समाजों में नैतिकता का स्वरूप भी विभिन्न होता है। जो आचार एक समाज में करणीय माना जाता है, वही किसी अन्य समाज में अकरणीय हो जाता है। भारत में कहीं भी, किसी भी समाज में अपनी पत्नी का भी चुम्बन अनैतिक माना जाता है, जबकि पश्चिमी समाज में किसी का भी चुम्बन एक सामान्य बात है। पश्चिमी समाज में भी विवाह-पूर्व मातृत्व को अनैतिक माना जाता है, जब कि कुछ समाज इसे बिल्कुल नैतिक मानते हैं।

इस कथन का यह अभिप्राय नहीं है कि विभिन्न समाजों में नैतिकता की अवधारणाएँ बिलकुल विभिन्न ही होती हैं। सभी समाज होते तो अन्ततः मनुष्यों के ही हैं। अतः इनमें सामान्य तत्व भी रहता ही है। इस कारण कुछ आचार-नियम मानव मात्र में समान होते हैं। ऐसे नियमों की समष्टि को हम 'सार्वभौम नैतिकता' कह सकते हैं। सत्य एवं अचौर्य प्रत्येक समाज में नैतिक तथा असत्य एवं चौर्य प्रत्येक समाज में अनैतिक माने जाते हैं।

नैतिकता के स्वरूप पर विचार के उपरान्त अब धर्म के स्वरूप पर विचार करना उचित होगा। विश्व में रिलीजन, सम्प्रदाय, मज़हब तथा पन्थ शब्दों का प्रयोग होता है परन्तु इनमें से कोई भी शब्द, धर्म का समानार्थी नहीं है। संसार की किसी भाषा में धर्म का समानार्थी शब्द नहीं है। अन्य भाषाओं की तो बात ही छोड़िए, स्वयं संस्कृत में ही इस अर्थ को व्यक्त करने वाला कोई भी दूसरा शब्द नहीं है। फलतः कुछ विवेचन द्वारा इसके स्वरूप को समझना होगा।

महामुनि कणाद ने धर्म की परिभाषा 'यतोऽभ्युदय सिद्धिः स धर्मः' इन शब्दों में की है। इस परिभाषा का अर्थ यह हुआ कि जिन आस्थाओं, गुणों, कर्मों तथा स्वभावों के धारण से धारक (व्यक्ति, वर्ग, समाज, राष्ट्र अथवा विश्व) को भौतिक अभ्युदयपूर्वक मोक्ष-प्राप्ति होती हो, उनकी समष्टि को धर्म कहते हैं। इस परिभाषा के अनुसार जिन आस्थाओं आदि के धारण से धारक की भौतिक उन्नति तो होती हो, पर उसे मोक्ष-प्राप्ति न होती हो, अथवा मोक्ष-प्राप्ति तो होती हो, पर भौतिक उन्नति न होती हो, उनकी समष्टि को धर्म नहीं कहा जा सकता। इस परिभाषा को सरलतम शब्दों में महर्षि दयानन्द के शब्दों का प्रयोग करते हुए इस प्रकार कहा जा सकता है कि जिन आस्थाओं आदि के धारण से धारक की शारीरिक, आत्मिक तथा सामाजिक उन्नति होती है, इनकी समष्टि को धर्म कहते हैं। यहाँ भी यह बात समझ लेनी चाहिए कि धर्म से धारक की तीनों प्रकार की उन्नति साथ-साथ होनी चाहिए, अन्यथा धर्म लँगड़ा रहेगा और उसका पूर्णत्व नष्ट हो जाएगा। अपने देश में परमेश्वर लक्ष्यक क्रिया-कलाप को ही धर्म समझकर लौकिक क्रिया कलाप को धर्म के क्षेत्र से निकाल दिया गया है। यह स्थिति बहुत दुःखद है। इसी के कारण पूजा-पाठ रूप धर्म, भ्रष्टाचार तथा दुःख-दैन्य साथ-साथ पनप रहे हैं। धर्म के सही एवं पूर्णरूप के साथ भ्रष्टाचार एवं दुःख-दैन्य का सहअस्तित्व हो ही नहीं सकता।

आधुनिक समाजशास्त्रियों ने भी अपने-अपने ढंग से धर्म को परिभाषित किया है। उनकी कुछ परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं :

१. **मैकाइवर और पेज** : रिलीजन को केवल मनुष्य और मनुष्य के बीच का ही नहीं, अपितु मनुष्य और किसी उच्चतर शक्ति के बीच का भी सम्बन्ध अभिप्रेत होता है। इस कारण वह अपने आदेशों का औचित्य किसी अधिसामाजिक सत्ता की आज्ञा, नरक के भय अथवा अनन्त सत्ता के साथ असामंजस्य की आकांक्षा के आधार पर ठहराता है।

२. **क्रिस्टोफर डाउसन** : जहाँ कहीं और जब कभी मनुष्य अपने आपको रहस्यमय और अपने से उच्चतर शक्तियों पर आश्रित अनुभव करता है वहीं और तभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रिलीजन उपस्थित हो जाता है।

३. **ए० डब्ल्यू० ग्रीन** : रिलीजन उन आस्थाओं, प्रतीकात्मक कर्माभ्यासों और उद्देश्यों की प्रणाली है, जिसका निर्धारण ज्ञान की अपेक्षा विश्वास से अधिक होता है और जो मनुष्य को ज्ञान एवं नियन्त्रणीय से परे अदृष्ट अति-प्राकृतिक क्षेत्र से सम्बद्ध कर देता है।

४. **दुर्खीम** : रिलीजन पवित्र वस्तुओं से सम्बद्धविश्वासों और व्यवहारों की एक समन्वित प्रणाली को कहते हैं।

ये सब परिभाषाएँ रिलीजन की हैं, धर्म की नहीं। धर्म इन परिभाषाओं में परिभाषित रिलीजन से बहुत व्यापक है। इन परिभाषाओं में मनुष्य के अधि-सामाजिक एवं अति-प्राकृतिक सत्ता से सम्बन्ध पर विशेष बल दिया गया है। धर्म परमेश्वर, जड़ चेतनात्मक पाँच भौतिक सृष्टि, मनुष्य (व्यक्ति और समाज) तीनों को अपनी परिधि में लेकर चलता है। रिलीजन का आधार जहाँ आस्था है, वहाँ धर्म का आधार बुद्धि के अधिकाधिक प्रयोग द्वारा खोजे हुए श्रत्=सत्य में धा=आस्था है। रिलीजन में अन्ध-विश्वासों को भी स्थान मिल सकता है, पर धर्म में बिलकुल नहीं। इस कारण हम कर्म की आधुनिक परिभाषाओं को छोड़कर महामुनि कणाद की धर्म की परिभाषा को लेकर आगे बढ़े हैं।

कणाद प्रतिपादित धर्म और मनुष्य के लिए जिन कर्त्तव्यों का निर्धारण करता है, उनको निम्न वर्गों में विभक्त किया जा सकता है :—

१. परमेश्वर अथवा अतिप्राकृतिक सत्ता के प्रति कर्त्तव्य।
२. आत्मा (Soul) के प्रति कर्त्तव्य।
३. जड़ जगत् के प्रति कर्त्तव्य।
४. मानवेतर चेतन जगत् के प्रति कर्त्तव्य।
५. अपने शरीर के प्रति कर्त्तव्य।
६. परिवार के प्रति कर्त्तव्य।
७. समाज के विभिन्न स्वेतर स्वसम्बद्ध समुदायों के प्रति कर्त्तव्य।
८. सम्पूर्ण समाज के प्रति कर्त्तव्य।

सच्चे अर्थों में धार्मिक उसी व्यक्ति को कहा जा सकता है, जो उक्त सभी कर्त्तव्यों को यथायोग्य सन्तुलन के साथ निभाता है। जो व्यक्ति संतुलन बिगाड़ कर किसी वर्ग अथवा किन्हीं वर्गों के प्रति कर्त्तव्यों की उपेक्षा करता है, उसे धार्मिक कदापि नहीं कहा जा सकता।

नैतिकता तथा धर्म, दोनों के स्वरूपों का विवेचन कर लेने के पश्चात् अब नैतिकता एवं धर्म के सम्बन्ध पर विचार करना चाहिए। ऊपर कहा जा चुका है कि नैतिकता स्वरूपतः समाज-सापेक्ष है। अतः परमेश्वर, आत्मा, जड़-चेतन जगत् तथा अपने शरीर के प्रति कर्त्तव्यों का पालन नैतिकता के क्षेत्र में नहीं आता। परमेश्वर के अस्तित्व को न मानने वाला, अथवा उसे मानते हुए भी स्तुति, प्रार्थना, उपासना, पूजा, आराधना तथा अर्चना से कोसों दूर रहने वाला, आत्मा के अस्तित्व को न मानने वाला, अथवा मानते हुए भी आत्मिक उन्नति के लिए किसी भी प्रकार की साधना न करने वाला, जड़-चेतनात्मक जगत् के प्रति उपेक्षा एवं निर्दयता का व्यवहार करने वाला और शारीरिक स्वास्थ्य के प्रति घोर उपेक्षाशील परन्तु आचार-नियमों का पालन करने वाला व्यक्ति और चाहे जिस विशेषण का पात्र हो जाए, पर उसे अनैतिक नहीं कहा जा सकता। परन्तु जैसे ही व्यक्ति ऊपर लिखे चारों कर्त्तव्यों का पालन करता हुआ भी समाज के स्वभिन्न अथवा सम्पूर्ण समाज के प्रति पालनीय समाज-निर्धारित आचार-नियमों का उल्लंघन करने लगता है, वैसे ही वह अनैतिकता के आरोप से बचने में असमर्थ हो जाता है।

इस विवरण और विवेचन से स्पष्ट है कि नैतिकता का क्षेत्र पूर्ण जीवन-व्यापी है, जबकि नैतिकता का क्षेत्र समाज जीवन सीमित। जो व्यक्ति धार्मिक होता है, वह निश्चित रूप से नैतिकता-सम्पन्न होता है, पर जो नैतिकता-सम्पन्न हो, वह धार्मिक भी हो, यह आवश्यक नहीं है। एक और प्रकार से भी नैतिकता और धर्म के इस सम्बन्ध को समझा जा सकता है। धर्म अपने स्वरूप में पंच पाद होता है। वे पाँच पाद हैं : (१) दर्शन, (२) कर्मकाण्ड, (३) सामाजिक-राजनीतिक-आर्थिक व्यवस्था, (४) आचार, तथा (५) व्यवहार। सच्चे अर्थों में धार्मिक उसे कहा जा सकता है, जिसके जीवन में इन पाँचों का समन्वय हो। नैतिकता का सम्बन्ध इन पाँचों में से केवल चतुर्थ पाद से है। कितना ही बड़ा दार्शनिक अथवा कर्मकांडी, अथवा समाजविद् अथवा व्यवहारकुशल कोई व्यक्ति हो, पर यदि वह आचारवान् नहीं है, तो उसे नैतिकता-सम्पन्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं कहा जा सकता और दार्शनिक, समाजविद् एवं व्यवहारकुशल न होते हुए भी कोई व्यक्ति यदि आचारवान् है, तो उसे नैतिक तो कहा ही जायगा। इस विवेचन से भी यही निष्कर्ष निकलता है कि धार्मिक व्यक्ति तो निश्चित रूप से नैतिक होता है, पर यह बिलकुल आवश्यक नहीं कि नैतिक व्यक्ति धार्मिक भी हो।

पर यह बात भी ध्यान में रखने योग्य है कि नैतिकता—धर्म का व्यवहार पक्ष है। अतः नैतिकता-विहीन व्यक्ति को कदापि धार्मिक नहीं कहा जा सकता है। नैतिकता-विहीन धर्म को 'धर्म' नहीं, पाखण्ड कहना चाहिए! आज समाज में धर्म का नहीं, पाखण्ड का बोलबाला है। यही कारण है कि विश्व आज अपने को धार्मिक मानता हुआ भी दुर्गति और अशान्ति की ज्वाला में जल रहा है, अन्यथा धर्म और दुर्गति एवं अशान्ति को कभी साथ-साथ नहीं रहना चाहिए।

आज अपने देश में नैतिकता की जड़ें हिल चुकी हैं। इस स्थिति से आज सभी परेशान हैं। कहा जा रहा है कि इस स्थिति का कारण विद्यालयों में धार्मिक/नैतिक शिक्षा का अभाव है। यह भी कहा जा रहा है कि यदि विद्यालयों में धार्मिक/नैतिक शिक्षा चालू कर दी जाए, तो नई पीढ़ी नैतिकता-सम्पन्न हो जायगी। मेरे तुच्छ विचार में धार्मिक/नैतिक शिक्षा से कुछ नहीं होगा। इससे होगा यह कि नई पीढ़ी नैतिकता के नियमों को तो रट लेगी, पर व्यवहार में रहेगी अधिकांश अनैतिक ही। और चूँकि धर्म और सम्प्रदाय को एक ही बात समझा जा रहा है, अतः धार्मिक शिक्षा साम्प्रदायिकता को जन्म देगी। यदि देश में नैतिकता को पुनः प्रतिष्ठित करना अभीष्ट है, तो धर्म और सम्प्रदाय के अन्तर और धर्म तथा नैतिकता के व्यापक-व्याप्य सम्बन्ध को सही ढंग से समझ कर ऐसी असाम्प्रदायिक धार्मिक शिक्षा की व्यवस्था करनी होगी, दैनिक जीवन में नैतिक व्यवहार जिसका अभिन्न अंग हो। शब्दमयी धार्मिक/नैतिक शिक्षा से लाभ के स्थान पर हानि अधिक होगी—उससे पाखण्ड और दम्भ की वृद्धि होगी।

प्रशिक्षण साहित्य
(Methods of Teaching)
सम्बन्धी

उपयोगी प्रकाशन

भाषा$_{1,2}$ की शिक्षण विधियाँ एवं पाठ नियोजन

	डा० लक्ष्मीनारायण शर्मा	18.00
हिन्दी-शिक्षण	डा० रामशकल पाण्डेय	12.50
हिन्दी भाषा-शिक्षण	भाई योगेन्द्रजीत	14.00
मातृभाषा-शिक्षण	के० क्षत्रिया	16.00
इतिहास शिक्षण	गुरसरनदास त्यागी	11.00
इतिहास-शिक्षण की रूपरेखा	भाई योगेन्द्रजीत	8.00
सामाजिक अध्ययन का शिक्षण	गुरसरनदास त्यागी	9.00
शिक्षक महाविद्यालयों में सामाजिक अध्ययन शिक्षण	सतगुरु शरण, दिनेश प्रकाश शर्मा	8.00
नागरिक शास्त्र का शिक्षण	गुरसरनदास त्यागी	9.00
नागरिक शास्त्र शिक्षण-कला	डा० उमेश चन्द्र कुदेसिया	(प्रेस में)
भूगोल-अध्यापन	जगदीश प्रसाद वर्मा	14.00
भूगोल-शिक्षण	एच० एन० सिंह	9.00
नवीन विज्ञान-शिक्षण	रावत एवं अग्रवाल	8.50
विज्ञान-शिक्षण	डी० एस० रावत	8.50
जीव विज्ञान-शिक्षण	शैलेन्द्र भूषण	7.00
गणित-शिक्षण	रावत एवं अग्रवाल	10.00
संस्कृत-शिक्षण	डा० रामशकल पाण्डेय	9.40
गृह विज्ञान-शिक्षण	डा० जी० पी० शैरी	10.50
वाणिज्य-शिक्षण	उदयवीर सक्सेना	7.00
अर्थशास्त्र-शिक्षण	गुरुसरनदास त्यागी	8.00
समाज-शिक्षा	तेजसिंह तरुण	6.00
Essentials of English Teaching	R. K. Jain	20.00
Let us Learn English	M. S. Sachdeva	14.00

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्कृत साहित्य

☆

☆

का

☆

☆

विद्यार्थी उपयोगी प्रकाशन

☆

☆

कादम्बरी कथामुखम्	डा० कृष्ण अवतार बाजपेयी	१२.००
संस्कृत साहित्य का सुबोध इतिहास	डा० राजकिशोरसिंह	१२.००
संस्कृत साहित्य की प्रवृत्तियाँ	डा० जयकिशन प्रसाद	१८.००
संस्कृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास	डा० बाबूराम त्रिपाठी	१६.००
संस्कृत नाट्य साहित्य	डा० जयकिशन प्रसाद	१२.००
प्राचीन भारतीय कला एवं संस्कृति	डा० राजकिशोरसिंह, उषा यादव	२८.००
भारतीय संस्कृति	डा० राजकिशोरसिंह	२०.००
संस्कृत भाषा-विज्ञान	डा० राजकिशोरसिंह	१२.००
संस्कृत व्याकरणम्	डा० बाबूराम त्रिपाठी	२४.००
भारतीय दर्शन	डा० रामकृष्ण आचार्य एवं बाबूराम त्रिपाठी	१२.००
संस्कृत निबन्धांजलि:	डा० रामकृष्ण आचार्य	१५.००
ऋक्-सूक्त-समुच्चय:	डा० रामकृष्ण आचार्य	२०.००
मेघदूतम् [सम्पूर्ण, सटीक]	डा० रामकृष्ण आचार्य	९.००
मेघदूतम् [पूर्वमेघ, सटीक]	डा० रामकृष्ण आचार्य	६.५०
संस्कृत वाङ्मय : मौखिकी	डा० गोविन्द त्रिगुणायत	६.००
वैदिक साहित्य का इतिहास	डा० राजकिशोर सिंह	८.००
संस्कृत साहित्य का इतिहास	डा० द्वारिकाप्रसाद	९·००
काव्यप्रकाश : एक अध्ययन	डा० पारसनाथ द्विवेदी	६·५०
ध्वन्यालोक: एक अध्ययन	डा० पारसनाथ द्विवेदी	३.५०
कालिदास और अभिज्ञान शाकुन्तलम्	डा० जयकिशन प्रसाद	५.५०
चतुर्वेद	डा० जयकिशन प्रसाद	५.००
कालिदास और मेघदूत	डा० जयकिशन प्रसाद	५.००
सुबोध संस्कृत भाषा-विज्ञान	डा० जयकिशन प्रसाद	५.००
साहित्य दर्पण : एक अध्ययन	डा० जयकिशन प्रसाद	५.००
संस्कृत निबन्ध कौमुदी	डा० बाबूराम त्रिपाठी	५.५०
रघुवंशम् [प्रथम सर्ग]	डा० जयकिशन प्रसाद	४.५०
रघुवंशम् [द्वितीय सर्ग]	डा० रामकृष्ण आचार्य	४.००
रघुवंशम् [१३ वाँ सर्ग]	डा० रामकृष्ण आचार्य	३.००
अभिज्ञान शाकुन्तलम् : चतुर्थ अंक	डा० रामकृष्ण आचार्य	४.००
अपरीक्षितकारकम् (पंचतन्त्र से)	डा० पारसनाथ द्विवेदी	४.५०
शिशुपालवधम् महाकाव्यम् [सर्ग १, २]	डा० पारसनाथ द्विवेदी	१०.००
शिशुपाल वधम् [सर्ग १]	डा० पारसनाथ द्विवेदी	६.००
कुमार सम्भवम् [प्रथम सर्ग]	डा० जयकिशन प्रसाद	६.००
कुमार सम्भवम् [पंचम सर्ग]	डा० पारसनाथ द्विवेदी	५.००
किरातार्जुनीयम् [प्रथम सर्ग]	पं० वेणीमाधव शास्त्री मुसलगाँवकर	५.००
किरातार्जुनीयम् [द्वितीय सर्ग]	पं० वेणीमाधव शास्त्री मुसलगाँवकर	६.००
भारतीय दर्शन (प्रश्नोत्तर)	डा० राजकिशोरसिंह	८.००
भारतीय संस्कृति [प्रश्नोत्तर में]	डा० जयकिशन प्रसाद	५.००
प्राचीन भारत का सांस्कृतिक इतिहास तथा संस्कृत साहित्य का इतिहास	डा० जयकिशनप्रसाद खण्डेलवाल	७.००
संस्कृत निबन्ध कौमुदी	डा० बाबूराम त्रिपाठी	५.५०
व्याकरण कौमुदी [भाग–१]	,, ,,	३.००
चन्द्रालोक : पंचम मयूख	डा० पारसनाथ द्विवेदी	२.५०

विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विभिन्न विश्वविद्यालयों के नवीन पाठ्यक्रमानुसार—

छात्रों एवं पुस्तकालयों के लिये हमारा प्रकाशित

छात्रोपयोगी प्रशिक्षण साहित्य

☆ ☆ ☆

भारतीय शिक्षा
(Indian Education)

भारतीय शिक्षा के प्रवर्त्तक
सं० डा० आत्मानन्द मिश्र १५.००

शिक्षा में नव चिन्तन
सं० डा० रामपालसिंह (प्रेस में)

आदि और मध्ययुगीन भारत में शिक्षा
डा० सरयूप्रसाद चौबे १४.००

आधुनिक भारतीय शिक्षा [इतिहास और समस्याएँ]
पी० डी० पाठक, गुरसरनदास त्यागी १६.००

भारतीय शिक्षा का इतिहास
बी० पी० जौहरी, पी० डी० पाठक १५.९५
पुस्तकालय संस्करण २२.५०

भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ
पी० डी० पाठक १९.८०
पुस्तकालय संस्करण ३०.००

भारतीय शिक्षा की सामयिक समस्याएँ
रामखेलावन चौधरी,
राधावल्लभ उपाध्याय १५.००

भारतीय शिक्षा (प्राचीन से वर्तमान काल तक)
डा० सरयू प्रसाद चौबे १४.००

हमारी शिक्षा समस्याएँ
डा० सरयू प्रसाद चौबे १८.००

विश्व के श्रेष्ठ शिक्षाशास्त्री
डा० रामशकल पांडेय १२.००

भारतीय शिक्षा के आयोग एवं समितियाँ
पी० डी० पाठक, गुरसरनदास त्यागी १७.००
पुस्तकालय संस्करण २२.००

शिक्षा-मनोविज्ञान
(Educational Psychology)

शिक्षा-मनोविज्ञान
डा० एस० एस० माथुर १९.००

शिक्षा-मनोविज्ञान (संक्षिप्त संस्करण)
डा० एस० एस० माथुर १७.००

शिक्षा-मनोविज्ञान
पी० डी० पाठक १६.४०

शिक्षा-मनोविज्ञान
डा० रामपालसिंह वर्मा १८.००
राधावल्लभ उपाध्याय पु० सं० २८.००

Educational Psychology
Dr. S. S. Mathur 25.50
Lib. edn. 40.00

शिक्षा-सिद्धान्त और शिक्षणकला
(Principles and Methods of Education)

शिक्षा के सिद्धान्त
पी० डी० पाठक, गुरसरनदास त्यागी १५.००

शिक्षा के सामान्य सिद्धान्त
पी० डी० पाठक, गुरसरनदास त्यागी २४.००
पुस्तकालय संस्करण ३२.००

शिक्षा-सिद्धान्त
डा० एस० एस० माथुर १७.००

शिक्षा के मूल सिद्धान्त
डा० रामशकल पाण्डेय २१.००
पुस्तकालय संस्करण २८.००

शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार
डा० सरयूप्रसाद चौबे २०.००
पुस्तकालय संस्करण २४.००

Philosophical and Sociological Foundations of Education
Dr. S. P. Chaube, 20.00
Akhilesh Chaube Lib. edn. 30.00

An Introduction to Major Philosophies of Education
Dr. R. S. Pandey 14·00
Lib. Edn. 20·00

Principles of Education
Dr. R. S. Pandey 16.00

A Sociological Approach to India Education
Dr. S. S. Mathur 28.00

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षण-कला, शिक्षण तकनीक एवं नवीन पद्धतियाँ
डा० एस० एस० माथुर १८.००

सफल शिक्षण कला
पी० डी० पाठक १५.००

शिक्षण-तकनीकी
(Technology of Teaching)

शिक्षण-तकनीकी
शैलेन्द्र भूषण एवं
डा० अनिलकुमार वार्ष्णेय १०.००

शैक्षिक तकनीकी के मूल आधार
डा० एस० पी० कुलश्रेष्ठ १६.००

विद्यालय-प्रशासन
(School Administration)

Educational Administration 22.00
S. P. Sukhia Lib. edn. 30.00

विद्यालय प्रशासन एवं संगठन
एस० पी० सुखिया १४.१५

शैक्षिक एवं विद्यालय प्रशासन
भाई योगेन्द्रजीत १५.००

विद्यालय-संगठन एवं स्वास्थ्य शिक्षा
डा० रामपालसिंह वर्मा १२.००

विद्यालय व्यवस्था श्री केशवप्रसाद ७.५०

शिक्षा-प्रशासन डा० उमेशचन्द्र कुदेसिया १२.००

स्वास्थ्य-शिक्षा
(School Hygiene)

स्वास्थ्य-शिक्षा डा० जी० पी० शैरी १६.००

School Health Education & Public Health
Dr. S. P. Chaube, 20.00
Akhilesh Chaube Lib. Edn. 30.00

मापन एवं मूल्यांकन
(Measurement & Evaluation)

शैक्षिक मूल्याँकन
डा० रामपालसिंह वर्मा १०.००

मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सरल मूल्यांकन
डा० रामपालसिंह वर्मा ६.००

Measurement and Evaluation in Psychology & Education
Dr. Bipin Asthana & Dr. Agrawal
(In Press)

मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन
डा० आर० एन० अग्रवाल,
डा० विपिन अस्थाना १८.००

सांख्यिकी
(Statistics)

सांख्यिकी के मूल तत्त्व (सामाजिक विज्ञानों में)
डा० एच० के० कपिल २७.७०

मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी
डा० (श्रीमती) प्रीती वर्मा,
डा० डी० एन० श्रीवास्तव १७.००

प्रारम्भिक सांख्यिकी
डा० प्रीती वर्मा, डा० श्रीवास्तव १०.००

शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग
डा० सुरेश भटनागर ७.००

शिक्षा-दर्शन
(Philosophy of Education)

भारत में शिक्षा-दर्शन और शैक्षिक समस्याएँ
पाठक एवं त्यागी १७.००

शिक्षा-दर्शन डा० रामनाथ शर्मा १५.००

शिक्षा-दर्शन डा० रामशकल पाण्डेय १६.००

शिक्षा के दार्शनिक सिद्धान्त
पी० डी० पाठक, त्यागी १८.००

निर्देशन
(Guidance)

शैक्षिक मापन एवं निर्देशन
उमेश प्रसाद सिंह ४.००

शिक्षा में निर्देशन एवं परामर्श
डा० सीताराम जायसवाल १२.००

शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन
डा० रामपालसिंह वर्मा, उपाध्याय १६.००

तुलनात्मक-शिक्षा

तुलनात्मक शिक्षा
डा० सरयू प्रसाद चौबे ४०.००

शिक्षा व्यवस्थाएँ डा० सरयू प्रसाद चौबे १२.००

विषय-शिक्षण—इसके अन्तर्गत हिन्दी-शिक्षण, इतिहास, सामाजिक अध्ययन, नागरिकशास्त्र, भूगोल, विज्ञान, जीव-विज्ञान, गणित, संस्कृत, वाणिज्य, अर्थशास्त्र, गृहविज्ञान व अंग्रेजी-शिक्षण पर विभिन्न विद्वानों की लिखी सरल भाषा में पुस्तकें उपलब्ध हैं।

उक्त सभी प्रश्नपत्रों पर हिन्दी तथा अंग्रेजी में प्रश्नोत्तर रूप में भी पुस्तकें प्राप्य हैं।

सूचीपत्र निःशुल्क मँगायें

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समर्पित अध्यापक अध्यापन व्यवसाय की महान हानि कर रहे हैं

डॉ० जमनालाल बायती
प्रधानाध्यापक, रा० मा० वि०, बनकोड़ा (डूगरपुर)

हम सब समर्पित शिक्षक को श्रद्धा की निगाह से देखते हैं। ये वे शिक्षक हैं जो छात्रों की अतिरिक्त कक्षाओं के लिए विद्यालय-समय के पूर्व या बाद में विद्यार्थियों की व्यक्तिगत समस्याओं पर ध्यान देते हैं; जो रात्रि में देर तक पाठ्यक्रम एवं दैनिक डायरी का संशोधन करते हैं; शनिवार को प्रातः विद्यार्थी बैंक या संचयिका का परिवीक्षण करते हैं तथा रविवार को निरन्तर विद्यार्थियों की उत्तरपुस्तिकाओं का शुद्धीकरण करते रहते हैं। फलतः उनका स्वास्थ्य खराब हो जाता है। वे पारिवारिक जिम्मेदारियों से विमुख हो जाते हैं तथा घोर गरीबी के कारण थोड़े से वेतन पर काम करते रहते हैं।

शिक्षक का यह समर्पित कार्य उसके व्यवसाय के लिए अभिशाप है। पर क्यों? वह शिक्षण तथा प्रशासन की कई असुविधाओं का निवारण कर देता है, जब तक वे कोल्हू के बैल की तरह काम करेंगे, शिक्षा के अधुनातन स्वरूप में सारगर्भित परिवर्तन या सुधार की आशा करना व्यर्थ है।

लोक एवं विद्यालय प्रशासक यह विश्वास करते हैं कि समर्पण तथा शिक्षण पर्यायवाची शब्द हैं। इसीलिए यदि शिक्षक अपने धंधे—शिक्षण के प्रति समर्पित नहीं है तथा निम्न पारिश्रमिक स्वीकार कर लेता है तो उसे शिक्षक नहीं बनना चाहिए। कुछ लोगों को यह देखकर बड़ा आश्चर्य होता है कि एक रसायनशास्त्र में स्नातकोत्तर उपाधिधारी शिक्षक विद्यार्थियों के छात्रावास की देखभाल करता है, उनकी उपस्थिति भरता है, उनके साइकिल स्टेण्ड का निरीक्षण करता है तथा कक्षा में किये गये प्रयोगों के बाद बची हुई वस्तुओं को नापता है, तौलता है।

समर्पित शिक्षक ने शिक्षण-व्यवसाय के विकास को पिछड़ने में इसी तरह से मदद की है कि उसने अशैक्षिक (नॉन-टीचिंग) कार्यों के आगे कभी कोई प्रश्न ही नहीं किया। इन कार्यों में जनगणना, पशुगणना, भवन गणना, चुनाव करवाना आदि आते हैं। उसे यह नहीं भूलना चाहिये कि उसका मुख्य कार्य तो बच्चों को पढ़ाना है, पर वह अन्य अशैक्षिक कार्यों को महत्त्वपूर्ण समझने लगता है। समर्पित शिक्षक को अपने उद्देश्यों का पुनर्परीक्षण करना चाहिए; किये जाने वाले कार्यों की लम्बी सूची को देखना चाहिए तथा यह निश्चय करना चाहिए कि वह कितना ही काम होने पर भी कक्षा में परिवर्तनशील, सृजनात्मक एवं सम्बन्धित आवश्यक अतिरिक्त ज्ञान के साथ प्रवेश करेगा। पर एक समर्पित शिक्षक के लिए केवल इतना ही जरूरी नहीं है कि वह कार्यों में प्राथमिकता का क्रम जमाये तथा उसके अनुसार स्वयं को बदल ले। उसने हमारी शिक्षा-प्रणाली में समस्याओं का निवारण करने के लिए अपना असीमित समय लगाया है। वह ५० मिनट की अवधि में कक्षा में ४५ विद्यार्थियों पर व्यक्तिगत ध्यान न दे पाने से विद्यालय समय के बाद भी रुकता है। इस प्रकार का समर्पण संकुचित कहा जाना चाहिए। ऐसी व्यवस्था उन विद्यार्थियों के लिए अवश्य ही लाभप्रद है जिनको शिक्षक की मदद की आवश्यकता है। पर ऐसा करना कक्षा में विद्यार्थियों की संख्या कम करने का तो कोई रास्ता नहीं बताता जिससे विद्यार्थियों को मदद मिल सके।

शिक्षा की प्रगति में तथा व्यवसाय के रूप में शिक्षण का विकास ही समर्पण का नया रूप है। एक ही शिक्षक की तुलना में परम्परा से चली आई नीतियाँ तथा रीति-रिवाज के अनुसार काम करने वाले शिक्षक अधिक सहयोग करते हैं। ज्यादा अच्छा हो, यदि ये शिक्षक अपने विद्यार्थियों को ज्यादा उपयोगी शिक्षा देकर कर्त्तव्य निभायें। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए आवश्यक है कि वे अपनी कक्षाओं में एक निश्चित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संख्या से अधिक विद्यार्थियों को प्रवेश देने से मना कर दें; क्योंकि उससे अधिक विद्यार्थियों से कुछ काम नहीं होता है, पर वे बहुचर्चित शिक्षा को जीवित देखकर अधिक सन्तोष अनुभव करते हैं। यद्यपि वह उद्देश्यों से परे रहती है तथा वे उसे पूर्ण विकसित व्यवसाय के रूप में देखना चाहते हैं।

शिक्षक स्थानीय, प्रान्तीय तथा राष्ट्रीय संघों में शिक्षा के सुधार के लिए प्रावधान बनाते हैं, पर कुछ काम; जैसे—बालकों के बालों की लम्बाई की परेशानी—माता-पिताओं के लिए छोड़ देने चाहिए। पर अन्य काम; जैसे—विद्यालय या शिविर का सुखी जीवन, बिक्री केन्द्र देखना, विवरणियाँ टाइप करना, वस्तुनिष्ठ परीक्षा के उत्तर पत्र जाँचना आदि कार्य कहीं किफायतसारी के साथ शिक्षक के सहायक या लिपिक या कम्प्यूटर की मदद से किये जा सकते हैं। भारतीय स्थितियों में विद्यार्थियों की उपस्थिति पञ्जिका तथा मासिक शुल्क का वसूल करना आदि भी उदाहरणस्वरूप लिये जा सकते हैं।

यदि शिक्षक को इन कामों से किसी भाँति मुक्त कर दिया जाय, तो वे पूरे मनोयोग से अपना ध्यान अन्य महत्त्वपूर्ण कार्यों पर भी केन्द्रित कर सकेंगे। शिक्षक न केवल पाठ्यक्रम ही तैयार करते हैं या नई शिक्षण तकनीक जानने के लिए व्यावसायिक विकास के लिए अन्तःसेवा प्रशिक्षण शिविर, ग्रीष्मकालीन संस्थान, कार्यशालाओं में उपस्थित होते हैं बल्कि इनसे भी अधिक उनको शिक्षा-नीति निर्धारित करने में अपनी भूमिका निभानी चाहिए। आयोजित परिवर्तन के लिए निष्णात शिक्षक आवश्यक है। केवल तब ही शिक्षा सार-

[शेष पृष्ठ १६ पर]

AVAILABLE FOUR & FOUR IN ONE

By

Indra Sharma, *M. Sc., B. Ed.* & **N. R. Sharma**, *M. A., L. T.*

M/S Vinod Pustak Mandir, Agra, the leading Publishers of Books on Education have published the second revised and enlarged edition of the following books according to the recent syllabi prescribed by various Indian Universities especially those of Agra, Kanpur, Meerut, Gorakhpur, Nagpur, Vikram, Shivaji, Bombay and Poona for B. Ed. students & Competitive exams.

1.	**PRINCIPLES AND PRACTICE OF EDUCATION**	**Rs. 11·00**
2.	**EDUCATIONAL PSYCHOLOGY**	**Rs. 12·50**
3.	**HISTORY AND PROBLEMS OF INDIAN EDUCATION**	**Rs. 13·50**
4.	**SCHOOL ADMINISTRATION AND HEALTH EDUCATION**	**Rs. 14·00**
5.	**B. Ed. GUIDE (FOUR IN ONE)**	**Rs. 51·00**

SALIENT FEATURES :

(1) The books cover practically all the compulsory papers prescribed for B. Ed. degree course. (2) The books are in question-answer form and from the point of view of the examinees, their main value lies in the collection of question taken from Indian universities mentioned above. (3) The answers to the questions are concise and an effort has been made to place maximum matter in a nutshell. (4) The language used is lucid, simple and easily understandable by an average B.Ed. student offering English Medium. (5) Recent research findings in various fields of Education have been incorporated where necessary. (6) Topics covered in each paper are presented in a systematic manner so that a comprehensive birds-eye-view of the subject area may be obtained at a glance.

VINOD PUSTAK MANDIR, AGRA

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नई पुस्तकें

शिक्षा, मनोविज्ञान एवं गृह-विज्ञान

शिक्षा-मनोविज्ञान (संशोधित तेरहवाँ संस्करण १९८३) पी० डी० पाठक, डिमाई, पृष्ठ ६००, मूल्य १६·४०

मनोविज्ञान के सम्प्रदाय (संशोधित षष्ठ संस्करण) डा० रामपालसिंह, डिमाई, पृष्ठ २२०, मूल्य ९·५०

बाल-मनोविज्ञान (संशोधित तेरहवाँ संस्करण) भाई योगेन्द्रजीत, डिमाई, पृष्ठ ४२४, मूल्य १७·००

तुलनात्मक शिक्षा (संशोधित तृतीय संस्करण) डॉ० सरयूप्रसाद चौबे, डिमाई, पृष्ठ ८७४, मूल्य ४०·००

हमारी शिक्षा समस्याएँ (प्रथम संस्करण १९८३) डॉ० सरयूप्रसाद चौबे, डिमाई, पृष्ठ ४३२, मूल्य १८·००

शिक्षण-कला, शिक्षण-तकनीक एवं नवीन पद्धतियाँ (संशोधित ग्यारहवाँ संस्करण १९८३) डॉ० एस० एस० माथुर, डिमाई, पृष्ठ ४५४, मूल्य १८·००

गृह-व्यवस्था एवं गृह-कला (संशोधित ग्यारहवाँ संस्करण १९८२-८३) डा० (श्रीमती) जी० पी० शैरी, डिमाई, पृष्ठ ४६४, मूल्य १६·५०

स्वास्थ्य-विज्ञान तथा जनस्वास्थ्य (संशोधित चतुर्थ संस्करण) जी० डी० सतसंगी, डिमाई, पृष्ठ २५२, मूल्य ११·००

विविध

समीक्षा के सिद्धान्त (संशोधित पंचम संस्करण) डॉ० सत्येन्द्र, क्राउन, पृष्ठ २२०, मूल्य ८·००

साहित्यरत्न दिग्दर्शन (गाइड) प्रथम खण्ड (सन् १९८२-८३ के नवीन पाठ्यक्रमानुसार नवाँ संस्करण) डॉ० कृष्णदेव शर्मा, क्राउन, पृष्ठ ८८२, मूल्य २५·००

वैद्य-विशारद दिग्दर्शन (गाइड) प्रथम खण्ड (सन् १९८२-८३ के नवीन पाठ्क्रमानुसार बारहवाँ संस्करण) वैद्य भूदेव शर्मा 'व्यास', क्राउन, पृष्ठ ४०८, मूल्य १५·००

भाषा-विज्ञान—विवेचनात्मक अध्ययन (संशोधित आठवाँ संस्करण) भारत भूषण 'सरोज' एवं डॉ० कृष्णदेव शर्मा, क्राउन, पृष्ठ ३१८, मूल्य ९·००

कामायनी—विवेचनात्मक अध्ययन (संशोधित पंचम संस्करण) भारत भूषण 'सरोज', डॉ० कृष्णदेव शर्मा, क्राउन, पृष्ठ २३०, मूल्य ६·५०

[पृष्ठ १५ का शेषांश]

पूर्ण तथा समाज की आवश्यकतानुकूल हो सकती है। क्योंकि समर्पित शिक्षक आने वाले शैक्षिक परिवर्तन के लिए अन्य कामों में व्यस्त रहने के कारण तैयारी नहीं करते हैं या करते हैं, तो जैसे-तैसे विद्यालय समय के बाद, उदास व आधे मन से। बहुत अधिक शैक्षिक आयोजन भी आज परम्परित शिक्षण तकनीक में साधारण रूप में ही संशोधित हो पाता है या जल्दी में बिना पूर्व परीक्षित नूतन विधियाँ (इनोवेशन्स) भी अपना ली जाती हैं। थके हुए या उदास मन से काम करने वाले एवं प्रशासन की जंजीरों में जकड़े हुए शिक्षकों से सारपूर्ण परिवर्तन की आशा नहीं की जा सकती तथा ऐसे कामों का शिक्षक के अपने निजी समय पर भी कोई प्रभाव नहीं पड़ना चाहिए। शिक्षक जब भी जिला या प्रान्तीय शिक्षा आयोजन हेतु गोष्ठी या कार्यशाला में भाग लेते हैं, तो उन्हें उसके बदले में क्षतिपूर्ति के रूप में मुक्त समय दिया जाना चाहिए या उनकी निष्णात सेवाओं का उपयोग करने के बदले शुल्क या पारिश्रमिक दिया जाना चाहिए।

जब शिक्षा में नया परिवर्तन आने वाला है, तो शिक्षक का एक नया चित्र शत-प्रतिशत शिक्षण व्यवसायी के रूप में—समाज के सामने उभर कर आना चाहिए तभी विद्यार्थी, अभिभावक, प्रशासक, माता-पिता यह जानकर प्रसन्न होंगे कि वास्तव में शिक्षण-व्यवसाय में ऐसे शिक्षक लगे हुए हैं जो निस्सन्देह समाज की, कल के नागरिकों की परवाह एवं सुरक्षा करने वाले हैं। ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्तमान समाज कहाँ, कैसे और क्यों ? पढ़ें और समझें—

साहित्य-परिचय

[शिक्षा और साहित्य की प्रगति का परिचायक पत्र]

तेरहवाँ सामयिक विशेषांक

नैतिक शिक्षा विशेषांक

परामर्शदाता — डा० सरयूप्रसाद चौबे

प्रधान सम्पादक — डा० रामशकल पाण्डेय

सम्पादक — विनोद कुमार अग्रवाल

'साहित्य-परिचय' गत 16 वर्षों से साहित्य तथा शिक्षा के क्षेत्र से सम्बन्धित आधुनिकतम विचार-धाराओं के प्रेरक तथा प्रचारक के रूप में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। गत 16 वर्षों से नियमित रूप से इसका प्रकाशन—इस मासिक-पत्र की अपनी विशेषता है।

1982 में 'नैतिक शिक्षा' विशेषांक प्रकाशित किया गया है। प्राथमिक पाठशालाओं से लेकर विश्व-विद्यालयों तक की शिक्षा में कहीं कुछ अभाव खटक रहा है। छात्रों का मनोबल दिन पर दिन गिरता जा रहा है। उनके आचरण में गिरावट स्पष्ट दिखाई दे रही है। वे कुछ दिग्भ्रमित-से दृष्टिगोचर हो रहे हैं। नैतिक मानदण्ड के बोध के लिए छात्रों को कुछ शिक्षा तो मिलनी ही चाहिए। किन्तु कुछ लोगों के विचार से नैतिक शिक्षा इस दिशा में कुछ नहीं कर सकती। वस्तुतः नैतिक शिक्षा की आवश्यकता व इसके स्वरूप के विषय में मतभेद विद्यमान है। अतः इस समस्या पर कुछ विचार मंथन की आवश्यकता है।

इसके कुछ मुख्य लेख निम्न प्रकार हैं :—

नैतिकता के मानदण्ड: भारतीय दृष्टिकोण, नैतिकता : दृष्टिकोण एवं कसौटी, नैतिकता का स्वरूप, आज के सन्दर्भ में नैतिकता, नैतिकता : स्थिति, उत्थान व दिशा, नैतिक मूल्य, नैतिकता का शिक्षण कितना जरूरी ?, नैतिकता और धर्म, शिक्षा में नैतिकता की आवश्यकता, अच्छे नैतिक विकास हेतु कुछ बातें, शिक्षा में नैतिकता, नैतिक शिक्षा आवश्यक क्यों ?, शिक्षा में नैतिकता का महत्त्व, शिक्षा में नैतिकता का दृष्टिकोण, नैतिक शिक्षा के स्रोत, नैतिक शिक्षा : स्वरूप एवं महत्त्व, नैतिक शिक्षा की शिक्षण-विधि, नैतिक शिक्षा में अध्यापक का योगदान, अध्यापक और नैतिक शिक्षा, नैतिक शिक्षा और अनुशासन, नैतिक शिक्षा और विज्ञान-शिक्षण, नैतिक शिक्षा और भूगोल, नैतिक शिक्षा ओर संस्कृत-शिक्षण, नैतिक शिक्षा : महत्त्व एवं सुझाव, चरित्र-निर्माण में नैतिक शिक्षा का योगदान, भारत में नैतिक शिक्षा की अपेक्षा, नैतिक शिक्षा : शिक्षकों के लिए एक चुनौती, शिक्षा में नैतिक पतन के कारण आदि ६३ सामयिक निबन्धों का संकलन—देश के विभिन्न जाने-माने शिक्षाविदों एवं जागरूक शिक्षाशास्त्रियों का गूढ़ चिन्तन।

प्रत्येक अभिभावक, छात्राध्यापक, नागरिक एवं छात्रों के अध्ययन व मननयोग्य।

'नैतिक शिक्षा विशेषांक' आपकी वर्तमान आवश्यकता है, इसे ध्यान रखें।

२३० पृष्ठ के विशेषांक का मूल्य मात्र २०.०० रु० आकार—20 × 30/8 अठपेजी

साहित्य-परिचय के गत विशेषांक भी अब सीमित मात्रा में ही उपलब्ध हैं

आज ही अपना आदेश भेजकर अपनी विशेषांक की प्रति सुरक्षित करायें। अन्यथा आप शीघ्र ही इन सामयिक एवं सारगर्भित विशेषांकों से वंचित हो जायेंगे—

- **'शिक्षा-समस्या' विशेषांक** 20·00
- **'शिक्षा और राजनीति' विशेषांक** 20·00
- **'10+2+3 शिक्षा प्रणाली' विशेषांक** 20·00
- **'बाल समस्या' विशेषांक** 20·00
- **'पाठ्यक्रम' विशेषांक** 20·00
- **'शैक्षिक प्रगति' विशेषांक** 20·00
- **'प्रौढ़ शिक्षा' विशेषांक** 20·00
- **'नैतिक शिक्षा' विशेषांक** 20·00

किन्हीं दो विशेषांक का आदेश प्राप्त होने पर रजिस्ट्री व्यय निःशुल्क। चार या चार से अधिक विशेषांक के लिए अतिरिक्त 15 प्रतिशत कमीशन। सभी विशेषांक सजिल्द भेजे जायेंगे। अपने आदेश के साथ अग्रिम राशि मनीआर्डर या ड्राफ्ट से भेजें।

प्रकाशक—**विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा-२ (भारत)**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[पूर्णत: संशोधित एवं परिमार्जित तेरहवाँ संस्करण १९८२-८३]

विभिन्न विश्वविद्यालयों की बी० एड० परीक्षा के नवीन पाठ्यक्रमानुसार प्रश्नोत्तर शैली में लिखित प्रशिक्षण विद्यालयों में तहलका मचाने वाली विद्यार्थियों की लोकप्रिय पुस्तक

☆

अद्यतन तेरहवें संस्करण में मेरठ, गोरखपुर, फैजाबाद एवं विशेष रूप से म० प्र० के विक्रम विश्व-विद्यालय के नये पाठ्यक्रमानुसार विभिन्न प्रकरण जोड़कर पुस्तक को अधुनातन रूप दिया गया है।

बी० एड० दिग्दर्शन

(गाइड)

सम्पादक

भाई योगेन्द्रजीत

दिनेशचन्द्र भारद्वाज

विनोदकुमार अग्रवाल

अनुक्रमणिका

- शिक्षा सिद्धान्त तथा भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक विचारधारा
- शिक्षा मनोविज्ञान
- भारतीय शिक्षा का इतिहास और समस्याएं
- पाश्चात्य शैक्षिक विचारधारा
- विद्यालय प्रशासन, संगठन और स्वास्थ्य-विज्ञान
- शिक्षण-कला एवं विभिन्न विषयों का शिक्षण

प्रमुख विशेषताएँ

☆ प्रस्तुत संस्करण में 'शिक्षा-सिद्धान्त' के प्रथम प्रश्नपत्र में शिक्षा और समाज, शिक्षा और राजनीति, शिक्षा और अर्थशास्त्र, शिक्षा और विज्ञान, नैतिक शिक्षा, शिक्षा की नवीन प्रवृत्तियाँ—मनोवैज्ञानिक, वैज्ञानिक एव समाहारक तथा स्वतन्त्रता और अनुशासन आदि नवीन अध्यायों का समावेश किया गया है।

☆ द्वितीय प्रश्नपत्र में मनोविज्ञान व्यवहार के रूप में, अध्ययन आदतों का विकास, निदानात्मक परीक्षण तथा उपचारात्मक शिक्षण, समाजमितिक एवं क्रियात्मक अनुसन्धान की प्रायोजना आदि विशेष प्रकरणों का समावेश।

☆ अन्य प्रश्नपत्रों में राष्ट्रीय शिक्षा नीति, आजीवन शिक्षा, औपचारिक व अनौपचारिक शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा विद्यालय तथा समुदाय, जनसंख्या-शिक्षण, शैक्षिक तकनीकी आदि कतिपय विशिष्ट अध्यायों का उल्लेख विशेष रूप से उ० प्र० एवं म० प्र० की शिक्षा के सन्दर्भ में किया गया है।

☆ इसमें प्रश्नों का विस्तार एवं आकार विद्यार्थियों की आवश्यकतानुसार दिया गया है। जटिल एवं सूक्ष्म विषयों का प्रतिपादन, सरल, स्पष्ट और वैज्ञानिक ढंग से सरल भाषा में किया गया है।

☆ **प्रस्तुत संस्करण का मुख्य आकर्षण** : शिक्षणकला नामक खण्ड के अन्तर्गत विभिन्न विषयों—हिन्दी, इतिहास, अर्थशास्त्र, नागरिकशास्त्र, भूगोल, विज्ञान, गणित तथा गृहविज्ञान की शिक्षण-पद्धतियों के सम्बन्ध में सम्पूर्ण सामग्री को सरल एवं सुबोध ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

सूचना—म० प्र० के विक्रम विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम का अनुपूरक ३·०० रु० मे उपलब्ध है।

इस प्रकार प्रस्तुत संस्करण सभी दृष्टियों से उत्तम एवं उपलब्ध गाइडों में सर्वश्रेष्ठ व सस्ता है।

आकार : डिमाई पृष्ठ संख्या : १४५० मूल्य : ४५·००

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा-२

प्रकाशक एवं मुद्रक : विनोद कुमार अग्रवाल द्वारा कैलाश प्रिंटिंग प्रेस, आगरा-2

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोविज्ञान के क्षेत्र में एक और नवीन मौलिक कृति

व्यावहारिक मनोविज्ञान

[APPLIED PSYCHOLOGY]

लेखक

डा० रामपालसिंह प्रो० सत्यदेवसिंह

जियालाल शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान, अजमेर

.....डा०. देवव्रत शर्मा

से प्राप्त संख्या ..... राजस्थान विश्वविद्यालय. जयपुर

प्राप्ति दिनांक .....

☆ ☆ ☆

● आज यह सर्वत्र स्वीकार किया जाने लगा है कि मनोविज्ञान न केवल एक सैद्धान्तिक विषय ही है, अपितु इसका व्यावहारिक पक्ष भी उतना ही प्रबल है। फलतः मनोविज्ञान के व्यावहारिक पक्ष का भी मनोवैज्ञानिकों ने विकास किया और उन्होंने यह प्रयास किये कि मनोविज्ञान के सिद्धान्तों का मानव जीवन के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में प्रयोग किया जा सके। इनके प्रयासों के फलस्वरूप ही मनोविज्ञान का आज मानव जीवन के अनेक क्षेत्रों में प्रयोग हो रहा है। आज मनोविज्ञान के सिद्धान्तों का हम शिक्षा, समाज, उद्योग, मनोपचार, व्यापार, व्यवसाय तथा अपराध आदि अनेक क्षेत्रों में प्रयोग कर रहे हैं। प्रस्तुत पुस्तक में उन क्षेत्रों की चर्चा की गई है जिनमें मनोविज्ञान के सिद्धान्तों का प्रयोग हो रहा है।

● प्रस्तुत पुस्तक में मनोविज्ञान के व्यावहारिक पक्षों का वर्णन निम्न सात खण्डों के अन्तर्गत 36 अध्यायों में अत्यन्त ही सरल तथा बोधगम्य शैली में किया गया है।

विषय-क्रम

खण्ड 1—मापन एवं मूल्यांकन—1. मूल्यांकन का अर्थ, 2. बुद्धि प्रकृति तथा परीक्षा, 3. रुचि, परीक्षण, 4. निष्पत्ति परीक्षण, 5. व्यक्तित्व परीक्षण, 6. अभियोग्यता परीक्षण, 7. अभिवृत्ति परीक्षण।

खण्ड 2—निर्देशन—8. निर्देशन का अर्थ, 9. निर्देशन के प्रकार, 10. व्यावसायिक निर्देशन, 11. शैक्षिक निर्देशन, 12. निर्देशन कार्य-विधि का संगठन।

खण्ड 3—शिक्षा मनोविज्ञान—13. मनोविज्ञान का अर्थ, 14. शिक्षा मनोविज्ञान, 15. अधिगम का अर्थ, 16. अधिगम के नियम, 17. अधिगम का अर्थ, 18, अधिगम एवं प्रेरणा।

खण्ड 4—नैदानिक मनोविज्ञान—19. नैदानिक मनोविज्ञान का अर्थ, 20. मानसिक अस्वस्थता के लक्षण तथा संलक्षण, 21. मानसिक रोगों के कारण, 22. मानसिक रोगों के प्रकार, 23. मानसिक रोगों की उपचार विधियाँ।

खण्ड 5—औद्योगिक मनोविज्ञान—24. औद्योगिक मनोविज्ञान का अर्थ, 25. औद्योगिक वातावरण, 26. थकावट, नीरसता तथा दुर्घटनाएँ, 27. हड़ताल, तालेबन्दी तथा संघर्ष, 28. कर्मचारी प्रशिक्षण तथा श्रम-कल्याण।

खण्ड 6—विज्ञापन एवं प्रचार—29. विज्ञापन का अर्थ, 30. निपुणता 31. विक्रय, 32. कार्य विश्लेषण, 33. प्रचार।

खण्ड 7—समाज मनोविज्ञान—34. समाज मनोविज्ञान का अर्थ, 35. भीड़ एवं श्रोतागण, 36. सामाजिक तनाव आदि।

आकार-डिमाई शीघ्र ही प्रकाश्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शीघ्रता करें—

प्रत्येक पुस्तकालय के लिये शुभ सूचना

दीपावली के शुभ अवसर पर

अधिकतम कमीशन ३० प्रतिशत का लाभ

उठाते हुए हमारे निम्न प्रकाशनों को क्रय करें

यह सुविधा मात्र एक मास के लिये है :

० सूरदास और संतकवि नटनगोपाल नायकी स्वामिगल का तुलनात्मक अध्ययन	डा० के० आर० विट्टलदास	60·00
० चैतन्य सम्प्रदाय : सिद्धान्त और साहित्य	डा० नरेशचन्द्र बंसल	75·00
० हिन्दी-चित्रपट का गीति-साहित्य	डा० ओंकारप्रसाद माहेश्वरी	32·00
० माखनलाल चतुर्वेदी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व	डा० कृष्णदेव शर्मा	50·00
० भारतीय उपन्यासों में वर्णन-कला का तुलनात्मक मूल्यांकन	डा० इन्दिरा जोशी	50·00
० हिन्दी उपन्यास की प्रवृत्तियाँ	डा० शशिभूषण सिंहल	40·00
० प्रसाद-दर्शन	डा० द्वारिकाप्रसाद सक्सेना	25·00
० वृन्द-ग्रन्थावली	डा० जनार्दनराव चेलेर	40·00
० वृन्द और उनका साहित्य	,,	40·00
० हिन्दी और तेलुगु वैष्णव-भक्ति साहित्य : तुलनात्मक अध्ययन	डा० के० रामनाथन्	40·00
० रीतिकाल और आधुनिक हिन्दी कविता	डा० रमेशकुमार शर्मा	30·00
० कृष्णभक्ति साहित्य में रीतिकाव्य परम्परा	डा० राजकुमारी मित्तल	30·00
० ब्रज और बुन्देली लोकगीतों में कृष्णकथा	डा० शालिग्राम गुप्त	40·00
० हिन्दी और कन्नड में भक्ति आन्दोलन का तुलनात्मक अध्ययन	डा० हिरण्मय	40·00
० नाथपंथ और निर्गुण सन्तकाव्य	डा० कोमलसिंह सोलंकी	40·00
० सन्त वैष्णव काव्य पर तांत्रिक प्रभाव	डा० विश्वम्भरनाथ उपाध्याय	40·00
० आलवार भक्तों का तमिल प्रबन्धम् और हिन्दी कृष्ण-काव्य	डा० मलिक मोहम्मद	50·00
० कामायनी में काव्य, संस्कृति और दर्शन	डा० द्वारिकाप्रसाद सक्सेना	30·00
० हिन्दी में प्रत्यय विचार	डा० मुरारीलाल उपाध्याय	40·00
० हिन्दी समास रचना का अध्ययन	डा० रमेशचन्द्र जैन	20·00

[शेष आवरण के तृतीय पृष्ठ पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-परिचय

[शिक्षा और साहित्य की प्रगति का परिचायक पत्र]

[वर्ष 17 : अंक 11]
नवम्बर, 1982

सम्पादक
विनोद कुमार अग्रवाल
एम० ए०, साहित्यरत्न

स्वामित्व
विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

वार्षिक शुल्क : 15·00
रजिस्ट्री से विशेषांक मँगवाने पर
18·00
[विदेशों में—डाक व्यय सहित मात्र 40·00]

साहित्य-परिचय
डा० रांगेय राघव मार्ग
आगरा–2
फोन : 76486

विचार अपने-अपने • • •

आपकी बहुमूल्य पत्रिका "साहित्य-परिचय" प्रति मास प्राप्त होती है। आशा है कि आइंदा भी इसको प्राप्त कर हम उचित लाभ उठाते रहेंगे।

'साहित्य-परिचय' आकार-प्रकार में कुछ छोटे प्रतीत होते हैं, पर इनमें साहित्यिक दृष्टि से उच्च कोटि के अति गहन विचार पाए जाते हैं। इसीलिए 'साहित्य-परिचय' का निरन्तर प्राप्त करना, हम प्रवासी भारतीय सन्तानों के लिए अत्यावश्यक है।

कुछ अन्वेषण से सहज ही पता लग जाता है कि प्राचीन और अर्वाचीन शिक्षा-प्रणाली के बीच कितनी बड़ी खाई है। पुराने समय में माता-पिता अपनी सन्तान को सुशिक्षा के उद्देश्य से ठीक समय पर गुरु-कुल भेजकर गुरुदेव के आधीन कर दिया करते थे, जो छात्र-छात्राओं को विधिवत् प्रशिक्षण; जैसे—सभी प्रकार के हुनर, कला-कौशल, नियम-संयम, आदि देकर जितेन्द्रिय, पूर्ण विद्वान, धार्मिक, परोपकारी, माता-पिता और गुरु के आज्ञाकारी तथा चरणोदक लेने वाले सुसभ्य देश के सुयोग्य नागरिक बनाया करते थे।

इसीलिए तो भगवान् राम जैसे सुपुत्र, पिता-वचन निभाने के लिए राजसिंहासन त्याग कर चौदह वर्षों तक जंगल-झाड़ियों की खाक छानते रहे। श्रवणकुमार अपने अंधे माता-पिता की सेवा में, उन्हें कन्धों पर ढोना शान-मान मानते रहे। एकलव्य ने अपने हाथ के दोनों अंगुष्ठ आचार्य द्रोण को गुरुदक्षिणा में देकर आदर्श शिष्य पद पाया। निष्काम सेवा-निमित्त वीर हनुमान आदि की अमर गाथाएँ प्रसिद्ध ही हैं।

ये सभी वृक्ष-तले गुरुदेव के चरणों में बैठकर आदर्शवाद का पाठ पढ़े हैं। यही कारण है कि माता-पिता एवं आचार्य के ऋण से उऋण होना असम्भव माना गया है और इनकी नित्य सात्विक सेवा-सुश्रूषा कर शिष्यगण अनन्त सुख-सुविधा तथा शुभाशीर्वाद के अधिकारी बने हुए हैं।

सत्यनारायण स्वामी की कथानुसार, अट्ठासी सहस्र मुनि-मुनीश्वर नैमिषारण्य वन में मानव-कल्याण के उपायों की गोष्ठी किया करते थे। इस तरह वे कठिन से कठिनतम समस्याओं का हल ढूँढ़ लिया करते थे। पर आज विशाल हवेली में संयुक्त राष्ट्र संघ की बैठक लगती है, किन्तु सुलझने के बजाय अधिकाधिक उलझनें उत्पन्न हो रही हैं। एक देश पर दूसरे देश अपना प्रभुत्व जमाने में सभी उचितानुचित उपाय प्रयोग में ला रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज आलीशान अट्टालिकाओं में बड़ी-बड़ी यूनीवर्सिटियाँ चलाई जा रही हैं। यहाँ अध्यापक-प्राध्यापकों के चरणों में नतमस्तक होने के बदले 'शेक हैण्ड' करते या कभी तमाचा लगाकर अपना रोष शान्त करते हैं।

भारतीय संस्कृति को तोड़-मरोड़ कर ऐसा दूषित प्रशिक्षण किसने दिया ? किन लोगों की यह देन है ? इसका सहज उत्तर है—जब हमारी अंदरूनी फूट चरम सीमा पर पहुँच गई, तो अपने ही भाइयों से बदला लेने के लिए विदेशी विधर्मियों को आमंत्रित किया गया और इनके क्रूर दमनकारी व्यवहारों से व्यथित, हम सदियों तक पाशविक रूप में शासित बने रहे।

एक बार विदेशियों के पैर जम जाने से हमारे पवित्र धर्म व संस्कृति का उन्मूलन और परस्पर दुर्भावना के बीजारोपण के कारण हमारा सर्वनाश हो गया। देश के स्वतन्त्र हो जाने पर भी आज विलायत में जाकर पाश्चात्य भाषा-संस्कृति का प्रशिक्षण पाने वाले हमारे अपने, स्वयं को महान्, मान-सम्मान वाले तथा प्रतिष्ठित समझ रहे हैं।

साम्राज्यवादियों के रंग में रँगे हुए ये लोग जब विदेशों से प्रशिक्षण पाकर आते हैं तो उनके भाव-विचार भी साथ लेते आते हैं। (सदियों की जमी काई अब छूटना मुश्किल प्रतीत हो रही है)।

नागपुर के प्रथम विश्व-हिन्दी सम्मेलन के अवसर पर हम गए हुए थे। चौपाटी के मैदान में आयोजित 'विश्व हिन्दू-धर्म सम्मेलन' में तद्विषय पर हमारा भाषण था। जाते समय वृक्ष-तले कई जोड़ों को आलिंगन करते देखा। पूछने पर बताया गया, "ये सभी पाश्चात्य प्रशिक्षण पाकर अभी लौटे हैं।" चरम बिन्दु तब पार हो गया जब भारत के बैंकों या अन्य स्थानों पर हम हिन्दी में बोले, तो उत्तर अंग्रेजी में मिला। विवश होकर अंग्रेजी में ही कहना पड़ा—"It's a shame to hear from you all in English when one is addressing to you in Hindi—your national language."

बानर-भालू, घोड़े-चीते आदि को सर्कस का प्रशिक्षण देकर लाखों कमाए जाते हैं। पर ये आदमी नहीं बन पाते। ठीक इसी तरह रोजी आदि कमाने के लिए उच्च प्रशिक्षण दिए जाते हैं, पर मानवता की पावन शिक्षा पर कम ध्यान दिया जाता है।

शिक्षा के नाम पर बड़ी-बड़ी योजनाएँ बनाई जा रही हैं, पर परम शांति के बदले दिनोंदिन अशान्ति, उद्विग्नता, आतंक, तोड़-फोड़ और प्रलयंकारी अस्त्र-शस्त्र तैयार करने की दौड़ में लगे सभी बारूद के ढेर पर बैठे हुए अहंकार में दहाड़ रहे हैं।

अपार दुःख और चिन्ता का विषय है कि भारतीय धर्म-संस्कृति को त्याग कर अपने लोग विधर्मीय दलदल में फँस रहे हैं। दूसरी ओर, अतीव प्रसन्नता है कि धर्म के पिपासु, यूरोप-अमेरिका से आकर भारत की गली-गाँवों-नगरों में राम-कृष्ण की रट तथा दुंदुभि बजाकर अपने त्राण की खोज में लगे हुए हैं।

इस अन्तिम पंक्ति के अनुसार असीम सांत्वना मिलती है कि अनन्त सुख-शान्ति के लिए सभी की दृष्टि भारत की ओर लगी हुई है।

मिलकर सभी कह रहे हैं, "एक समय प्रकाश पूर्व से आया था और वही प्रकाश फिर पूर्व से ही आकर संसार का तम हरेगा।"

भारत के सकल भाई-बहनों को शत-शत प्रणाम।

—शिव गुलाम (मोती) तोरल
एम० बी० ई०, रॉयल रोड,
न्यू ग्रोव, मॉरीशस

कृपया ध्यान दें !

'साहित्य परिचय' के सदस्यों से निवेदन

'साहित्य-परिचय' आपकी अपनी पत्रिका है। गत 17 वर्षों से यह आपकी सेवा में कार्यरत हैं। कृपया इसके स्वयं सदस्य बनिये तथा अपने परिचितों को इसका सदस्य बनाइए। वर्ष भर में 250 पृष्ठ का एक विशेषांक इसी वार्षिक शुल्क में निःशुल्क प्राप्त होता है। आज ही 15.00 रु० धनादेश द्वारा भेजकर आगामी वर्ष 83 (जनवरी—दिसम्बर) के लिये सदस्य बनें। विशेषांक को रजिस्ट्री से प्राप्त करने के इच्छुक सज्जन 18.00 रु० का धनादेश भेजें। जिनकी सदस्यता वर्ष 1982 में समाप्त हो रही है, वह नवीनीकरण के लिये अपना अगले वर्ष का वार्षिक शुल्क शीघ्र ही भेजें। दिसम्बर 82 तक सदस्यता-शुल्क न आने पर जनवरी–83 से बढ़ा हुआ वार्षिक शुल्क ही लिया जायगा।

—व्यवस्थापक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोविज्ञान के श्रेष्ठ प्रकाशन

मनोविज्ञान की पद्धतियाँ एवं सिद्धान्त
डा० जे० डी० शर्मा २५·००

नैदानिक-मनोविज्ञान
डा० रामपाल सिंह वर्मा २५.००
प्रा. ले. : डा० एम. ए. शाह पु० सं० ३५.००

मनोविज्ञान के समकालीन सम्प्रदाय
डा० आर० के० ओझा १०.००

मनोविज्ञान के सम्प्रदाय
डा० रामपालसिंह वर्मा ६.५०

आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान २०.००
डा० प्रीती वर्मा, डा० श्रीवास्तव पु० सं० ३०.००

सामान्य मनोविज्ञान
डा० एस० एस० माथुर २०.००

सामान्य मनोविज्ञान की रूपरेखा
भाई योगेन्द्रजीत १०.००

असामान्य मनोविज्ञान के मूल आधार
डा० लाभसिंह, डा० तिवारी २१·२५
पुस्तकालय संस्करण ३२·००

असामान्य मनोविज्ञान (बी० ए० के लिए)
डा० लाभसिंह, डा० गोविन्द तिवारी २०.००

समाज मनोविज्ञान : प्रारम्भिक अध्ययन
डा० एस० एस० माथुर १४.००

समाज मनोविज्ञान (For Advanced Study)
डा० एस० एस० माथुर २५.००

शिक्षा-मनोविज्ञान
डा० एस० एस० माथुर १६.००

शिक्षा-मनोविज्ञान (संक्षिप्त संस्करण)
डा० एस० एस० माथुर १७.००

शिक्षा-मनोविज्ञान
प्रो० पी० डी० पाठक १६.४०

शिक्षा-मनोविज्ञान
डा० रामपालसिंह वर्मा, १८.००
डा० राधावल्लभ उपाध्याय पु० सं० २८.००

Educational Psychology 25.50
Dr. S. S. Mathur Lib. edn. 40.00

बाल मनोविज्ञान : बाल विकास
डा० प्रीती वर्मा, डा० श्रीवास्तव २२.५०

बाल मनोविज्ञान
भाई योगेन्द्रजीत १७.००

बाल विकास तथा पारिवारिक सम्बन्ध
डा० सरयूप्रसाद चौबे १५·००

सांख्यिकी के मूल तत्त्व
डा० एच० के० कपिल २७·७०

मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी
डा० (श्रीमती) प्रीती वर्मा,
डा० डी० एन० श्रीवास्तव १७·००

प्रारम्भिक सांख्यिकी
डा० प्रीती वर्मा, डा० श्रीवास्तव १०·००

शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग
सुरेश भटनागर ७·००

शिक्षा में सरल सांख्यिकी
डा० रामपालसिंह वर्मा ८·००

शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक अनुसंधान के मूलाधार
डा० गोविन्द तिवारी १८·००

मनोविज्ञान शोध-विधियाँ
प्रो० एम० ए० हकीम, बिपिन अस्थाना १५·००

शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्त्व
एस० पी० सुखिया
वी० पी० मेहरोत्रा, आर० एन० मेहरोत्रा २०·००

आधुनिक प्रयोगात्मक मनोविज्ञान
डा० प्रीती वर्मा, २४·००
डा० डी० एन० श्रीवास्तव पु० सं० ३५·००

प्रयोगात्मक मनोविज्ञान
प्रो० एम० ए० हकीम, डा० बिपिन अस्थाना १४·००

औद्योगिक मनोविज्ञान २०·००
डा० आर० के० ओझा पु० सं० २८·००

विकासात्मक मनोविज्ञान
भाई योगेन्द्रजीत १५.००

शैक्षिक मूल्यांकन
डा० रामपालसिंह वर्मा १०·००

मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन
डा० आर० एन० अग्रवाल,
डा० बिपिन अस्थाना १८·००

मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सरल मूल्यांकन
डा० रामपाल सिंह वर्मा ६·००

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा-२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुशासनहीनता की समस्या

डॉ० राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी
शीतला गली, आगरा–३

गत कई वर्षों से युवक-वर्ग में व्याप्त अनुशासन-हीनता समाज की एक विचारणीय समस्या बन गई है। उसका प्रस्तुत उग्ररूप प्रायः सामाजिक अभिशाप ही बन गया है। इस समस्या ने विश्वव्यापी रूप धारण कर लिया है। उसको युवा पीढ़ी का विद्रोह कहा जाने लगा है। सभी स्तर के विचारक इस समस्या पर विभिन्न स्तरों पर एवं विभिन्न दृष्टिकोणों से विचार करते हैं। "जाकी रही भावना जैसी" के अनुसार वे इसके निदान एवं समाधान भी प्रस्तुत करते हैं।

पुरानी पीढ़ी और नई पीढ़ी का मतभेद एक सनातन सत्य है, क्योंकि समय के प्रवाह के साथ जीवन के मूल्य बदलते रहते हैं। हममें से कौन ऐसा है जिसके मन में अपने समय में प्रचलित परम्पराओं के प्रति विद्रोह के भाव उत्पन्न नहीं हुए थे अथवा जिसने अपने ऊपर लगे हुए अंकुशों से मुक्ति पाने की इच्छा नहीं की थी। यदि ऐसा न हो, तो मानव-विकास का क्रम ही अवरुद्ध हो जाए। प्रचलित परम्परा के विरुद्ध विद्रोह एवं नवीन परम्परा की कल्पना एवं स्थापना—यही विकास एवं प्रगति का क्रम है। इसी को लक्ष्य करके भारतीय ऋषियों ने आश्रम धर्म की व्यवस्था की थी, जिसके अन्तर्गत पिता-पुत्र कभी एक साथ रहते ही न थे। आश्रम धर्म के प्रविधान के अनुसार युवावस्था की सम्प्राप्ति तक बालक गुरुकुल में रहता था और जब वह गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करता था, तब पिता वान-प्रस्थी होकर गृह-कार्य से मुक्त हो जाता था। अस्तु।

यदि अनुशासनहीनता की समस्या केवल युवक-वर्ग तक ही सीमित रहती, तो स्थिति इतनी भयावह कदापि नहीं होती। यह रोग सर्वग्राही बन गया है। लोकसभा के सदस्य एवं मन्त्रीगण ऐसे महानुभाव भी इस रोग से ग्रस्त हैं। अतएव इस पर विचार करते समय हमको चाहिए कि समस्त परिवेश में इस समस्या पर विचार करें।

औद्योगिक क्रान्ति के पश्चात् मानव-जीवन के मूल्य इतनी द्रुत गति से परिवर्तित हुए हैं और हो रहे हैं कि बौद्धिक प्रगति और जीवन-प्रवाह का सम्बन्ध-विच्छेद हो गया है। पिछले १५० वर्षों में किसी भी समय हम, अपने आदर्शों को निर्दिष्ट नहीं कर पाये हैं। हम भौतिक सुख-समृद्धि अथवा वैज्ञानिक प्रगति की धुन में न पीछे को देखते हैं और न रुक कर सोचते हैं। परिणामतः आर्थिक स्तर के आधार पर समाज कई वर्गों में स्वयंमेव विभक्त हो गया है और हमारे भावनात्मक विनिमय का क्रम विशृंखलित हो गया है। हम अपने भाई को देखते तो हैं, परन्तु उसके साथ सम्पर्क स्थापित करने के साधनों से वंचित हो गए हैं। हम विज्ञान के क्षेत्र में जितने ही आगे ही बढ़े हैं, ज्ञान के क्षेत्र में उतने ही पीछे रह गए हैं। हम विश्वबन्धुत्व की जितनी ही अधिक बात करते हैं, अपने सगे भाई से उतने ही दूर होते जाते हैं। इस प्रकार हमारा व्यक्तित्व विशृंखलित हो गया है, हमारे मन रिक्त हो गए हैं और हमारे मन में इतनी कुण्ठाएँ भर गई हैं कि हम यही नहीं समझ पा रहे हैं कि हम क्या करें, कहाँ जाएँ और किसके पास जाकर अपनी बात कहें।

जनवाद ने मानव-स्वतन्त्रता का वरदान दिया है और साम्यवाद ने अधिकारवाद का प्रतिपादन किया है। इसका अभीप्सित परिणाम यह हुआ है कि प्रत्येक व्यक्ति किसी भी प्रकार के अंकुश को जीवन का अभिशाप मानता है तथा कर्त्तव्य की चर्चा को अपने प्रति अन्याय के रूप में देखता है। स्वार्थ-साधन अथवा प्रयोजन की सिद्धि में नाममात्र का अवरोध भी हम सहन नहीं कर सकते हैं। ज़रा-सा भी अवरोध हमें विचलित कर देता है और हम वाणी एवं कार्य की स्वतन्त्रता की दुहाई देकर विद्रोह कर उठते हैं। समानता के सिद्धान्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के नाम पर हम केवल अपने से ऊपर वालों को नीचे खींच कर अपने बराबर कर लेना चाहते हैं। अपने से नीचे स्तर पर स्थित भाइयों को सहारा देकर ऊपर उठाकर अपने बराबर नहीं करना चाहते हैं। कारण यह है कि साम्यवाद ने वर्ग-संघर्ष के नाम पर सम्पन्न के प्रति ईर्ष्या एवं द्वेष करना ही सिखाया है, विपन्न के प्रति प्रेम एवं करुणा की शिक्षा नहीं दी है। वह केवल यह बताता है कि हम सम्पन्न को विपन्न बनाने के लिए तलवार का प्रयोग किस प्रकार करें। सामंतवादी युग में गंरीबी ढाल थी। अब तलवार बन गई है। हम पूँजी वाले बनना चाहते हैं, और साथ ही पूँजीपति को मिटाने का नारा लगाते हैं। इस तरह की नारे-बाज़ी हमारे प्रयोजन की सिद्धि के अनुकूल पड़ती है, क्योंकि राजनीति के क्षेत्र में स्थूल मनोवेगों को उभारना हितकर सिद्ध होता है। राजनीति के पुजारी के लिए इतना पर्याप्त है कि वह प्रत्येक मनुष्य के हृदय में सामंत एवं पूँजीपति की स्थापना कर दे। हृदयस्थ पूँजीपति एवं सामन्त अपने धारणकर्त्ता को अपने अनुरूप न पाकर विद्रोह कर बैठता है। यही अनुशासनहीनता का विस्फोट है। राजनीति के सर्व-व्यापी प्रभाव ने सम्पूर्ण समाज को विद्रोही बना दिया है। विद्रोह हमारा युगधर्म बन गया है। अनुशासन-हीनता को नियंत्रित करने के लिए हमें राजनीतिक प्रभाव की सीमाएं निर्धारित करनी होंगी।

गाँव का निवासी शहरों की बड़ाई सुनकर शहर में आता है। यहाँ शहर के दुर्गन्धपूर्ण वातावरण एवं प्रयोजनपरक व्यवहार को देखकर वह निराश हो जाता है। शहर का निवासी बम्बई-कलकत्ता सदृश नगरों की तूरानी बातें सुनकर दौड़कर उनकी ओर जाता है। वहाँ के शोर-शराबे एवं दूषित वातावरण को देखकर वह दुःखी हो जाता है। वहाँ जाता तो है वह महलों के स्वप्न लेकर, परन्तु उसको सोना पड़ता है फुटपाथ पर। फलस्वरूप वह दुःखी हो जाता है। वह घर छोड़ कर आता है और घाट पर उसको कोई पूछता नहीं है। हमारा उदीयमान नवयुवक जीवन की प्रेरणा के लिए अपने अग्रज एवं गुरुजन के पास जाता है। वहाँ उसको निराश होना पड़ता है; क्योंकि अधिकांश के ऊपर नक़ली मुखौटे लगे हुए हैं। उनके जीवन छल-प्रपंच से पूर्ण है और उनके मन खोखले हैं। बस, यहीं से हमारा युवक क्षुब्ध हो उठता है और श्रद्धेय के पात्र को न पाकर वह श्रद्धा को तिलांजलि दे देता है। वह एक विचित्र पुकार की क्षोभपूर्ण घुटन एवं बौखलाहट लेकर चारों ओर घूमता फिरता है और अपना सन्तुलन खो बैठता है। आप कहते हैं—वह अनुशासनहीन हो गया है, मैं कहता हूँ कि वह जानता ही नहीं है कि अनुशासन होता क्या है? उसने घर और बाहर कहीं, कभी किसी ऐसे व्यक्ति को देखा ही नहीं है, जो अनुशासन में रहता हो तथा जिससे वह अनुशासित रहने का पाठ पढ़ सकता हो। ऊपर से नीचे तक प्रत्येक व्यक्ति येन-केन-प्रकारेण अपनी प्रयोजन-सिद्धि में तत्पर दिखाई देता है। घर में, बाहर, स्कूल में, कालेज में—सर्वत्र वह एक ही साइन-बोर्ड पड़ता है—जीवन की सफलता और वास्तविक योग्यता का परस्पर कोई सम्बन्ध नहीं है। स्पष्ट-वादिता कहीं वाचालता न बन जाए, इस कारण मैं अधिक नहीं कहना चाहूँगा। परन्तु कुलपतियों से लेकर सामान्य अध्यापक की नियुक्ति तक में वह राजनीति अथवा तिकड़म का बोलबाला देखता है। हमारे मिनि-स्टर अपने विभागों के बारे में अनभिज्ञ होते हैं। मिनिस्टर होने के लिए किसी प्रकार की शैक्षिक योग्यता की आवश्यकता नहीं है। तब फिर जो युवक मिनिस्टर बनना चाहता है, वह पढ़ाई-लिखाई में ध्यान क्यों दे? वह अपने जन-गन-मन-अधिनायकों की भाँति झूठे वायदे करके और थोथे नारे लगाकर जनता को गुमराह करने में महारत हासिल क्यों न करे? हमें चाहिए कि युवकों को नसीहत देने के पहले खुद अपनी फज़ीहत पर गौर करने की मेहरबानी करें।

छात्र समस्त छल-छंद को देखते हैं, समझते हैं और साथ ही नेतृत्व करने की क्षमता रखते हैं। वे देखते हैं कि विद्यालयों में अधिकारियों ने विद्या-मन्दिरों के नाम पर दुकानें खोल रखी हैं तथा वे स्वार्थी अध्यापकों के माध्यम से उनका शोषण करते हैं। हमारे विद्यालयों में पढ़ाने वाले अधिकांश अध्यापक न्यूनतम शैक्षिक योग्यता की शर्त पूरी नहीं करते हैं। उनको आजीवन अपने चंगुल में रखने के लिए अधिकारी-वर्ग योग्यता सम्बन्धी छूट दे देता है और अपना स्वार्थ सिद्ध करता रहता है। जब किसी अन्याय को लेकर छात्र-आन्दोलन करते हैं, तब ही किसी प्रकार छूट देकर यानी माँगें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वीकार करके अथवा छात्र-वर्ग में फूट डाल कर मामले को दबा दिया जाता है और हम समझने लगते हैं कि समस्या हल हो गई। इसी प्रकार हम कभी-कभी छात्र-जीवन, अध्यापक का महत्त्व, अध्यापक-छात्र अथवा गुरु-शिष्य के सम्बन्ध आदि के आदर्शों की दुहाई देकर बड़ी अच्छी-अच्छी बातें कह देते हैं और समझ लेते हैं कि हमने निरीह छात्रों तथा निर्धन अध्यापकों को बहका दिया है। यह सब अब अधिक दिनों तक चलने वाली बातें नहीं हैं। समाज को यह मानकर चलना चाहिए कि हमारा छात्र-वर्ग अपने प्रति, अपने समाज के प्रति. देश के प्रति तथा मानव के भविष्य के प्रति पूर्णतः जागरूक हो गया है, उसको गुमराह करने अथवा बहकाने की पद्धति अब इतिहास की वस्तु बन चुकी है। छात्र-वर्ग ने स्वतन्त्रता की लड़ाई में सन् १९२१ में भाग लेना आरम्भ किया था। उसने वियतनाम, इण्डोचीन तथा अन्य देशों में स्वतन्त्रता की लड़ाई स्वतन्त्र रूप से लड़कर अपनी शक्ति का परीक्षण कर लिया है और उसका परिचय भी दे दिया है। निश्छल देश-प्रेम उसका सम्बल है और शोषण का उन्मूलन उसका लक्ष्य। हमें चाहिए कि वस्तुस्थिति को जानने का प्रयत्न करें; उसको स्वीकार करें और उसके अनुसार आचरण करने का अभ्यास करें। आए-दिन गोली चलाकर दो-चार लाड़लों की हत्या करने से हमारे सिर का पाप और पृथ्वी का भार ही बढ़ता है।

यह भी अप्रिय सत्य है कि छात्रों के प्रत्येक विद्रोह अथवा अनुशासनहीन कृत्य के पीछे किसी अध्यापक की प्रेरणा रहती है। इसका कारण है—समाज की व्यवस्था के प्रति असन्तोष। एक ओर तो हम उन्हें राष्ट्रनिर्माता कहते हैं और उनसे उच्च आदर्शों के अनुसरण की आशा करते हैं, और दूसरी ओर उनको बैंक के चपरासी से भी कम वेतन देते हैं। प्राचीन गुरुओं की दुहाई व्यर्थ है; क्योंकि अब गुरुकुल-व्यवस्था समाप्त हो गई है। इसके अतिरिक्त शिक्षक वर्ग के प्रति हमारे मन में सम्मान भी नहीं रह गया है। इस अर्थप्रधान युग में उसकी आवश्यकता भी नहीं है। प्राचीन काल में बड़े से बड़ा शासक अध्यापक के सामने अपना आसन छोड़कर नतमस्तक हो जाता था। अब अध्यापक को न मालूम कितने शासकों की हाजिरी में खड़ा रहना पड़ता है। सीधी-सी बात यह है कि हम योग्य अध्यापक रखें तथा योग्यता के अनुसार उनको वेतन प्रदान करें और तब आशा करें कि वे छात्र-वर्ग को सही नेतृत्व प्रदान करेंगे। अन्यथा हम विश्वास रखें कि अध्यापक अपने छात्रों की शक्ति का दुरुपयोग करना बन्द नहीं करेंगे और वह दिन दूर नहीं है जब वे हमारी गलतफहमियों को पूरी तरह से दूर कर देंगे।

छात्र-वर्ग में राजनीति की बातें घर कैसे करती है? यह एक ऐसा प्रश्न है जो हमको प्रायः झकझोर देता है। आज का युग राजनीति का युग है। कोई भी व्यक्ति राजनीति से अछूता नहीं रह सकता है। और फिर 'महाजनो येन गतः स पन्थः' अथवा 'यथा राजा तथा प्रजा' वाली बात है। जब राजनीति हमारी रोटी-दाल बन गई है, तब खून भी राजनीति से ही बनना चाहिए। अन्न से रक्त बनता है, रक्त से अन्न नहीं बनता है। इसके अलावा विद्यालयों में राजनीति के समावेश का कारण है—हमारी दूषित शिक्षा-पद्धति। हम बिना विचार किए हुए अथवा शिक्षा-प्रसार की धुन में प्रत्येक अवस्था के छात्र को दाखिल कर लेते हैं। ये वयस्क तथाकथित छात्र ही वस्तुतः राजनीति के कीटाणुओं के वाहक होते हैं। आप कल्पना तो कीजिए उस स्थिति की, जब १८ वर्ष का किशोर और ५९ वर्ष का प्रौढ़ एक साथ एक ही कक्षा में पढ़ने जाते हैं। हम यदि इस तथ्य को खोजने निकलें कि छात्र-आन्दोलनों के नेता किस अवस्था-श्रेणी के व्यक्ति हैं, तो आप देखेंगे कि अधिकांशतः २५ वर्ष अथवा उससे अधिक अवस्था के व्यक्ति हैं। छात्र-नेता प्रायः वे व्यक्ति हैं जो असफल विद्यार्थी हैं, अथवा कानून पढ़ने वाले छात्र हैं अथवा जिन्होंने केवल नेतागीरी करने के लिए दुबारा-तिबारा एम० ए० में प्रवेश ले रखा है। हम इस ओर विचार करें और ऐसी व्यवस्था करें कि एक अवस्था-विशेष से अधिक वय-प्राप्त व्यक्तियों के लिए हम विद्यालयों के द्वार बन्द कर सकें। विद्या-प्रसार को रोकने की आवश्यकता नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति को प्राइवेट परीक्षा देने की छूट होनी चाहिए जिससे प्रत्येक व्यक्ति इच्छानुसार ज्ञानोपार्जन कर सके अथवा अपने जीवन-निर्माण के लिए शैक्षिक योग्यता में वृद्धि कर सके। शिक्षा-प्रसार के नाम पर जब तक हम शिक्षालयों को व्यापार-केन्द्र बनाए रखेंगे, तब तक हमारे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-परिचय
का आगामी सामयिक 14 वाँ
विशेषांक (1983)
?

'साहित्य-परिचय' के सभी पाठकों, लेखकों एवं सहयोगियों से निवेदन है कि वह आगामी विशेषांक की योजना को कार्यान्वित करने में सहयोग दें कि वह किस विषय पर विशेषांक चाहते हैं। साथ ही अपनी योजना की संक्षिप्त रूपरेखा भी बनाकर भेजें।

'साहित्य-परिचय' विगत 17 वर्षों से शिक्षा, साहित्य और संस्कृति की सेवा करता आ रहा है। विगत वर्षों में इसके 13 सामयिक विशेषांक प्रकाशित हो चुके हैं, जिनकी सर्वत्र विशद् चर्चा हुई है, उसी कड़ी में चौदहवाँ विशेषांक वर्ष 83 में निकालने की योजना है।

साहित्य-परिचय से सम्बद्ध सभी सुधी महानुभावों से निवेदन है कि वह कृपया इस सम्बन्ध में अपने विचार हमें शीघ्रातिशीघ्र भेजने की कृपा करें।

—प्रबन्ध सम्पादक

साहित्य-परिचय कार्यालय
डा० रांगेय राघव मार्ग, आगरा–2

छात्रों को राजनीति से मुक्त रखना असम्भव ही है।

मैं अपने व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर कह सकता हूँ कि हमारा छात्र अपने उत्तरदायित्व को भली प्रकार समझता है। हमारे कालेज में संगीत-समारोह हो रहा था। छात्र-संघ के अध्यक्ष ने मुझसे १० रु० माँगे। मैंने १० रु० दे दिए और फिर पूछा—क्यों, इनका क्या करोगे? छात्र अध्यक्ष ने एक संगीतज्ञ का नाम लेते हुए कहा कि वह गाना गाने के पूर्व शराब पीना चाहते हैं। मैंने कहा, ठीक है—परन्तु साथ में तुम मत पी लेना। मेरी बात सुनकर युवक आवेश में आ गया। मैं ऐड़ लगाते हुए कहा—तुम चाहो पियो, चाहे न पियो। शौहरत तो यही होगी कि हमारे कालेज के संगीत-समारोह के अवसर पर शराब उड़ी थी। छात्र-अध्यक्ष ने १० रु० का नोट तुरन्त वापिस दे दिया और उसने संगीतज्ञ को वह डाँट पिलाई कि उसे छठी का दूध याद आ गया।

मैं छात्रों की अनुशासनहीनता का न तो समर्थक हूँ और न इस सम्बन्ध में प्रस्तुत किए जाने वाले विद्वानों एवं समाधानों का विरोधी ही हूँ। वे अपनी-अपनी जगह सब ठीक हैं। परन्तु मेरा निवेदन तो केवल यह है कि हम डाल-पात को सींच कर कर्त्तव्य की इतिश्री समझ लेना छोड़ दें और जड़ तक जाएँ तथा कठोर यथार्थ को झेलने का साहस बटोरें। छात्रों को प्रबन्ध-समितियों में प्रतिनिधित्व दें या न दें; परन्तु अनिवार्य यह है कि हम उनके सच्चे हितैषी बनने का प्रयत्न करें और इस ग़लतफ़हमी को दूर कर दें कि हम अपनी वाक्चातुरी द्वारा उन्हें बहका सकते हैं। हमारे राजनीतिक नेताओं को चाहिए कि वे राजनीति के क्षेत्र में नैतिकता की आवश्यकता का अनुभव करें और भारत के भावी नागरिकों को नैतिक जीवन से विमुख करने की बात छोड़ दें। धन-संचय में लिप्त कर्णधार जब त्याग, कठिन श्रम, सेवा आदि के आदर्श का प्रतिवादन करते हैं तथा शिक्षा-पद्धति, विदेशी प्रभाव आदि को कोसते हैं, तब मुझे यह शेर याद आ जाता है—

क्या हँसी आती है मुझको हज़रते इन्सान पर,
फैले वद तो खुद करें, लानत करे शैतान पर।

पुरानी पीढ़ी के लोग जवानी की बातें करना छोड़ दें और वानप्रस्थियों की तरह रहना सीखें। जब तक युवक-वर्ग को हम हृदय से अपना उत्तराधिकारी स्वीकार नहीं करेंगे, तब तक न तो नई पीढ़ी का विद्रोह शान्त होगा और न अनुशासनहीनता की समस्या ही हल होगी।●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विभिन्न विश्वविद्यालयों के नवीन पाठ्यक्रमानुसार—

छात्रों एवं पुस्तकालयों के लिये हमारा प्रकाशित

छात्रोपयोगी प्रशिक्षण साहित्य

☆ ☆ ☆

भारतीय शिक्षा
(Indian Education)

भारतीय शिक्षा के प्रवर्त्तक
सं० डा० आत्मानन्द मिश्र १५.००

शिक्षा में नव चिन्तन
सं० डा० रामपालसिंह (प्रेस में)

आदि और मध्ययुगीन भारत में शिक्षा
डा० सरयूप्रसाद चौबे १४.००

आधुनिक भारतीय शिक्षा [इतिहास और समस्याएँ]
पी० डी० पाठक, गुरसरनदास त्यागी १६.००

भारतीय शिक्षा का इतिहास
बी० पी० जौहरी, पी० डी० पाठक १५.९५
पुस्तकालय संस्करण २२.५०

भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ
पी० डी० पाठक १९.८०
पुस्तकालय संस्करण ३०.००

भारतीय शिक्षा की सामयिक समस्याएँ
रामखेलावन चौधरी,
राधावल्लभ उपाध्याय १५.००

भारतीय शिक्षा (प्राचीन से वर्तमान काल तक)
डा० सरयू प्रसाद चौबे १४.००

हमारी शिक्षा समस्याएँ
डा० सरयू प्रसाद चौबे १८.००

विश्व के श्रेष्ठ शिक्षाशास्त्री
डा० रामशकल पांडेय १२.००

भारतीय शिक्षा के आयोग एवं समितियाँ
पी० डी० पाठक, गुरसरनदास त्यागी १७.००
पुस्तकालय संस्करण २२.००

शिक्षा-मनोविज्ञान
(Educational Psychology)

शिक्षा-मनोविज्ञान
डा० एस० एस० माथुर १९.००

शिक्षा-मनोविज्ञान (संक्षिप्त संस्करण)
डा० एस० एस० माथुर १७.००

शिक्षा-मनोविज्ञान
पी० डी० पाठक १६.४०

शिक्षा-मनोविज्ञान
डा० रामपालसिंह वर्मा १८.००
राधावल्लभ उपाध्याय पु० सं० २८.००

Educational Psychology
Dr. S. S. Mathur 25.50
Lib. edn. 40.00

शिक्षा-सिद्धान्त और शिक्षणकला
(Principles and Methods of Education)

शिक्षा के सिद्धान्त
पी० डी० पाठक, गुरसरनदास त्यागी १५.००

शिक्षा के सामान्य सिद्धान्त
पी० डी० पाठक, गुरसरनदास त्यागी २४.००
पुस्तकालय संस्करण ३२.००

शिक्षा-सिद्धान्त
डा० एस० एस० माथुर १७.००

शिक्षा के मूल सिद्धान्त
डा० रामशकल पाण्डेय २१.००
पुस्तकालय संस्करण २८.००

शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार
डा० सरयूप्रसाद चौबे २०.००
पुस्तकालय संस्करण २४.००

Philosophical and Sociological Foundations of Education
Dr. S. P. Chaube, 20.00
Akhilesh Chaube Lib. edn. 30.00

An Introduction to Major Philosophies of Education
Dr. R. S. Pandey 14·00
Lib. Edn. 20·00

Principles of Education
Dr. R. S. Pandey 16.00

A Sociological Approach to India Education
Dr. S. S. Mathur 28.00

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षण-कला, शिक्षण तकनीक एवं नवीन पद्धतियाँ
डा० एस० एस० माथुर १८.००

सफल शिक्षण कला
पी० डी० पाठक १५.००

शिक्षण-तकनीकी (Technology of Teaching)

शिक्षण-तकनीकी
शैलेन्द्र भूषण एवं
डा० अनिलकुमार वार्ष्णेय १०.००

शैक्षिक तकनीकी के मूल आधार
डा० एस० पी० कुलश्रेष्ठ १६.००

विद्यालय-प्रशासन (School Administration)

Educational Administration 22.00
S. P. Sukhia Lib. edn. 30.00

विद्यालय प्रशासन एवं संगठन
एस० पी० सुखिया १४.१५

शैक्षिक एवं विद्यालय प्रशासन
भाई योगेन्द्रजीत १५.००

विद्यालय-संगठन एवं स्वास्थ्य शिक्षा
डा० रामपालसिंह वर्मा १२.००

विद्यालय व्यवस्था श्री केशवप्रसाद ७.५०

शिक्षा-प्रशासन डा० उमेशचन्द्र कुदेसिया १२.००

स्वास्थ्य-शिक्षा (School Hygiene)

स्वास्थ्य-शिक्षा डा० जी० पी० शैरी १६.००

School Health Education & Public Health
Dr. S. P. Chaube, 20.00
Akhilesh Chaube Lib. Edn. 30.00

मापन एवं मूल्यांकन (Measurement & Evaluation)

शैक्षिक मूल्याँकन
डा० रामपालसिंह वर्मा १०.००

मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सरल मूल्यांकन
डा० रामपालसिंह वर्मा ६.००

Measurement and Evaluation in Psychology & Education
Dr. Bipin Asthana & Dr. Agrawal (In Press)

मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन
डा० आर० एन० अग्रवाल,
डा० बिपिन अस्थाना १८.००

सांख्यिकी (Statistics)

सांख्यिकी के मूल तत्त्व (सामाजिक विज्ञानों में)
डा० एच० के० कपिल २७.७०

मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी
डा० (श्रीमती) प्रीती वर्मा,
डा० डी० एन० श्रीवास्तव १७.००

प्रारम्भिक सांख्यिकी
डा० प्रीती वर्मा, डा० श्रीवास्तव १०.००

शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग
डा० सुरेश भटनागर ७.००

शिक्षा-दर्शन (Philosophy of Education)

भारत में शिक्षा-दर्शन और शैक्षिक समस्याएँ
पाठक एवं त्यागी १७.००

शिक्षा-दर्शन डा० रामनाथ शर्मा १५.००

शिक्षा-दर्शन डा० रामशकल पाण्डेय १६.००

शिक्षा के दार्शनिक सिद्धान्त
पी० डी० पाठक, त्यागी १८.००

निर्देशन (Guidance)

शैक्षिक मापन एवं निर्देशन
उमेश प्रसाद सिंह ४.००

शिक्षा में निर्देशन एवं परामर्श
डा० सीताराम जायसवाल १५.००

शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन
डा० रामपालसिंह वर्मा, उपाध्याय १६.००

तुलनात्मक-शिक्षा

तुलनात्मक शिक्षा
डा० सरयू प्रसाद चौबे ४०.००

शिक्षा व्यवस्थाएँ डा० सरयू प्रसाद चौबे १२.००

विषय-शिक्षण—इसके अन्तर्गत हिन्दी-शिक्षण, इतिहास, सामाजिक अध्ययन, नागरिकशास्त्र, भूगोल, विज्ञान, जीव-विज्ञान, गणित, संस्कृत, वाणिज्य, अर्थशास्त्र, गृहविज्ञान व अंग्रेजी-शिक्षण पर विभिन्न विद्वानों की लिखी सरल भाषा में पुस्तकें उपलब्ध हैं।

उक्त सभी प्रश्नपत्रों पर हिन्दी तथा अंग्रेजी में प्रश्नोत्तर रूप में भी पुस्तकें प्राप्य हैं।

सूचीपत्र निःशुल्क मँगायें

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मृगदाव" महाकाव्यकार—

त्रिवेदी रामानन्द शास्त्री—व्यक्तित्व एवं कृतित्व

वीरेन्द्र त्यागी
यूनाइटेड कॉमर्शियल बैंक, अकोला (आगरा)

देहाती अंचलके एक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के प्रांगण में एक छोटे-से छात्रावास से संलग्न एक छोटा-सा कुटीर, वह भी ऐसा जिसके लिए कबीर ने लिखा है—'घर तो साढ़े तीन हत धना तो पौने चार'; बस, यह कुटीर भी तीन हाथ चौड़ा और चार हाथ लम्बा ही होगा। कुटीर के ठीक आगे कदम्ब, अशोक, आम और वट के लहलहाते वृक्ष; इसी कुटी में मृगदाव महाकाव्य का प्रणेता रैन बसेरा करता था और अवकाश के क्षणों में एक चटाई पर बैठा लेखन और अध्ययन में संलग्न रहता था।

गेहुएँ रंग के दुबले-पतले, मझोले क़द के तन पर शुद्ध खद्दर के परिधान खूब फबते थे—सफेद धोती, सफेद कुर्ता, पीली रेशमी जाकिट, दोनों कंधों पर बनारसी दुपट्टा, सिर पर सफेद टोपी—बस, यही है त्रिवेदी जी का शब्द-चित्र। कवि ने इसी कुटी में बैठकर चित्रकूट, जय-विजय, लीलाधाम, सेनानी सुभाष नामक खण्डकाव्य, भूमिभिक्षा, बन्दीगृह नामक गीतिकाव्य और बौद्ध चरित्र पर आधारित, बाईस सर्गों में विभाजित, विशाल भारत में प्रकाशित मृगदाव महाकाव्य का प्रणयन किया है। इसके अतिरिक्त वह एक लम्बे अरसे से विशाल भारत में अपनी कथा, निबन्ध, संस्मरण एवं खोजपूर्ण लेख लिखता रहा था।

सौभाग्यवश कवि को अपनी तरुणावस्था से ही काव्य-रचना का शौक था। सर्वप्रथम कवि ने आजाद ट्रेन नामक ओजपूर्ण युक्त छोटा-सा काव्य लिखा। यह आजाद ट्रेन १९४२ के आन्दोलन से सम्बन्धित काव्य है। कवि अपनी प्रारम्भिक कृति से ही उत्तर प्रदेश के पूर्वी क्षेत्र में लोकप्रिय बन गया था। उस समय आजाद ट्रेन की निम्न पंक्तियाँ बच्चे-बच्चे के गले का हार बन गई थीं :—

'आजाद ट्रेन बलिया आइ, बज गया बिगुल आजादी का
राष्ट्रीय तिरंगा फहराया, कचहरियों पर भी खादी का'

तत्पश्चात् देश की राजनैतिक परिस्थितियों से प्रभावित हो, वह गीतिशैली में 'साप्ताहिक सैनिक' से अपनी राष्ट्रीय कविताओं को प्रकाशित कराता रहा। साथ ही 'बाल सखा' में भी अपनी बालोपयोगी रचनाओं को भेजता रहा। वाल्मीकि रामायण का पारायण करते समय उसके मन में चित्रकूट-दर्शन की अभिलाषा जागृत हुई। प्रभु कृपा से उन्हीं दिनों वह चित्रकूट हो भी आया। तत्पश्चात् वह चित्रकूट की रचना की ओर प्रवृत्त हुआ। यह काव्य केरल विश्वविद्यालय, असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, एवं मैसूर हिन्दीभाषा प्रचार परिषद् द्वारा पाठ्य-पुस्तक-रूप में स्वीकृत हो चुका है। सारा का सारा काव्य करुण रस से ओतप्रोत है।

सुप्रसिद्ध साहित्यकार पंडित बनारसी दास चतुर्वेदी व डा० टीकम सिंह तोमर ने चित्रकूट की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। चतुर्वेदी जी लिखते हैं—

फिरोजाबाद (आगरा—८)
४/२/६३

प्रिय त्रिवेदी जी,

प्रणाम,

चित्रकूट का चतुर्थ सर्ग आज उषाकाल के पूर्व ही मैंने पढ़ा। बहुत बढ़िया चीज आपने लिखी है।

विनीत
बनारसी दास

डा० तोमर का मत है—इस रचना में करुण रस का पूर्ण चित्रण हुआ है। इसे पढ़ते समय भवभूतिकृत उत्तर रामचरित्र नाटक का स्मरण हो आता है। चित्रकूट के पाठक के लिए करुण रस-विभोर हो जाना स्वाभाविक है। यह प्रतिपाद्य विषय-शैली एवं भाषा की दृष्टि से एक सफल रचना है। त्रिरुवअन्तपुरम् से प्रकाशित होने वाली 'केरल ज्योती' के दिसम्बर १९६६ के अंक में चित्रकूट की समीक्षा करते हुए आर्य भास्कर लिखते हैं :—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्रकूट का राम समाजवादी युग का एक मनुष्य है जो साधारण मनुष्य की भाँति हँसता है, रोता है, सुख-दुःखों में भाग लेता है और प्रकृति की रमणीयता से पराभूत होता है। चित्रकूट की परम रमणीक छटा देखकर राम के अन्दर आनन्द पारावार लहरें मारता है। 'बन देवी के मुकुल तुल्य हृद, शोभित होते और प्रपात, फूले नहीं समाते तरुवर, जिनमें लख कर अपना गात।'

राम-वन-गमन के समय दशरथ जी की आन्तरिक वेदना का चित्रण करते समय कवि ने करुण रस को चरम सीमा पर पहुँचा दिया है। वह दशरथ जी के सम्बन्ध में कहता है :

'रथ के पीछे कभी दौड़ते, फिर गिरते मुरछित होकर,
राम राम लक्ष्मण वैदेही, कहते थे वे रो रोकर।'

विनोबा जी के साथ पदयात्रा करते समय कवि ने भूमिभिक्षा की प्रेरणा ली : भूमिभिक्षा का युग-प्रतिनिधित्व करने वाला निम्न पद द्रष्टव्य है :

'अनादी काल से प्रकृति सदा दया निकेत है,
क्षुधा त्रषा निवार्णार्थ, वह सदा सचेत है,
दरिद्र किन्तु रो रहा कुटुम्ब के समेत है,
शरीर भार भूत है कुटुम्ब है न खेत है।'

कवि का जय-विजय एक अन्य खण्डकाव्य है। इसके सम्बन्ध में मार्च १९७० की 'केरल ज्योती' से आर्य भास्कर लिखते हैं :

"यद्यपि कवि ने निवेदन में स्वयं मान लिया है कि जय-विजय महाभारत पर आधारित एक लघु काव्य है, फिर भी विद्रोपदेश तक इसमें समाविष्ट करके कवि ने गागर में सागर भर दिया है।"

युद्ध की अनिवार्यता दिखाते हुए कवि युधिष्ठिर से कहता है :

'युद्ध युद्ध तुम जपो युधिष्ठिर, युद्ध युद्ध बस युद्ध,
और नहीं तो यहाँ रहेगा, देव सदैव विरुद्ध,
पुरुषों के गुण होते हैं ये सत्य शील औदार्य,
शत्रु परन्तु न रहने देते शौर्य बिना है आर्य।'

लीलाधाम में श्रीमद्भागवत और महाभारत के कतिपय आख्यानों को इसमें छन्दोबद्ध किया गया है। कवि की सम्पूर्ण साधना मृगदाव में अन्तर्निहित है। इसमें कवि की कला का पूर्ण विकसित एवं चर्मोत्कृष्ट रूप सामने आता है। इस महाकाव्य का निर्माण २२ सर्गों में हुआ। यह कला, अनुसधान और संस्कृति का संगम है। इससे इतिहास के धूमिल पृष्ठों को आलोक मिला है।

मृगदाव सारनाथ का प्राचीन नाम है। मृगदाव का अर्थ है—हिरनों का वन। मृगदाव में झुण्डों के झुण्ड हिरन रहते थे, जिन्हें काशीराज के द्वारा अभयदान प्राप्त था। इन हिरनों के साहचर्य ऋषि-मुनियों का भी मृगदाव प्रिय आवासस्थल था। अतः इसे ऋषि पत्तन भी कहा जाता था। कर्णावतार भगवान बुद्ध ने यहाँ धर्म चक्र परिवर्तन किया था और ६० भिक्षुओं का संगठन भी बनाया था। ज्ञान की अनन्त ज्योति यहीं मूलगन्ध कुटीर से प्रस्फुटित हुई थी। अस्तु, मृगदाव बौद्ध चरित्र पर आधारित महाकाव्य है।

कला पक्ष एवं भाव पक्ष—दोनों ही दृष्टिकोण से यह काव्य सशक्त है। वार्णिक एवं मात्रिक छन्दों का इसमें प्रचुर प्रयोग किया गया है। अलंकार अयत्न साधित हैं। प्रत्येक सर्ग में नये छन्दों का प्रयोग हुआ। महाकाव्य के समस्त गुण इसमें विद्यमान हैं। इसके नायक गौतम बुद्ध हैं एवं नायिका यशोधरा। प्रतिनायक मार अर्थात् कामदेव है। सिद्धार्थ और कामदेव के युद्ध का वर्णन कवि ने अत्यन्त प्रभावशाली ढंग से किया है। मार द्वार प्रदर्शित युद्ध की भयंकरता का वर्णन करते समय कवि लिखता है :

'क्यों प्रकाश हो गया अब विनाश हो गया,
चन्द्र टूट कर गिरा व्योम फूट कर गिरा।'

हिन्दी-साहित्य में गौतम बुद्ध पर गिने-चुने काव्य लिखे गये हैं, जिनमें गुप्त जी की यशोधरा एव अनूप शर्मा का सिद्धार्थ महाकाव्य प्रसिद्ध है। यशोधरा में पद शृंखलाबद्ध न होने के कारण सिद्धार्थ वार्णिक छन्दों में संस्कृत-गर्भित क्लिष्ट भाषा होने के कारण पाठकों के लिए बोझिल बन गया है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का बुद्ध चरित्र 'लाइट ऑफ एशिया' का अनुवाद ब्रज-भाषा का काव्य है। मृगदाव इन तथाकथित काव्यों की अपेक्षा सरस एवं हृदयग्राही है।

१० जनवरी, १९७२ को त्रिवेदी जी की ५०वीं वर्षगाँठ स्वर्ण-जयन्ती के शुभ अवसर पर प्रकाशित इस काव्य का हृषीकेश रत्नद्वीप गोष्ठी के तत्त्वावधान में आयोजित सभा में सुप्रसिद्ध साहित्यकार डा० राम विलास शर्मा ने ग्रन्थ-विमोचन किया। कवि प्रारम्भ

[शेष पृष्ठ १२ पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोविज्ञान के क्षेत्र में हिन्दी में पहली बार अपने विषय की प्रथम पुस्तक

नैदानिक मनोविज्ञान

[CLINICAL PSYCHOLOGY]

लेखक—**डा० रामपालसिंह**, एम० ए०, एम० एड०, पी-एच० डी०

जियालाल शिक्षण-प्रशिक्षण संस्थान, अजमेर

प्राक्कथन लेखक—**डा० एम० ए० शाह**, मनोविज्ञान विभागाध्यक्ष, सेंट जॉन्स कॉलेज, आगरा

प्रस्तुत पुस्तक नैदानिक मनोविज्ञान के विभिन्न पहलुओं का सामान्य एवं पूर्णतः सैद्धान्तिक तथ्यों का प्रस्तुतीकरण करती है तथा मनोचिकित्सा मनोविज्ञान से सम्बन्धित विभिन्न तथ्यों, प्रत्ययों तथा सिद्धान्तों का सामान्य परिचय देती है।

अध्ययन की सुविधा के लिये प्रस्तुत पुस्तक की सम्पूर्ण सामग्री को निम्न चार खण्डों के अन्तर्गत 24 अध्यायों में निहित किया गया है। **प्रथम खण्ड** में विषयवस्तु का सामान्य परिचय है। **द्वितीय खण्ड** मानसिक शिक्षा के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डालता है, **तृतीय** तथा **चतुर्थ खण्ड** में मानसिक रोगों के सिद्धान्त तथा उपचार से सम्बन्धित समस्याओं पर पर्याप्त प्रकाश डालकर पुस्तक को अधुनातन बनाने की पूर्ण चेष्टा की गई है। पुस्तक की भाषा-शैली सरल तथा बोधगम्य है। तकनीकी शब्दों के साथ-साथ अंग्रेजी शब्द भी दिये गये हैं। जिससे उन्हें समझना और भी सरल हो गया है। आवश्यक स्थलों पर उदाहरण तथा शोध-परिणामों का उल्लेख करके विषय-वस्तु को और भी अधिक उपयोगी बना दिया गया है।

अध्याय क्रम

खण्ड एक—विषय-परिचय—(1) नैदानिक मनोविज्ञान का अर्थ एवं इतिहास, (2) नैदानिक मनोविज्ञान के अध्ययन प्रारूप, (3) मनोचिकित्सीय समस्यायें, (4) मनोविश्लेषण।

खण्ड दो—मानसिक रोग—(5) व्यक्तित्व का अर्थ एवं विकास, (6) मानसिक रोगों के लक्षण एवं संलक्षण, (7) मानसिक रोगों के प्रकार, (8) मानसिक रोगों के कारण, (9) आत्मसुरक्षा अभियांत्रिकियाँ।

खण्ड तीन—मानसिक रोगों का निदान—(10) मनोविज्ञान की अध्ययन विधियाँ, (11) प्रारम्भिक सूचनायें तथा विकासात्मक इतिहास, (12) परिवार, (13) बुद्धि का स्वरूप एवं मापन, (14) व्यक्तित्व के प्रक्षेपण-परीक्षण, (15) साक्षात्कार।

खण्ड चार—मानसिक रोगों का उपचार—(16) मनोचिकित्सा-परिचय, (17) मनोचिकित्सा की परम्परागत विधियाँ, (18) मनोचिकित्सा की विशिष्ट विधियाँ, (19) शारीरिक रासायनिक चिकित्सा-विधियाँ, (20) बाल मनोचिकित्सा विधि, (21) बालापराध, (22) मनोचिकित्सक, (23) मनोचिकित्सा प्रतिवेदन, (24) मनोचिकित्सा मनोविज्ञान की अनुसंधान विधियाँ। **परिशिष्ट**—असामान्य व्यवहार के कुछ उदाहरण।

आकार : डिमाई पृष्ठ संख्या : 462 मूल्य : 25.00 पुस्त० संस्करण: 35.00

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

[पृष्ठ ११ का शेषांश]

से ही देवी दुख-जननी एवं अनुज के विछोह की वेदना से ग्रसित रहा, जिसका वर्णन कवि ने स्वयं निम्न शब्दों में किया है :

'प्रिय बन्धु नितान्त अदृश्य हुआ, दिवमेचढ गंगतरंग गया
विधिवाम हुआ मुझसे सहसा, अब साहस और उमंग गया
निज पुण्य प्रभा दिखलाकर के छिप दोपहरी में पतंग गया
ममता गई माता के संग तथा अभिमान सहोदर संग गया'

त्रिवेदी जी की कविता के सम्बन्ध में डा० विनय मोहन शर्मा का विचार है—"आज जब कविता अपनी लय खो चुकी है, आपकी रचनायें उसके जीवन में प्रति आशा का संचार करती है।"

सरस्वती का वरद-पुत्र, हिन्दी-साहित्य का महाकाव्यकार जबकि कालिन्दी खण्डकाव्य की रचना में संलग्न था, दिनांक १/१०/७३ को सायं ६ बजे मृत्यु को प्राप्त हुआ।

'मृगदाव', 'चित्रकूट' एवं 'जयविजय' विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा से प्रकाशित हैं—लेखक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डा० (श्रीमती) जी० पी० शैरी द्वारा लिखित

बी० ए० गृह-विज्ञान की छात्राओं के लिए

गृह-विज्ञान-शिक्षण

गृह-व्यवस्था एवं गृह-कला
HOUSEHOLD MANAGEMENT & HOUSEHOLD ART

प्रस्तुत पुस्तक में इस तथ्य का पूर्णरूपेण ध्यान रखा गया है कि छात्र-छात्राओं को वांछित सामग्री एक ही स्थान पर उपलब्ध हो जाए। विभिन्न विश्वविद्यालयों की बी० ए०, बी० एस-सी० (गृह-विज्ञान) की परीक्षा हेतु निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार इसमें सम्पूर्ण विषय-सामग्री उपलब्ध है। सात खण्डों में विभक्त 36 अध्यायों में इसकी विषय-वस्तु को सरल, बोधगम्य एवं वज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

ग्यारहवाँ संस्करण 1982 16.50

पोषण एवं आहार विज्ञान
FOODS AND NUTRITION

इस पुस्तक में विभिन्न विश्वविद्यालयों द्वारा बी० ए० (गृह-विज्ञान), के पाठ्यक्रम में निर्धारित "पोषण एवं आहार विज्ञान" सम्बन्धी अपेक्षित सामग्री को सात खण्डों में विभाजित 35 अध्यायों में सरल, रोचक एवं व्यावहारिक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। इसमें माध्यमिक (हायर सैकेण्डरी) कक्षाओं में प्राप्त ज्ञान का अभिनव विकास है तथा बी० ए० स्तर की सामग्री का संयोजन है। **दसवाँ संस्करण 1981 मूल्य 13.35**

मातृकला एवं शिशु कल्याण
MOTHERHOOD & CHILD WELFARE

प्रस्तुत पुस्तक में "मातृत्व एवं शिशु-कल्याण" सम्बन्धी विशिष्ट ज्ञान की आवश्यकता व उसकी प्राप्ति के साधन बताए गए हैं। इस पुस्तक की विषय-वस्तु आठ भागों में विभाजित करके 26 अध्यायों में प्रस्तुत की गई है।

ग्यारहवाँ संस्करण 1982 मूल्य 14.00

वस्त्र-विज्ञान के मूल सिद्धान्त
FUNDAMENTALS OF TEXTILES

वस्त्रोद्योग की महत्ता, उन्नति तथा विकासानुरूप वस्त्रोत्पादन तथा वस्त्रों की देखभाल व सफाई-धुलाई एक विस्तृत विषय बन गया है। आधुनिक गृहिणी को इस विषय का विधिवत् ज्ञान होना उपयोगी ही नहीं, आवश्यक प्रतीत होता है। वस्त्रोत्पादन तथा सफाई-धुलाई सम्बन्धी ज्ञान 'गृह-विज्ञान' विषय का एक विशेष अंग मान लिया गया है। आज यह विषय विश्वविद्यालयीन महत्त्व का हो गया है। प्रस्तुत पुस्तक में प्रारम्भ से अन्त तक लेखिका का केवल एक ही दृष्टिकोण रहा है कि छात्राएँ एवं गृहणियाँ वस्त्र विज्ञान से सम्बन्धित व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करें तथा उनमें वस्त्र की सुरक्षा, महत्त्व एवं चयन के प्रति रुचि उत्पन्न हो। पुस्तक पाँच खण्डों में विभाजित होकर अठारह अध्यायों में प्रस्तुत है।

तेरहवाँ संस्करण 1982 मूल्य 8.50

स्वास्थ्य विज्ञान तथा जन स्वास्थ्य
HYGIENE & PUBLIC HEALTH

जी० डी० सतसंगी

प्रस्तुत पुस्तक विभिन्न विश्वविद्यालयों के बी० ए० (गृह-विज्ञान) के पाठ्यक्रमानुसार तैयार की गई है। विद्वान लेखक ने 14 अध्याओं में विषय-सामग्री को विभाजित करके सरल एवं सुबोध ढंग से प्रश्नोत्तर शैली में प्रस्तुत करने का पूरा-पूरा प्रयास किया है।

संशोधित एवं परिवर्द्धित चतुर्थ संस्करण 1982 मूल्य 11·00

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा-२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[नवीन पाठ्यक्रमानुसार]

बी. टी. सी. परीक्षा (द्वि-वर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए हमारी प्रकाशित वर्ष १९८२–८३ की पाठ्य एवं सन्दर्भ पुस्तकें

प्रथम वर्ष हेतु

प्रथम प्रश्नपत्र– शिक्षाशास्त्र

बेसिक शिक्षाशास्त्र दिनेशचन्द्र भारद्वाज ७.००
बेसिक शिक्षा सिद्धान्त प्रेमदत्त शर्मा ३.५०
शिक्षा के मूल सिद्धान्त डा० रामशकल पाण्डेय २१.००
शिक्षा के सामान्य सिद्धान्त पाठक, त्यागी २४.००
शिक्षा-सिद्धान्त डा० एस० एस० माथुर १७.००

द्वितीय प्रश्नपत्र–शिक्षा मनोविज्ञान

बेसिक शिक्षा मनोविज्ञान भारद्वाज ७.५०
शिक्षा मनोविज्ञान डा० एस० एस० माथुर १७.००
शिक्षा मनोविज्ञान पी० डी० पाठक १६.४०
शिक्षा मनोविज्ञान डा० वर्मा व उपाध्याय १८.००

तृतीय प्रश्नपत्र–शिक्षण सिद्धान्त

बेसिक शिक्षण सिद्धान्त दिनेशचन्द्र भारद्वाज ६.५०
शिक्षण कला, शिक्षण तकनीक एवं नवीन-पद्धतियाँ डा० एस० एस० माथुर १८.००
सफल शिक्षण कला पाठक, त्यागी १५.००

द्वितीय वर्ष हेतु

चतुर्थ प्रश्नपत्र–प्रारम्भिक शिक्षा की समस्यायें तथा अभिनव प्रवृत्तियाँ एवं शैक्षिक मूल्यांकन

प्राथमिक शिक्षा की समस्याएँ गंगामहेश मिश्र एवं अन्य ७.००
शैक्षिक मूल्यांकन एवं परामर्श पी० डी० पाठक ४.००

पंचम प्रश्नपत्र–पाठशाला प्रबन्ध, सामुदायिक एवं स्वास्थ्य शिक्षा

पाठशाला प्रबन्ध, स्वास्थ्य शिक्षा एवं सामुदायिक संगठन दिनेशचन्द्र भारद्वाज ७.००

खण्ड (ख) शिक्षण विधियाँ

सरल शिक्षण विधियाँ दिनेशचन्द्र भारद्वाज १०.००
उद्यान-विज्ञान शिक्षण एम० एल० वर्मा ६.००
कृषि शिक्षण तथा बागवानी ,, ,, ६.००
गृह-शिल्प शिक्षण सत्यनारायण दुबे 'शरतेन्दु' ३.००
बी० टी० सी० वाणिज्य शिक्षण उदयवीर सक्सेना ४.००
शिल्प-शिक्षण सत्यनारायण दुबे ८.००
काष्ठकला-शिक्षण ,, ,, ५.००
बी० टी० सी० पुस्तक कला शिक्षण ,, ,, ५.००

सहायक पुस्तकें

● **बी० टी० सी० शिक्षा दिग्दर्शन** (गाइड) प्रथम वर्ष [संस्करण १९८२/८३] शर्मा एवं सतसंगी १५.००
● **बी० टी० सी० शिक्षा दिग्दर्शन** (गाइड) द्वितीय वर्ष [संस्करण १९८२/८३] ,, १२.५०

विशेष (१) अध्यापकों से प्रार्थना है कि वह उपहार प्रतियों (स्पेसीमेन) के लिये हमसे सीधे एवं तुरन्त सम्पर्क करें। अधिक पुस्तकें मँगाने पर अधिक कमीशन की भी सुविधा है।

(२) शिक्षण-विधियों के लिये उक्त पुस्तकों के अतिरिक्त अलग-अलग शिक्षण पर अलग-अलग पुस्तकें बी० एड० स्तर की उपलब्ध हैं, कृपया हमको लिखें।

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नई पुस्तकें

शिक्षा

गृह-विज्ञान शिक्षण (संशोधित ग्यरहवाँ संस्करण १९८३) डॉ० (श्रीमती) जी० पी० शैरी, (श्रीमती) डी० पी० सरन, डिमाई, पृष्ठ २७६, मूल्य ११·५०

अर्थशास्त्र-शिक्षण (संशोधित एवं परिवर्द्धित बारहवाँ संस्करण १९८३) गुरुसरनदास त्यागी, डिमाई, पृष्ठ २२६, मूल्य ९·००

शिक्षा में निर्देशन और परामर्श (संशोधित एवं परिवर्द्धित पंचम संस्करण १९८३) डॉ० सीताराम जायसवाल, डिमाई, पृष्ठ ३५०, मूल्य १५·००

विविध

हिन्दी भाषा का विकास एवं नागरी लिपि (प्रथम संस्करण) डॉ० राजकिशोरसिंह, डिमाई, मूल्य १०·०० (आगरा वि० एम० ए० हिन्दी षष्ठ प्रश्नपत्र के पाठ्यक्रम में निर्धारित पाठ्यपुस्तक)

द्विवेदी युगीन काव्य (संशोधित द्वितीय संस्करण १९८३) डॉ० राजकिशोरसिंह, क्राउन, पृष्ठ १७६, मूल्य ५·०० (आगरा वि० एम० ए० हिन्दी तृतीय प्रश्नपत्र में निर्धारित पाठ्य ग्रन्थ)

हिन्दी गद्य-ललिता (संशोधित तृतीय संस्करण १९८३) डॉ० श्रीराम शर्मा, क्राउन, पृष्ठ १५०, मूल्य ५·०० (आगरा वि० एम० ए० हिन्दी, अष्टम् प्रश्नपत्र में निर्धारित पाठ्य ग्रन्थ)

गद्य-विविधा (संशोधित चतुर्थ संस्करण) डॉ० राकेश गुप्त, क्राउन, पृष्ठ १६८, मूल्य ५·००

संस्कृत गद्य रत्नाकर दिग्दर्शन (प्रथम संस्करण) डॉ० रामकिशोर शर्मा, डॉ० सरोज खण्डेलवाल, क्राउन, पृष्ठ १६०, मूल्य ८·०० (आगरा वि० प्रकाशन सं० ७० की टीका)

सूर-सौरभ (संशोधित षष्ठ संस्करण) पं० जगन्नाथ तिवारी, डिमाई, पृष्ठ २४०, मूल्य १०·००

विनय-पत्रिका (सटीक) (संशोधित अष्टम संस्करण) राजनाथ शर्मा, डिमाई, पृष्ठ ५४८, मूल्य २५·००

खुदा सही सलामत है (उपन्यास) रवीन्द्र कालिया, डिमाई, पृष्ठ ३०४, मूल्य ४५·००

लड़कियाँ (उपन्यास) ममता कालिया, क्राउन, पृष्ठ ६५, मूल्य १०·००

छप्पर टोला (उपन्यास) सतीश जमाली, क्राउन, पृष्ठ १०२, मूल्य २०·००

माफ कीजिये हुजूर (कहानी) श्री बाल पांडेय, क्राउन, पृष्ठ १३५, मूल्य २०·००

बाँकेलाल (कहानी) रवीन्द्र कालिया, क्राउन, पृष्ठ १०३, मूल्य २०·००

विजिट इण्डिया (कहानी) अमृतराय, क्राउन, पृष्ठ १२५, मूल्य १२·००

स्त्री तथा अन्य कहानियाँ (कहानी) पोट्टेक्काट, क्राउन, पृष्ठ १२०, मूल्य १८·००

विश्वास गाथा (कहानी) मालती जोशी, क्राउन, पृष्ठ १११, मूल्य १६·००

विषय नरनारी (कहानी) बिमल मित्र, डिमाई, पृष्ठ ३१६, मूल्य ४५·००

कुक्कू डार्लिंग (नाटक) रमाशंकर निशेश, क्राउन, पृष्ठ ७६, मूल्य १२·००

शृंगार मंजरी (कविता) सं० डॉ० प्रभात, डिमाई, पृष्ठ १३४, मूल्य २७·५०

अपराजित क्षण (कविता) जितेन्द्र मोहन, डिमाई, पृष्ठ ५८, मूल्य १५·००

इतिहास और आलोचक दृष्टि (आलोचना) रामस्वरूप चतुर्वेदी, पृष्ठ ९८, मूल्य १७·५०

गीता प्रबोध VIII, IX, X, XI & XII (आलोचना) प्रबोध चतुर्वेदी, डिमाई, मूल्य क्रमशः ७·००, ९·००, १०·००, १०·००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

112995

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा द्वारा प्रकाशित

बी० एड० छात्रों के लिये उपयोगी पुस्तकें

प्रश्नोत्तर शैली में

● बी० एड० दिग्दर्शन (गाइड)	सं० भाई योगेन्द्रजीत, दिनेशचन्द्र भारद्वाज, विनोद कुमार अग्रवाल	४५.००
● शिक्षा में सरल सांख्यिकी	डा० रामपालसिंह वर्मा	८.००
● शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा	भाई योगेन्द्रजीत	१०.००
● शिक्षा मनोविज्ञान	भाई योगेन्द्रजीत	१०.००
● शिक्षा सिद्धान्त की रूपरेखा	,,	१२.५०
● शिक्षा-सिद्धान्त	,,	९.००
● तुलनात्मक-शिक्षा	,,	६.००
● भारतीय शिक्षा का इतिहास	कपूरचन्द जैन	११.००
● भारतीय शिक्षा की आधुनिक समस्याएँ	दिनेशचन्द्र भारद्वाज	१२.५०
● विद्यालय प्रशासन एवं स्वास्थ्य शिक्षा	,,	१८.००
● विद्यालय प्रशासन	,,	९.००
● पाठशाला प्रबन्ध	,,	६.००
● स्वास्थ्य-विज्ञान	,,	८.००
● हिन्दी भाषा-शिक्षण	,,	७.००
● भूगोल-शिक्षण	,,	५.००
● विज्ञान-शिक्षण	डी० सी० शर्मा	५.००
● Teaching of English in India	P. D. Pathak	6.50
● गणित अध्यापन	जी० डी० सत्संगी, साहबदयाल	६.००
● इतिहास-शिक्षण	जी० डी० सत्संगी	६.००
● सामाजिक अध्ययन-शिक्षण	,,	५.५०
● नागरिक शास्त्र-शिक्षण	,,	४.००
● अर्थशास्त्र-शिक्षण	,,	५.००
● राजस्थान विश्वविद्यालय बी० एड० प्रश्नपत्र उत्तर सहित (१९७५ से १९८२ तक)	आर० पी० वर्मा	२४.७५
● आगरा विश्वविद्यालय बी० एड० प्रश्नपत्र उत्तर सहित (१९७४ से १९८० तक)	प्रो० सक्सेना	२२.५०
● सामान्य मनोविज्ञान की रूपरेखा	भाई योगेन्द्रजीत	१०.००
● समाज-मनोविज्ञान	प्रो० सक्सेना	८.००
● बाल-विकास की रूपरेखा	भाई योगेन्द्रजीत	९.००
● बी० टी० सी० शिक्षा दिग्दर्शन (गाइड) प्रथम वर्ष (सं० १९८२-८३)	शर्मा एवं सत्संगी	१५.००
● बी० टी० सी० शिक्षा दिग्दर्शन (गाइड) द्वितीय वर्ष (सं० १९८२-८३)	,, ,,	१२.५०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

० हिन्दी वाङ्मय : बीसवी शती	सं० डा० नगेन्द्र	100·00
० भारतीय साहित्य : तुलनात्मक अध्ययन	सं० डा० ब्रजेश्वर वर्मा	20·00
० 'नवीन' और उनका काव्य	प्रो० जगदीशप्रसाद श्रीवास्तव	20·00
० चिन्तन की वीथियाँ	वेदव्रत शर्मा	15·00
० पाश्चात्य समीक्षा : सिद्धान्त और वाद	सत्यदेव मिश्र	20·00
० ब्रज लोक साहित्य और संस्कृति	डा० राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी	8·00
० स्वतन्त्रता परवर्ती हिन्दी उपन्यास	प्रेम कुमार	6·00
० आधुनिक हिन्दी कविता की भूमिका	डा० शम्भुनाथ पाण्डेय	40.00
० ब्रज साहित्य का मूल्यांकन	डा० भगवानसहाय पचौरी	40·00
० सूफी-काव्य-विमर्श	डा० श्याम मनोहर पाण्डेय	20·00
० काव्य, यथार्थ और प्रगति	डा० रांगेय राघव	5·00
० साधारणीकरण, संप्रेषण और प्रतिबद्धता	डा० तारकनाथ बाली	10·00
० लोक साहित्य : सिद्धान्त और प्रयोग	डा० श्रीराम शर्मा	30·00
० हिन्दी भाषा का विकासात्मक इतिहास	डा० द्वारिकाप्रसाद सक्सेना	15·00
० संत कबीर (एक यथार्थपरक मूल्यांकन)	डा० लक्ष्मीदत्त बी० पंडित	15·00
० हिन्दी के प्रतिनिधि एकांकीकार	डा० द्वारिकाप्रसाद सक्सेना	30·00
० श्रीरामचरितमानस की काव्यकला	डा० हरिहरनाथ टुक्कू	15·00
० आँसू-भाष्य	डा० द्वारिकाप्रसाद सक्सेना	10·00
० प्रियप्रवास में काव्य, संस्कृति और दर्शन	,,	12·00
० ध्रुवस्वामिनी में कला, संस्कृति और दर्शन	,,	8.00
० साकेत में काव्य, संस्कृति और दर्शन	,,	15·00
० पदमावत में काव्य, संस्कृति और दर्शन	,,	50·00
० असमिया साहित्य और साहित्यकार	चित्र महंत	8·00
० आधुनिक भारतीय मानस का संकट	लोकनाथ भराली	6.00
० डॉ० आत्मानन्द मिश्र अभिनन्दन ग्रन्थ	सं० डा० सरयूप्रसाद चौबे डा० रामशकल पाण्डेय, श्री बैस व अन्य	40·00
० पाठ्य-पुस्तकें : कुछ विचार	द्वारिकाप्रसाद माहेश्वरी	10·00
० अपभ्रंश साहित्य और व्याकरण	डा० जयकिशन प्रसाद	5·00
० **LET US LEARN ENGLISH**	**M. S. Sachdeva**	14·00

नोट—30 प्रतिशत कमीशन नगद के आदेशों पर ही है, उधार के आदेशों पर नहीं। बिल्टी बैंक या बी० पी० से ही भेजी जायगी। कृपया आदेश देते समय अपने समीपस्थ रेलवे स्टेशन का नाम स्पष्ट लिखें। 1000·00 रु० का आदेश होने पर F.O.R. गन्तव्य स्थान की भी सुविधा है।

—व्यवस्थापक

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बिना टिकट प्रषण करने का प्रमाण-पत्र संख्या—AG-009

SECOND REVISED & ENLARGED EDITION

B. Ed. GUIDE

For

Students of Indian Universities

●

By

Indra Sharma, *M. Sc., B. Ed.*

&

N. R. Sharma, *M. A., L. T.*

Ex. Assistant Professor of Education

R. B. S. College, Agra

(Retired) Principal, Senior Secondary Schools, Delhi.

●

The present edition of the book has been written according to the recent syllabi prescribed by various universities of India, especially those of Agra, Kanpur, Meerut, Gorakhpur, Nagpur, Vikram, Shivaji, Bombay and Poona Every effort has been taken to present the entire subject- matter systematically in four parts on Principles of Education and Techniques of Teaching, Educational Psychology, Problems of Indian Education, Educational Administration and Health Education in a lucid style :

The other characteristics of the book are as follows :—

- ⊙ The course content in each paper has been put at one place.
- ⊙ Only standard books have been consulted in writing of the answers.
- ⊙ Questions have been solved at length and where necessary hints have been given to avoid duplication.
- ⊙ Though the book is in question-answer form, yet coherence of treatment has been preserved.
- ⊙ The language is simple and clearly intelligible to an average student.
- ⊙ One of the authors claims to have a long teaching experience in a training college of U. P. and an administrative experience in Senior Secondary Schools of Delhi.

It is sincerely hoped that the book will be warmly welcomed and will prove beneficial to students. Any suggestions for the improvement will be thankfully received.

Size Demy Page 1250 Price Rs. 51.00

VINOD PUSTAK MANDIR, AGRA

प्रकाशक एवं मुद्रक-ओ. विनोद कुमार अग्रवाल द्वारा कैलाश प्रिंटिंग प्रेस, आगरा-२
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri